

فيضان اذان

غسل كاطريقه

وُضوُكاطريقه وُضواورسَائسر

نمازجنازه کاطریقه 370 تضائمازوںکاطبیته 322 زکاطریقه مُسافِرکی نمَاز 172

فاتحه کاطریقه 472 مَدَنی وصیّت نامه 454 نمازعیدکاطریقه 436

فيضان بُجُعه 396



المال المال

(رسائل عطارية حصداوّل)

NEW STANDER ST

| (11) 1/2 | ﴿ وضواور سائنس |
|-----------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 410 | |
| | غسل کا طریقه |
| (1V 1/4) | فیضان اذان 💮 💮 |
| (m) (1/4) | د نماز کا طریقه |
| (rt F) | ه (مسائر کی نفان |
| (TW)) | الله على الماد المادون |
| (TY) (1) | نماز جنازه کا نگ |
| (LT) (J) | المن المعادية المناه المعادية |
| 4101 0 F> | انماز مید کامری |
| (LY) (P) | الله (مدنی وصیح ا |
| 40.4 | ۲ مناتحه کا طریقه |

== جمله حقوق محفوظ ہیں ==

نا أكتاب : نماز كے احكام (فق)

، في في خطريقت، امير المسنّت

حضرت علامه مولا ناابوبلال محمرالياس عطارقا دري رضوي دامت بركاتهم العاليه

: مكتبة المدينه ـ كراجي



- مكتبة المدينة فيضال مدينة كلّم سودا كرال يراني سبزي مندمي كراجي 4921389
 - ٢- مكتبة المدينة شهيد مجد كهارا دركراجي 2203311
 - المن يوربازار مردارآ باد (فيصل آباد) 632625
 - ٣- محتبة المعدينة وربار ماركيث يَخ بخش رودُ ، لا بمور 7311679
 - ۵۔ مختبة المدينة چيونک گھڻي، ديدرآباد 641926
 - ٢_ مكتبة المعدينة نزويپيل والى مجدا ندرورن بوېژ گيٺ ملتان 785192
 - اصغرمال رود نز دعيدگاه رادليندي 4411665

نماز کے احکام (منی) رسائل عطاریه

| | | ٧ | فهــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | | |
|------|----------------------------------------------|------|----------------------------------------|------|------------------------------------|
| صفحه | عنوان | صفحه | عتوان | صفحه | عنوان |
| V٨ | کفی کرنے کی حکمتیں | 37 | منتابي مي وائت الوا | | وضوكا طريقه |
| 14 | ناك ميں پانی دِ النے کے صنتيں | 20 | سونے فی ڈوٹنے اور زنوشنے کابیان | ۲ | عثان غی رضی الله عنه کاعشق رسول |
| ۸٠ | چېره دهونے کی حکمتیں | ۳۸ | مساجد کے دُضوخانے | ٤ | گناہ کھرنے کی حکایت |
| ٨٢ | الدهاين تشفظ | ۳۸ | گھر میں وضوخانہ بنوائے | ٦ | یا وضوسونے کی فضیلت |
| AT | مُبنيانِ وهونے کی حکمتیں | 79 | وضوخانه وانے كاطريقه | ٦ | با وضوم نے والاشہید ہے |
| AE | مسح کی حکمتیں | ٤. | وضوخانے کے والدنی پھول | V | مصيبتول سے حفاظت كانسخه |
| AL | پاگلوں کا ڈائٹر | ٤٣ | جن كا وضونه ربتا بوان كيلية ١٩ حكام | ٧ | باوضور بنے کے سات فضائل |
| 77 | پاؤل دھونے کی حکمتیں پاؤل دھونے کی حکمتیں | ٤٧ | مات مُعَرِّر قات | ٨ | وَ كَنا تُوابِ |
| ۸۷ | وضوكا بجاهوا يإنى | ٤٨ | وضويل بإنى كااسراف | ٨ | وضوكا طريقة (حنفي) |
| ۸۷ | انسان چاند پر | ٤٨ | جاری نمبر پر بھی اسراف | 15 | بنت كأفل دروانب كل جلتين |
| ۸۹ | بوركا كحلونا | ٤٩ | اعليحضر ت كافتوى | 12 | فنوكاعدس فقدر بزجن كفضأل |
| 11 | معجزة ومشن القمر | 0. | مفتى احمد يارخان كي تنسير | 15 | نظربهمي تنزورنه بهو |
| 195 | صرف القدعز وجل كيلئ | 01 | ابراف شيطاني كام ب | 12 | وضوئ حيار فرائفن |
| 98 | بإطنى وضو | ٥٣ | محملی طور پروضو شکھتے | 10 | دھونے کی تعریف |
| 10 | سنت سائنس محقيق كافقاج نبين | ٥٤ | معجداورمدرے يائى كااسراف | 10 | د ضوکی 12 سنتیں |
| | غسل كا طريقه | 10 | امراف سے بھنے کی عمد اپیر | 17 | وضوك 26 مُستخبات |
| 9.4 | ؤرُووشريف كى فضيلت | ٦. | امرف يخ ك المالدني يعول | ۲. | وضوے 15 كروبات |
| 9.4 | إنونحى سزا | | وضو اور ساننس | 11 | مستعمل بإنى كااجم مسئله |
| 1 | غسل كاطريقه (حنفی) | ٧٢ | وضوك حكمت كسبب قبول اسلام | 17 | پان کھانے والے متوجہ ہو |
| 1.1 | عشل کے تین فرائض | ٦٨ | مغربی جرمنی کا سیمینار | 17 | زخم وغير وسےخوان نكنے كـ ١٥ الدكام |
| 1-4 | (۱) گُلَی کرنا | 79 | وضواور مائي بلذ پريشر | TV | كلشن لكف المنوف كالأين |
| 1.5 | (٢) تاك مِن بِانَى حِرْهَا تا | 79 | وضوا ورفالج | 11 | وُ وَكُلِّينَ أَكْلِهِ كَ أَنْهِ |
| 1.5 | (٣) تمام ظاہری مدن پریائی بہانا | ٧٠ | مسواك كافذ زدان | 19 | چيمالا اور ماهر <u>يا</u> |
| 1.5 | مرد وعورت دونول كيليخ عسل كي | 14 | قُوْت ما فِظ كَيْنِيَ | ۲. | تے سے کب وضوثو ن ہے |
| | 21احتياطين | ٧٢ | مسوك كباريض فن العالمات مبارك | ۲. | بننے کے احکام |
| 1.7 | مُنتُوراتِ كَيلِيُّ 6احتياطين نبرين | ٧٢ | منہ کے چھالے کا علاق | 171 | كابخ ديك في أولمت جاتاب؟ |
| 1.7 | زخم کی و نگی ع | VT | نوتھ برش کے نقصانات | 77 | عشل کا وضو کا فی ہے ترین |
| 1.4 | مخسل فرض ہونے کے 5 اسباب | ٧٤ | كياآب كومواك كرناآتا ب | 77 | تھوک میں خون |
| 1.4 | بِنَفَاسِ كَيْ خَرِ ورى وْ صَاحت | Vo | ۱۳ امَدُ فَي پيمول ۲۰۰۰ - مرحکة | 77 | دوره پين بچ کابيتاب اور تے |
| 1.9 | 5 ضروری أحکام | W | باتھ وھونے کی حکمتیں | 74 | وضويس شك في كه ادكام |

| صفح | عنوان | صفحد | عنوان | صفحه | عنوان |
|-----|------------------------------------------------------------------|------|----------------------------------|------|--------------------------------------|
| 1.9 | خ وف كى مجيح ادائيكى خرورى ب | 12. | محيينيال بحى استغفار كرتى بين | 111 | شت زنی کاعذاب |
| 11. | جُرِوارجُروار! خُرِوار! جُرِوارجُروار! خُرِوار! | 121 | اذان کے جواب کی فضیلت | 117 | بهتياني مين فسل كاطريقه |
| 111 | مدذسة المدينة | 181 | 3 كرور 24 لا كانكيال كماية | 117 | وارہ جاری پانی کے حکم میں ہے |
| 110 | كاربيث كفقصانات | 125 | اذان كاجواب دين والاصنى بوكيا | 111 | وارے کی احتیاطیں |
| 110 | ناياك كاربيت بإك كرفي كاطريقه | 122 | اذان وإقامت كيجوب كاطريقه | 112 | W.C. كازن درست يجيئ |
| 111 | نماز کے تقریباً 30 واجبات | 124 | اذان کے 14 مدنی پھول | 110 | کب کب عشل کرناسنت ہے |
| 171 | نماز کی تقریباً 96 شنتیں | 101 | اذان کے 9 مَدَ فی پھول | 110 | تب كب عشل كرنامتحب ب |
| 111 | تكبيرتمخر يمدكى منتيل | 101 | ا قامت کے 7 مدنی چھول | 117 | يكه عنسل مين مختلف نتيتين |
| 177 | قیام کی شتیں | 100 | اذان دینے کے 11منتب مواقع | 117 | ارش مین عشل |
| 145 | زکوځ کې شتیں | 100 | متجدين إذان دياخلاف منتب | 117 | لك لمبات ول لك طرف فطركز ناكيسا؟ |
| 170 | قومنه كالشتيب | 101 | موشہیدوں کا ثواب کمائے | 114 | نگئے نباتے وقت خوب احتیاط |
| 177 | شجد ئے شنتیں | 175 | اذان | 114 | عسل سے نزلہ ہوجا تا ہوتو؟ |
| 177 | جَلسَد کَ منتیں | 170 | از ان کی وعاء | 114 | بالنى سے نہائے وقت احتیاط |
| MA | دوسرى ربعت كيين الطيفى منتين | 177 | ایمان مفصل/ایمان مجمل | 119 | ال کی گرہ |
| 111 | قعدون سنتيس | 177 | فش1 کلیے | 119 | رآن پک پرست یا تھے۔ 10 آول |
| r. | سلام پھیرنے کی شتیں | | نماز كاطريقه | 177 | بے وضود یکی کتا جس کچھوٹا |
| 11 | سلام پھیرنے کے بعد شتیں | 177 | ذ زود شریف کی فضیلت | 177 | ىلياكى ئى حاستەيىن دُرُودىشرىف برىھ، |
| 177 | سُنتِ بعد ہے کی سنتیں | 145 | قیامت کاب سے پہلانوال | 175 | گلیس\NK ک=حی ہوئی ہوتو؟ |
| TT | سنتول كاليك أثبم مسئله | 145 | نمازی <u>کیلئے</u> نور | 172 | بچەكب بالغ بيوتا ہے |
| 72 | اسلامي بهنول كيليط وسننتيس | 170 | س کائس کے ساتھ حشر ہوگا! | 172 | ئن مِن رکھنے کی ترتیب |
| 10 | نماز کے تقریباً 14 مستخبات | 111 | شديدزخمي حالت مين نماز | 110 | أوراق بيل يُزيابا ندهنا |
| TV | تحمر بن عبدالعزيز كأعمل | 177 | تماز پرنور یا تار کی کے آسیاب | 110 | نصلع برأعبة القدشريف كأتصور |
| TV | گرد آلود پیشانی کی فضیلت | 144 | يُرے خاتے کا ايک سبب | 117 | وسوسول كاليك سبب |
| 24 | نمازتور في والي 29 يأتين | 178 | نماز کاچو <u>ر</u> | 177 | سيمتم ئے فرائفل |
| ٤٠ | فماز میں رونا | 144 | چور کی دونشمین | 144 | قیم کی 10 سنتیں |
| ٤. | تماز میں کھانسنا | 141 | فماز کاطریقه (^{حق} ق) | 114 | تيم كاطريقه (حنق) |
| 113 | ا دوران نُماز د کِیمَ کر پڑھن | | 0/ 70 00 01 | 179 | میتم کے 25 مند کی پھول |
| 27 | عملِ کثیر کی تعریف | | دونول متوجه بهول! | 100 | مَدُ نَى مَصُورِه |
| ٤٣ | ووران نمازلباس پهننا | | ا نماز کی 6 شرائط | | فيضان اذان |
| 27 | ا نَمَا زَمِينَ بِجَهِ نَكَلنا - تَمَا زَمِينَ بِجَهِ نَكَلنا | | تین اوقات مکرومه | | قبر میں کیڑے نہیں پڑیں گے |
| it | ووران نماز قبله ہے انحراف | | وورك نمار تكروه وتبت وأفل بوجائة | | موتی کے مُنبد |
| ٤٥ | فماز میں سانپ مارنا | 1.1 | ا مُن ز کے 7 فرائعش | 18. | مُؤشَّة مُناهِمُعاف |

| عنوان | صفحه | عنوان | صفحه | عنوان | صفحه | |
|------------------------------------------------------------------------|------|---------------------------------------|------|------------------------------------|------|--|
| از میں کھجا تا | 720 | خبر دارا ہوشیار! | የለኒ | كيامسافركوسختين مُعاف بين؟ | 710 | |
| لدا كبر كہنے ميں غلَطياں | 127 | سجدهٔ تلاوت کا طریقه | ۲۸۵ | نماز کے جارٹروف کی نسبت | 710 | |
| دَ کے 33 مکروحات تخریمہ | 450 | سجدهٔ شکر کا بیانِ | 140 | ے چلتی گاڑی میں نفل | İ | |
| ندهول پرجا ورانکا نا | 727 | مُمازی کے آگے۔ گزرناخت گناہ | ۲۸٦ | کے 4مئد ٹی بھول | | |
| می حاجیت کی هذ ت | 721 | المان كآ كے سے گزرنے | YAV | مسافر تيسرى ركعت كيلئے كفرا | ۳۱۷ | |
| زمیں کنگریاں ہنانا | 729 | کے بارے میں 15 احکام | | بوجائے تو۔۔۔۔؟ | | |
| ئليان چنخا نا | 459 | صابب مزاری انفرادی کوشش! | 797 | سفرمين قضانمازين | ۲۱۸ | |
| مرير باتھ رکھنا | 101 | مان چار پائی سے اُٹھ کھڑی ہوئی! | 198 | حفظ بھلا وییئے کاعذاب | 419 | |
| مان کی طرف و <u>ک</u> ھنا - | 707 | مسافر كى نماز | | قضا نمازون كاطريقه | | |
| زی کی طرف د یکھنا | 707 | دُ رُ ووشر يف كى فضيلت | 111 | دُ رُودِ شریف کی فضیات ** | 411 | |
| مرهج حبيهامنه | 107 | شَرْ عَی سفر کی مَسافت | ٣٠١ | قضِا کرنے والول کی خرابی | 222 | |
| زاورتضاوري | YOX | مُسافر کِب ہوگا؟ | ٣٠١ | سر کیلنے کی سزا | 272 | |
| زکے 32 کروہات تنزیبہ | 709 | آبادی ختم ہونے کا مطلب | ۲٠٢ | قبر میں آگ کے شعلے | 220 | |
| _ آستین میں نماز پڑھنا کیسا؟ - ************************************ | 777 | فِنا ئےشہر کی تعریف | 8.1 | ا اگرنماز پژهنا بھول جائے تو | ۳۲٦ | |
| رے آخری دونفل کے بھی کیا کہنے | 475 | مُسافر بنج كيليِّ شُرْط | ٣-٣ | مجورى بس ادا كاتواب منه كايابس؟ | 177 | |
| مت کابیان تر | 170 | وَطَن كَي قَسْمِينِ | ٣٠٣ | رات کے آخری حقبہ میں سونا | ۲۹Α | |
| بداء کی 13 شرائط | 777 | وطن اقامت باطل بونے کے صورتیں | ٣٠٤ | رات دیر تک جا گنا | 444 | |
| امت کے بعد امام صاحب | 777 | سفر کے دورائے | 3.7 | ادا فقضالور واجنب الاعاده كي تعريف | ٣٣٠ | |
| ان کریں | | سافرکب تک سافر ہے | ٣٠٥ | توبد کے تین رکن ہیں | 771 | |
| اعت كابيان | 170 | سفرنا جائز ہوتو؟ | ۳.٥ | سوتے کونماز کیلئے جگانا واجب ہے | ۲۳۲ | |
| ب جماعت کے 20 أغذار | 171 | سيتمعاورنوكر كااكتعاسفر | ٣.٦ | فبخر كاوفت بوگيا أخفو! | ۲۳۲ | |
| ر برخاتے کاخوف | 479 | كام بوگيا توچلا جاؤل گا! | 7.7 | حقوق عامتہ کے احساس کی حکایت | ۲۳٤ | |
| زِوْرُ بِے 9 مدنی پھول زورُ ہے | 777 | عوزت کے شرکامسکلہ | ۲.۷ | جلدے جلد قضا کر لیج ئے | ۳۳٥ | |
| ائے قنو ت | 775 | عوزينة كالشسرال اورميكا | ۳.۸ | يُحسب كرقضاء سيجئ | 777 | |
| رهٔ سهوِ کا بیان | 1777 | فرجملك ميس ويزايد بضوال كائد | ۳۰۸ | بُمُعة الوَ واع مِين قضائع عمري | 227 | |
| يستندأبهم مستكب | YVA | زائرِ مدینهٔ کیلئے ضروری منله | 71. | غمر بھرکی قضا کا حساب | ۲۲۷ | |
| يت | 779 | عِمرہ کے دیزہ پر فج کیلئے رُکنا کیسا؟ | 711 | قفا کرنے میں ترتیب | ٣٣٨ | |
| روسبو كاطريقه | ۲۸٠ | قضر واجب ہے | 717 | قضائے عمری کا طریقہ (حنفی) | ۲۲۸ | |
| رؤسَبو كرنا بھول جائے تو۔۔ | 17.1 | قفر کے بدلے جار کی نیت | 212 | نماز قصر کی قضا | ۳۲۹ | |
| · · | 141 | بانده لي تو_ي_؟ | | زبانه ءار بداوی نمازین | ٣٤. | |
| فعآءاللد مز وحل ہر فر او پوری ہو | YAY | ميافرامام اورمقيم مقتدي | | بچەكى بىيدائش كےوفت نماز | ۲٤. | |
| رهٔ حلاوت کے8مَد نی پُھول | ۲۸۲ | مقيم مُقتدى اور بقيّه دورُ تعتين | 712 | عمر بھرک تمازیں دوبار ہیڑھنا | 251 | |

| | فه(س | | | | | |
|-------|---------------------------------------------------------|---------------|--------------------------------------------------------------|-------|----------------------------------|--|
| عستجم | عنوان | صفحه | عنوان | صفحه | عنوان | |
| | لكيفت بين | 441 | مُمَازِحِنَازُ وَمِينِ وَوَرَكُنِ اوَتَمِينَ مُنْتِينٍ مِينِ | 757 | قصا كالفظ كبرنا بعبول كياتو؟ | |
| [۵۰۵ | الميلي صدق بين جعد كاجذبه | TAI | نماز جناز وكاطريقه (حفی) | 727 | نوافل کی جگه قضائے تمری پڑھئے ا | |
| [۲۰۱ | الربير به كافئ | 717 | بالغ مردومورت كجنازه كي ذعاء | 454 | فجروعصر بكيعدنوا فأنبيل بإصطحة | |
| i.v[| المُمعدكيك عِندَق نَكَاناتُ بِي | 317 | ، ٹا ہائغ <i>لڑ کے</i> کی وعا | 757 | المبرق جاسنتي روعا كبرما كاكري | |
| ٤٠٧} | عج وتمر و كانتُواب | ፕለኒ | نابالغ لژنی کی وعا | 1727 | فجرى منتيل روجا نكين تؤكيا كرييا | |
| ١٨٠ | سب دنول کا سردار | 440 | جوت پر کفرے ہو کرجنازہ پڑھنا | 125 | كيامغرب كاوتت تحوز الرمابون ب | |
| ٤٠٩} | وُعا وقيول ۽ وٽي ہے | 7/0 | عائبانه نماز جنازه | 180 | ترادق کی قضار کا آیا تھم ہے | |
| ٤١٠ | عصرومغرب شے درمیان العونڈ و | ۲۸٦ | چند جناز ول کی اَنشی نماز کاطریقته | 120 | ئماز كافديه | |
| 51. | عداهب بهارشر اجت کا) رشرا و | 887 | جنازه میں کتنی صفیص ہوں | 727 | مرحومه كخديه كالك مئله | |
| धा | قبوليت كَيَّ لَعَرِي يُون يَ | ۳۸۷ | جنازه کی پوری جماعت پدیلے تو؟ | TEA | 100 كوزول كاحيله | |
| £17 | مرحد وليكرون 44 الفي المراسية أراد | ን አህ | بإكل ماخووتش والكاجنازه | 1259 | كان قِصيد في كاروان مبسية وا؟ | |
| 81r | عذاب تبريح فوظ | TAA | - V | 80. | گائے کے گوشت کا تھنہ | |
| 818 | فيمعة تافيعية كنابهون كامعافي | \ran | | 201 | ز کو قاکا شرقی حیله | |
| 212 | 200 سال كى عبادست كا نۋاب | 714 | جنازه كوكندها دييخ كاطريقه | 101 | 100 افراد کو برابرثواب مطے | |
| ٤١٥) | مرحوم والدين كوهر كخصه اعمال | 1783 <u>:</u> | بچيكا جناز وأنسانے كاطر يقيه | 707 | القير كى تعريف. | |
| | عِیْنْ ہوتے ہیں م | ۳٩. | الماؤجنازه كيعدولؤى كيسال | 1707 | مشليين كل تعريف | |
| اهدع | بُنعه كَ بِالْحُ تَصْبِصُ اللَّهُ لَ | T9. | کیا شوہر ہوں کے جنازہ کو | roo. | ز کو ق کے جیلے کے بارے میں | |
| 217 | بخت دادب بوگل | ł | كندهاد ب سَلَّناب؟ | | سوال وجواب | |
| ٤١٧ | صرف کھعہ کاروز دندر کھئے | ۱۴۳ | كافركاجة: ٥ | { | نمازِ جنازہ کا طریقہ | |
| ٤١٧ | وَلَ مِنْ إِدِيرَاكِ مِنْ وَرُولُ وَلِي كَانُولُ إِلَيْ | 891 | تكاح وعد كيا! | 1771 | ذارواشرايف كافضيلت | |
| ٤١٨ | عُتُعاَول بلب كُلْقِيرٍ والفرق كاتُوب | 797 | منفارکی عیاوت مت کرد | { TYT | ولحائے جنازہ فیس شرکت ٹی برکت | |
| £3∧ | تنجي واللدين پر پاسين شريف. | } | فيضان جمعه | ۲۷۲ | عقیدت مندول کی بھی مغفرت | |
| | پڑھنے کی فعنیات | 877 | تخعدكوا زودشريف بؤصني كضياست | 377 | ڪفن چور م | |
| £łΑ. | تيمن بنرار مغضرتين | 799 | أ قائم يبيلانك كسبادا فرمايا؟ | 770 | خر کائے جنازہ کی خصش | |
| 519 | روطين فيع بوتي بين | ٤ | يخصر كے معنی | 777 | فغبرمين يبلاتحفه | |
| ٤٢٠ | سوزة اللهيف كل فضيات | <u>(۶۰)</u> | | TVV | , ,,,,, | |
| ٤٢٠ | وونول جمعہ کے درمیان نور | | ول پرمبر | | | |
| 571 | محبة تك أور | 1 | فخعه كالمركي فضايت | TVA | أحديبار بقناتواب | |
| .233 |] - •• ! | | ھِفا داخل ہوتی ہے | | نماز جنازه باعمها عبرت ہے | |
| ETT | ستر بزار فرشتوں كا استعفار | ŀ | 1 | | منيت كونهلا في وغيروكي فضيلت | |
| 277 | سارے گناہ معاف | 1 | 1 | 1 | جنازه د ک <i>یچار کیت</i> | |
| 277 | تماز جمعہ کے بعد 📗 | 12.2 | فرشتے خوش نصیبوں کے نام } | TA. | نماز جناز وفرض كفاييب | |

| فهـــــرس | | | | | | |
|-----------|-------------------------------------|------|----------------------------------|------|-----------------------------------------------|--|
| صفحه | تحنوان | صفحہ | عنوان | صفحه | عنوان | |
| ٤٧٤ | روزی میں ہے برکتی کی وجہ | ٤٤٢ | عيد کي اُڏهوري جماعت ملي ٽو ؟ | ٤٢٤ | مجلس علم میں شرّت | |
| ٤٧٤ | جِعد کوزیارت قبرگ فضیلت | ٤٤٣ | عیدکی جماعت ندملی تو کیا کرے؟ | ٤٢٥ | جعدفرض ہونے کی ااشرائط | |
| ٤٧٥ | كفن بجيت كئة | ٤٤٢ | عید کے خطبے کے احکام | ٤٢٦ | جبعه کی سنتیں | |
| ٤٧٥ | دعاؤن کی برکت | દદદ | عید کی 20 سنتیں اور آ داب | ٤٢٦ | غسل جمعه كاوقت | |
| ۲۷٤ | ايصال ثواب كااتظار | 227 | بقرعيد كاائك مستثب | ६४४ | عنسل جمعه منت غيرمؤ كده | |
| ٤٧٦ | وعائء مغفرت كي فعنسيت | ٤٤٧ | تکبیرتشریق کے 4 می پھول | ٤٢٧ | فطباتر قريب سنتأني فنيلت | |
| ٤٧٧ | اربول نيكيال كمانے كا آسان نسخه | | مدني وصيت نامه | ٤٢٨ | حیپ چاپ خطبہ کتنا فرض ہے | |
| ٤٧٨ | نورانی کیاس | ٤٥٤ | مدينة منوره -: 40 جاليس صيتيل | 279 | نطب <u>ہ منے</u> والا درود شریف نہیں پڑھ سکتا | |
| ٤٧٨ | نورانی طباق | १२० | وتعيت بأعث مغفرت | ٤٣٠ | سل مہلی اذ ان بوتے ہی کاروہاز کھی ناجائز | |
| ٤٧٩ | مردوں کی تعداد کے برابراجر | ٤٦٥ | طر ئقة تجهيز وَلَكْفِين | ٤٣١ | خطبہ کے 2 مدنی بھول | |
| ٤٨٠ | سوره اخلانس كانثواب | ٤٦٥ | مرد کامسنوان کفن | ٤٣٢ | جمعه کی امامت کا اہم مسئلہ | |
| ٤٨٠ | أمسعد صى الله عنها كے لئے كنوال | ٤٦٥ | عورت كامسنون كفن | | نماز عيد كا طريقه | |
| EAY | . ایصال ثواب کے سامدنی نیمول | ٤٦٥ | كفن كي تفصيل | ٤٣٦ | درود شریف کی قضیلت | |
| ۲۸٤ | الصال ثواب كاطريقه | ٤٦٦ | وتعنسل متيت كاطريقه | ٤٣٧ | ول زندور ہے گا | |
| ۲۸3 | الصال ثواب كامروبه طريقه | ٤٦٧ | ا مردکوکفن پہنانے کا طریقہ | ٤٣٧ | جنت واجب ہوجاتی ہے | |
| ٤٩١ | أنكيخرت رضى للذعنه كافاتحه كاطرايفه | ٤٦٧ | عورت كوكفن بيبنانے كاطريقه | ٤٣٨ | نمازعيدكيك جانے تيل كامنت | |
| १९४ | ايسال ثواب كيكي دعا كاطريقه | ٤٦٨ | بعدنماز جنازه تدفين | ٤٣٨ | نمازعيدكيكي آن جانے كاسنت | |
| ٤٩٦ | مزار پرحاضری کاطریقه | | فاتحه كا طريقه | 543 | نمازعيد كاطريقه | |
| | | ٤٧٢ | مقبول حج کا ثواب | ٤٤. | نماز میرکس پرواجب ہے؟ - | |
| | | ٤٧٣ | دىن جىح كانۋاپ | 121 | عید کا خطبہ منت ہے | |
| | | ٤٧٣ | والدین کی طرف ہے خیرات | ٤٤١ | نما زعید کاو تت | |

سي فضاعمل

مسركارِنامدارمقانه عليا برام ايك صحابي مني نشعنه سفح كفت كوستھ كدوي أني "يض ج آيج ساته بات كرر باب اس كي عمر م ایک ساعت اور باتی رہ گئی ہے "وعصر کا وقت تھاکہ سرکار مدینے من ليُرون البر سنه أس صحابي مِن لله عز كواس بات سي آگاه فرايا تو وه بقيرار موسكة اور وض كيا وكأرشول الندم الندية ارتم مجها يسا عل تنائيے جاس وقت ميرے سيے زباده مناسب ہو، سرکار مريزة للتأليا فيراي المستنفل بالتَّعَكَم يعني علم عال كين مین شغول ہوجاؤ توہ عمرهاصل کرنے میں شغول ہو گئے اور مغرب سے قبل اِنتقال فرما گئے ۔ راوی کا کہنا ہے کہ اگر علم مصضل كوتى اورجيز بوتى توسركار سناملا آبراس وقت برأسى کے کرنے کا حکم فرماتے۔

,تفسيركبير،

وضوكاطريقه



وضويس شكآنے كے 5 أحكام 33

سونے سے وضوالو شخ اور نہ او شخ کابیان

🚓 وضوفانه بنوانے كاطريقه 39

🕠 جن كاوضوندر بتا بوان كيلية 6 أحكام 43

53

00 کیابتر دیکھنے سے وضواؤ د جاتا ہے؟ 31 🔍 اسراف سے بچنے کے لئے 14مد نی پھول 60

مُناه جعر نے کی حکایت 4

مصيبتول سے تفاظت كانسخر 7

👝 نظر مجھی کمزور نہ ہو 14

مان کھانے والےمتوجہوں 22

🕡 أنجكشن لكانے سے وضوالو في كا يانبيں؟ 27 🍴 عملى طور يرؤضو سكھنے

ورَق اللَّهُ



39 A PASSA WASH W

33

49

53

PRESIDENTAL DE ENWE O THE KL ON PRINCIPAL PROPERTY OF

قُفل مدينه قُفل مدينه وَ اللّه اللّه اللّه الله وَ اللّه وَا اللّه وَاللّه وَا اللّه وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَا اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّ



اس رسالے میں ۔۔۔۔

نظربهى كمزورنههو

گناہ جھڑنے کی حکایت

انجكشن لكانے سے وضوالو فے كايانہيں؟

مصيبتوں ہے حفاظت كانسخ يان كھانے والے متوجّہ ہول

ورق الليئے۔۔۔۔



اَلْحَمْلُ بِلَهِ رَبِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى مَتِدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمُا بَعْدُ فَأَ عُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْدِ الشِّرِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمِ الْمُ



یه رِساله اوّل تا آخِر پورا پڑھئے ،قَوی اِمکان ھے

که آپکی کئی غَلَطیاں آپکے سامنے آجائیں۔

وُرُود شريف كى فضيلت

مركار دوعالم ،نورجمه ،شاه بني آدم ، رسول مُسكحتَشَم سل الشعال مايد

والدوسلم کا فرمانِ معظم ہے،جس نے دن اور رات میں میری طرف شوق ومحبّ کی س وجہ سے تین تین مرتبَہ ڈ رُ و دِ پاک پڑھااللّٰہ تعالیٰ پرحقؓ ہے کہ وہ اُس کے اُس دن

اورأس رات کے گناہ بخش دے۔

(النرغيب والترهيب ح٢ص٣١٨)

صلُّوا عَـلَى الْسَحَبِيبِ! صلَّى اللَّهُ تعالىٰ على مُحمَّد مِدَاللهِ على مُحمَّد مِدَاللهِ على مُحمَّد مِد اللهُ تعالىٰ على مُحمَّد مِن اللهُ تعالىٰ على مُحمَّد مَن اللهُ تعالىٰ على مُحمَّد مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلَّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلَّمُ مِن اللهُ تعالىٰ على مُحمَّد مِن اللهُ تعالىٰ مُحمَّد مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلَّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلَّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ عَلَيْكُمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن اللهُ تعالىٰ مُعَلِّمُ مِن مُعَلِّمُ مُعَلِّمُ مِن مُعَلِ

حضرت سبِّدُ نا عثمانِ غنى رضى الله تعالى عنه نے ایک بارایک مقام پر پینی کر

فر مان مصطفی : (سلی اند مال طیر ال سم) جوجمی مرورود یاک بر هنا مجول گیاد و جنت کاراسته مجول گیا-

پانی منگوایا اورؤضو کیا بھریکا کیک مسکرانے اور رُفقاء سے فرمانے گئے جانے ہو میں کیوں مسکرایا؟ پھر اِس سُوال کاخود ہی جواب دیتے ہوئے فرمایا ایک بارسرکار نامدارصَتی اللہ تعکالی علیہ وَالبہ وَسَالِ کَا حَوْد ہی جواب دیتے ہوئے فرمایا 'ایک بارسرکار نامدارصَتی اللہ تعکالی علیہ وَالبہ وَسَالِ عَلَیْ اللہ وَالْ عَلَیْ مسکرائے سے اورصَحابہ کرام علیم ارضوان سے فرمایا تھا' جانے ہو میں کیوں مسکرایا ؟صَحابہ کرام علیم ارضوان سے فرمایا تھا' جانے ہو میں کیوں مسکرایا ؟صَحابہ کرام علیم ارضوان نے عرض کی' وَاللّه وَرَابُول کا رسول کرام علیم ارضوان نے عرض کی' وَاللّه وَرَابُول عَلیہ وَالبہ وَرَابِ کا رسول عَنْ وَمَنْ الله تَعَالَىٰ علیہ وَالبہ وَالبہ وَرَابِ کا رسول عَنْ وَمَنْ الله تَعَالَىٰ علیہ وَالبہ وَالبہ وَاللّه وَاللّه

پاؤں کے گناہ جھڑ جاتے ہیں''۔لے رمنی دسہ نغالیٰ کہنہ وُضُوکر کے کند ال ہوئے شاوعثال کہا، کیوں تبشم بھلا کرر ہا ہوں؟

جوابِ سُوالِ مخالِف دیا پھر کسی کی ادا کو ادا کررہا ہوں

لم مُنجُفها مسدامام احمد - ١ ص ١٣٠ رقم الحديث ١٥٤ دارالفكر بيروت -

. ف**غر مان مصطف**يا الاس الشقال ميه الدينم) جمل نے مجھ پرانک وُرود پاک پڙ حاالله تعالیٰ اُس پروس (ممتیں مجیجنا ہے۔

صَلُّوا عَلَى الْحبيب! صلَّى الله تعالى على محمّد

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! دیکھا آپ نے ؟ صکابۂ کرام ملیم الرضوان سرکارِ

خیرُ الا نام ضلّی الله تَعَالی علیه وَالهِ وسلّم کی ہر ہرادا اور ہر ہرسٹنت کو دیوانہ وارا پناتے تھے۔ نیز

اس روایت سے گنا ہ دھونے کا نسخہ بھی معلوم ہوگیا۔ البحمدُ للله عَزْ ذَجَلُ وَضُومِیں

گُلّی کرنے سے منہ کے ناک میں پانی ڈال کرصاف کرنے سے ناک کے چیرہ دھونے

سے پُلکول سُمَیت سارے چِمرے کے ٗ ہاتھ دھونے سے ہاتھ کیساتھ ساتھ نا ُٹوں کے نیچے کے ٔسُر (ادرکانوں) کامسح کرنے ہے سرکے ساتھ ساتھ کانوں کے ادریاؤں دھونے

سے یاوُں کےساتھ ساتھ یاوُں کے ناخوں کے نیچے کے گناہ بھی جھڑ جاتے ہیں۔ سے یاوُں کےساتھ ساتھ یاوُں کے ناخوں کے نیچے کے گناہ بھی جھڑ جاتے ہیں۔

گناہ جھڑنے کی حکایت

اَلُحَمُدُ لِللهُ عَزَوْجَلُ وُضُوكِرِنْ والے كَ كَناهِ جَعْرِتْ بِينَ، إِسْ ضَمَن مِينِ ايك ايمان افروز حكايت نقل كرتے ہوئے حضرت

علّا مەعبدالو يّاب شَعر انى قدِ س سرَ ؛ القوراني فر ماتے ہيں: ايك مرتبه سيّدُ ناامام

اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جامع مسجد کوفیہ کے وُضو خانہ میں تشریف

﴾ ﴿ **غو هانِ مصطفعا**: (سنّا منه تان ميه الرائم)جمل نے جمعیز وسم رتبه وُ رُوو پاک پڑھااللہ تعالیٰ اُس پرسور متیں ، زل فرما تاہے۔ ﴿

لے گئے توایک نوجوان کو وُضو بناتے ہوئے دیکھا ،اس سے وضو(میں استعال شدہ یانی) کے قطرے ٹیک رہے تھے۔ آپ نے ارشادفر مایا: اے سٹے! ماں باپ کی نافرمانی سے تو بہ کر لے۔اُس نے فوراُ عرض کی ''میں نے تو بہ کی''۔ایک اور خض کے دُضو(میں استعال ہونے والے یانی) کے قطرے ٹیکتے دیکھے،آپ رمة الله تعالى عليه نے اس شخص سے ارشا دفر مایا ،'اے میرے بھائی تو زنا سے توبہ کرلے''۔اس نے عرض کی''میں نے توبہ کی''۔ایک اور شخص کے وضو کے قطرات مُلِكتے ديکھے تواہے فرمايا''شراب نوشی اور گانے باج سننے سے توبہ كرلے _اس نے عرض كى ''ميں نے توبہ كى'' _سيّدُ ناامام اعظم ابوحنیفه رضی الله تعالی عنہ _ یر کشف کے باعث پُونکہ لوگوں کے عُیُو ب ظاہر ہو جاتے تھے کھذا آپ نے بارگاہِ خداوندی عَزْوَجَلُ میں اِس کشف کے نتم ہوجانے کی وعامانگی ، اللہ عَزُوَجَلَّ نے دِعا قبول فر مالی جس ہے آپ کو وُضو کرنے والوں کے گناہ جھڑتے نظرآ نابند ہو گئے۔ ل

صلوا على الحبيب! صلى الله تقالى على عمد دينه

عُو هان مصطفعً (اللي منه قال مايدال علم) ثم جهال بهي جوجي يرؤرُ وو ياهوتمهاراؤرُ ووجهي تك يهنجا بير

سار ا بدن پاک هوگیا (

دو حدیثوں کاخُلا صہ ہے،''جس نے بسیم اللّٰه کہہ کرؤضو کیااس کا سر سے پاوُں تک ساراجسم پاک ہوگیا۔اورجس نے بغیر بسسم السلْسه کیے وُضو کیا اُس کا اُتنا ہی بدن یاک ہوگا جتنے پریانی گزرا۔'' لے

باؤضو سونے کی فضیلت

حديث پاك ميں ہے كه'' باؤ ضوسونے والا روز ہ ركھ كرعبادت كرنے

والے کی طرح ہے'۔ ع

با وضومرنے والاشہیدہے

مریخ کے تا جدارصلی اللہ تعالیٰ علیہ واله دیلم نے حضرت سیّدُ ناانس منی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا،'' بیٹا!اگرتم ہمیشہ باؤ ضور ہے کی اِستِطاعت رکھوتو ایسا ہی کرو کیونکہ مُلکُ الموت جس بندے کی روح حالتِ وُضومیں قبض کرتا ہے اُس کیلئے شہادت لکھ دی جاتی ہے۔'' سع

لے سنن دارقطنی ج ۱ ص ۱۵۸ ـ ۱۵۹ حدیث ۲۲۹ ـ ۲۲۹ کے کنزالعمال ج ۹ ص ۱۲۳ حدیث ۲۲۹ ـ ۲۲۱ کنزالعمال ج ۹ ص ۱۲۳ حدیث ۲۵۹۹ دارالکتب العذمیة بیروت ـ

خر مان مستكفية : (ملى دفرة الى عليدال منم) جمي في يوري مرجبة الادوري مرجبة المورود بإك في حاأت فيها مت كدن ميرك شفاحت لمح أل-

میرے آقاعلی حضرت امام احمد رضا خان علید رحمة الرطن فرماتے ہیں، 'ہمیشہ باؤضور ہنامُستَّب ہے۔'' لے

مُصيبتوں سے حفاظت کا نسخہ

الله عَزْدَ مَلَّ فَ حَضِرت سِيدُ ناموى كليم الله عَلَىٰ نَسِنَادَ عَلَهُ الصَّادَةُ وَالسَّلامِ سے فرمایا، 'اے موی !اگر بے وضوہونے کی صورت میں تجھے کوئی مصیبت پہنچے تو خودایئے آپ کوملامت کرنا۔'' مع

"بمیشد بافضور بنااسلام کی سنّت ہے۔" سے
"احمد رضا" کے سات گروف کی

نسبت سے ہروقت باؤضور ہے کے سات فضائل

میرے آقا مام المِسدِّت امام احمدرضا خان طیدرہ الرطن فرماتے ہیں، بعض عارِفین (رَحِمَهُمُ اللَّهُ المُبین) نے فرمایا، جو ہمیشہ باؤضور ہے اللّٰہ تعالیٰ اُس کو م

ل فتاوى رضويه ج١ص٢٠٧رضا فاؤنليشن لاهور ك أيضاً على أيضاً

خوصان مصطفع : (مني هذه مان طبه الهدام) مجمو پرو زُود ياك كى كثرت كروب شك بيتمبارے لئے طبارت ب

سات ففیلتوں سے مُثرّ ف فرمائے:۔

(۱) ملائکداس کی صُحبت میں رَغبت کریں (۲) قَلَم اُس کی نیکیاں لکھتارہے (۳) اُس

ك أعضاء تبيح كرين (٤) أس سے تكبيرِ أولى فوت نه مو(٥) جب سوئ الله

تعالی کچھفرشتے بھیج کہ جن وانس کے شرہے اُس کی بھا ظت کریں (۲)سکرات

موت اس برآسان ہو(٧) جب تك باؤضو ہوامان اللي ميں رہے۔ لے

ذكنا ثواب

یقیتاً سردی تھکن یا نزلہ زُ کام ، در دِسراور بیاری میں وضوکرنا دشوار ہوتا

ہے مگر پھر بھی کوئی ایسے وقت وُضو کرے جبکہ وُضو کرنا دشوار ہوتو اس کو حکم حدیث

زُ گنانواب ملے گا۔ مع

وُصُو كا طريقه(عنى)

كعبة الله شريف كى طرف منه كرك أو نجى جگه بيشمنامسخب بـ

و المراقع المعلقة المسلمة المالية الداري جمائل بعل محديدا وبالكوا والمسائل المراقع الم

وُضو کیلئے **قبیت** کرناسنت ہے نتیت دل کے اِرادے کو کہتے ہیں ،دل میں نتیت ہوتے ہوئے زَبان ہے بھی کہہ لیناافضل ہےلہٰذا زَبان سے اِس طرح نیت سیجئے کہ میں ضکم الٰہی ءَــزُوْ حَلَّ بجالا نے اور یا کی حاصِل کرنے کیلئے وُضوکرر ہاہوں ۔ بسم الله كهدييج كدية بحي سقت ہے۔ بلكہ بسم اللهِ وَالحمدُ لِله كهدليجيَّ كه جب تک باؤضور ہیں گے فرشتے نکیاں لکھتے رہیں گے۔اب **دونوں ماتھ** تین تین بار پہنچوں تک دھویئے ، (مل بند کر کے) دونوں ہاتھوں کی اُنگیوں کا خِلا ل بھی سے ہے۔ کیچئے کم از کم تین تین بار دائیں بائیں اُوپر نیچے کے دانتوں میں **مبواک** سیچئے اور هر بارمِسواك كودهو ليجيئه حُجَّةُ الأسلام امام محمّد غز الى على رحمة الله الوالي فرماتے ہیں ،''مِسواک کرتے وُقتُ نَماز میں قران مجید کی قِر اءَت اور ذکرُ الله غـزُوْخِلَ كَيلِيُّهُ مُنه ياك كرنے كى نتيت كرنى جاہئے۔ لے ابسيدھے ہاتھ كے تین چُلو یانی سے (ہر بارنل بند کرے) اس طرح تین کُلیال کیجے کہ ہر مارمند 🕽 راحیاء العلوم ج ۱ ص ۱۸۲ دار الصادر ، بیروت

خوجان مصطفے (ملی استعال ملیه الدوملم) بھو پر کڑت سے اُرود پاک پڑھوب ٹک تبارا جھ پرؤاؤ او پاک پڑھنا تبارے مُن ہوں کیے مفترت ہے۔

کے ہریرڈے پریانی بہ جائے اگرروزہ نہ ہوتو**غُر غُر ہ**بھی کر لیجئے۔ پھرسید ھے بی ہاتھ کے تین کیلو (اب ہر بارآ دھا کیلو یانی کافی ہے) سے (ہر بارال بندکرے) تعمین **بارناک میں** نرم گوشت تک یانی چڑ ھائے اور اگر روزہ نہ ہوتو ناک کی جڑ تک یانی پہنچاہئے ،اب(ٹل بندکر کے) اُلٹے ہاتھ سے ناک صاف کر کیجئے اور چیوٹی اُنگی ناک کےمُوراخوں میں ڈالئے ۔ **تعین بارساراچیرہ** اِس طرح دھوئے کہ جہاں سے عادَ تأسر کے بال أ گنائشروع ہوتے ہیں وہاں سے کیکرٹھوڑی کے نیجے تک اور ایک کان کی لُو سے دوسرے کان کی لُو تک ہر جگہ یانی یہ جائے۔اگر **داڑھی** ہےاور اِحْرام باندھے ہوئے نہیں ہیں تو(ٹل بند کرنے کے بعد) اِسطر ح **خلال** کیجئے کہ اُنگیوں کو گلے کی طرف سے داخِل کر کے سامنے کی طرف نکا لئے ۔ پھر پہلے **سیدھا ہاتھ** اُنگلیوں کے سرے سے دھونا شروع کر کے کہنو ں سمیت تین بار دھویئے ۔ اِی طرح پھ**راُلٹا ہاتھہ** دھو لیجئے ۔ دونوں ہاتھ آ دھے باز و تک

و فوصان مصطفى (سل در تدال مديد در درم) جوجي برائك مرتبد و روش يفسيز حناب الشرقال أس كيل ايف قيراط اجراكهم الدرايد قيراط احد بهاد جناب

دھونا مستحب ہے ۔ا کٹر لوگ مجلو میں یانی لیکر بینیے سے تین مار چھوڑ دیتے ہیں کہ مہنی تک بہتا **جلاجا تا ہے ا**س طرح کرنے سے کھنی اور کلائی کی کروٹوں پر یانی نہ پہنچنے کااندیشہ ہےلہذا بیان کردہ طریقے پر ہاتھ دھویئے۔اب چُلُو بحرکر کہنی تک یانی بہانے کی حاجت نہیں بلکہ (بغیراجازت صححالیا کرنا) **یہ یانی کا إسراف ہے۔**اب(نل بندکر کے)**سرکامشخ** اِس طرح سیجئے کہ دونوںاً نگوٹھوں ادر کلمے کی اُنگلیوں کوچھوڑ کر دونوں ہاتھ کی تین تیں اُنگلیوں کے مِسر ےایک دوسرے سے مِلا کیجئے اور پییٹانی کے بال یا کھال پر ر کھ کر کھینچتے ہوئے گذی تک اِس طرح لے جائے کہ تھیلیاں مَر سے جُدار ہیں ، پھر گذی ہے ہتھیلیاں تھینچتے ہوئے بیشانی تک لے آ ہے ، کلمے کی اُنگلیاں اور اً نگو ٹھے اِس دَوران سَر پر ہالکل مَس نہیں ہونے چاہئیں ، پھر کلمے کی اُنگلیوں ہے کا نوں کی اندرونی سُطّح کا اور اَ تگوٹھوں ہے کا نوں کی باہَری سُطّح کامُشْحْ سیجئے

خوصان مصطفى المقادة مالىد والمائر) مجمد برؤ رُودشر يف برطواللدم بررحمت بيميح كا

اورچھنگلیاں (یعنی چھوٹی اٹکلیاں) کا نوں کے سُوراخوں میں داخِل کیجئے اوراُ نگلیوں کی پُشت سے گردن کے پچھلے حصے کامشٹج سیجئے ،بعض لوگ گلے کا اور د نفلے ہوئے ہاتھوں کی کہنیوں اور کلائیوں کا مُنتخ کرتے ہیں بیسفت نہیں ہے۔**سر کامسنح** رنے سے قبل **نونٹی ایکھی طرح بند کرنے کی عادت بنالیجئے** ہلا وہنل گھلا جھوڑ دینایا اُدھورا بند کرنا کہ یانی ٹیکتا رہے گنا ہ ہے۔اب **بمبلے سیدھا پھراُلٹا یاوُل** ہر باراُنگیوں سے شُر وع کر کے **نخن**وں کے او برتک بلک^مُشخَب ہے ۳ . ۳ كهآ دهمى ينڈ لى تك تين نين باردھو ليجئے ـ دونوں ياؤں كى اُنگليوں كاخِلال كرناسنت ہے۔ (خِلال کے دَوران بل بندر کھئے) اِس کا مُسْتُخَبُ طریقہ بیہ ہے کہ اُلٹے ہاتھ کی پھنگلیا ہےسید ھے یاوُں کی چُھنگلیا کاخِلا ل تُروع کر کےاَ نگو ٹھے برخُتم سیجئے اور اُلٹے ہی ہاتھ کی چھنگلیا ہےاُلٹے یا وَل کےانگو ٹھے سے شروع کر کے چھنگلیا پرختم كريجي . (عامهٔ کُثب)

فرمن مصنف (ملى شفان طيدالدسم) دب تم مُرسلين (يجهم المام) يروز دوياك برحوق عمد يركي يرحوب شك عمل آمام جها تول كرب كارسول يول

دھوتے وقت سامید کرتارہے کہ میرے اس عُفو کے گناہ نکل رہے ہیں لے

صــلُوا عَــلَى الـحبيب! صلَّى الله تعالىٰ علىٰ مُحمّد

وضوك بعديدعا وممى برده ليج (ادّل وآثر دُرورشريف)

اَلَـلُّهُمَّ اجُعَـلُنِي مِنَ التَّوَّابِينَ نوجَمه: الالدَّرْوجُل! مُحَكِّرُت سے

وَ اجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ لَكِ تَلِي تَوْبَكُرْ فَ وَالْوَلَ مِن مِنَا وَ اوْرَجِهِ بِاكْرُو

رہے والول میں شامل کردے۔

جنت کے اعمول دروازے کھل جاتے ہیں

حديث باك ميں ہے، ' جس نے اچھی طرح وُضو كيا اور گلمهُ شہادت

پر هاأس كے لئے جنب كا مفول دروازے كول دينے جاتے بي

جسسے چاہاندردافل ہو۔ سی

لے مُلَخَّصاً احیاء العلوم مترجم ج۱ ض ۳۶٦ کے جامِع ترمذی ج۱ص۹ کُلُلُخُص ازصحیح مسلم ج۱ص۲۲ فنومن مصطفها (ملى الدُنون لمدوال مم) جوجي وروز جدو أزود شريف يزه ها من قيامت كدن أس كي شفاعت كرول كا-

وْضو کے بعد سورۂ قَدر پڑھنے کے فضائل

حديده مبارَك ميں ہے،''جووضوكے بعد ايك مرتبه سُورهٔ قدر پڑھے تو

وہ صِدِّ یقین میں سے ہے اور جودومر تبہ پڑھے تو صُہداء میں شار کیا جائے اور جو تین مرتبہ

رِ عے گاتواللہ عَزُوَ عَلَ میدانِ فَشر میں اسے اپ انبیاء کے ساتھ رکھے گا'۔ لے فطر میں کرورنہ ہو

جووضوك بعد آسان كى طرف ديكهكر سورة إنَّا أنُزلُنه له برُهاياً

الساء الله عَزُوَ حَلَّ أَس كَى نَظر بَهِي كَمْ ورنه موكى - على

صلُّوا على الحبيب! صلَّى اللَّهُ تعالى على محمد

لفُظ،''آلَٰلُہُ'' کے چار حُروف کی نسبت سے وُضو کے چار فرائض

(۱) چېر ه دهونا (۲) ځېنيو ښَميت دونوں پاتھ دهونا (۳) چوتھائی سر کا

ل كنزالعُمّال ج٩ص ١٣٢ حديث ٢٠٨٥ دارالكتب العنصبة بيروت على مسائل القرآن ا٢٩٠

عرجان مصطفیا (صل اند تنالی ملی الدینم) جس نے مجھ پروو زیجھ دومو بارو کروپاک پڑھا اُس کے دوموسال کے گنا و مُعاف بول گے۔

مَسِح كرنا (٤) مُخنول سَميت دونوں پاؤں دھونا _ لِ

دھونے کی تعریف

مسمی عُضو (عُض ۔ ؤ) کو دھونے کے بیمعنیٰ ہیں کہ اس عُضُو کے ہر حصّہ پرکم از کم دوقطرے پانی بہ جائے ۔ صِرف بھیگ جانے یا پانی کوتیل کی طرح چُہَسٹ لینے یا ایک قَطر ہ بہ جانے کو دھونانہیں کہیں گے نہ اِس طرح وُ صُو یاغسل ادا ہوگا ہ^ع

" کرم یا ربّ العلمین" کے چودہ محروف کی نبیت سے وضوی 14 سنتیں

' و شو کاطریقه' (حنی) میں بعض سنّوں اورمُستبات کابیان ہو پُکا ہے

اس کی مزید و ضاحت مُلاحظه فرمائے۔﴿1﴾ نِیت کرنا﴿2﴾ بِسِمِ الله پڑھنا۔ اگر وُضویے قبل بیسے الیلّیہ وَالْحَمُدُلِلّه کہدلیس توجب تک باوُضُور ہیں گے

فرِ شنة نيكيال لكھة رہيں گے " **﴿3﴾** دونوں ہاتھ پہنچوں تک تبن بار دھونا

ل نشاوی عالمگیری ج۱ ص۳ لل مَراقِی الفلاح مع حاشیة الطحطاوی ص۷۰ فتاوی رضویه ج۱ ص۲۱۸رضافاؤنلیشن لل محمع الزوائد ج۱ ص۵۱ محدیث ۲۱۱۲ دارالفکر بیروت ۔ ﴾ پاکسومان مصطعما (ملی ندتول ملید، رہنر) أس مختم كى ناك خاك آلود وجس كے باس ميراؤ كرى واور دو جمھ پرؤ رُود ياك نديز مصل

﴿4﴾ تین بارمِسواک کرنا ﴿5﴾ تین چُلُو سے تین بارگُلّی کرنا ﴿6﴾ روزہ نہ

ہوتو غَرَغَر ہ کرنا ﴿7﴾ تین مُجِلّو ہے تین بارناک میں پانی چڑھانا ﴿8﴾ داڑھی

ہوتو (احرام میں نہ ہونے کی صورت میں) اِس کا خِلال کرنا ﴿9﴾ بِاتھا ور ﴿10﴾

پاؤں کی اُنگلیوں کاخِلال کرنا ﴿11﴾ پورے سر کا ایک ہی بارشح کرنا ﴿12﴾ کانوں کامسح کرنا ﴿13﴾ فرائض میں ترتیب قائم رکھنا (یعنی فرض اَعضاء میں پہلے

منہ پھر ہاتھ گہندوں سُمیت دھونا پھر سر کامُسح کرنااور پھر پاؤں دھونا)اور **﴿14﴾** پے در پے

وُضُوكرنا يعنی ايك عُضوسو كھنے نه پائے كه دوسرا عُضو دهولينا _ ل

"يارسول اللهرز عدركي فضاؤل كوسلام" كسي أنتيسس

خُروف کی نسبت سے وُضُو کے 29مُسْتَحَبّات

﴿1﴾ قبله رُو﴿2﴾ او نجى جگه ﴿3﴾ بيٹھنا﴿4﴾ پانی بہاتے وقت

اَعضاء پر ہاتھ بھیرنا ﴿5﴾ اطمینان سے وُضو کرنا ﴿6﴾ اَعضائے وُضو پر پہلے

ل الدرالمختار معه رُدُّالمحتار ج ١ ص ٢٣٥ ـ فتاوي عالمگيري ج ١ ص٣

ن (منی اند تعانی ملید دار منهم) جس کے پاس میراز کر مواوروہ مجھ پر وُرُورشر بیف نہ پا مھاتو لوگوں بیس وہ مجتوب ترین محل ہے۔ یانی چُپَ ڈ لینانھوصأسر دیوں میں ﴿7﴾ وُضوکرنے میں بغیر طَر ورت کسی ہے مدد نہ لینا﴿8﴾ سیدھے ہاتھ ہے گئی کرنا﴿9﴾ سیدھے ہاتھ سے ناک میں یانی چڑھانا ﴿10﴾ اُلٹے ہاتھ سے ناک صاف کرنا ﴿11﴾ اُلٹے ہاتھ ک چھنگلیا ناک میں ڈالنا ﴿12﴾ اُنگلیوں کی پُشت سے گردن کی پُشت کا مسمح کرنا **﴿13﴾** كانوں كامَسَح كرتے وقت بھيگى ہوكى چَھنگلياں كانوں كے سُوراخوں ميں داخِل كرنا ﴿14﴾ أَنْكُوهِي كوحركت دينا جب كه وْهيلي مواوريه يقين موكه إس کے پنیچ یانی بہ گیا ہے اگر سخت ہوتو حرکت دیکر انگوشی کے پنیچ یانی بہانا فرض ہے۔ لے **﴿15﴾** مَعدْ درِشَرْ عی (اس کے تفصیلی أحکام اِس رسالے کے صفحہ 45 تا 45 یر مُلا کظه فر ما کیجئے) نہ ہوتو نُماز کا وقت ثُمر وع ہونے سے پہلے ہی وُضو کر لیٹا ﴿16﴾ جو کامل طور پروُضو کرتا ہے یعنی جس کی کوئی جگہ یانی بہنے سے نہ رَہ جاتی ہواُ س کا عُمو وَں (یعنی ناک کی طرف آنکھوں کے کونے) طخو ں' اُمڑیوں ، تلووں ، ل نحلاصة الفتاويٰ ج١ص٢٣

۔ فطر مان مصطنع (سل شقال ملاء الدينم) جس كے پاس ميرا ذكر موااوراً س نے دُرُو دشريف نه پڑھا اُس نے جفا كى۔

کونچوں (أیریوں کے اوپرمونے چٹنے) گھائیوں (اُنگیوں کے درمیان والی جگہ) ، اور ^{گہ}نیوں کا نُصوصیت کے ساتھ خیال رکھنا اور بے خیالی کرنے والوں کے لئے تو فَرْضَ ہے کہان جگہوں کا خاص خیال رکھیں کہا کثر دیکھا گیا ہے کہ یہ جگہیں ۔ نحشک رَہ جاتی ہیں اور یہ بے خیالی ہی کا نتیجہ ہے ایسی بے خیالی حرام ہے اور خيال ركھنا فرض - لِ ﴿17﴾ وُضو كالوٹا ٱلٹی طرف رکھئے اگرطشت یا پتیلی وغیرہ سے وُضوکریں توسیدھی جانب رکھئے ﴿18﴾ چِمرہ دھوتے وقت پیشانی پراس طرح پھیلا کریانی ڈالنا کہاُویر کا کچھ ھتہ بھی دُھل جائے ﴿19﴾ چمرے اور **﴿20﴾ ہاتھ یاؤں کی روشی وسیع کرنا لیعنی جنتنی جگہ یانی بہانا فرض ہے اس کے** اطراف میں کچھ بڑھانامَٹُلُا ہاتھ گہنی سے اویر آ دھے بازو تک اوریا دُل مُحنوں سے اوپر آ دھی بینڈ لی تک دھونا ﴿ 21 ﴾ دونوں ہاتھوں سے مُنہ دھونا ﴿ 22 ﴾ ہاتھ یاؤں دھونے میں اُنگلیوں سے شُر وع کرنا ﴿23﴾ ہرعُضُو دھونے کے بعداس پر

_ لم بهار شریعت حصه۲ ص۹ مدینهٔ المرشد بریلی شریف

، پاس مراد را در در در در در در ماند تا ما ماد اله المراد من المراد المراد المراد من مجمور در در در در الماند من المراد
ہاتھ پھیر کر یُوندیں ٹیکادینا تا کہ بدن یا کپڑے پرنڈ پکیں خُصُوصاً جبکہ مسجد میں جانا ہو کہ فرشِ مسجد پر وُضو کے بانی کے قطرے گرانا مکر ووٹیحر کی ہے **لے 24 ﴾** ہر عُضْوُ کے دھوتے وقت اورمسح کرتے وقت نتیت وُضو کا حاضِر رَہنا ﴿ 25﴾ ابتداء میں بسے اللّے کے ساتھ ساتھ دُرُ ودشریف اور کیلمہ شہادت بڑھ لینا ﴿26﴾ أغصائے وُضو بلا ضَر ورت نہ يُونچھيں اگر يونچھنا ہو تب بھی بلا ضَر ورت بالكل نحشک نہ کریں کچھ تری باقی رکھیں کہ بروزِ قیامت نیکیوں کے بلڑے میں رکھی جائے گی ﴿27﴾ وُضو کے بعد ہاتھ نہھ فکیں کہ شیطان کا پنکھا ہے کے ﴿28﴾ بعدد وُضومِیا نی (یعنی یا جامہ کاوہ ه*ضه جو بی*ثاب گاہ کے قریب ہوتا ہے) پریانی چ*ھڑ* کنا۔ سلے (یانی چھڑ کتے وقت میانی کو گرتے کے دامن میں چھیائے رکھنا مناسِب ہے نیز وضو کرتے وقت بھی بکہ ہرونت میانی کوٹرتے کے دامن یا جاور وغیرہ کے ذَر بعد چھیائے رکھنا حیا کے قریب ہے) ﴿ 29 ﴾

لے نُحلاصه ازا لبحر الرائق ج ۲ ص ۵۳۰ بهارِ شریعت حصّه ۲ ص ۲۰ مدینة المرشد بریلی شریف کے کسنزُالـعُــمّـــال ج ۹ ص ۱۳۶ حدیث ۲۱۳۳ ببیروت کے کسنزُالـعُـمّــال ج ۹ ص ۱۳۶ حدیث ۲۲۱۰۱ بیروت

فوجان مصطفیا (ملیانة تدنی ملیده ارمنر) جس نے مجھ پرا کیک بارؤ رودیا ک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پروس رحمتیں محیتیا ہے۔

(۱) وُضوكيكِ نا پاک جگه پر بيٹھنا (۲) نا پاک جگه وُضوكا پانی گرانا (۳) اُغھائے وُضو سے لوٹے وغیرہ میں قطرے شپکانا (منہ دھوتے وقت بحرے ہوئے جُلِو میں اُغُمّر ہے شپکانا (منہ دھوتے وقت بحرے ہوئے جُلِو میں اُغُمُو مَا چِمر ہے ۔ پانی کے قطرے گرتے ہیں اس کا خیال رکھے) (٤) قبله کی طرف تھوک یا بلغم وُ النا یا گلی کرنا (۵) زیادہ و پانی خُرج کرنا (حضرت صَد زَائشَر بعیمقا مہمولینا مفتی امجد علی صاحب رہ اند تعالی عیہ 'بہارشر بعت' صَد دُوم صَفَحَه نبر ۲۳ ہمدیة الرشد بر بی شریف میں فرماتے ہیں: ناک میں پانی والے وقت آ دھا چُلو کانی ہے تو اب پورا چُلو لینا شریف میں فرماتے ہیں: ناک میں پانی والے وقت آ دھا چُلو کانی ہے تو اب پورا چُلو لینا اُمراف ہے) (۲) انتا کم پانی خرج کرنا کہ سقت اوا نہ ہو (بَرَ حال اُوئی نہاتی زیادہ کھولیں کہ پانی حاجت سے زیادہ گرے نہائی کم کھولیں کہ سنت بھی ادانہ ہو بلکہ مُنت وَسِّط کیولیں کہ بانی حاجمت ہو کہا کی منہ پر پانی مارنا (۸) اُن پر پانی وائی وقت پُھونکنا (۹) ایک ہاتھ

فو صان مصطفع المسل الد تعالى عليه الدمنم) جب تم مرطون (جران ما ماروز دو باكر) حق تركي يرم بي نك من قدام جهانول كروب كارمول بون -

ہے منہ دھونا کدرَ وافض اور ہندوؤں کاشِعار ہے(۱۰) گلے کامسے کرنا(۱۱) اُلٹے

ہاتھ نے گئی کرنایاناک میں پانی چڑھانا (۱۲) سیدھے ہاتھ سے ناک صاف کرنا س (۱۳) تبین جدیدیانیوں سے تین بارسر کامنے کرنا (۱۶) دھوپ کے گرم یانی سے

رم وضوکرنا (۱۵) ہونٹ یا آئکھیں زور سے بند کرنا اورا گریچھ سُو کھا رَہ گیا تووُضو ہی

نہ ہوگا۔ؤضوکی ہرسنت کا ترک مروہ ہے اِس طرح ہر مگردہ کا ترک سنت لے

مُسْتَعُمل پانی کا اَهَمَ مسئله

ا الربے وضوَّحْص کا ہاتھ یا اُنگل کا پَورایا ناحُن یابدن کا کوئی لکڑا جو وُضو

۱۳۵ ۲۵ میں دھویا جا تا ہو جان بو جھ کریا بھول کر دَہ دَردَہ (یعنی سو ہاتھ البچیس گز ادوسو بجیس

نُک، علی سے کم پانی (مَثَلُ پانی ہے بھری ہوئی بالٹی یالوٹے دغیرہ) میں پڑجائے تو پانی مُستَعْصَل (بعنی استِعال فدہ) ہو گیا اوراب وُضوا ورشس کے لاکق نہ رہا۔ اِی طرح

جس پڑنسل فرض ہواس کے جسم کا کوئی بے دُ ھلا ہواھتیہ پانی ہے چھو جائے تو وہ

ل بهارِ شربعت حصه ۲ ص ۲ ۲ مدینة المرشِد بریلی شریف ل فتاوی مُصطَّفُوبِه ص ۲ ۳ مدینة المرشِد بریلی شریف ل فتاوی مُصطَّفُوبِه ص ۲ ۳ مشبر برادرز لاهور

ِیانی وُضواورغُسل کے کام کاندرہا۔ہاں اگر دُ ھلاہاتھ یا دُ ھلے ہوئے بدن کا کوئی ھئے۔ پڑجائے تو کرئے نہیں۔ **ل**ے (مُسْمَنَہ شَمْمَ لَ پانی اور وُضوو عُسل کے تفصیلی اُ دکام س<u>کھنے کیلئے</u> بہارِشریعت ھنے ۲ کامُطالعَہ فرمائے)

بإن كعانے والے مُتَوَجِّه موں

میوم آقا اعلیٰحضرت اِمام اَهلسنت، ولئ نِعمت،عظیم البَرَکت، عظیم البَرَکت، عظیم المَرتَبت، پروانهٔ شَمْع رِسالت، مُجَدِّد دِین ومِلَّت، حامی سنّت، ماجی بِدعت، عالِم شَرِیْعَت، پیرِ طریقت، باعِثِ خَیْر وبَرَکت، حضرتِ علامه مولینا الحاج الحافظ القاری الشّاه امام آحمد رَضا خان عَلیهِرَکمهُ الرُّکهُ مُن فرماتے ہیں، پانوں کے کثرت سے عادی تُصُوصاً جَبُددانوں میں فَعا (گیپ) ہوتجر بہ سے جانتے ہیں چھالیہ کے باریک رَیزے اور پان کے بَہُت چھوٹے چھوٹے چھوٹے کے باریک رَیزے اور پان کے بَہُت چھوٹے چھوٹے کے کو کے کا مراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں (یعنی جھوٹے کی اس طرح منہ کے اطراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں (یعنی سے ہوتے کی اس طرح منہ کے اطراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں (یعنی سے ہوتے کی اس طرح منہ کے اطراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں (یعنی سے ہوتے کی اس طرح منہ کے اطراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں (یعنی سے ہوتے کی اس طرح منہ کے اطراف واکناف میں جاگرہوتے ہیں دینے

فو جان مسطقها: (مل الذ قال مليالب منم) جس نے جمهر دسم رتبه ؤ رود پاک پڑھاللہ تعالیٰ اس پرسومتیں باز ل فرما تا ہے۔

ا ۱۳ ا، کونوں اور دانتوں کے کھانچوں میں گفس جاتے ہیں) کہ تین بلکہ بھی دس بارہ

نکال سکتاہے نہ مسواک ہوا گلیوں کے کہ پانی مُنافِذ (بعنی سُوراخوں) میں داخِل ہوتا اور جُنبِشیں دینے (بعنی ہلانے) سے جمے ہوئے باریک ذرّوں کو بَعَد رِنج چُھڑا

چُھڑ اکرلاتا ہے،اِس کی بھی کو کی تَحَدِید (حد بندی)نہیں ہو عمق اور بیکا مِل تَصْفِیہ (یعنی مکتل صفائی) بھی بَہُت مُسؤُ تِحَسد (یعنی اِس کی خت تا کید) ہے مُعَتَّعَدَّ واحادیث میں

سس صفاق) ہی جہت مصنو جگہ (یق اِس صفاع اید) ہے معکد داخاریت میں ارشاد ہواہے کہ جب بندہ نما زکو کھڑ اہوتا ہے فِرِ شتہ اُس کے منہ پراپنا مندر کھتا ہے

یہ جو بڑھتا ہے اِس کے منہ سے نکل کر فرِ شتے کے منہ میں جاتا ہے اُس وقت اگر کھانے کی کوئی شنے اس کے دانتوں میں ہوتی ہے ملائکہ کواُس سے الی سخت ایذ ا

ہوتی ہے کہاورشے سے نہیں ہوتی۔

مُضُورِ إلرم ، نورِ جُسَّم ، شاوِ بن آوم ، رسولِ مُحْتَشَم صلى الله تعالى عليه والب

وسلَم نے فرمایا، جبتم میں سے کوئی رات کوئماز کیلئے کھڑا ہوتو جاہئے ، کہ مِسواک

فد مان مصطفياً : (سل اند تال مد والدسم) تم جهال بھی بوجھ پرؤ رُود پر هوتمهار اؤ رود جھ تک پہنچا ہے۔

کرلے کیونکہ جب وہ اپنی نئماز میں قراءُت (قرُ اءءَت) کرتا ہے تو فِرِ شتہ اپنامنہ اِس کے منہ پررکھ لیتا ہے اور جو چیز اِس کے منہ سے نگلتی ہے وہ فِرِ شتہ کے منہ میں داخِل ہوجاتی ہے۔ لے اور طَجسَر انسی نے کَبِیسِ میں حضرتِ سِیْدُ ناابوا یُو ب انصاری رضی اللہ تعالیٰءنہ سے روایت کی ہے کہ دونوں فِرِ شتوں پراس سے زیادہ کوئی چیز گرال نہیں کہ وُ ہ اپنے ساتھی کوئماز پڑھتا دیکھیں اور اس کے دانتوں میں

کھانے کے زیزے کھنے ہوں۔ ع

تصوُّف کا عظیم مَدَنی نسخہ

حُسجَّةُ الاسلام امام محمر غز الى عليه رحمة الله الوالى فرمات بين، 'وُضو ب

فراغت کے بعد جب آپ نَماز کی طرف مُتَوجِه ہوں اُس ونت بی تھو ُر سیجئے کہ

جن ظاہری اُنحضاء پرلوگوں کی نظر پڑتی ہے وہ تو بظاہر طاہر (بینی پاک) ہو چکے مگر م

لے کنزُ الْعُمَّالَ ج ٩ ص ٣١٩ کی مُعجم الکبیر ج ٤ ص ١٧٧ فتاوی رضویه ج اوّل ص ١٧٧ زصا فاؤندیشن مرکمز الراولیا، لاعور _

فوجان مصطفع : (سلى الدتال بدوار بلم) جم في جم يدي مرجرة الدون مرجرة المردود باك يوماأ ي قيامت كدن بمرك شفاعت مع ك-

ول کو پاک کئے بغیر بارگاہ اللی عَرُوحَلَ میں مُناجات کرنا حیا کے خِلا ف ہے کیوں

كهالله غهزَّوْ هَا دلوں كو بھى دىكھنے والا ہے۔ مزيدِ فرماتے ہيں ، ظاہرى ؤضوكر لينے

والے کو بیہ بات یا در کھنی حاہیے کہ دل کی طہارت (یعنی صفائی) تو بہ کرنے اور '

گناہوں کو چھوڑنے اور عمدہ اَخلاق اپنانے سے ہوتی ہے۔ جو خص دل کو گناہوں

کی آگود گیوں ہے پا کے نہیں کرتا فقط ظاہری طہارت (بعنی صفائی)اور ذَیب وزینت

پر اِ کیفاء کرتا ہے اُس کی مثال اُ س مخص کی ہے جو بادشاہ کو مَدعوکرتا ہے اور اپنے

گھر بارکو بابھر سے خوب چپکا تا ہے اور رنگ وروغن کرتا ہے مگر مکان کے اندرونی صفے

کی صُفائی پر کوئی تو بجہ نہیں ویتا ۔ پُٹانچہ جب بادشاہ اُس کے مکان کے اندر آ کم سے میں سے مکان کے اندر آ

گندگیاں دیکھے گا تووہ ٹاراض ہوگا یاراض ئیہ ہرذی شُعُورخود بجھ سکتا ہے۔ ل

لمُ مُلحَص از:احياء العلوم جلداوَل صفحه ١٨٥ مطبوعه دارصادربيروت

"صُبْر كر" كى بالخ كروف كى نبت سے ذخم وغيره سے خون نكلنے كے ٥ أ كام

(۱) خون، پیپ یا زَرْد پانی کہیں سے نکل کر بہااورا سکے بہنے میں

الیی جگہ پہنچنے کی صَلاحِیت تھی جس جگہ کاؤضو یاغسل میں دھونا فرض ہے توؤضو جا تا

رہا۔ لے (۲) خون اگر چیکا یا اُبھرااور بہانہیں جیسے مُو کی کی نوک یا جیا تو کا گنارہ

لگ جاتا ہےاورخون أبھریا چمک جاتا ہے یاخلال کیایامسواک کی یا اُنگل ہے

دانت مانخھے یا دانت ہے کوئی چیزمَثُلُ سیب دغیرہ کاٹااس پرخون کااثر ظاہر ہوایا ناک میں اُنگل ڈالی اِس برخون کی سُرخی آگئی مگر وہ خون بہنے کے قابل نہ تھاؤضونہیں

ٹو ٹا۔ **یے (۳)**اگر بَہا مگر بہ کرایسی جگہنیں آیا جس کاغنسل یاؤضو میں دھو نا فرض

ہومَثَلَا آ نکھ میں دانہ تھا اور ٹوٹ کراندر ہی تھیل گیا باہر نہیں نکا یا پیپیا خون کان کے

ل الدرالمد ختارمعه ردالمحتارج ١ ص ٢٨٦ كم مُلخص ازفتاوي رضويه ج١ ص ٢٨٠ رضا

فاؤبذ يشن لاهورأأ

خو**جان مستنف**ظ ((طی اندانیال بادان یقم) جمب شکتاب پی بچه دود دیاک تکلیا و بستک براه م آس کتاب شده به به فرخته ای بینی ستخد و بیات به در بیات و بیات به در بیات به بین شد.

سُوراخوں کے اندر ہی رہا باہر نہ نکلا تو ان صورَ توں میں وُضونہ وُ ٹا **اِل کا)** زُخْم بے

شک بردا ہے رُطوبت چیک رہی ہے گر جب تک بہے گی نہیں وُضونہیں توٹے گا۔ م

(۵) زخم کا خون بار بار پُو نچھتے رہے کہ بہنے کی نُو بت نہ آ کی تو غور کر لیجئے کہ اگر

ا تناخون پُونچھ لیا ہے کہ اگر نہ پُونچھتے تو بہ جاتا توؤضوٹوٹ گیانہیں تونہیں۔ سے

انجكش لكاني سي وُضو ثوثي كا يا نهير؟

(1) گوشت میں انجکشن لگانے میں صِرْ ف اِسی صورت میں وُضورُو لے

گاجب کہ بہنے کی مقدار میں خون ن<u>گلے (۲) جب ک</u>ئس کا انجکشن لگا کر پہلے او پر

کی طرف خون تھینچتے ہیں جو کہ بہنے کی مقدار میں ہوتا ہے لطند اؤ ضوٹوٹ جاتا ہے۔

(٣) إى طرح گلوكوز وغيره كى ۋرپئس ميںلگوانے سے وُضوتُوٹ جائيگا كيوں

کہ بہنے کی مِقدار حیں خون نکل کرنگی میں آجا تا ہے۔ ہاں اگر بالفرض بہنے کی مقدار

لِمُنْخُص ازفتاوى رضويه ج١ ص ٢٨٠ رضا فاؤند يشن لاهور لل ايضاً كل ايضاً

خر مان مصطفيے (ملى الله تعالى عليد البيام) جمي بركتر ت سي وُرود باك پر موب الك تهم اراجي برورد باك بر هن تهمار كابول كيليم مفرت ب

میں خون نکی میں نہ آئے تو وُضونہیں ٹوٹے گا (٤) ہمر نج کے ذَرِیعے ٹمیٹ کرنے کے لئے خون نکالنے سے وُضوٹوٹ جا تا ہے کیونکہ یہ بہنے کی مقدار میں ہوتا ہے ای لئے بیخون پیشاب کی طرح نایا ک بھی ہوتا ہے اِس خون سے بھری

ہوئی شیش جیب میں رک*ھ کر نم*از نہ پڑھئے۔

دُکھتی آنکھ کے آنسو

(1) آنکھ کی بیاری کے سبب جوآنسو بہاوہ نایاک ہے اور وُضوبھی تو ڑ

دیگا۔ لے افسوں اکٹرلوگ اِس مسئلہ (مُس ٓءَ۔ لَهُ)سے ناواقِف ہوتے ہیں اور

ڈکھتی آنکھ سے بوجبہ مرض بہنے والے آنسو کو اور آنسوؤں کی مانند تنجھ کر آستین یا مر

کُرتے کے دامن وغیرہ سے پُونچھ کر کپڑے ناپاک کرڈالتے ہیں۔(۲) نابینا کی سے میں میں نہاہ

آ نکھ سے جوڑ طُوبت بوجہِ مرض نکلتی ہے وہ ناپاک ہےاوراس سے وُضوبھی ٹوٹ جاتا ہے ک**ل (۲)** جوڑطوبت انسانی بدن سے نکلےاور وُضونہ تو ڑے وہ ناپاک

لدرالمختارمعه ردالمحتار ج١ ص ٤ ٥ ٥ كل الدرالمختارمعه ردالمحتار ج١ ص ٤ ٥ ٥ ٥ الدرالمختار معار ج١ ص

فرجان مصطفيا (سل مدتن ليدوريه منم) جوجم يراك مرتبدة أووثريف إحتاب القدتواني أس كيليج اليك تيراط الإلكتا وراكيت تيراط احديها زجتنا ي

نہیں۔ ل مَثَلُ خون یا بیپ بہدکرنہ نکلے یاتھوڑی نے کہ مند بھرنہ ہو پاک ہے۔

چھالا اور پھڑیا

(1) جيمالانوچ ڏالاا گراس کا پاني به گيا توؤ ضوڻو ڪ گيا در ننهيس ۽ ع

(۲) پُھو یاباِ لکل اچھی ہوگئی اس کی مُر دہ کھال باقی ہے جس میں او پر منداورا ندر

خَلا ہے اگر اس میں پانی بھر گیا اور د با کر نکالا تو نہ وُضو جائے نہ وہ پانی نا پاک ہے ہے

ہاں اگر اُس کے اندر کچھ تری خون وغیرہ کی باقی ہے توؤضو بھی جاتارہے گا اوروہ

پانی بھی نا پاک ہے۔ بی (۳) خارش یا پھڑ یوں میں اگر ہنے والی رُطوبت نہ ہو

مِر ف چِپک ہواور کپڑ ااس سے بار بار چھو کر چاہے کتنا ہی مَن جائے پاک ہے۔ **ہ**

(٤) ناك صاف كى اس ميں سے جَما ہوا خون لَكلاؤ ضوندڻو ٹاءاَ نُسب (يعني زيادہ

منابب) بدہے کہ وضوکرے۔ ل

ل ماحود از فتاوی رضویه تحریج شده ج۱ص ۲۸۰ کی فتح القدیر ج۱ص۳۶

کے تحالاصة الفتاوی ج۱ ص۱۷ کے فتساوی رضویت تنجریج شدہ ج۱ص۳۵ رضا فاؤنڈیشن 🙆 ماخوذ ازفتاوی رضویہ تخریج شدہ ج۱ص۲۸۰ کے ایضاً ص۲۸۱ 49)

فرمان مصطفى السادة منال بادار الراجي يردُرُ ووشريف برهواللدم يردحت بصيح كار

قے سے کب وضوار ناہے

(۱٤) منه بھرتے کھانے' پانی ماصفرا (یعنی پیلے رنگ کا کڑوا پانی) کی

وُضُوتُو رُ دیتی ہے۔جوقے تُکُلُّف کے بغیر نہ روکی جاسکے اسے منہ بھر کہتے ہیں۔

منه بھرئے پیشاب کی طرح ناپاک ہوتی ہےاسکے چھیٹوں سےاپنے کپڑےاور

بدن کو بچا نا*ضر* وری ہے۔ **ل**ے

مننے کے احکام

(1) رُكوع ومُجُودوالى نَماز ميں بالغ نے قَهَتَهد لگاديا يعني اتني آواز ہے

ہنسا کہآس پاس والوں نے سناتو وُضوبھی گیااورنما زبھی گٹی،اگراتنی آ واز ہے ہنسا

کہ صِر ف خودسنا تو نمازگی وُضو ہاتی ہے مُسکر انے سے نہ نماز جائے گی نہ وُضو ۔ ۲

مُسكرانے میں آواز بالكل نہيں ہوتی صرف دانت ظاہر ہوتے ہیں۔ (۲) بالغ

نے نَمازِ جِنازہ میں قَبَقَہدلگایا تو نَماز ٹوٹ گئوضو باقی ہے۔ **سی**(۲۱) نَماز کے علاوہ

الدر المحتار معردالمحتار ج١ص٩٨٦ مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٩١ لم لُـ أَيْضاً ي خدهان مصطفيها (صلى الذاتياني طيه الدومنم) درسبة تم توسكين (جيم الدوم) و أورو يأك يؤهم تي تكي يؤهم سب تنك جن تام جهانول كرب كارمول بول - 👸

قَبَقَہِ لگانے سے وُضونہیں جاتا مگر دوبارہ کر لینامُستخب ہے۔ لے ہمارے میٹھے میٹھے آتا قاصَلَی اللّہ تَعَالٰ علیہ وَ الہ وَسلَم نے مِسمی بھی قَهَقَهِ نہیں لگا یا للبذا ہمیں بھی کوششش کرنی

چاہیے کہ بیسنت بھی زِندہ ہواور ہم زورز ورسے نہنسیں۔ **غیر مانِ مصط**فلے

صلى الله تعالى عليه والدوسلم: التَّبَسُّمُ مِنَ اللَّهِ تعالىٰ وَالْقَهُقَهَةُ مِنَ الشَّيطُنِ لِيعِي مُسكرانا

الله عَزْوَ حَلُ كَ طرف سے ہاور قَهَ مَه شيطان كَ طرف سے ہے۔ كے كيا مِنْ وَ ديكھنے سے وضواتو سے جا تا ہے؟

عوام میں مشہور ہے کہ گھٹنا یا سِنر گھلنے یا پنایا پرایاسِٹر ویکھنے سے وضوثوث

جاتا ہے یہ بالکل غلط ہے۔ معلی ہاں وُضو کے آ داب سے ہے کہ ناف سے لے کر دونوں گھٹنوں سَمیت سب سِٹر چُھیا ہو بلکہ اِستِنجاء کے بعد فورا ہی چُھیالینا چاہئے۔ بی کہ بغیر ضَر ورت سِٹر گھلا رکھنامُنع اور دوسرون کے سامنے سِٹر کھولنا حرام ہے۔

ل مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص ٤ ٨ كل المعجم الصغير للطبراني من اسمه محمد جز٢،ص ١٠٤ دارالكتب العلميه بيروت مجملا الوذ ازفتاوي رضويه ج١ص ٢٥٣ رضا فاؤ نديشن

كي غنية المستعلى ص٣٠

موسان مصطفیا (سلیاند قال عیدالد به نم) جو مجھ پر روز جعد ؤ رُ ووشریف پڑھے گا میں قبیا مت کے دن اُس کی شفاعت کرو**ں گا۔**

غسل کا وُضو کافی ھے

عسل کے لیے جو وضو کیا تھاؤ ہی کافی ہے خواہ بر ہُنہ (ب۔رَہ ۔ مَد)

نہائیں۔اب شل کے بعد دوبارہ وضو کرناظر وری نہیں بلکہ اگر وُضونہ بھی کیا ہوتو

عنسل کر لینے سے اعضائے وُضو پر بھی پانی بہ جاتا ہے لہٰذاؤ ضوبھی ہو گیا ، کیڑے

تبديل كرنے سے بھى ۇضۇنبين جاتا۔

تفوك مين خون

(1) مُنه سےخون نکلاا گرتھوک پر غالب ہے توؤضوٹوٹ جائے گاورنہ

نہیں، غلّبہ کی شَنا خت میہ ہے کہ اگر تھوک کا رنگ سُمر خ ہوجائے تو خون غالب

سمجھا جائے گا اور وُضوٹوٹ جائرگا پیمُر خ تھوک نا پاک بھی ہے۔ا گرتھوک زَ ردہو معرف سے م

تو خون پرتھوک غالب مانا جائے گالہٰ ذانہ وُضوٹو ٹے گانہ بید ذَردتھوک نا پاک۔ لیے (۲) مُنہ سے اتنا خون نکلا کہ تھوک سُرخ ہو گیاا ورلوٹے یا گلاس سے منہ لگا کر گُلّی

ا بـ بـ <u>ـ لـيــن</u>ه

🕹 الدوالمختا و معه ودالمحتارج ١ ص ٢٩١.

يٍّ في هذه و مصطفة (ملن احتدال عبد الربائع) جمل في مجمد يرد وزيمُحد ووسو باروُ رُود ياك يز ها أس كه وسوسال ك "ناومُعاف بول ك-

کے لئے یانی لیا تو لوٹا گلاس اورگل یانی نجس ہو گیا لہٰذاایسے موقع پر جُلَو میں یانی لے کر اِحتِیاط سے گفی سیجئے اور رہی بھی احتیاط فر مائے کہ چھینٹے اُڑ کرآ کیے کپڑوں وغيره برنديزي-

دودہ پیتے بچّے کا پیشاب اور تے

(1) ایک دن کے دود ھیتے بیچ کا بیٹا بھی ای طرح نایاک ہے

جس طرح عام لوگوں کا۔ لے (۲) دودھ میتے بتجے نے دودھ ڈال دیااوروہ مُنہ

بھر ہے تو (یہ بھی پیثاب ہی کی طرح) نایا ک ہے ہاں اگریپہ دودھ معد ہ تک نہیں

بہنیاصرف سینے تک بہنچ کریلٹ آیاتویاک ہے۔ ع

وْضُو مِیں شك آنے کے ۱ اُحکام

(1) اگر دَ دران وُضوکسی عُضُو کے دھونے میں شک داقع ہواوراگریہ

لِ الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص٧٤٥ 🛴 بهار شریعت حصه ۲ ص ۲ مدینة الرشد بریلی شریف

غو مان مصطفیا : (سل اند تال مایدال بینم)جم نے مجھ پرایک ؤ رُود پاک پڑ ھاانلہ تعالیٰ اُس پر دس رحمتیں بھیجا ہے۔

زندگی کا پہلا داقِعہ ہے تو اِس کو دھولیجئے اور اگر اکثر شک پڑا کرتا ہے تو اس کی طرف توجُہ نہ دیجئے ۔ اگر اِسی طرح بعدِ وُضوبھی شک پڑے تو اِس کا کچھ خیال

مت کیجئے۔ **لے (۲)** آپ باؤضو تھےاب شک آنے لگا کہ پیانہیں وُضو ہے یا

نبیں، الی صورت میں آپ باؤضو ہیں کیونکہ حِرْف شک سے وُضُونییں ٹوٹا میں

(٣)وُءَ ہے کی صورت میں اِحتِیاطاؤ ضوکرناا حِتیاطنہیں اِتباعِ شیطان ہے۔

(٤) يقينا آپ اُس ونت تک باؤضو ہیں جب تک وُضوٹو نے کا ایسا یقین نہ

ہوجائے کہ مسم کھاسکیں۔(۵) یہ یاد ہے کہ کوئی عُفو دھونے سے رَہ گیا ہے مگریہ

يادنېيں کون سائحظۇ تھا تو باياں (يعنی اُلا) پاؤں دھو ليجئے۔ سط

عُتّا جِمُوجِائِ تُو!

عملاً جسم سے چھو جانے سے کیڑے ناپاک نہیں ہوتے جاہے گئے کا

ل الدرالمختار معه ردالمحتار ج ١ ص ٣٠٩ في الدرالمختار معه ردالمحتار ج ١ ص ٣٠٩ في الدرالمختار معه ردالمحتار ج ١ ص ٣٠٩ في الدُّر المختار معه ردالمحتار ج ١ ص ٣٠٩

خوصاني مصطفياً: (مليط قال مليدا بديلم) جم ن جي يول مرجب كاودة بمرجب ثام ودو إكرخ حاأت قيامت كدان مرك فظامت في ك-

ہم ترہو۔ لہاں کتے کا لُعاب ناپاک ہے۔ ع مونے سے وضوائو شنے اور نہاؤ شنے کا بیان

نیندے وضوٹو منے کی دو شرطیں ہیں:۔(۱) دونوں سُرِین ایکھی طرح

جے ہوئے نہ ہوں ۔(۲) ایس حالت پرسویا جو غافِل ہوکرسونے میں رُکاوٹ نہ

ہو۔ جب دونوں شَرطیں جمع ہوں یعنی سُرِین بھی اہتھی طرح جے ہوئے نہ ہوں نیز

الی حالت میں سویا ہوجو غافل ہوکر سونے میں رُکاوٹ نہ ہوتو الی نیندوضو کوتو رُ

دیت ہے۔اگرایک شرط پائی جائے اور دوسری ندپائی جائے تو وضوئیں او فے گا۔

سونے کے وہ دس انداز جن سے وضویس ٹو فقا:۔(۱)اس طرح بیٹھنا کہ

دونوں شرِین زمین پر ہوں اور دونوں پاؤں ایک طرف پھیلائے ہوں۔ ﴿ عُرَى ، زبل ، اور بس کی سیٹ پر بیٹنے کا بھی دی تھم ہے ﴾ (۲) اس طرح بیٹھنا کہ دونوں سُرِین

> م لم ماحوذ از فتاوی رضویه ج٤ص٢٥٥ رضا فاؤنڈیشن لاهور لک المرالمحتار معه ردالمحتار ج١ص٥٢٩

فوصان مصطفعة: (ملى الشقال طيدالديم)جس في جمعيروس مرتبداً أدوياك يرم ها الشاقوا في أس يرمور حتي بازل فرما تا ہے۔

زمین بر ہوں اور پنڈ لیوں کو دونوں ہاتھوں کے حلقے میں لے لےخواہ ہاتھ زمین وغیرہ پر یا سر گھٹنوں پر رکھ لے (۳) جار زائو یعنی پالتی (چوکڑی) مارکر بیٹھے خواہ ز مین یا تُخت یا جاریا کی وغیرہ پر ہو(٤) دوزا ٹوسیدھا بیٹھا ہو(۵) گھوڑے یا خَبِیّر وغیره بر زین رکھ کرسُوار ہو(۲)نتگی پیٹھ برسُوار ہومگر جانور ج ٌ هائی پر ج ٌ ه رہا ہویا راستہ بموار ہو(۷) تکیہ سے فیک لگا کراس طرح بیٹھا ہو کوئٹرین جے ہوئے ہوں اگرچہ تکیہ ہٹانے سے بیگریڑے(۸) کھڑا ہو(۹) زُکوع کی حالت میں ہو(۱۰) سنّت کےمطابق جس طرح مرد مجدہ کرتا ہے اِس طرح سجدہ کرے کہ پیپ رانوں ادر بازوپہلوڈل سے بُدا ہول ۔ مٰدکورہ صورَ تیں نُماز میں واقع ہوں یا علاوہ نُماز ، وُضُونِہیں ٹوٹے گا اور نَما زبھی فاسِد نہ ہوگی اگر چہ قصد اُسوئے ،البقہ جو رُکن با لکل سوتے ہوئے ادا کیا اس کا اِعادہ (بعنی دوبارہ ادا کرنا) ظر وری ہے اور جا گتے ہوئے شروع كما پيم نيندة كني توجوهته جا كتے ادا كياد دادا بوكيا بكتيه ادا كرنا ہوگا_ سونے کے وہ دس انداز جن سے فضوٹوٹ جاتا ہے:۔(۱) اُ کؤ وں لینی

وضو كا طريقه (حنى)

خوصان مصطفية : (سل مدة مان عليه الديم) تم جهال بحي بوجمه برؤر وو برهوتها راؤر ووجه تك بنيخاب-

ہاؤں کے آلدوں کے بل اِس طرح بیٹھا ہو کہ دونوں گھٹنے کھڑے رہیں (۲) چت لعنی پیٹیر کے بل لیٹا ہو(۳) پُٹ یعنی پیٹ کے بکل لیٹا ہو(٤) وائیں یا یا تمیں کروٹ لیٹا ہو۔ (۵)ایک کہنی پرٹیک لگا کرسوجائے (۲) بیٹھ کر اِس طرح سویا کہ ا یک کرؤٹ جُھ کا ہوجس کی وجہ ہے ایک یا 'دونوں سُرِین اُٹھے ہوئے ہوں(۷) ننگی پیچه برسُوار ہواور جانورپستی کی جانب اُتر رہاہو(۸) پیٹ رانوں پررکھ کر دوزانو اِس طرح بیٹھے مَو یا کہ دونوں مُرِین جَمے نہ رہیں (۹) جار زانو لینی چُوکڑی مارکر اِس طرح بیٹھے کہ سررانوں یا پنڈلیوں پررکھا ہو(۱۰) جس طرح عورَت سُجدہ کرتی ہے اِس طرح سُجِد ہ کے انداز برسویا کہ پیٹ رانوں اور باز و پہلوؤں سے ملے ہوئے ہوں یا کلائیاں بچھی ہوئی ہوں۔ مذکورہ صورَ تیں نَما زمیں واقع ہوں یانَما ز کے علاوہ وضوثوث جائے گا۔ پھرا گران صورَ توں میں قَصْدُ اسویا تو نَماز فاسِد ہوگئی اور ہلا قَصْد سو ہا تو وُضوٹوٹ جائے گا مگر نَماز باقی ہے۔ بعدِ وُضو(مُخصوص شرائط کے ساتھ) بقیّہ نمازای جگہ ہے پڑھ سکتا ہے جہاں نیندآ کی تھی ۔شرائط نہ معلوم ہوں تو نئے سرے

ے پڑھ کے۔ لے

ل ماخوذ از فتاوی رضویه شریف تخریج شده ج۱ ص ۳۱۵ تا ۳۱۱رضا فاؤنڈیشن

وضو کا طریقہ ﴿حَنَّى ۗ

فوهان مصطفیٰ (ملی اندخانی طروار منر) مجھ پرؤڑوو پاک کی کشرت کرو بے شک بیتمهارے شئے طہارت ہے۔

مساجد کے وُضو خانے

مِمواک کرنے سے بعض اُوقات دانتوں میں خون آ جاتا ہے اور

تھوک بھی مُرْخ ہونے کی وجہ سے نا پاک ہو جا تا ہے مگر افسوں کہ احتیاط نہیں کی جاتی ۔مساجد کے وُضو خانے بھی اکثر کم گہرے ہوتے ہیں جس کی وجہ سے مُرْخ

تھوک والی گئی کے چھینے کپڑوں یابدن پر پڑتے ہیں، نیز گھر کے حمآم کے پُڑے

فرش پروُضوکرتے وقت اِس سے بھی نِیادہ چھینٹے پڑتے ہیں۔ مع

محمر ميل وضوخانه بنواي

آج کل بَیبِن (ہاتھ دھونے کی ٹونڈی) پر کھڑے کھڑے ڈضو کرنے کا .

رَ واج ہے جو کہ خِلا فِ مُستَّب ہے۔ افسوس! لوگ آسائنوں مجری بڑی بڑی پر دیست

کو ٹھیاں تو بناتے ہیں گر اِس میں وُضو خانہ نہیں بنواتے اِسُنَّوں کا دَرْ در کھنے والے اسلامی بھائیوں کی خدمت میں مَدَ نی اِلتجاہے کہ ہوسکے تواییے مَکان میں

کم از کم ایک نُونی کاؤضو خانہ ضَر در بنوایئے ۔ اِس میں بیاحتیاط ضَر ور رکھئے کہ

و و صان مصطفع : (مليانه خال مليه ال علم) جس زكاب عمد الحديد و ودوياك العماق جب تك مراهم أس كاب عمد العماق شدة الركيلية استفاد كرية وجل مك

ئونیٰ کی دھار براہِ راست فرش پر گرنے کے بجائے ڈھلوان پر گرے ورنہ دانتوں میں خون وغیرہ آنے کی صورت میں ؤہی چھینے اُڑنے کا مسئلہ رہے گااگر آپ مخاط وضو خانہ بنوانا جا ہے ہیں تو اِسی رسالے کے پیچھے دئے ہوئے نقشے سے رہئمائی حاصِل سیجئے۔ ڈبلیوس (W.C.) میں پانی سے استنجا کرنے کی صورت میں نمو نا دونوں پاؤں کے مخنوں کی طرف چھینئے آتے ہیں لہذا فراغت کے بعد احتیاطاً یاؤں کے بیصے دھولینے جا ہمیں۔

وُضو خانہ بنوا نے کا طریقہ

محر ملودُ ضوخانہ کی کل مُساحت یعنی لمبائی چوڑائی چالیس چالیس! نجی، اُونچائی زمین سے 16 اِنچی،اس کے اوپر مزید نوانچ اونجی نشستگاہ جس کاعرض ساڑھے دس انچے اور لمبائی ایک ہر سے سے دوسرے ہمرے تک یعنی زینہ کی مایند، اِس نشست گاہ اور سامنے کی دیوار کا درمیانی فاصلہ 26 انچی ،آ کے کی طرف اس طرح ڈھلوان (slope) بنوائے کہ نالی ساڑھے تین انچے سے زیادہ نہ ہو، فوصان مصطفيا (ملى القدق ل مليه والوسلم) محدي كرات الدوياك بإمورة كالتم بادامجه براؤود باك بإصابتها الماسك كلاء مغرت ب

یا وَل رکھنے کی جگہ قدم کی لمبائی کی مقدار سے معمولی نیادہ مَثَلُا کُل ساڑھے گیارہ اینچیوں کرنیاں قدم میں میں افریق میں میں میں کیا گئی ساتھ کے بیارہ

ہے ہو، دونوں قدموں کے درمیانی حقے میں مزیداندر کی طرف ساڑھے چارائج کا

کھانچہ ڈھلوان کیصورت میں زمین تک اِس طرح لے جائیئے کہ نالی ساڑھے یچے 3 نین اپنج سے بڑی نہ ہونے یائے ۔ یوری ڈھلوان میں کہیں بھی اُ بھار نہ رکھا جائے ۔

لارین)ساخت کا مکیجرنگ نال کی زمین سے 32 ایج اوپر ہو، اِس یانی کی دھار

کھانچے والی ڈھلوان (slope) پر پڑے گی اور آپکے لئے دانتوں کے خون وغیرہ نُجاست سے بچنا اِن شکا ءَ اللّٰه عَرَّوْ هَلْ آسان ہوجائے گا۔معمولی ترمیم

کر کے مساجد میں بھی اِسی ترکیب سے وضو خانہ بنوایا جا سکتا ہے۔

" میا رَسُولَ الله " کے دَن حُروف کی نِسبت سے وضوفانے کے 10مَدُنی محول

ممکن ہوتو ای رسالے کے پیچے دیے ہوئے وضو خانہ کے نقشے ہے۔ مؤیل اصلاک میں بڑھ میں ہفت ندین میں م

رہنمائی حاصِل کر کے اپنے گھر میں وُضوخانہ بنوائے۔

خوصان مستخف (مل درتن بد، مرم) برجى برايك مرتب وزود ورثريف بإحتاب الذته بي ايك آير الماج لعماد وايك قبرا لما مديها وجناب

معمار کے دلائل سُنے بغیر دیئے ہوئے نقشے کے مطابق بنے ہوئے گھریلو مضن نے کہ میں اُر دیعنی سے کوئی ای فیٹر کی بیجاری (clong) م

وُضوحانے کے بالائی(یعنی پاؤںر کھنے والے) فُرش کی ڈھلوان (slope) دو ارپچ رکھئے۔

مرایک سے زیادہ نل لگوانے ہوں تو دونلوں کے درمیان 25 ایج کا فاصلہ رکھئے۔

مر ورت پلاسٹک کی نی نی نی میں حب خر درت پلاسٹک کی نیل لگا لیجئے۔ مرح اگر پائپ دیوار کے باہر سے لگوا کیں تو حب خر درت نیشت گاہ ایک بادوائیج مزید دُورکر لیجئے۔

می کی می می کام کروا کرایک آدھ باراس پر بیٹھ کریاؤضو کر کے اپھی طرح دیکھ لینے کے بعد پُختہ کروائے۔

فوهان مصطفها (ملدة من بديام) جرجم پرورود پاك برها بحول كياده جنت كارات بحول كيا

مین کی میم کی ہے کہ وُضوحانے پر چار خانے دارٹائلز (CHECK TILES) لگواہے تا کہ چیسلنے کا امکان ہی نہ رہے۔

مهد اگر چارخانے دارٹائلزندل سکیس تو پاؤل رکھنے کی جگہ کاہر ااوراس کے بعد والی ڈھلان کم از کم دو دو اپنچ بچفر ملی اور خوب گھر دری اور گول بعد والی ڈھلان کم از کم دو دو اپنچ بچفر ملی اور خوب گھر دری اور گول بنوایئے تا کہ ضَر ورتأیا وَل رگڑ کرمیل چُھڑ ایا جاسکے۔

باور چی خانہ بسل خانہ بیٹ النکاء کا فرش کھلامیوں ، چیت ، سیجد کا دُضو خانہ اور جہاں جہاں پانی بہانے کی ضَروت بڑتی ہے ان مقامات کے فرش کی ڈھلوان (slope) ہو بتائے اُس سے بلا جھجک ڈیڑھ گُنا (مَثَلَّا وہ دُوا ی کچھ آپ بین انچ) رکھوا ہے ۔ مِعمار تو یک کچے گا کہ آپ فکر مت کیجے ایک قطرہ بھی پانی نہیں رُکے گا اگر آپ اِس کی باتوں میں آگئے تو ہوسکتا ہے ڈھلوان برابر نہ بے لطذا اُس کی بات پراع تا دہیں کریں گے تو ان شاءَ اللّٰہ عَدُوْ حَلَّ اِس کا فائدہ آپ خود ہی دیکھ لیس کے کیوں کہ غرمان مصطفیا (ملی الله الله الله الله الله من جوجمع بردون جحد أز ووثر نف برا مع كاش قبیا مت كدن أس كی شفاعت كرول گا۔

مُشابَد ہ یہی ہے کہ اکثرُ فُرش وغیرہ پرجگہ جگہ پانی کھڑا رَہ جا تاہے۔

جن کا وُضو نه رَهتا هو ان کیلئے 6 اُحکام

مل قطره آن يجهيد راك فارج بوند، زَخْم بني، دُكُلَى آنكه سي بوجه

مرض آنسو بہنے، کان ، ناف، پِستان سے پانی نگلنے کچوڑے یا ناسُور سے مرم

رُطوبت بہنےاور دَسْت آنے ہے دُصُونُوٹ جا تا ہےا گر کسی کواس طرح کا مرض مسلسل جاری رہے اور شُر وغ سے آ چر تک پوراایک وَثْت گزر گیا

کہ وُضو کے ساتھ نَما زِ فرض ادا نہ کر سکا وہ نُٹر عا**معندوں** ہے۔ایک وُضو

ے اُس وقت میں جتنی نمازیں چاہے پڑھے۔اسکاؤضواس مرض سے نسد مدیر میں

نہیں ٹوٹے گا۔ لے کرمن نماز کا وَثْت جاتے ہی معذور کاؤضو جاتا رُہتا ہے اور محکم اس

صورت میں ہوگا جب معذور کاعُذ ردّورانِ وُضویا بعیهِ وُضوطاہِر ہواگر

ل مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص١٤٩

منوصان مصطفعا (ملى الشقاني طيدان يستم) بجمل نے جمع برو و أيشهد دوسو بارؤ زود پاك يزمها أس كے دوسوسال كے كناور معا ف بول عے_

ایبانہ ہوا در دوسرا کوئی حَدَث بھی لاحِق نہ ہوتو فرض نُماز کا وقت جانے وجو سے وضوئیں ٹوٹے گا۔ لے فرض نُماز کا وقت جانے سے معذور کا وضو لوٹ جانے سے معذور کا وضو لوٹ جاتا ہے جیسے کسی نے عَفر کے وقت وَضُو کیا تھا تو سورج عُر وب ہوتے ہی وُضو جاتا رہا اور اگر کسی نے آفاب نگلنے کے بعد وُضو کیا تو جب تک ظہر کا وقت ختم نہ ہوؤ ضونہ جائے گا کہ ابھی تک کسی فرض نَماز کا وقت نہیں گیا۔ ۲

من المجن عند ر ثابت ہو گیا تو جب تک نماز کے ایک پُورے وقت میں ایک باربھی وہ چیز پائی جائے مُعذ ور بی رہے گا۔ مَثَلُا کسی کوسارا وقت فظرہ آتا رہا اور اتن مُبُلَت بی نہ ملی کہ وُضوکر کے فرض ادا کر لے تو معذور ہوگیا۔اب دوسرے اُوقات میں اتناموقع مل جاتا ہے کہ وُضوکر کے نماز پڑھ لے گرایک آدھ وُفَدُقطرہ آجا تا ہے کہ وُضوکر کے نماز پڑھ لے گرایک آدھ وُفَدُقطرہ آجا تا ہے تو اب بھی معذور ہے۔

لَى مُنَكِّصاً الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ص٥٥٥ على الهداية معه فتح القدير ج١ص٠٦٠

مدر من بصدان اصل دخران مليدون منر) أم فقتم كى تاك خاك آلود موجس كے پاس ميراؤكر موادرد و مجمد برد أرد دياك تدبير عے-

ہاںاگر پوراایک دفت ایساگزرگیا کہایک باربھی قطرہ نہ آیا تو متعذور نہ رہا پھر جب بھی پہلی حالت آئی (یعنی سارا دفت مسلسل مرض ہوا) تو پھر مُعذور ہوگیا۔ ا

معندور کاؤخواس چیز سے نہیں جاتا جس کے سب معذور ہے ہاں اگر
دوسری کوئی چیز وُضوتو ڑنے والی پائی گئی تو وُضوجا تار ہامَثَلُا جس کویہ تک
خارج ہونے کا مرض ہے قطرہ نگلنے سے اُس کاؤخوٹوٹ جائے گا۔اور
جس کوقطرہ کا مرض ہے اس کایہ تک خارج ہونے سے وُضوجا تارہے گا۔
جس کوقطرہ کا مرض ہے اس کایہ تک خارج ہونے سے وُضوجا تارہے گا۔

موضُّوکرتے وقت وہ چیز نہیں ہے جس کے سبب معذور ہے پھر وُضو کے بعد دہ عُذروالی چیز پائی گئی تو وُضُّونُوٹ گیا (بیتھم اِس صورت میں ہوگا جب معذور نے اپنے عُذر کے بجائے کسی دوسرے سبب کی وجہ سے وُضوکیا ہوا گراپ

لے فتاوی عالمگیری ج۱ ص ٤١

منوسان مصطف (سل احتمال شده اورهم) جم کے پاس میراد کر ہواورہ وہ میر ز زوشر نیف نہ پڑھے لوگوں میں وہ کجو س ترین تھی ہے۔

عُذُر کی وجہ سے دُضوکیا تو بعد دُضوعُذُر پائے جانے کی صورت ہیں دُفُسونہ ٹوٹے گا) مُثُلًا جس کو قطرہ آتا تھا اس کی رِتِح خارِج ہو کی اور اُس نے دُضو کیا اور وُضو کرتے وقت قطرہ ہند تھا اور وُضو کرنے کے بعد قطرہ آیا تو وُضوٹوٹ

گیا۔ ہاں اگر وُضو کے درمِیان قطرہ جاری تھا تو نہ گیا۔ ل

مست ایک در کوار ایماعد رہو کہ جس کے سبب کپڑے ناپاک ہوجاتے ہیں تواگر ایک دِرْہُم سے زیادہ ناپاک ہو گئے اور جانتا ہے کہ اتنا موقع ہے کہ

اسے دھوکر پاک کیڑوں سے نَماز پڑھادں گاتو پاک کر کے نَماز پڑھنا مُرْض ہے اور اگر جانتا ہے کہ نَماز پڑھتے پڑھتے پھراتنا ہی ناپاک ہو جائے گاتو اب دھونا ضروری نہیں ۔ اِس سے پڑھے اگر چِہ مُصلَّی بھی آلُو دہ ہوجائے تب بھی اس کی نَماز ہوجائے گی۔ ہے۔

(معذور کے دُضو کے تفصیلی مسائل بہار شریعت حصّہ اسے معلوم کر لیجئے)

لى الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص٧٥٥ كي الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص٦٥٥ ،فتاوي رضويه ج٤ص٥٧٧رضا فاؤنديشن لاهور _ فدمان مصنف (مل هذا بالديد بدسم بس مع إس ميراد كربوااورأس في وروشريف نديز هاأس في جفاك-

سات مُتَفَرّقات

(۱) پیٹاب پا خانہ وری مُذی مُن کیڑا آیا پھری مردیا عورت کے آگے یا پیچھے سے معمولی ہوا بھی سے ٹکلیں تو وُضوجا تار ہیگا۔ لے (۲) مردیا عورت کے پیچھے سے معمولی ہوا بھی خارج ہو کی وُضوفی سے ہوا خارج ہو کی وُضوفی سے ہوا خارج ہو کی وُضوفی سے ہوا خارج ہو کی وُضوفی سے وُضوٹوٹ ہوا تا ہے۔ بی (۶) بعض لوگ کہتے ہیں کہ رِختر ریکا نام لینے سے وُضوٹوٹ جاتا ہے بیغلط ہے۔ (۵) دَورانِ وُضوا گریت خارج ہویا کسی سبعی وُضوٹوٹ جائے تو نظیم سے وُضوکر لیجئے وُضوا گریت کو اُن ہو یا کسی سبعی وُضوٹوٹ جائے تو نظیم سے وُضوکر لیجئے ہوئے دی (۲) قرآنِ پاک یا اس کی کسی پہلے وُ سلے ہوئے اُن ہو گئے ۔ (۵) تر آب پاک یا اس کی کسی آب کو یا کہ واسکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک آبت کو یا کہی وَضور ہُھونا حرام ہے۔ لیک اُن ہے وَضور ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کا تر جُمہ ہوا سکو بے وُضو ہُھونا حرام ہے۔ لیک کی آب ہے کو بے ہُھورے در کیکھور کی اُن بیک کی کو شور خاصور ہے جو بیکھوں کے در کیکھور کے در کیکھور کی اُن بیکھور کے در کیکھور کے در ک

ل الدرالمبختارمعه ردالمحتارج ۱ ص ۲۸٦ کی اَیْماً کی الدرالمبختارمعه ردالمحتار ج۱ ص ۲۸٦ کی فتاوی عالمگیری ج۱ ص ۱۲ کی ماحوذ از: فتاوی رضویه ج۱ ص ۲۵۵ رضا فاؤندیشن کی فتاوی عالمگیری ج۱ ص ۳۸ _ مان مصطف (ملى الدتمالي مليه الدينم) جس كے پاس ميراز كر بوااورأس في جمع پرويز و دپاك نديز حاجميق و وبد بخت بوكي

يباربَّ السمصطَفْ عَزَّوَجَلَّ صلى الله تعالىٰ عليه والدوملم بمعين إسمراف ___ بيچة ہوئے شُرعی وُضو کے سماتھ ہروقت باوُضور ہنا نصیب فر ما۔ الامیک صلی الله تعالیا بید وارد والم امين بجارة التي)

وُضومیں یانی کا اِسراف

آج کل اکثرلوگ وُ شومیں تیزنل کھول کریے تُحاشہ یانی بہاتے ہیں _ حتی کہ بعض توؤضو خانے پر آتے ہی پہلے نل کھولتے ہیں اس کے بعد آستین ير هات بين أتى وريتك مَعاذا لله عَزْوَ عَلْ يانى ضائع موتارُ بتاب، إى طرح مُنْ کے وَوران اکثریت بل کھلا چھوڑ ویتی ہے! ہم سب کواللہ غسزوَ عَلَ ہے وُرکر إسراف ہے بچنا جاہئے ، قبیا مت کے روز ذرّہ ذرّہ ادر قطر ہ قطرہ کا حساب ہوگا۔ إسراف كى مَذَمَّت مِين حِيارا حاديث مبارَ كه سنتے اور خوف خداوندىءَ ذُوَجَلَّ ہے

(۱) جاری نهر پر بهی اِسراف

اللہ کے بیارے رسول، رسولِ مقبول، سیّدہ آمنہ کے گلشن کے مُمِکتے

فرمد مصدد (ملاستمال عداد المام) جس كے باس مراؤكر موااوراس في محديد رووياك ندير حافظين ووبد بخت موكيا۔

پھول عَـزُوَجَلُ وِسَلَى الله تعالیٰ علیه والبوبهم ورض الله تعالیٰ عنها حضرت ِسیّدُ ناسَعد رض الله تعالیٰ عنه پر گزرے تو وہ وُضوکر رہے تھے۔ ارشاد فر مایا، یہ اِسراف کیسا؟ نَحْرُض کی، کیا وُضو میں بھی اِسراف ہے؟ فر مایا،''ہاں اگر چہتم جاری نئمر پرہو''۔ ل اعلیٰ عضوت کا فقیعیٰ

مسلم می احدیث ۲۰۱۵ م ۲۰۱۶ دارالمعرفه بیروت کے فتاوی رضویه شریف تحریج شدہ ج اول ص ۷۳۱ منوسان معطف (ملى الشقالي عليه الباسم)جس في محمد يرايك بارور ووياك يرحا الشيقالي أس بروس ومتي معيجاب-

مفتی احمد یا ر خان کی تفسیر

معتمر شهير حضرت مفتى احمد مارخان عليدحمة المنان اعليلحضوت رحمة الله

تعالی علیہ کے فتو کی میں پیش کردہ مورہ الا نعام کی آیتِ کریمہ نمبر ۱۶۱ کے تحت

ہے جاخر ج (یعنی اسراف) کی تفصیل بیان کرتے ہوئے رقم طَر از ہیں،'' ناجا ئز

جگہ پرخرچ کرنا بھی بے جاخر چے ہے اور سارا مال خیر ات کر کے بال بچوں کو فقیر بنا

دینا بھی بے جاخر چ ہے، ضَر ورت سے نِیادہ خُر چ بھی بے جاخر چ ہے اِس لئے

، أعضائے وضوکو (بلااجازت ِشَرْی) فیار باردھونا اِسراف مانا گیاہے۔ لے

(۲) **اسراف نه کر**

حضرت سیِّدُ ناعبدالله بن عمرض الله تعالی عنها فرماتے ہیں ،الملَّ مد سے

محبوب، دانانے خُیُوب، مُنَزَّةٌ عَنِ الْعُیُوب عَزْوَجَلَّ وصَلَى الله تعالیٰ علیہ دالہ وسلم بریم

نے ایک فخص کوؤضوکرتے دیکھافر مایا، '' إسراف نہ کر إسراف نہ کر۔'' علی

لِ نُورُالْعُرِفَانَ صِ ٢٣٢ كِلِ ابْنِ مَاجَهُ،حَدَيْثُ ٤٣٤جِ ١ صِ ٢٥٤ دَارَالْمَعُرْفُهُ بَيْرُوتُ

ا فر مان مصطفى: (ملى در خال مليه البدا) جبتم مر طين (جبهمان بروز در ياك يرموج مي يرمي يرموب شك عمد تمام جانوس كدب ارس الدول بول.

(۳) إمراف شيطاني كام ب

حفرت سیّدُ نا اَنْس رض الله تعالی عنه سے رِوایت ہے ،وُ صُو میں بَہُت سایانی بہانے میں کچھ خیر (بھلائی) نہیں اور وہ کام شیطان کی طرف سے ہے۔ لے

(٤) جنّت کا سفیدمَکل مانگنا کیسا؟

حعفرت سیند نا عبداللہ ابن مُغَفَّل رض اللہ تعالی عنہ نے اپنے بیٹے کو اِس طرح دعا مانگتے سنا کہ البی ! میں تجھ سے جست کا دادنی طرف والاسفید کُل مانگتا موں ۔ تو فر مایا کہ اے میرے بیچے ! اللہ عَدِّدَ عَلْ سے جست مانگواور دوزخ سے اُس کی بناہ مانگو۔ میں نے رسول اللہ عَرِّدَ حَلَّ وصلی اللہ تعالی علیہ دالہ دستم کوفر ماتے سنا کہ اِس اُ مَت میں وہ قوم ہوگی جووضواور دُعا میں حدسے تجاؤ زکیا کرے گی۔ میں

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو!مفترشہیر مفرت مفق

ل كنزُ العمّال رقم الحديث ٢٦٢٥٥ ج ٩ ص ١٤٤ كل ابوداؤ د حديث ٩٦ ج ١ ص ٦٨ دار احباء التراث العربي.

01

فو مان مصطفعا : (مل الدتال مدار المام) جس في جمد يرايك و روياك يز ها القد تعالى أس يروس رحتي بهيجاب

احمد یارخان ملیدرمیۃ المئان اِس حدیدہ پاک کے تُحت فرماتے ہیں،'' دعامیں تجاؤ ز (یعنی حدے بڑھنا) تو بیہ ہے کہ ایسی بات کا تعمین کیا جائے جس کی ضَر ورت نہیں

جیسے ان کے صادِجز ادہ نے کیا۔فِرِ دُوس (جو کہ سب سے اعلیٰ بخت ہے اُس کا) مانگنا

بہتر ہے کہ اِس میں شخصی تعین نہیں نوعی تفَوَّد ہے اِس کا حکم دیا گیا ہے وُضومیں حد سے بڑھنا دوطرح سے ہوسکتا ہے (تین بار دھونے کے بجائے) تعدا دمیں زیاد تی

، م اور عُضْوُ کی حدمیں زِیادَ تی جیسے پاؤں تھٹنے تک دھونا اور ہاتھ بغل تک کہ بید دونوں

باتیں منوع ہیں۔ لے

مُراكباظكم كيا

أيك أعرابي في خدمت اقدس مصورسيّدِ عالم ملى الله تعالى عليه والهوسم

میں حاضر ہوکر وُضو کے بارے میں بوچھا ،کضو رِاقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم نے

۳ س اُنہیں وُضوکر کے دِکھایا جس میں ہَر عُضْوْ تین تین بار دھویا پھر فر مایا ،وُضو اِس

ل مراة جاول ص ٢٣٩

خو مانِ مصطَفَياً: (سل عندتنالى عيد وويم) جمل في مجيروس مرتبدة أرود ياك يره حاالله تعالى أس يرسوختين ناز ل فرماتا ب__

طرح ہے، توجو اِس سے زائد کرے یا کم کرے اُس نے بُراکیااورظلم کیا۔ لے

عملی طور پر وُضو سیکھئے

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! اِل مدیث یاک

سے معلوم ہوا کہ سکھانے کیلئے خودعملی طور پر وُضوکر کے دوسرے کو دِکھا ناسنت

سے ٹائت ہے ۔ مُبلّغین کو جائے کہ اِس پیمل کرتے ہوئے بغیر

اِسراف کے مِشر ف حسب طَر ورت یانی بہا کرتین تین باراً عضاء دھوکر وُضوکر کے

اسلامی بھائیوں کو دِکھا ئیں۔ ہر گزیلا حاجت تُثری کوئی عُضْوَ حَاْرِ بار نہ وُ <u>حلے</u> اِس

كاخيال ركھا جائے، پھر جو بخوشی اپنی اِصْلاح كروانا جاہےوہ بھی وُضُوكر کےمبلّغ

کودکھائے اورا نی غلطیاں دور کروائے۔ دعوت اسلامی کے سنتو ل کی تربیت

کے مَدَ نی قافِلوں میں ع**اشِقان رسول** کی صُحبت میں پیرمَدَ نی کام اَحُسن

طریقے پر ہوسکتا ہے ۔ دُ رُست وُضو کرنافئر ورفئر ورفئر ورسیکھ لیجئے مِثْرف ایک

ل نُسائي ج ١ ص ٨٨ دارالحيل بيروت

خوجان مصطفع (سليان تعالى هيدان منم) تم جهال يمي موجحه برد زود برهوتمهاداد رود جهتك بيخاب

آدھ بار**وضوکا طریقہ** پڑھ لینے سے سیج معنوں میں وُضوکرنا آجائے یہ بَہُت مشکِل ہے۔بار بارمَثْق کرنی ہوگی۔

معجداور شرتسے کے پانی کا اسراف

مسجد و ثدر سروغیرہ کے وضوخانہ میں جو پانی ہوتا ہے وہ '' وقف' 'ک حکم میں ہوتا ہے۔ اِس کے اوراپ گھر کے پانی کے اُحکام میں فُر ق ہوتا ہے۔ جو لوگ مسجد کے وضوخانے پر بے دردی کے ساتھ پانی بہاتے ہیں بلکہ وضومیں بلا فر درت فقط غفلت یا جہالت کے سبب تین سے زار کدم تبداً عضاء دھوتے ہیں وہ اِس مُبارَک فِتو کی پرخوب خور فر مالیں ،خوف خداعز وَ جَل سے لرزی اور آئندہ کیلئے تو بہر لیں۔ پُتا نچہ میرم آقا اعلیٰ حضرت ،امام اُھلسنت، ولی نِعمت ،عظیمُ اللَّر کت ،عظیمُ المَرُ تَبت ، پروانهِ شَمْع رِسالت ، مُجَدِّدِ دین ومِلَّت ، حامیٰ سنت ، ماجی بدعت ، عالِم شریعت ، پیر طریقت، باعثِ خَیْر وبَرَ کت ، سنت ، ماجی بدعت ، عالِم شریعت ، پیر طریقت، باعثِ خَیْر وبَرَ کت ،

فو مان مصطفعاً : (ملى اختران عدد الباسلم) بس نع جمد بدر مرتبع الدور مرتبه الموردد باك يو حالت إلى مت كدن مرى النا عت في ك

حضرتِ عَلامه مولينا الحاج الحافظ القارى شاه امام أحمد رَضا خان عله رَحْتُهُ الله عَلَم الله موليا الحاج الحافظ القارى شاه امام أحمد رَضا خان عله رَحْتُهُ الله وَعَلَم فَرَا لَهُ عَلَى الله وَقَرْج كُرنا الله وَقَالَ حَرَام هم كيول كه إلى ش زياده خرج كرنے كى اجازت في الله وقات مرام الله كا الله الله وقر عن الله الله الله وقر عن الله الله وقر عن الله وقر عن الله وقر عن الله وقر عن وضورت بين ـ " الله وقر عن وضورت بين ـ " الله وقر عن وضورت بين ـ " الله وقر عن الله وقر عن وضورت بين ـ " الله وقر عن الله وقر عن وضورت بين ـ " الله وقر عن الله وقر عن الله وقر عن الله وقر الله وقر الله وقر الله وقر الله وقر الله وقر عن الله وقر الله و

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو اجواپے آپکوابراف

سے نہیں بچایا تا اُسے جا ہے کہ مملوکہ (یعنی اپی ملکیت کے) مَثَلُا اپنے گھر کے پانی سے وُضوکر ہے۔ مَعادُ الله عَزُوَ حَزُاس کا بیہ مطلب نہیں کہ ذاتی پانی کے اسراف کی کھلی جھوٹ ہے بلکہ گھر میں خوب مُثَنِّ کر کے نُشری وُضو کھے لے تا کہ سجد کے یائی کا اِسراف کر کے حرام کامُر تکب نہ ہو۔

لے فتاوی رضویه شریف تخریج شده ج اوّل ص ۱۵۸رضا فاؤند یشن

فِين صلاحه مصطفعاً الأملي الدنان المدواد علم) مجمع برؤ أرود باك كالشرت كروب شك بيتمبار ، ليخ طهارت ب-

"احمد رضا "كسات رُوف كانبت سے المان سے المان سے المراف
مسك المعض اوك عُلِو لينع مين بإنى ايبادُ التي مين كدأ بل جاتا ہے حالانكد جو

گرابیکارگیااس سےاِحتیاط چاہئے۔

مهر المحمير الموناطَر ورئ نبيل بلكه جس كام كيلئے ليں أس كا انداز ه رکھيل

مَثَلًا ناك مِين نَرْم بانسے تك پانى چرْ هانے كو پورا چُلو كياضَر ور نصف

(یعنی آ دھا) بھی کافی ہے بلکہ بھراخپلوگلی کیلئے بھی در کارنہیں۔

مه في الما الله المعتدِل جائع كدندالي عك كد باني بدير (يعن

دریں) دے نفر اخ (لین کشادہ) کہ حاجت سے زیادہ گرائے ،اس کا

فرق يُون معلوم ہوسكتا ہے كەكۇرون ميں بانى لے كرۇضو يجيح تو بَهْت

خُرْچ ہوگا کیونہی فراخ (یعنی کشادہ نُونٹی) ہے بہانا زیادہ خرچ کا باعث

خوصان مصطفیل : (مل عد تبال علیه البدائم) می سن کاب علی بود و اکسانسا و جب عد برا م ای کاب عراضه به باوشد از کیا استفاد کرتے ، جب کے۔

ہے۔ اگر لوٹا ایسا (یعنی کشادہ ٹونی والا) ہوتو احتیاط کرے پُوری دھار نہ گرائے بلکہ باریک۔ (مُل کھولنے میں بھی انہیں باتوں کا خیال رکھئے)

مراع المعناء دعونے سے پہلے اُن پر بھیگا ہاتھ پھیر لے کہ پانی جلد دوڑتا

ہے اور تھوڑا (پانی)، بُہُت (پانی) کا کام دیتا ہے تُصُوصاً موسمِ سر ما (یعنی سردیوں) میں اِس کی زیادہ حاجت ہے کہ اُعْضاء میں خشکی ہوتی ہے اور بہتی دھار نچ میں جگہ خالی حجموڑ دیتی ہے جیسا کہ مُشاهَدہ (یعنی دیمی

بھالی بات)ہے۔

مر الله موں تو کَر شُوادی کداُن کا ہوتا پانی زیادہ چاہتاہے اور مُونڈ نے سے سَخْت ہوجاتے ہیں اور تَراشنامشین سے بہتر کہ خوب صاف کردیتی ہے اور سب سے اُحسن وافضل نُورہ (ایک طرح کابال صفا یاؤڈر) ہے کہ ان اُعضاء میں یہی سنت سے ثابت ۔ پُتنانچہ فر صان مصطفى السل الد تان عليد الدسم على كرات عن أورو باك إحوب شك تبارا الحديد وزود باك إحداثهار ع كنابول كيلة مغرت عد

الم المؤمنين سيِّدَ تُناامِ سَلَمه رضى الله تعالى عنها فرما تى بين: رسول الله عَزُوَ هَلَّ و

صلی الله تعالی علیه داله وسلم جب نوره کا استِعمال فرماتے تو سِتْرِ مقدّس پراپنے دستِ

مبازک سےلگاتے اور باتی بدنِ مؤر پراز واج مُطَهُر ات رضبی الله تعالیٰ عنهُ رُ

لگادیتیں ۔ **ل**اورابیانہ کریں تو دھونے سے پہلے پانی سے خوب پھکولیں کہ سب بال پچھ جائیں ورنہ کھڑے بال کی جُومیں یانی گزرگیااورنوک سے نہ بہا توؤضونہ ہوگا۔

میں و پا(ہاتھ و پاؤں) پراگرلوٹے سے دھار ڈالیں تو ناخنوں سے

کہنیوں یا (پاؤں کے) گُٹوں کے اوپرتک عَسلَی الْاِتِّنصال (یعن مسلل) اُتاریں کہ ایک بار میں ہرجگہ یرایک ہی بارگرے یانی جبکہ

ک ۱۰۰۰ دیں مہ بی ہوریں ہر جد پر بیت کی بور رہے ہاں جبہ گرر ہاہے اور ہاتھ کی رُوانی (ہل جُل) میں دیر ہوگی تو ایک جگہ بر مکر ً ر

. (یعن باربار) گرےگا۔(اوراس طرح اسراف کی صورت پیدا ہوسکتی ہے)

مسلام البعض لوگ يُوں ہى كرتے ہيں كه ناخن سے كہنى تك يا (پاؤں كے) سِكنے

ل ابنِ ماجه،حدیث ۲۲۰،ج ٤ ،ص ۲۲۰ دارالمعرفه بیروت

خوصان مصطفع (سلىدة لدارينم) جوجم برايد مرتدور وشريف إحتاج الشاق أن كيا ايد قراط الركفتان الدري قراط احديها زهنا ب

تک بہاتے لائے پھر دوبارہ سہ بارہ کیلئے جوناخن کی طرف لے گئے تو ہاتھ نہ روکا بلکہ دھار جاری رکھی ایسا نہ کریں کہ تثلیث کے عوض (یعنی تین بار کے عوض) پانچ بار ہوجائے گا بلکہ ہر بار کہنی یا (پاؤں کے) گئے تک لاکر دھار روک لیں اور رُکا ہوا ہاتھ ناخنوں تک لے جا کر وہاں سے پھرا جراء (پانی بہانا شروع) کریں کہ سنّت یہی ہے کہ ناخن سے کہنیوں یا گِفوں تک پانی جہانا شروع) کریں کہ سنّت یہی ہے کہ ناخن سے نہیں اور کہنا ہائی جہنا کہنیوں یا گِفوں تک پانی جہانی جہنا کہنا ہے ہوئے لے جاناست نہیں)

قول جازع ہے ہے کہ سلیقے سے کام لیں۔امامِ شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے کیا خوب فرمایا ،''سلیقے سے اُٹھا وَ تو تھوڑا بھی کافی ہوجا تا ہے اور بدسلیقگی پر تو

بهت (سا) بھی گفایت نہیں کرتا۔'' 🗜

للاز افدات: فتداوی رضویسه شریف تبخریج شده ج اوّل ص ۷۹۰ تا ۷۷۰ رضافاؤ ندیشن

خوصان مصطفى السل مندتال مليداد بنم) محمد برو رُووتشريف يرمعوالندم بررحمت تصيح كا

'یا رب اسراف سے بچا"کے چودہ کُرُون کانبت سے اسراف سے بچنے کیلئے 14مَدُنی پول

مسک**ا آج** تک جتنا بھی ناجائز اسراف کیا ہے ،اُس سے تو بہ کرکے آبند ہ نیخے کی بھریورکوشِش مُروع سیجئے۔

مسک فع ورفکر سیجئے کہ ایسی صورت مُتعکن ہوجائے کہ وُضواور عسل بھی سدّت کے مطابق ہواور پانی بھی کم سے کم خُرج ہو۔اپنے آپ کوڈرائے کہ قیامت میں ایک ایک ذرّہ اور قطرہ کا حیاب ہوناہے۔

مست**اً وضو**کرتے وقت بل اِختیاط سے کھولئے ، دَ ورانِ وُضومُمِکنہ صورت میں ایک ہاتھ ٹل کے دستے پر رکھئے اور ظر ورت پوری ہونے پر ہار بار ٹل

یہ ہوں ہوت پروس مرد فردری پروں برت پروہ در بند کرتے دہے۔

٦.)

خوصان مصطفع (صلى وخوالى مادراله منم) دب تم ترسلين (جيهامه) يردُرُود ياك ياحوة بحد ياحي ياحوج شك عي قمام جانول كرب كارسل بول.

لوٹے سے دھولے نل سے وضو کرنا جائز ہے ،بس کسی طرح بھی اسراف سے بیخنے کی صورت نکالنی جاہئے۔

میدی **فرمواک** بگتی ،غُرَغُرہ ، ناک کی صَفائی ، داڑھی اور ہاتھ یا وَں کی اُنگلیوں کاخِلال اورمُشح کرتے وقت ایک بھی قطرہ نه ٹیکتا ہو یوں اپھی طرح

نل بند کرنے کی عادت بنائے۔

کیلئے گرم پانی کے مُصول کی خاطر پائپ میں جُمْعُ هُد ہ ٹھنڈا پانی یوں ہی

بہادیے کے بجائے کسی برتن میں پہلے نکال لینے کی ترکیب بنائے۔

مسك من المندوهون كيلي صابون كاجهاك بنان مين بهي پاني احتياط س

خُرُج سیجئے ۔مَثُلًا ہاتھ دھونے کیلئے چلّو میں پانی کے تھوڑے قطرے ڈال کرصابون کیکر جھاگ بنایا جاسکتا ہے اگر پہلے سے صابون ہاتھ میں

ليكر پانی ڈالیں گے تو پانی زیادہ کُر چھ ہوسکتا ہے۔

نومین مصند (مل دفته العدود بر من جوجی بردوز جدور و شریف بر مصاف قیامت کے دن آس کی شفاعت کروں گا۔

ہوگا۔ ہاتھ دھونے کے بیس کے کناروں پر بھی صابون ندر کھا جائے کہ یانی کی دجہ سے جلدی محمل جاتا ہے۔

مسل في جينے كے بعد كلال ميں بچا ہوا يوينك دينے كر بجائے دوسرے كو يلاد يجئے ياكسى اوراستعمال بيس لے ليجئے۔

مد الم من کی میں میں اور فرش بلکہ جائے کا کپ یا ایک چھے بھی دموتے

وقت اِس قَدر زِیادہ غیر مَر وری پانی بہانے کا آج کل رواج ہے کہ

حُتاس اوردل جلے آدمی سے دیکھائییں جاتا!!!اے کاش! ب

د ل میں اُتر جائے مری بات

من المحر میں خوانخواہ دن رات بتیاں جلتی اور بیکھے جلتے رہتے ہیں، طَر ورت بوری ہوجانے کے بعد بتیاں اور سیکھے وغیرہ بند کردینے کی

مدون مصدن (مل در تدان ميدان مل) جمل في جمد يرد و تحدد وموارد ودوياك برحا أس كدومهال كالمتعاف ول كـ

عادت بنایئے ،ہم مجی کوحسابِ آخرت سے ڈرنا اور ہر معامّلے میں اِسراف سے بچتے رہنا جاہئے۔

سلان استعال کیج کرفوارے سے طہارت کرنے میں پانی بھی

زیادہ خرج ہوتا ہے اور پاؤں بھی اکثر آلود ہوجاتے ہیں۔ ہرایک کو چاہئے کہ

ہر بار پیشاب کرنے کے بعد ایک لوٹا پانی لیکر . W.C کے کناروں پر تحوڑ ا

سابہائے چر قدرے او پر سے (محر چینٹوں سے بچتے ہوئے) بڑے سوراخ

میں ڈال دیا کرے ان شاء اللّٰہ عَدْدَ بَنَ بدیواور چراشیم کی افزائش میں کی

ہوگی۔ "فلش ٹینک" سے صفائی میں یانی بہت نیادہ مر ف ہوتا ہے۔

ہوگی۔ "فلش ٹینک" سے صفائی میں یانی بہت نیادہ مر ف ہوتا ہے۔

من الله على من تعلم من تنطيق رہتے ہون تو فوراً إسكامل نكالئے ورنہ پانی مناكع من الله من الله على مناكب من الله من الل

فو مان مصطفعا : (ملى دن الماء الدالم) جم نع جمد يرايك وُرُود بإك يرْ حاالله تعالى أس يروس متيس بعجاب

بہتری کیلئے فورا کوئی ترکیب کرنی جاہئے۔

منتقط محمانا کھانے، جائے یا کوئی مشروب پینے، پھل کائے وغیرہ مُعامَلات میں خوب احتیاط فرمایئے تا کہ ہردانہ، ہرغذائی ذرّہ اور ہر قطرہ استعال ہوجائے۔

یارتِ مصطفے عَـــزَدَ هَــلٌ وصلی الله تعالی طیدداله دستم جمیں اسراف سے بیچتے ہوئے شرکی وضو کے ساتھ ہروفت با وضور ہنا نصیب فرما۔

امين بجاه النبي الآمين ملى الدنعالى عليدالهوالم

یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دیدیجنے

شادی تمی کی تقریبات، اجناعات، اعراس اورجلوس میلا دو فیره میں مکتبۃ المدینہ کے شائع کرده رسائل تقتیم کر کے ثواب کمائے، گا کوں کو بہتیجہ ثواب تخفے میں دینے کیلئے اپنی ذکانوں پر بھی رسائل رکھنے کامعمول بناہے، اخبار فروشوں یا بچی سے ڈویسے اپنے ملئے کگر گھر میں وقفہ دفغہ سے بدل بدل کرسٹوں بحرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دموسی کو جس می جائے۔
میں وقفہ دفغہ سے بدل بدل کرسٹوں بحرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دموسی کی دعومی مجائے۔
صَدِّق اعْلَیٰ مُحَدِّد

وكضواورسائنس



وضوى عكمت كسبب قبول اسلام 67 🐽 اندها ين سے تحفظ 82

🐠 وضواور ہائی بلڈ پریشر 69 💀 پاگلوں کا ڈاکٹر 84

🐠 قوت ِ مافِظ كيك 🔑 انسان چاند پر 87

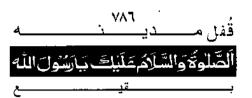
🐠 منہ کے چھالے کاعلاج 🔻 73 🐞 نور کا کھلونا 🔞

🐠 أوته برش كے نقصانات 🔭 73 🐞 باطنی وضو

🐠 ہاتھ دھونے کی حکمتیں 💎 77 🐽 سنت سائنسی تحقیق کی مختابیں 95

وَرَقِ اللَّئِحُ _ _ _





والمراوات المحالي المح

اس رسالے میں ملاحظہ فرمایئے۔

قوت حافظ كيليح

وُضواور ہائی بلڈ پریشر

ٹوتھ برش کےنقصانات

منہ کے چھالے

باطنی وُضو

اندهاين سيتحقّظ

ورق الليئے ۔۔۔۔

الْحَمْلُ بِلْهِ رَبِ الْعَلَمِيْنَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَبِدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَا بَنْدُ فَأَ عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّحِيْدِ أَيْسِمِ اللّهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمِ

وضواور شائنس

صرف32 صفحات پر بنی بیربیان مکمل پڑھ لیجئے اِن شاءَ الله عَزُوجَلَّ آپ وضو کے بارے میں جیرت انگیز معلومات سے مالامال ہوں کے

الله كم محبوب، دانانے غُيُوب، مُنزَّةٌ عَنِ الْغَيُوب عَزُوخلُ وَ

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عليه وَالهِ وَسلَّم كا فرمانِ عظمت نشان ہے، ' اللّٰه عَــزُوحَـلَ كَى خاطرآ بس ميں

مَحَبَّت رکھنےوالے جب باہم ملیں اور مُصافَحَه کریں اور نبی صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وَ الهِ وَسلّم

پر دُ رُود پاک پڑھیں تو ان کے جدا ہونے ہے پہلے دونوں کے اگلے بچھلے گناہ بخش

و ي وات العند ابي يعلى ج٣ ص ٩٥ حديث ٢٩٥١ دار الكتب العندية بروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيُبِ! صَلَّى اللَّهُ تعالى عَلى محمّد

لے بدیبان امیر اهسه لمسسنست (دامت برکاتم العالیہ) نے تبلغ قرآن وسنت کی عالمگیر غیرسیا کاتح یک ، ۵ عسوت السلاههی کے طُلباء کے دوروز واجماع (عرم الحرام ۲ ۱۶۲ هه) نواب شاه پاکستان میں فریایا۔ خَر دری ترمیم کے ساتھ تحریراً عاضر خدمت ہے ۔

فر مان مصطفي : (سلدندال عيدالهام) جوجهم برورود باك برها عنول كياده جنت كاراستر بحول كيا -

وُضو کی حکمت کے سبب قَبولِ اسلام

ایک صاحب کابیان ہے، میں نے بیک جیئم میں یونیورٹی کے ایک طلابِ عِلْمَ کو اِسلام کی دعوت دی۔ اُس نے سُوال کیا، وُضُو میں کیا کیا سائنسی حِکمتیں ہیں؟ میں لا جواب ہوگیا۔ اُس کوایک عالم کے باس لے گیالیکن اُن کو بھی اِس کی معلومات نتھیں۔ یہاں تک کہ سائنسی معلومت رکھنے والے ایک شخص نے اُس کو وُضُو کی کافی خوبیاں بتا ئیں مگر گردن کے مُشْح کی حکمت بتانے ہے وہ بھی قاصر رہا۔ وہ چلا گیا۔ کچھ عُرصے کے بعد آیااور کہنے لگا، ہمارے پروفیسر نے دُوران کیکچر بتایا، ''اگرگردن کی پُشعہ اور اَطراف پر روزانہ یانی کے چند قطرے لگادیئے جا ئیں تو ریڑھ کی ہڈی اور حرام مُغْزی خرابی سے پیدا ہونے والے أمراض **سے خطط حاصِل ہوجا تا ہے''۔** یہن کرؤضو میں گردن کے منظم کی حکمت میری سجه میں آگئی لہٰذامیں مسلمان ہونا حیا ہتا ہوں اور وہ مسلمان ہو گیا۔

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللَّهُ تعالى عَلى محمّد

(r)

· فوجان مصطفعاً : (سل الله تنال عبر ال سنم عجم يرا يك أزود ياك برا ها الله تعالى أس يروس متيس بهجا ہے۔

مفربی جرمنی کا سیمینار

مغرِ في ممالِك ميں مايوى يعنی (DEPRESSION) كا مرض ترقی پر

ے ٔ دِ ماغ فیل ہورہے ہیں، پاگل خانوں کی تعداد میں اِضافہ ہوتا جارہا ہے۔ نفیاتی اَمراض کے ماہرِ ین کے یہاں مریضوں کا تا نتا بندھار ہتا ہے۔مغرِ بی جرمنی کے ڈیلومہ ہَولڈرایک پاکتانی فِز یوتھراپسٹ کا کہنا ہے،مغرِ بی جرمنی میں

ایک ئیمینار ہوا جس کامۇشوع تھا'' مایوی (DEPRESSION) کا علاج اُد وِیا ت

کے علاوہ اور کن کن طریقوں سے ممکن ہے۔'' ایک ڈاکٹر نے اپنے مُقالے میں ہے۔ یہ جیرت اَنگیز انکِشاف کیا کہ'' میں نے ڈِیریشن کے چند مریضوں کے روزانہ

پانچ بارمُنه وُ ھلائے کچھ عرصے بعدان کی بیاری کم ہوگئ۔ پھرا یہے ہی مریضوں کے دوسرے گروپ کے روزانہ پانچ بار ہاتھ ،منداور پاؤل دھلوائے تو مرض میں

بَهُت إِفَاقَه ہو گیا۔ یکی ڈاکٹراپنے مَقالے کے آخر میں اِعتراف کرتا ہے **مسلمانوں**

و فو مان مصطفیا: (سلی دخران ماردار به نم) جس نے مجھ پردس مرتبد أرود پاک پر هاالشاتعاتی أس پرسودستیں نازل فرما تا ہے۔

میں مایوی کا مرض کم پایا جاتا ہے کیوں کہوہ دن میں کی مرتبہ ہاتھ، مُنہ اور یا وُل دھوتے (یعنی ڈمٹوکرتے) ہیں۔''

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تعالى عَلى محمّد

ۇځو اور ھائى بلڈپريشر

ایک ہارٹ اِسپیشلسٹ کابڑے واثوق کے ساتھ کہنا ہے، ہائی بلڈ پریشر

کے مریض کوؤخُو کرواؤ پھراس کابلڈ پریشر چیک کرولا نِیا کم ہوگا۔ایک مسلمان ماہرِ

نفیات ڈاکٹر کا قول ہے' نفسیاتی امراض کا بہترین عِلاج وضو ہے۔' مغربی

ماہرِین نفسیاتی مریضوں کوؤضو کی طرح روزانہ کئی باربدن پرپانی لگواتے ہیں۔

وُضُو اور فالج

وضو میں جوتر تیب وار اُعضاء دھوئے جاتے ہیں ریجی حِکمت سے

خالی نہیں۔ پہلے ہاتھوں کو پانی میں ڈالنے ہے جسم کا اُعصابی نِظام مُطَّلع ہوجا تا

فرمان مصطفى (مناهدت في عدار مل عم جهال بهي وجهر برارود يرموتهم ارادرو وجهتك البياب

ہاور پھر آ ہستہ آہستہ چبرے اور دِ ماغ کی رگوں کی طرف اِ سکے اثرات پہنچتے ہیں۔ وُضُو میں پہلے ہاتھ دھونے پھر گلی کرنے پھر ناک میں پانی ڈالنے پھر چبرہ اور دیگر اُعضاء دھونے کی ترتیب فالج کی روک تھام کیلئے مفید ہے۔ اگر چبرہ دھونے اور دیگر اُعضاء دھونے کی ترتیب فالج کی روک تھام کیلئے مفید ہے۔ اگر چبرہ دھونے اور کی تاریخ کی ترتیب فالے کے تو بدن کئی بیاریوں میں مُنتِکل ہوسکتا ہے!

مِسواک کا قَدُرُدان

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو!ؤخو میں مُتُعَدَّ رَسُنْتِیں ہیں اور ہرسنت مُحَرُّ نِ حَمَّت ہے۔ مِسواک ہی کولے لیجے ابچہ بچہ جانتا ہے کہؤخو میں مِسواک کرناسنت ہے اور اِس سنت کی بَرُکوں کا کیا کہنا! ایک ہو پاری کا کہنا ہے، ''سوئیز رلینڈ میں ایک نومسلم سے میری ملاقات ہوئی، اس کو میں نے تُحفَّۃُ مِسواک پیش کی، اُس نے خوش ہوکر اسے لیا اور چوم کر آ تکھوں سے لگایا اور ایکدم اُس کی آ تکھوں سے آ نسو چھلک بڑے، اُس نے جیب سے ایک رومال

. فعر صان مصطفع : (ملى الدخال عليه الديام) جم في وي مرتب كالدوى مرتب المام درد و ياك ير حالت تياست كدن برى شفاعت على ـ

نکالا اس کی ته کھولی تو اس میں سے تقریباً دوانچ کا چھوٹا سا**مسو اک** کاٹکڑا برآید ہوا۔ کہنے نگامیری اِسلام آ وَری کے وقت مسلمانوں نے مجھے بیڑھے دیا تھا۔ میں بُهُت سنجال سنجال كر إس كو إستعال كرر ما تقاييختم ہونے كوتھالېذا مجھے تشويش تھی کہاللّٰہ عَـزُدَ جَـلُ نے کرم فر مایا اورآ پ نے مجھے مِسواک عنایت فر مادی۔ پھر اُس نے بتایا کہا یک عرصے سے میں دانتوں اور مَسُو ڑھوں کی تنگلیف سے دو حیار تھا۔ ہمارے یہاں کہ ڈینٹیسٹ سے ان کاعلاج بن ہیں پڑر ہاتھا۔ میں نے اِس **مِسواک** کا اِستعال شروع کیاتھوڑ ہے ہی دِنوں میں مجھے اِفاقہ ہو گیا۔ میں ڈاکٹر کے پاس گیا تو وہ حیران رہ گیا اور پوچھنے لگا،میری دواسے اِتی جلدی تمہارا مرض ُ دورنہیں ہوسکتا ،سوچو کوئی اور وجہ ہوگی۔ میں نے جب زِبمن پر زور دیا تو خیال آیا که میں مسلمان ہو چکا ہوں اور پیساری بُرَکت **مسواک** ہی گی ہے۔ جب میں نے ڈاکٹر کو**مسواک** دکھائی تووہ جیرت سے دیکھاہی رُہ گیا۔

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيُبِ! صَلَّى اللُّهُ تعالى عَلى محمّد

فرمان مصطفع (ملافقان مدواد مر) محمد برورو ياك كى كرت كروب شك ريتمبار على طهارت بـ

قُوَتِ حافِظه كيلئے

میٹھے میٹھے **اسلامی بھائیوا**مسواک میں بیشاردینی وؤنیوی فوائد ہیں۔

اس میں مُتعد و کیمیاوی اُجزاء ہیں جو دانتوں کو ہر طرح کی بیاری ہے بیاتے

يں۔

حاشِيَةُ الطَّحُطاوِي مِيسِدِ:

'بیسو اک ہے تو ت حافظہ بردھتی ، در دِسر دُور ہوتا اور مَر کی

رگوں کوشکون ملتا ہے، اِس سے بلغم دُور، نظر تیز،مِعدہ دُ رُست اور کھانا

ہُفٹم ہوتا ہے، عَقَلْ برمعتی، بچوں کی پیدائش میں إضافہ ہوتا، بُرُها یا در

مِن تا اور بيني مضبوط موتى بي (منعَ صَا حاشِيةُ الطَّحُطاوى ص ١٨)

مسواك كے بارے میں تین احادیث مباركہ

(۱) جب سر کار مدینه ملی الله تعالی علیه داله دستم اینے مبارَک گھر میں داخِل ہوتے تو

سب سے پہلے ممواک کرتے '۔ (صحبع مسلم شریف ج ۱ ص ۱۲۸ افغانستان)

فن حان مصطفع : (السل وفاق عليه الدائم) جم ية كاب عل جويد والكالواز ب تك يرانام أن كاب عي العد بـ كافر شاس الإران وي ع

(٢) جب سركارِ نامدارصلَّى الله تعالى عليه وَالبه وَسلَّم نيند سے بيدار ہوتے تو مسواك

کرتے۔(ابو داؤد ج۱ ص۳۶ حدیث ۵۷ دارِ احیاء النراٹ العربی) (۳) تم مِسواک کو لازِم پکڑلو کہ بیرمُنہ کو یاک کرنے والی اور ربّ تعالیٰ کوراضی کرنے والی ہے۔

(مُسند امام احمدج ٢ ص ٤٣٨ حديث ٥٨٦٩ دارالفكر بيروت)

مُنه کے چھالے کا عِلاج

اُطِمْتِا عَ کا کہنا ہے،''بعض اُدقات گری ادر معدہ کی تیزائیت سے مُنہ میں چھالے پڑجاتے ہیں ادر اِس مرض سے خاص شم کے جراثیم منہ میں پھیل جاتے ہیں۔ اِس کیلئے منہ میں تازہ مِسواک ملیس ادراس کے کُتا ب کو پچھ دیر تک منہ کے اندر پھراتے رہیں۔اس طرح کئی مریض تھیک ہوچکے ہیں۔''

ٹوتہ برش کے نقصانات

ماہر مین کی تحقیق کے مطابق''80 فیصد امراض مِعدہ اور دانتوں کی خرابی سے پیدا ہوتے ہیں۔''عُمُو ما دانتوں کی صَفائی کا خیال ندر کھنے کی وجہ سے

خوصان مصطفى (سلى الشقال بله دائد منم) جمي يركثرت = وُزود ياك يرحوب شائم بادا جمي يدُودو ياك يزحن تمهار عما يول كيلم مغرت ب

مَـُورْهوں میںطرح طرح کے جراثیم پرورش یاتے پھرمعدے میں جاتے اور طرح طرح کے اَمراض کا سبب بنتے ہیں۔ یا درہے!''ٹُوتھ برش' مِسواک کا نَعْمُ الْبَدَلْ نَہِیں۔ بلکہ ماہرین نے اعتراف کیا ہے:۔(۱)جب برش کوایک بار استِتعال کرلیاجا تا ہے تو اُس میں جراثیم کی بتہ جم جاتی ہے یانی ہے دُ صلنے پر بھی وہ جراثیم نہیں جاتے بلکہ و ہیں نشو وئمایاتے رہتے ہیں۔(۲) برش کے باعث دانتوں کی اُدیری قُدرُ تی چیکی بید اُتر جاتی ہے (۳) برش کے اِستِعمال ہے مَسُورُ ھے آ ہستہ آ ہستہ اپنی جگہ چھوڑتے جاتے ہیں جس سے دانتوں ادر مُنوڑھوں کے درمیان خُلاء(GAP) پیدا ہوجا تا ہے اور اس میں غذا کے ذرّات تھنستے ،سڑتے اور جراثیم اپنا گھر بناتے ہیں اِس سے دیگر بیار یوں کےعلاوہ آنکھوں کےطرح طرح کے اُمراض بھی جُنمُ لیتے ہیں۔ اِس سے نظر کمزور ہوجاتی ہے بلکہ بعض اوقات آ دُمی اندها ہوجا تاہے۔

کیا آپ کو مسواك كرنا آتا هے ؟

موسکتا ہے آپ کے دل میں بیر خیال آئے کہ میں تو برسوں سے

فوجان مصطفير (ملى دنال مداريف) جرجى باكدمرتروز ووثريف بإحتاب الشقالي أس كيلة ايك قيرا طاجر كعتا اورا يك قيرا طاحد بهاذ جتناب

مبواک اِستِعمال کرتا ہوں گرمیر ہے تو دانت اور پیٹ دونوں ہی خراب ہیں!
میر ہے بھولے بھالے اِسلامی بھائی! اس میں مِسواک کانہیں آپ کا اپنا قُصُور
ہے۔ میں (سگِ مدینۂ بِی عَنُد) اِس نتیج پر پہنچا ہوں کہ آج شاید لاکھوں میں سے
کوئی ایک آ دھ ہی ایسا ہو جو سچے اُصولوں کے مطابق مِسواک اِستِنعال کرتا ہو، ہم
لوگ اکثر جلدی جلدی دانتوں پرمِسواک مَل کر وُصُو کر کے چل پڑتے ہیں۔
لیمیٰ یوں کہنے کہ ہم مِسواک نہیں بلکہ' رسم مِسواک' اداکرتے ہیں۔

"مسواك كرناستت هي "ك ١٤ كُرُ وف كي نسبت سيم مسواك ك 14 مَدُ في مجول

(۱)مِسواک کی موٹائی چَھنگلیا یعنی جِھوٹی اُنگل کے برابر ہو(۲)مِسواک ایک بالِشت سے زیادہ لمبی نہ ہوورنہ اُس پر شیطان بیٹھتا ہے(۳) اس کے رَبِشے ُزُم ہموں کہ سخت رَبِشے دانتوں اورمَسُو ڑھوں کے درمِیان خَلاء (GAP) کا

خوجانِ مصطَّفية (ملي الذة لياليدالدائم) جمه يردُ زودتر يف يرهواللهُ تم يررحت بيمج كار

باعِث بنتے ہیں(٤)مِسواک تازہ ہوتو خوب درنہ کچھ دیریانی کے گلاس میں پھگو كرَزْمُ كرليجِيِّ (۵) إس كے رَبِشے روزانه كاشيخ رہے كدرَبشے أس وقت تك کارآ مدریتے ہیں جب تک ان میں تلخی باقی رہے(1) دانتوں کی پُوڑائی میں مِسواک بیجئے (۷) جب بھی مِسواک کرناہو کم از کم تین ہار بیجئے (۸) ہر بار دھو لیجئے(۹)مِسواک سید ھے ہاتھ میں اِس طرح لیجئے کہ چُھنگلیا اس کے بنچےاور چ کی تی^ن اُنگلیاں اُو یراورانگوٹھا ہر ہے پر ہو(۱۰) پہلے سیدھی طرف کے او پر کے دانتوں پر پھرالٹی طرف کے اوپر کے دانتوں پر پھرسیدھی طرف نیجے پھرالٹی طرف نیچےمںواک کیجئے (۱۱)چت لیٹ کرمیواک کرنے سے تِلَی بڑھ جانے ادر (۱۲) متھی باندھ کر کرنے ہے بواسیر ہوجانے کا اندیشہ ہے (۱۳)مِسواک وُضُو كَى سنَّتِ قَبْلِيرُ ہِ البتَّهُ سنَّتِ مُسوَّتٌ كَدَه اُسَى وقت ہے جبکہ منہ میں بد بوہو۔ (ما حو ذاز فتاوی رضویه ج۱ ص ۲۲۳ رضا فانوندَیشن) (**۱٤) مُستَعمَل** (لیخی

فد مل وصطفها (صلى الله قال عليد والدوستم) وبسبتم تر طبين (بليم الدوم) يروزود باك يومونو تجويم يوموب شك بين تمام جها أول كرب كارمول بول-

استعال مُشدہ)مِسو اک کے رَبشے نیز جب بیرنا قابلِ اِستِیعال ہوجائے تو نچینک مت دیجئے کہ یہ آلہُ ادائے سفّت ہے، کسی جگہ اِحتیاط سے رکھ دیجئے یا دَفَن كرديجيَّ ماسَّمُندر مين ڈالديجيَّ ۔

(تفيصلي معلومات كيلئے بهارِ شريعت حصه ٢ ص 17تا18كامُطالعه فرماليحئے)

ہاتہ دھونے کی مِکمتیں

و فعو میں سب سے پہلے ہاتھ دھوئے جاتے ہیں اِس کی حکمتیں مُلا حَظہ ہوں ۔ مختلف چیزوں میں ہاتھ ڈالتے رہنے سے ہاتھوں میں مختلف کیمیاوی أجزاءاور جراثيم لگ جاتے ہيں اگر سارا دن نہ دھوئے جا ئيں تو جُلد ہي ہاتھ ان جلدی اَمراض میں مُبتَلا ہو سکتے ہیں: _(۱) ہاتھوں کے گری دانے (۲) جلدی سوزِش (٣) ایگزیما(٤) بهبهوندی کی باریان (۵) عِلْدکی رنگت تبدیل ہوجاناوغیرہ۔ جب ہم ہاتھ دھوتے ہیں تو اُنگلیوں کے پوروں سے شعا کیں

منرمها مصطفها (سلى اختدان بايدا برينم) جومجهي برروز جمددُ أروشريف بير حيرنا هي قيامت كدن أس كي شفاعت كرول كا_

(RAYS) نکل کر ایک ایبا حلقہ بناتی ہیں جس سے ہمارا اندرونی برقی نظام

مُتَ حسرِ ک ہوجا تا ہے اور ایک صد تک برقی رَو ہمارے ہاتھوں میں ہمٹ آتی

ہاں سے ہمارے ہاتھوں میں کُش پیدا ہوجا تا ہے۔

کُلّی کرنے کی حکمتیں

پہلے ہاتھ دھو گئے جاتے ہیں جس سے دہ جُراثیم سے پاک ہوجاتے ہیں ورنہ یکنی کے ذَرِ شِی مُنہ میں اور پھر پیٹ میں جا کر مُتُولاً داَمراض کا باعِث بن سکتے ہیں۔ ہوا کے ذَرِ شِی لا تعداد مُہْلِک جراثیم نیز غذا کے اَجزاء ہمارے منہ اور دانتوں میں لُعاب کے ساتھ چپک جاتے ہیں۔ پُنانچ وُضُو میں مِسواک اور گُلیوں کے ذَرِ شِیع منہ کی بہترین صُفائی ہوجاتی ہے۔ اگر منہ کوصاف نہ کیا جائے گلیوں کے ذَرِ شِیع منہ کی بہترین صُفائی ہوجاتی ہے۔ اگر منہ کوصاف نہ کیا جائے منہ کا مُنہ کا مُنہ کا ناروں کا پھٹنا (۳) منہ اور ہونٹوں کی داد

ي خو هان مصفير (من الله الدومنم) جمل في جميد يردون شده دوسو باروز ودياك يزها أس كردوسوسال كركنا ومعاف بول محمد

قوبا(MONILIASIS)(٤) منه مین بهههوندی کی بیاریان اور چهالے وغیره-

نیز روزہ نہ ہوتو کلی کے ساتھ غُر غرہ کرنا بھی سُنت ہے۔ اور پابندی کے

ساتھ غُرِغرے کرنے والا کوے (TONSIL) بڑھنے اور مکلے کے بُہُت سارے اَمراض تی کہ مکلے کے کینسرے محفوظ رَہتاہے۔

ناك ميں يانى ڈالنے كى حكمتيں

سیمیپر ول کوالی ہوا در کار ہوتی ہے جو جَرَاثیم ، دُھو میں اور گر دوغُبار

ہے پاک ہواوراس میں 80 فیصد رطو بت لینی تری ہواور جس کا ذرّجهٔ حرارت

نَوْ ے وَ رَجِه فارن ہائٹ سے زائد ہو۔ایس ہوافراہم کرنے کیلئے اللہ غَدُوَ حَلَّ نے

ہمیں ناک کی نعت سے نوازا ہے۔ ہوا کومَر طُوب یعنیٰ مَ بنانے کیلئے ٹاک روزانہ تقریباً چوتھائی گیلن نُمی پیدا کرتی ہے۔ صَفائی اور دیگر سخت کا مُتھنوں کے بال سر

اُنجام دیتے ہیں۔ ناک کے اندرایک خُوردیین (MICROSCOPIC) جھاڑو

ہے۔اِس جھاڑو میں غیرمَرَ کی تعنی نظرنہ آنے والے رُوئیں ہوتے ہیں جوہوا کے

بر المراد المعان المان المان المان المراز ا

ۚ ذَرِ کیعے داخِل ہونے والے جراثیم کو ہُلا ک کردیتے ہیں۔ نیز ان غیرمَرَ کی رُوُوں

کے ذِمے ایک اور دِفاعی نظام بھی ہے جے اِنگریزی میں LYSOZUIM کہتے

ہیں ، ناک اِس کے ذَرِ شِع ہے آئکھوں کو INFECTION سے محفوظ رکھتی ہے۔

اَكْ حَمدُ لِللهِ عَدْوَ هَلْ اوْضُوكر في والاناك مين يانى چرها تا ہے جس سے جسم كے

اس اَہُم ترین آلے ناک کی صفائی ہوجاتی ہے اور پانی کے اندر کام کرنے والی بَر تی رَوسے ناک کے اندَ رُونی غیرمَرَ ئی رُووں کی کارکردَ گی کوتفویَّت پُنہجی ہے

اورمسلمان وُصُو کی بُرُکت ہے ناک کے بیٹار پیجیدہ اَمراض ہے محفوظ ہوجا تا

ے۔دائی فولداور ناک کے زخم کے مریضوں کیلئے ناک کاعسل (یعن د ضو

ک طرح ناک میں پانی چڑھانا) **بے حدمفیر ہے۔**

چېره د هونے کی حِکمتیں

آ ح کل فَصاوُں میں دھو کمیں دغیرہ کی آ لُو دَ گیاں بڑھتی جارہی ہیں۔ مختلف کیمیاوی مادّ ہے سبیسہ وغیرہ مَیل کچیل کی شکل میں آ تکھوں اور چہرے دغیرہ خد مدن و معدند (ملی الذعنانی ناید او پستم) جس کے پاس میراذ کر دواور وہ جمدی پر ڈ رُ دوشر نیف نہ پڑھے تو لوگوں میں وونجوس ترین فخص ہے۔

یر جمنا رَہنا ہے۔اگر چھر ہ نہ دھویا جائے تو چھرے اور آئکھیں کئی اُمراض سے دوحار ہوجا کمیں ایک پور پین ڈاکٹر نے ایک مقالہ لکھا جس کا نام تھا، آنکھ، یانی، صحّت (EYE,WATER, HEALTH) إِس مين اس نے اس بات يرزور ديا كه ''اپنی آنکھوں کو دن میں کئی بار دھوتے رہو ورنہ تمہیں خطرناک بیاریوں سے دوچار ہونا پڑیگا۔''چہرہ دھونے سے مند پر کیل نہیں نکتے یا کم نکتے ہیں۔ ماہرین ئسن وصحت ایں مات پرمتنوق ہیں کہ ہر طرح کے CREAM اور LOTION وغیرہ چبرے پر داغ چھوڑتے ہیں۔ چبرے کوخوبصورت بنانے کیلئے چبرے کو ئى باردھونالا زِمى ہے۔"امريكن كونسل فاربيوٹی" كى سركردەممبر"بيہجو" نے کیا خوب اِنکِشاف کیا ہے کہتی ہے "مسلمانوں کو کسی شم کے کیمیاوی اوش ک حاجت نہیں وَضُو ہے اِ لگا چمر ہ رُحل کر کئی بیار پوں سے محفوظ ہوجا تا ہے۔" محکمہ ما حوالیات کے ماہرین کا کہنا ہے،" چمرے کی اِلرجی سے بیخے كيليراس كوبار باردهونا جائي أله المتحدد للله عدود من السام ف فوف ك

موسان مصعندا (سل اختدان عليه البهام) جس كے باس ميراؤكر موااوراً سنے وُرُووشريف شريرُ ها أس في جفاكى _

ذَرِ شِعِ ہی ممکن ہے۔ اَلْسَحَمدُ لِلَّه عَزْدَ حَلَّ اِوْضُو میں چِمر ہ دھونے سے چِمر کا مُساج ہوجا تا ،خون کا دَوران چِمر سے کی طرف رَ دال ہوجا تا مَیل کُچیل بھی اُنر جا تااور چِمرے کامُسن دوبالا ہوجا تاہے۔

اند ھا ین سے تَحَفُّظ

میٹھے میٹھے اِسلامی بھائیو! میں آئھوں کے ایک ایسے مرض کی طرف

تو جُہ دلاتا ہوں جس میں آئھوں کی رطُوبتِ اَصلِیّہ یعنی اصلی تری کم یاخُتم ہوجاتی اور مریض آہستہ آہستہ اندھا ہوجاتا ہے۔ طِتی اُصول کے مُطابِق اگر بُھنو وَں کو وقا فو قنا ترکیا جاتا رہے تو اِس خوفناک مُرض سے تحقُظ حاصِل ہوسکتا ہے۔ اَلَّہَ حَدُلِلَٰہ عَرُوحَ لَ اِوْصُو کرنے والا منہ دھوتا ہے اور اِس طرح اس کی بُھنو میں تر ہوتی رہتی ہیں۔ جوخوش نصیب اپنے چہرے پر داڑھی مبارک سجاتے ہیں وہ سنیں ، ڈاکٹر پروفیسر جارج آیل کہتا ہے 'منہ دھونے سے داڑھی میں اُلجھے ہوئے جراثیم بہجاتے ہیں۔ جر تک یائی جہنے ہے بالوں کی جڑیں مضبوط ہوتی ہیں۔ جراثیم بہجاتے ہیں۔ جراثیم ہوتی ہیں۔

خوب مصطف (ملى الشتان طيدار ملم) جس نے جھ پرايك بارؤ رُودِ پاك برُ حاالشتاني أس بردس رحتيس بيتي ہے-

خِلال (کسنت اداکرنے کی بُرکت) سے جُووَں کا خطرہ وُور ہوتا ہے۔ مزید داڑھی میں پانی کی تری کے ممبراؤ سے گردن کے پیکھوں، تھائی رائیڈ گینڈاور کلے کے امراض سے بھاظت ہوتی ہے۔'' گینڈاور کے کے امراض سے بھاضت ہوتی ہے۔'' گہنٹیاں دھونے کی حکمتیں

ممنی پرتین بری رکیس ہیں جن کا تعلَّق دِل ، جِسکر

اورد ماغ سے ہے اورجسم کا بید صند مُمُو ماڈھکارُ ہتا ہے اگراس کو پانی اور ہوا نہ لگے تو مُحَعَدَّ و دِ ماغی اور اَ عصابی اَ مراض پیدا ہو سکتے ہیں۔ **وَضُو مِیں مُہنوں** سَمیت ماتھ دھونے سے دل ، جگراور دِ ماغ کوتقویت مُنْ ہُنچی ہے اور اس طرح

اِن شاءَ الله عَزُوَهَ اَن كَامراض مَ مَحفوظ رہیں گے۔ مزید یہ کہنیوں اِن شاءَ الله عَرُوَهُ اِن كَامراض مَ محفوظ رہیں گے۔ مزید یہ کہنیوں سے مراور اشت اِنسان سمیت ہاتھ دھونے سے سینے کے اندر ذخیرہ فندہ روشنیوں سے براور اشت اِنسان کا تعلّق قائم ہوجاتا ہے اور روشنیوں کا بُجُوم ایک بہاؤگی شکل اِختیار کرلیتا ہے۔

اِس عمل سے ہاتھوں کے عَصَلات یعنی کُل پُرزے مزید طاقتور ہوجاتے ہیں۔

ي فر صابي مصطفياً : (ملي الشاق الطيد الدينم) جب تم سرطين (جبر عام) يروزود باك يرحق بركي يام يرجل شراقهام جبانول كرب كارسول جول ير

مَسْحُ کی حکمتیں

ممراور گردن کے درمیان' نخبل الوَرِید' یعنی شدرگ واقع ہے اس کا تعلَّق رِیرُ هے کہ بدِّ می اور حرام مَغْزُ اور جسم کے تمام تَرَ جوڑوں سے ہے۔ جبوضو کرنے والاگردن کا مُمْنِ کرتا ہے تو ہاتھوں کے ذَرِیکے برقی رَونکل کرشدرگ میں ذَخیرہ ہوجاتی ہے اور رِیرُ هے کی ہدِّ می سے ہوتی ہوئی جسم کے تمام اَعصابی نظام میں پھیل جاتی ہے اور اس سے اَعصابی نظام کوٹو انائی حاصِل ہوتی ہے۔

پاگلوں کا ڈاکٹر

ایک صاحب کابیان ہے'' میں فرانس میں ایک جگہ وُ صُوکر رہاتھا۔ ایک عُخص کھڑ ابزے غور سے مجھے دیکھا رہا۔ جب میں فارغ ہوا تو اُس نے مجھ سے بوچھا، آپ کون اور کہاں کے وَطَنی ہیں؟ میں نے جواب دیا، میں پاکتانی مسلمان ہول۔ بوچھا، پاکتان میں کتنے پاگل خانے ہیں؟ اِس مجیب وغریب سُوال پر میں ہُو نکا مگر میں نے کہد دیا، دوچار ہول گے۔ بوچھا، ابھی تم نے کیا کیا؟ میں نے کہا،

خد مان مصطفعاً : (مل عند من المعيد الرائم) جم نے مجھ پرايك أزود باك پڑھاللّٰه أن الروس ومتي بھيجا ہے۔

وُصُو ۔ کہنے لگا، کیا روزانہ کرتے ہو؟ میں نے کہا ، ماں بلکہ پانچ وقت ۔ وہ بڑا حیران ہوا اور بولا میں MENTAL HOSPITAL میں سرجن ہوں اور یا گل بین کے اُساب کی تھیق میرامُشغُلہ ہے میری تھیق یہ ہے کہ دِماغ سے سارے بدن میں سکنک جاتے ہیں اورا عضاء کام کرتے ہیں ہارادِ ماغ ہروقت FLUID (مائع) کے اندر FLOAT (یعنی تیرنا) کررہاہے۔ اِس لئے ہم بھاگ دوڑ کرتے ہیں اور د ماغ کو پچھنیں ہوتا اگر وہ کوئی RIGID (سخت) شے ہوتی تو اب تک ٹوٹ چکل ہوتی۔ دِ ماغ سے چند باریک رگیس (CONDUCTOR) (مُوصِل) بن کر ہمارے گردن کی پُشت سے سارے جسم کو جاتی ہیں۔اگر بال بُہُت بڑھا دیئے جا ئیں اورگردن کی پُشت کو ُخشک رکھا جائے تو اِن رگوں یعنی (CONDUCTOR) میں خشکی پیدا ہوجانے کا خطرہ کھڑا ہوجاتا ہے اور بار ہاا بیا بھی ہوتا ہے کہ إنسان کا دِ ماغ کام کرنا حچھوڑ دیتا ہے اور وہ یا گل ہوجا تا ہے لہٰذا میں نے سوجا کہ گردن کی پُشت کودن میں دوحیار بارضَر ورتَر کیا جائے ابھی میں نے دیکھا کہ ہاتھ منہ دھونے هو **مان مصطفع**ٰ (ملی مفرق الی مارومنم) جس نے مجھے روس مرتباز کرودیا ک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پر سور حمتیں ناز ل فرما تا ہے۔

ے ساتھ ساتھ گردن کے بیچھے بھی آپ نے بچھ کیا ہے۔ واقعی آپ لوگ پاگل نہیں ہو سکتے'۔ مزیدیہ کمٹے کرنے سے لو کلنے اور کردن تو ربخار سے بھی بچت ہوتی ہے۔

پاؤں دھونے کی حکمتیں

پاؤل کی اُنگیوں کے درمیانی حقد سے شروع ہوتا ہے۔ وُفو میں پاؤل دھونے
پاؤل کی اُنگیوں کے درمیانی حقد سے شروع ہوتا ہے۔ وُفو میں پاؤل دھونے
سے گردو عُباراور جَراثیم بہ جاتے ہیں اور بچے کھیج جراثیم پاؤل کی اُنگیوں کے
خلال سے نکل جاتے ہیں ۔ لمخذ او ضو میں سقت کے مطابق پاؤل وہونے
سے نیندگی کی ، دِ ماغی خشکی گرامت اور مایوی (DEPRESSION) جیسے
پریشان کن اُمراض دُور ہوتے ہیں۔

صَلُّواعَلَى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللَّهُ تعالى عَلى محمّد

فرصان مصطفيا : (مني الشال مداور منم) تم جهال يحى بوجي روزود برهوتمها راؤرو وجهاتك بهنجاب

وُصُو کا بچا ہوا یانی

وضوكا بجابوا يانى يين من شفاء ب- إسسلي من ايك مسلمان

ڈاکٹر کا کہنا ہے۔(۱) اِس کا پہلا اثر مَثّا نے پر پڑتا، پیشاب کی رُکاوَٹ دُور ہوتی

اورخوب گھل کر پییثاب آتا ہے۔ (۲) اِس سے نا جائز ھَبُوت سے خَلاصی حاصِل

، عَدِمَهُمُ اللهُ السَّالَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ السَّالَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الله مَا يَهِ ب موتى ب(س) جكر،مِعد واورمَان في كرمي دُور موتى بـ فعتمات كرام فرطت مِي

'' کسی برتن یالوٹے ہے وُ صُو کیا ہوتو اُس کا بچاہوا پانی قبلہ رُ و کھڑے ہوکر بینا

(تبيين الحقائق ج١ ص٤٤ دارالكتب العلمية ببروت)

انسان چاند پر

ميشے ينھے إسلامي بھائيواؤ شو اور سائنس كامؤ ضوع چل رہا تھا اور

كى ايسے بھى افراد إس مُعاشَرے ميں پائے جاتے ہيں جو إنگريز مُسحَقِقِين اور

سائنسدانوں سے کافی مُرعوب ہوتے ہیں۔ایسوں کی خدمت میں عرض ہے کہ

فوجان مصطّفه : (مني اختال مليه البرم م) جم في يول مرج من اوول مرج بنام درود باك إما أع قيامت كدن يرى شاعت الح

ئبت سارے فقائق ایسے ہیں جن کی تلاش میں سائنسدان آج سَر فکرار ہے ہیں

اور میرے میٹھے میٹھے آ قامکی مَدَ نی مصطَفْ صلّی الله تعالیٰ علیه وَالدِوَسَلُم ان کو بہلے ہی

بیان فرما چکے ہیں۔ دیکھئے اپنے دعوے کے مطابق سائنسدان اب جاند پر پہنچے

بیں مگرمیرے بیارے پیارے آقا مدینے والے مصطفیٰ صلی اللہ تعالی علیہ والہ وَسَلَم

آج سے تقریباً ۱۶۵۰ سال پہلے سفرِ معراج میں چاند سے بھی وَراءُ الوَراءِ اللہ مصادر میں معلا

(یعنی ُ دورے دُور) تشریف لے جاچکے ہیں۔میرے آقا الیمفر ت رضی اللہ تعالی عنہ کے عُرِش شریف کے موقع پر دار الْعُلوم المجدیة عالمگیرروڈ باب المدینه کراجی میں

مُنْعَقِد ہونے والے ایک مُشاعِرہ میں شرکت کا موقع ملاجس میں حدائقِ بخشش

شریف ہے یہ مصرع طرح ' رکھا گیا تھا،

ئرؤ ہی سرجوتر ہے قدموں پہ قربان گیا

حضرت صدرُ الشّرِ نُعِهِ مُصَيّفِ بهارِ شریعت خلیفه ُ اعلیٰ حضرت مولانا على عظم ما منظم ما مناسب کشون من مُفق قد سر حدد

المفتى محمدأ مجدعلى اعظمى صاحب رممة الله تعالى عليه كے شنراد بے مُفتِرِ قرآن حضرتِ

خوجانِ مصطّفها : (ملى اشتعال عليه الربه تم) مجمد برؤ رُود پاک کی کثرت کرد بے شک پیتمبارے لئے طہارت ہے۔

علّ مه عبدُ المصطفىٰ از ہرى رحمة الله تعالى عليہ نے إس مُشاعِره ميں اپنا جو كلام پيش كيا تھا اس كا الك شِعر مُلا حَظه ہو۔

> کہتے ہیں سطح پہ چاند کی اِنسان گیا بسلی الله الله علیہ واله واله عرش اعظم سے وَراء طیبہ کا سلطان گیا

لعِن صِرُف دعویٰ کیا جار ہا کہ اب انسان جا ند پر پُٹنج گیا ہے! بچ پوچھو

تو جا ند بُهُت ہی قریب ہے، میرے میٹھے مدینے کے عظمت والے سلطان ، شہنشاو زمین و آسان ، رحمتِ عالمیان ، سر دار دد جہان صلّی اللہ تعالیٰ علیہ وَالبِ وَسلّم معر ان کی

رات جاند کو پیچھے چھوڑتے ہوئے عرشِ اعظم سے بھی بُہُت اُو پرتشریف لے گئے۔

عرش کی عَقْل وَ نگ ہے چُڑخ میں آسان ہے

جانِ مُراد اب كدهر بائے برا مكان ہے

نور کا کِھلونا

ميٹے ميٹے اسلامی بھائيو! رہا جا ندجس پرسائنسدان اب بہنچنے کا دعویٰ

خوصانِ حصطَفیا (اعلی اندنیال طردال عقم) جم ن کاب جم بح و ۱۰۰۰ یا کشوان بسب تک پروانم آی کاب برگانی، بسبکار شدان کیلیم استفاد کرند. وی شد

كرر ما ہے وہ جاندتو ميرے بيارے آ قاصلي الله تعالى عليه والبوسلم كے تابع فرمان ے- پُتانچ اُلْحَصائِصُ الكُبرى ميں ہے، 'سلطان 'و جہان صلَى الله تعالى عليه واليه وَسَلُّم كَ جِياجان حضرت سِيدُ ناعباً سِين عبدُ الْمُطَّلِب رض الله تعالى عنها فرمات بیں، میں نے بارگاہ رسالت میں عرض کی، یارسول اللہ غسزُوَ خسلَ وصلی اللہ تعالی علیہ وَالبِوَسَلَم اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّ نُوُّت پر دَلالت کرتی تھی اور میرے ایمان لانے کے اُسباب میں سے بی بھی ایک سبب تھا۔ پُٹانچیہ''میں نے ویکھا کہ آی مِنَ اللہ تعالیٰ علیہ وَالہ وَسَلَم كَہُوارے (یعنی پنگھوڑے) میں لیٹے ہوئے جاند سے باتیں کرر ہے تھے اور جس طرف آ ب صلّى الله تعالى عليه والبوسلم أنكل سے إشاره فرماتے جا ندأ سى طرف ہوجا تا تھا۔'' سر کارِنا مدارصتی الله تعالی علیه دالہ وسلّم نے فر مایا ، ' میں اُس سے با تیں کرتا تھا اور وہ مجھ ہے باتیں کرتا تھااور مجھے رونے ہے بہلاتا تھااور میں اُس کے گرنے کی آ واز سنّنا تھا جبکہ وہ عرشِ الٰہی ءَرُوَ هَلّ کے نیچے سُجد ہے میں گر تا تھا 🕯 غر<mark>صان مصطفیا</mark> (ملی اخت ال طب البسفر) جمد رکثرت سے ؤرود پاک چام ہے تلک تمہارا بحد پروزود پاک پر صاحبار سے کنا ہوں کیلئے مفترت ب

ا رحبہ الاہ *تھائی علیہ* اعلیمضر ت فرماتے ہیں ہے

عاند تُحك جاتا جدهم أنكل أضات مبديس كيابي چلنا تها إشارون ير كهلونا نوركا

ایک مُحَبَّت والے نے کہاہے _

مُعجِزهُ شَقُّ الْقَمَر

جبِ عُقَارِمَلَه كويهِ معلوم ہوا كه جاد و كااثر أجرام فلكى (يعني جاندسورج

سِتارے دغیرہ) پرنہیں ہوتا تو پُو نکہ وہ اپنے زُعمِ باطِل میں سرکارصلی اللہ تعالی علیہ وَالہ اِستارے و وسلَّمُ كو مَعادُ الله عَزُوَ حَلْ جادوگر سجھتے تھے اِسلئے ایک روز جُمُعُ ہوکر آپ کی خدمت

میں حاضِر ہوئے اور نِشانِ نُبُوَّ ت طلب کیا۔ فر مایا ، کیا جاہتے ہو؟ کہنے لگے، اگر الانی است تعالیٰ مدیرہ البع علم) اس سے بیں تو جاند کے دوگلزے کرکے دکھائے فرمایاء آسان کی طرف دیکھو ''آ

اوراینی اُنگل سے جاند کی طرف اِشارہ فرمایا تو وہ دُوکٹڑے ہوگیا۔ فرمایا، گواہ رہو!

. فوصان مصطفية اسل من منه المراه المراه على مراه وزور المراه والمراه المراه المراع المراه الم

انہوں نے کہا، محت ملصلی اللہ تعالی علیہ وَ الدوَسَمَ نے ہماری نظر بندی کردی ہے۔ اللہ تبارّک وَتَعالیٰ پاره ۲۷، سورَةُ الْقَدَر کی پہلی اور دوسری آیت میں إرشاد

فرما تاہے:۔

بِسُوراللهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيْرِ توجَمه كَنْوُ الْايمان: الله كَنام

اِقْلَائِبِ السَّاعَةُ وَانْشَقَ الْقَدُونِ عَرْدَعَ جَوَبُهُت مِرِبان رَحَت والا

اوراگر دیکھیں کوئی نشائی تو منہ پھیر۔ اور کھتے ہیں بیتو جادد ہے چلاآ تا۔ اور کہتے ہیں بیتو جادد ہے چلاآ تا۔

(ماخوذ از تفسير البحر المحيط ج٨ ص ١٧١دارالكتب العلمية بيروت)

إثارے سے جاند چیر دیا، کچھے ہوئے خور کو پھیرلیا

گئے ہوئے دن کو عُصْر کیا، بیتاب دو ال تمہارے لئے

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيُب! صَلَّى اللَّهُ تعالى عَلى محمّد

خر هانِ مصطّفے :(مل الفرقال بلہ او بالم) جو مجھ پر در در پاک پڑھنا مجول گیا وہ جنت کا داستہ مجول گیا۔

مِرْف الله عَزَرَعَلَ كيلئے

میٹھے بیٹھے اِسلامی بھائیواؤٹو کے طِنّی فوائد مُن کر آپ خوش نو ہو گئے

ہوں گے مگر عرض کرتا چلوں کہ سارے کا سارا فَنِ طِبَ ظَیّیات پرمُبنی ہے۔ سائنسی تحقیقات بھی حَثمیٰ نہیں ہوتیں ، بدلتی رَہتی ہیں۔ ہاں اللہ ورسول عُسـزُ وَجَــلُ

وَصلَّى اللهٰ تعالیٰ علیه وَ الهٖ وَسلَّم کے اَحْکامات اَمْل ہیں وہ نہیں بدلیں گے۔ہمیں سُنتوں پر

عمل طبی فوائد پانے کیلئے نہیں صِرْ ف وصِرْ ف رضائے اللی عَدْوَ هَلْ کی خاطر کرنا

ہوجاؤں گایا ڈائٹنگ کیلئے روزہ رکھنا تا کہ بھوک کے فوائد حاصل ہوں۔سفر مدینہ اِسلئے کرنا کہ آب وہوا بھی تبدیل ہوجائے گی اور گھر اور کاروباری جَھے ہے۔

ہے بھی کچھ دن شکون ملے گا۔ یا دینی مُطالَعَہ اِس لئے کرنا کہ میرا ٹائم پاس

ہوجائے گا۔ اِس طرح کی نتیوں سے اعمال بجالانے والوں کوثو اب کہاں سے

فد مان مصطفها الاسلى الدنال عدوار منم علي جمس في جمير برايك و أو دياك براها الله تعالى أس برول رحمين بعيجا ب-

ملے گا؟اگر ہم عمل اللہ عَدُّوَ حَلَّا **وخوش کرنے کیلئے کریں گے تو ثواب بھی ملے گ**ااور ماریخ

ضِمنٰ اس کے **فوائد بھی حاصِل ہوجائیں گے۔لہٰذا ظاہری اور** باطِنی آ داب کومُلُحُو ظ

ر کھتے ہوئے وُضُو بھی ہمیں الله عَزُّوَجَلَ کی رِضا کیلئے ہی کرنا چاہئے۔

باطنى ؤضو

حُحجَّهُ الاسلام حضرت سِيدُ ناامام محمر عَن الى عليه رحمة الدالوال احساء موقوم ميں فرماتے ہيں "جبو وضوسے فارغ ہو کر نماز کی طرف مُوجِه ہوتو غور کر کے دہم کے وہ حقے جن پرلوگوں کی نظر پڑتی ہاں کی ظاہر کی پاکیزگی تو حاصل کرلی ہا ب ول جو کہ رب تعالی کے دیکھنے کی جگہ ہاں کو پاک کئے بغیر اللہ تعالی سے مُناجات کرنے میں حَیاء کرنی چاہئے ،ول کی طَہارت تو بہ کرنے اور بُری عادَ تیں ترک کرنے سے ہوتی ہے اور ایچھے اُخلاق اپنانا زیادہ بہتر ہے۔ ظاہری پاکی حاصل کرکے باطنی طَہارت سے محروم رہنے والے ک

(r.)

هٰ و جان مصطفعہٰ : (مل اندُ عال عد ، ابر عتم) جس نے مجھ بروس مرتبہ ؤ زود پاک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پرسور حسیں ناز ل فر ما تا ہے۔

مثال اُس شخص کی سی ہے جس نے بادشاہ کواپنے یہاں تشریف لانے کی دعوت دی اور اُس کے خیر مقدم کیلئے گھر کے باہر ی حصے پر رنگ وروغن کیا مگر اندر دنی

ھے کی صفائی کی کوئی پرواہ نہ کی اوراہے گندُ گیوں سے لِتھے۔ڑا ہوا جھوڑ دیا تو ایسا مخص اِنعام واکرام کانہیں بلکہ بادشاہ کے غصّے اور ناراضگی کامستحق ہے'۔

^ ^وو (إحياء العلوم ج١ ص١٦٠ دارالكتب العلمية بيروت)

سُنّت سائنسی تحقیق کی مُحتاج نمیں

ميشم يبيم إسلامي بعاميو! ما ور كهيّ ! مير عدا قا صلّى الله تعالى عليه واله وسلّم

كى سنت سائنس تُحقيق كى محتاج نهيل اور جهارا مقصود إبِّباعٍ سائنس نهيل إبَّباعٍ

سنت ہے۔ مجھے کہنے دیجئے کہ جب نور پین ماہرِین برسہابرس کی عَرُق رَبزی

کے بعد بتیج کا دَریچہ کھولتے ہیں تو انہیں سامنے مسکراتی نور برساتی سُنّتِ مُصطّفوی

منی اللہ تعالیٰ علیہ وَالہ وَسلّم ہی نظر آتی ہے۔ دنیا میں لا کھ سیر وسیاحت سیجئے ، جتنا جا ہے

فرمان مصطفع (طلى مد تعالى عليدال ملم) تم جهال يكي جوجه برؤزود برحوتمها راؤز ووجمه تك بنجاب

عیش وعشرت سیجے، مگرآپ کے دل کوحقیق راحت مُینَر نہیں آئے گی، سُکونِ

قُلْبِ صِرف وصرف ما دِخداعَةُ وَجَلَّ مِين مِلْحُكَارِ دِلْ كَاحِينِ عَثْقِ سرورِ كُونَين صَلَّى

الله تعالى عليه وَاله وَسَلَّم عِي مِين حاصل موكا له دنيا وآثِر ت كي راختين سائنسي آلات

۲.۷ اور V.C.R اور INTER NET کے زُوبُر وَنہیں اِرتباعِ سنّت میں ہی نصیب

ہوں گ۔ اگر آپ واقعی میں دُونوں جہاں کی بھلائیاں جا ہے

ہیں تو نمازوں اور سنتوں کومضبوطی سے تھام کیجئے اور انہیں سکھنے

کیلئے دعوت اِسلامی کے مَدَ نی قافِلوں میں سفر کو اپنا معمول

بٹا کیجئے۔ ہر اسلامی بھائی نتیت کرے کہ میں زندگی میں کم از کم ایک باریکمشت

۱۲ ماہ، ہر۱۲ ماہ میں ۳۰ دن اور ہر ماہ ۳ دن سُنتوں کی تربیّت کے مَدَ نی قافلے میں

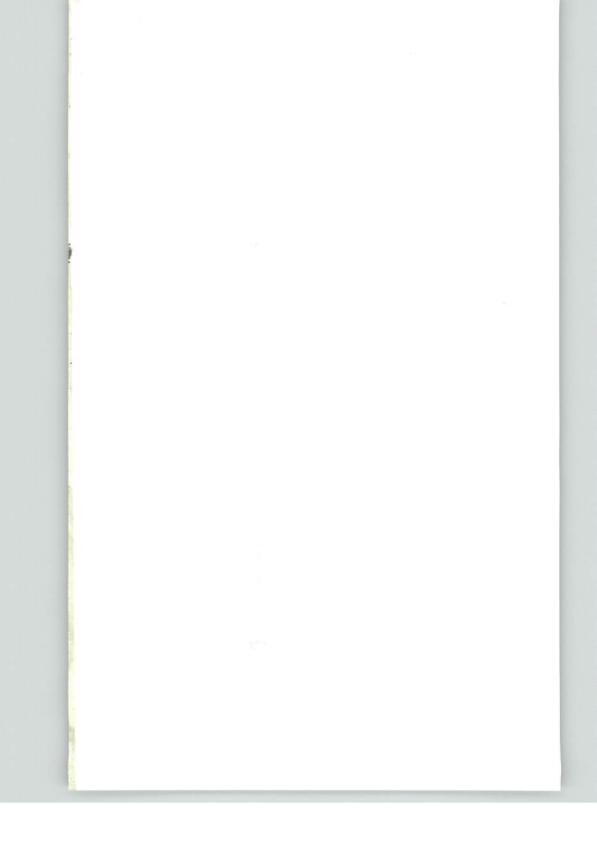
سفركيا كرول كار إن شاء الله عزوجلً

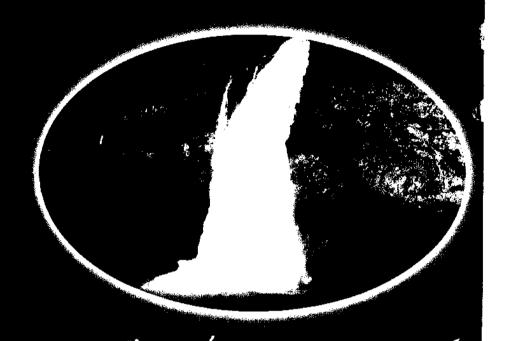
غسلكاطريقه



انوکھی سزا 98 ایک عُسل میں مختلف نیتیں 116 مستوارات کیلئے 6امتیاطیں 106 بارش میں عُسل 116 مستوارات کیلئے 6امتیاطیں 106 مستوارات کیلئے 6امتیاطیں 107 مستوارات کیلئے 6امتیاطیں 107 مستورز انہ ہوجا تا ہوتو؟ 124 مشتور نی کاعذاب 111 مستورکھنے کی ترتیب 124 فوارے کے احتیاطیں 113 مستورکھنے کی ترتیب 124 میں کھنے کی ترتیب 124 میں کھنے کی ترتیب 124 میں کھنے کی ترتیب 128 کی کارخ درست کیجئے 114 میں کھنے کی کاطریقہ (حَنفی) 28 کی کارخ درست کیجئے 114 میں کھنے کی کارخ درست کیجئے 114 میں کی کاطریقہ (حَنفی)

وَرَقِ اللَّهُ ____





انو کی سزا انو کی سزا مستوارات کیلئے 6 احتیاطیں 106 * بارش میں طف نیتیں 116 مستوارات کیلئے 6 احتیاطیں 106 * بارش میں طنسل مستوارات کیلئے 6 احتیاطیں 107 * مسل سے نزلہ ہوجا تا ہوتو؟ 118 منسل فرض ہونے کے 5 آسیاب 107 * میک سے بالغ ہوتا ہے 124

فوارے کا متیاطیں 113 • کتابیں رکھنے کی ترتیب 124

· W.C كارخ درست يجيئ 114 و ميتم كاطريقه (حَنفي) 128

وَرَقِ اللَّئِے ___









اس رسالے میں ۔۔۔۔

مصلے پر کعبۃ اللّٰہ کی تصویر۔۔ انو تھی سزا۔۔۔۔

حمتيم كاطريقة ---

مُشت زنی کاعذاب__

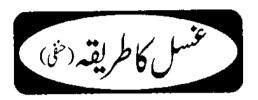
بارش میں عنسل۔۔



ورق الليئے ----



الْحَمْلُ لِلْهِ رَبِ الْعُلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى بَيْدِ الْمُرْسَلِكُنُ اَمَا لِبُدُواَ عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْدُ لِسُعِمِ اللَّهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيْدُ



يه رِساله(40صَفَحات) مكمّل پڑھ ليجئے ، قوي

إمكان هے كه كئي غَلَطِياںِ آپكے سامنے آجائيں۔

دُرُ ودشريف كى فضيلت

مركارِ مدینه، سلطانِ با قرینه، قرارِ قلب وسینه، فیض گغینه، صاحِبِ مُعَظِّر پسینه سلی الله تعالی علیه داله دسم كا اِرشادِ رُحمت بُنیا د ب،'' مجھ پر دُ رُ ودِ پاک کی کثرت کرویے شک رہتمہارے لئے طہارت ہے۔ لے

صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

انوکھی سزا

حضرت سیِّدُ ناجُنیدِ بغدادی علیه رحمة الله الهادی فرمات بین إبنُ الحُرَیْسی

لمُسندِ ابي يعلَيْ ج٥ص٥٥ رقم الحديث ٦٣٨٣دارالكتب العلمية بيروت

فر مان مصطفع : (ملى الله قابل الدالياتم) جوجه مروروو بإك رد هنا مجول كياوه جنت كاراسته مجول كيا-

علیہ رحمۃ الله القوی کہتے ہیں ،ایک بار مجھے اِحتِلا م ہو گیا۔ میں نے ارادہ کیاای وقت غسل کرلوں ۔ پُونکہ پخت سردی کی رات تھی نفس نے مستی کی اورمشورہ دیا،''ابھی کافی رات باقی ہے اتنی جلدی بھی کیاہے!صبح اطمینان سے عسل کرلینا۔'' میں نے فوراننٹس کو**انو تھی سز ا**دینے کیلئے تتم کھائی کہاسی وقت کپڑوں سَمیت نہاؤں گا اور نَہانے کے بعد کیڑے نچوڑ وں گابھی نہیں اوران کواپنے بدن ہی برخٹک کروں گا۔ پُنانچہ میں نے ایبائی کیا واقعی جواللہ عَزُوجَلُ کے کام میں ڈھیل کرے ایسے سر کش نفس کی بہی سز اہے۔ (کیمیائے سعادت ج۲ ص۸۹۲ کُتب حالہ علمی ایران) ميتھے ميتھے اسلامی بھائيو! ديكھا آپ نے! ہمارے أسلاف زجنهُ اللهُ نعالیٰ اپنے نفُس کی جالوں کونا کام بنانے کیلئے کیسی کیسی مصبتیں جھیلتے تھے۔اس سے

عدد مپ س س سے اسے است کو انتہا مہوجانے کی صورت میں آرخرت وہ اسلامی بھائی درس حاصل کریں جورات کو اِحتِلا م ہوجانے کی صورت میں آرخرت کی خوفناک شرم کو مجھلا کر کھش گھر والوں سے شرما کریا مخسل کے مُعا کے میں سستی

كرك، مُمَازِ فَجْرَى جماعت ضائع بلكه مَعاذالله عَدْوَ حَلْ مُمَازِتِكَ قَصَا كَرُوا لِتَ

وُّ هٰ و هانِ مصطّفها : (سل هنان ما برانه و انه من من مجمع برا يك وُ رُود ياك برُ هاالله تعالى أس بردن رحتين بهيجا ہے۔

بي اجب هي غسل فن برجائي وغارة وقت آجاذ بي فوراً غسل كماينا جلية صريفه باكرين

ہے'، فِرِ شیتے اُس گھر میں داخِل نہیں ہوتے جس میں تصویر اور کتّا اور بُخُب (لیعنی جس پر جماع یا اُحبّل م یاشہوت کے ساتھ نکی خارج ہونے کی وجہ بے مُسل فَرْض ہوگیا ہو) ہو''

م (سنَن ابی داؤدج۱ ص۳۶)

غُسل کا طریقہ (حنفی)

وفیر زبان ہلائے دل میں اِس طرح نیت کیجئے کہ میں پاکی حاصل کرنے کیلئے خسل کرتا ہوں۔ پہلے دونوں ہاتھ پہنچوں تک تین تین بار دھویئے ، پھر اِستیجے کی جگہ دھو بئے خواہ نُجاست ہویا نہ ہو، پھر جشم پراگر کہیں نُجاست ہوتو اُس کو دُور بیجئے کی جگہ دھو بیئے خواہ نُجاست ہویا نہ ہو، پھر جشم پراگر کہیں نُجاست ہوتو اُس کو دُور بیجئے پھر نماز کا ساؤضو بیجئے مگر پاؤں نہ دھو بیئے ، ہاں اگر پھو کی وغیرہ پر خسل کررہے ہیں تو پاؤں بھی دھو لیجئے ، پھر بدن پر تیل کی طرح پانی چُر کو لیجئے ، مُصوصاً سرد یوں میں (اِس دَروان صابُن بھی لگا کتھ ہیں) پھر تین بارسید ھے کندھے پر پانی ہم سرد یوں میں (اِس دَروان صابُن بھی لگا کتھ ہیں) پھر تین بارسید ھے کندھے پر پانی ہم سے کندھے کیا گھوسل کی ہمائے ، پھر تین بارا کے کندھے پر ، پھر سر پراور تمام بدن پر تین بار ، پھر عنسل کی

فو هان مصطفعياً: (ملى اختابي عليه البرمنم) جس نے جھے پر رسيم تنبه ؤ رُود پاک پڑھا اللہ تعالیٰ أس پر سوحتیں نازل فر ما تا ہے۔

بیست الگ ہوجائے ،اگرؤضوکرنے میں پاؤں نمیں دھوئے تھے تواب دھو لیجئے۔
نہانے میں قبلہ رُخ نہ ہوں ،تما م بدن پر ہاتھ کچھر کرمل کرنہا ہے۔الی جگہ نہا کیں کہ کسی کی نظر نہ پڑے اگر یہ مکون نہ ہوتو کرد اپناسِر (ناف سے لے کر دانوں گھٹوں میں کی نظر نہ پڑے اگر یہ مکونا کپڑانہ ہوتو کسر دانوں گھٹوں میں کسی موٹے کپڑے سے چھپالے ،موٹا کپڑانہ ہوتو کسپ فر ورت کوویا تین کپڑے لیٹ سے بدن پر چپک جائے گاور معاذاللہ عزو کیا گھٹوں کہ باریک کپڑا ہوگاتو پانی سے بدن پر چپک جائے گاور معاذاللہ عزو کیا گھٹوں کیارانوں وغیرہ کی رنگت ظاہر ہوگی عورت کوتو اور کھی نیادہ او تیا طی حاجت ہے۔ دورانِ عسل کسی قسم کی گفتگومت سے بحکے ،کوئی دعا محمی نہانے کے بعد تو لیہ وغیرہ سے بدن پونچھنے میں کرج نہیں ۔نہانے کے بعد تو لیہ وغیرہ سے بدن پونچھنے میں کرج نہیں ۔نہانے کے بعد تو لیہ وغیرہ سے بدن پونچھنے میں کرج نہیں ۔نہانے کے بعد تو لیہ وغیرہ سے بدن پونچھنے میں کرج نہیں ۔نہانے کے بعد تو از اکپڑے کہن لیکھے ۔اگر کروہ وقت نہ ہوتو دور کھتے نقل اداکر نامہ سے بحب

عُسل کے تین فرائض

(۱) گُلّی کرنا(۲)ناک میں یانی چڑھانا(۳)تمام ظاہر بدن پریانی بہانا۔

(فتاوی عالمگیری ج ۱ ص ۱۳)

(عامه كتب فقه حنفي

خد جانِ حصطَفیۂ : (ملافظ قال علہ الدینم) تم جہال بھی ہو جھ پر دُرُود پڑھوتمہارا دُرُود بھی تک پہنچا ہے۔

(۱)کُلّی کرنا

مند میں تھوڑا سایانی لے کرنگی کرکے ڈال دینے کا نام گلی نہیں بلکہ منہ کے ہر پُرزے، گوشے، ہونٹ سے حَلْق کی جڑ تک ہرجگہ یانی بہ جائے۔

ر (تحلاصةُ الفتاواي ج ١ ص ٢١)

اسی طرح داڑھوں کے پیچھے گالوں کی تہ میں ، دانتوں کی کھو کیوں اور جڑوں اور زَبان کی ہر کروٹ پر بلکہ حکق کے گنارے تک پانی بہر۔ (الدرالسمتار معنی ہر کروٹ پر بلکہ حکق کے گنارے تک پانی بہر۔ (الدرالسمتار معنی ہونی کر لیجئے کہ سقت ہے۔ دانتوں میں چھالیہ کے دانے یا بوٹی کے رَبشے وغیرہ ہوں تو ان کو چھوانا طروری ہے۔ باں اگر چھوانے میں طر ر (یعنی نقصان) کا اندیشہ ہوتو مُعاف ہے۔ (مساوی رضوبہ جاس اگر چھوانے میں طر ر (یعنی نقصان) کا اندیشہ ہوتو مُعاف ہے۔ (مساوی رضوبہ جاس ا کر چھوان نقب کا بعد کو معلوم ہونے یر چھوا اکریانی بہانا فرض نہ ہوئے اور رَہ گئے نُماز بھی پڑھ لی بعد کو معلوم ہونے یر چھوا اکریانی بہانا فرض نہ ہوئے اور رَہ گئے نُماز بھی پڑھ لی بعد کو معلوم ہونے یر چھوا اکریانی بہانا فرض

ةً فو حان مصطفياً : (صلى الدُن الدوار بهم) جس نه جو يرول مرتبه كالدول مرتبه ثما مددو باك يز حاأب قيامت كدن برى شفاعت لح كيد

ہے۔ پہلے جونماز پڑھی تھی وہ ہوگئ۔ (ساحو ذار نشاوی رضوبہ ج۱ ص۲۰۱) جوہاتا دانت مسالے سے جمایا گیایا تارسے باندھا گیا اور تاریامسالے کے بینچے پانی نہ پہنچا ہوتو مُعاف ہے۔ (نشاوی رضوبہ ج۲ص۴۰۲) جس طرح کی ایک گئی عشل کیلئے فرض ہے اِس طرح کی تین گلیاں وُضوکیلئے سنّت ہیں۔

(۲)ناك ميں يانی چڑھانا

جلدی جلدی ناک کی نوک پر پانی لگالینے سے کام نہیں چلے گا بلکہ جہاں تک نُرْم جگہ ہے یعنی خُت ہُری کے شروع تک دُ ھلنالا نِی ہے۔ (مُدرسة المفندادی جاس ۲) اور بید یوں ہو سکے گا کہ پانی کو سُونگی کراو پر پھینچئے۔ بید خیال رکھئے کہ بال برابر بھی جگہ دُھلنے سے نہ رَہ جائے ورنہ سل نہ ہوگا۔ ناک کے اندراگر دینی سُوکھ گئی ہے تواس کا چھڑوانا فرض ہے۔ (فندادی عالمہ گیری جاس ۱۷) نیز ناک کے بالوں کا دھونا بھی فرض ہے۔ (فندادی عالمہ گیری جاس ۱۷) نیز ناک کے بالوں کا دھونا بھی فرض ہے۔ (بہارِ شریعت حصہ ۲ ص ۲۶ مدینة المرشد بربلی شریف)

(غسل کا طریقه (^{حق}ی

﴾ ﴿ فوجانِ مصطفع الصى الله الله الله الله الله على يرو روياك كى كثرت كروب شك يرتمهارك لئے طهارت ب

(۳) تمام ظاہری بدن پریانی بہانا

ممرے بالوں سے لے کر پاؤل کے تلوول تک جسم کے ہر پُرزے

اور ہر ہررُ و نَگٹے پر پانی بہ جاناضَر وری ہے،جسم کی بعض جگہیں ایسی ہیں کہ اگر

اِحِتیاط نہ کی تو وہ سُو تھی رَہ جائیں گی اور شل نہ ہوگا۔ (متاویٰ عالمگیری جاس ۱۶)

"صلّی الله عَلَیْکَ یا رسولَ الله "کاکیس و وفکی نبت سے مردوعورت دونوں کیلئے شسل کی 21 احتیاطیں

(۱) اگر مُر دُکے سرکے بال مُندھے ہوئے ہوں تو انہیں کھول کرجڑ

ے نوک تک پانی بہا نا فُرْضْ ہےاور(۱) عور پر صِر ف جَرُّ تَرَّ کر لیناظر وری ہے کھولنا

ظَر وری نہیں۔ہاںا گر چوٹی اتنی سخت گندھی ہوئی ہو کہ بے کھولے جڑیں تر نہ ہوں گی تو کھولناظر وری ہے «نسادی عسالہ گلیری ج ۱ ص ۱۲) اگر کا نوں میں بالی یا

ں۔ میں نتھ کا چھید (سُوراخ) ہواوروہ بندنہ ہوتو اس میں پانی بہانا فرض ہے۔ ناک میں نتھ کا چھید (سُوراخ) ہواوروہ بندنہ ہوتو اس میں پانی بہانا فرض ہے۔

ؤضومیں صِر ف ناک کے نتھ کے چھید میں اور غسل میں اگر کان اور ناک دونوں .

میں چھید ہوں تو دونوں میں پانی بہائیں (٤) بھنو دں ،مُونچھوں اور داڑھی کے

ہر بال کا جڑ ہے نوک تک اوران کے نیجے کی کھال کا دھو ناضَر وری ہے (ھ) کا ن کاہر پُر زہ اوراس کے مُوراخ کا منہ دھوئیں (۹) کا نوں کے بیچھے کے بال ہٹا کریانی اِبِها مَيں (v) مُعورُ ی اور گلے کا جوڑ کہ منہ اُٹھائے پغیر نہ دُ صلے گا (^) ہاتھوں کواچھی طرح اُٹھا کر بغلیں دھوئیں (4) بازو کا ہر پہلو دھوئیں(۱۰) پیٹھ کا ہرذرّہ وھوئیں ﴿ ١١) پبیه کی بلنیں اُٹھا کر دھو ئیں (۱۲) ناف میں بھی یانی ڈالیں اگریانی ہنے میں شک ہوتو ناف میں ُانگل ڈال کر دھو ئیں (۱۳)جسم کا ہر رُ ونگلنا جڑے نوک تک دھو ئیں (١٤)ران اور پَير و (ناف سے نيج كے ضے) كاجوڑ دھوكيں (١٥)جب بيٹھ کرنہا ئیں تو ران اور پیڈلی کے جوڑ بربھی یانی بہانایا در تھیں (۱۶) دونوں سُرین ے ملنے کی جگہ کا خیال رکھیں ،ٹھوصا بُب کھڑے ہو کر نبہا نمیں (۱۷) رانوں کی گولائی اور (۱۸) پنڈ لیوں کی کروٹو ل پر یانی بہا ئیں (۱۹) ؤ گرو اُنَفَینِین (فوطوں) کی عجل سطح جوڑ تک اور (۲۰)اُنَشَینُ کے <u>نیجے کی</u> جگہ جڑ تک دھوئیں (۲۱) جسکا خَتنه نه ہوا،وہ اگر کھال چڑ ھ^{ے ک}تی ہوتو چڑ ھا کر دھوئے اور کھال کےاندریانی چڑ ھائے۔ (مُلَغَص از:بهار شريعت حصه ٢ ص٣٤)

ي فوصان مصطفيا(سلى الله تعالى طيده الديم المجي بركثرت ، ووياك بزهوب ثبك تمهارا مجي يروز ووياك بزهم التمهار سكانا بول كيام عفرت ب-

مَستُورات كيلئے 6 احتياطَيں

(۱) ڈھلکی ہوئی پستان کواٹھا کر پانی بہا کمیں (۲) پستان اور پیٹ کے

جوڑ کی لکیردھوئیں (۳) فُرجِ خارج (یعن عورت کی نَثْرُم گاہ کے باہر کے تھے) کا

ہر گوشہ ہر ککڑا اُوپر پنچے خوب اِ حتیاط ہے دھوئیں (٤) فَر جِ داخِل (یعنی شرمگاہ

کے اندرونی ھے) میں انگلی ڈال کر دھونا فرض نہیں مُستَحَب ہے(۵)ا گر کیض یا نِفاس

سے فارِغ ہوکرغُسل کریں تو کسی پُرانے کپڑے سے فَر جِ داخِل کے اندر سے خون کا اثر صاف کرلینامُسُخُب ہے (بھار شسر بعت حصّہ ۲ص۳۰)(۲) اگر نیل

یالش ناگخنوں پرنگی ہوئی ہے تواس کا بھی چھڑا نا فرض ہے درنہ مسل نہیں ہوگا، ہاں پاہش ناگخنوں پرنگی ہوئی ہے تواس کا بھی چھڑا نا فرض ہے درنہ مسل نہیں ہوگا، ہاں مہندی کے رنگ میں حرج نہیں۔

زَخُمُ کی پٹی

رِّهُمْ بِرِبِیْ وغیرہ بندھی ہواوراہے کھولنے میں نقصان یا کڑج ہوتو بیٹی ای سرف نیسر کی مضربات

پر ہی مُسے کر لینا کافی ہے نیز کسی جگہ مرض یا دُرُد کی وجہ سے پانی بہا تا نقصان دِہ ہوتو

خد جان مصطّفها (طامد خان مداويه لم) جرجم إلك مرحد دُروش بف يرحمنا جائلة تعالى أس كيلي اليراطا جراكم مناورا كي قبرا طامد بها وجناب

اُس پورے عُضْوْ بِمَثْحَ کر لیجئے۔ پٹی ضَر درت سے زیادہ جگہ کو گھیرے ہوئے نہیں ہونی جاہئے ورنمُشْ کافی نہ ہوگا۔اگرضَر ورت سے زیادہ جگہ گھیرے پغیر پٹی باندھنا ممکن نہ ہومُثَانا باز ویرزخم ہے مگر پٹی باز وؤں کی گولائی میں باندھی ہےجس کےسبب باز و کالچھاحتہ بھی پتی کے اندر چھیا ہوا ہے ، تو اگر کھولناممکِن ہوتو کھول کراُس حقے کودھونا فرض ہے۔اگر ناممکِن ہے یا کھولنا توممکِن ہے گر پھر و کیے نہ باندھ سکے گا اور یوں زَخْم وغیرہ کونقصان پہنچنے کا اندیشہ ہےتو ساری پٹی پرَمْشُح کر لینا کا فی ہے۔ بدن کاوہ اچھاھتہ بھی دھونے سے مُعاف ہوجائیگا۔

(حاشية الطحطاوي ومراقى الفلاح ص١٤٣)

غُسل فرض ھونے کے 5 اسباب

(۱) منی کااپنی جگہ ہے شَہوت کے ساتھ جُد اہو کرعُضْوَ سے نگلنا(مندویٰ عدام گیری

ج اص٤) (٢) إُحْمِلًا م يعني سوت مين منى كانكل جانا (عسلاصة السفنساوي ج ١٥٥١) (۳) مُرْمُكًاه ميں کشُفه (سُاری) داخِل ہوجانا خواه شهوت ہویانه ہو، اِنزال ہویانه ہو،

فو مان مصطفى السل الدخال عدد الديم على مرد أرودشر يف يدهواللهم يروحمت عصيح كار

دونول پیسل فرض ہے (مرانی الفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۹۷) (٤) کیض سے .

فارغ مونا(ابسط صل ٩٧) (٥) نِفاس (ليني بَهِ جَنن پر جوخون آتا ہاس) سے فارغ

بهوناب

(تبيين الحقائق ج١ ص١٧)

ا کشور توں میں بیہ شہور ہے کہ بچہ جننے کے بعد عورت جالیس دن

تک لاز می طور پرنا پاک رَہتی ہے یہ بات ہالگل غلّط ہے۔ برائے کرم! نِفاس کی ضَر دری وَ ضاحت پڑھ لیجئے:۔

نفاس کی ضَروری وَضاحت

بلچ بیداہونے کے بعد جوخون آتا ہے اُس کونفاس کہتے ہیں اسکی زیادہ

سے زیادہ مدّت کیا لیس دن ہے لینی اگر جا لیس دن کے بعد بھی بندنہ ہوتو مرض عن

ہے۔ لہذا چالیس دن پورے ہوتے ہی غسل کرلے اور چالیس ون سے پہلے

بند ہوجائے خواہ بچہ کی وِلادت کے بعد ایک مِنٹ ہی میں بند ہوجائے توجس .

وفت بھی بندہوغنسل کرلے اور نَماز ورُوزہ شُر وع ہوگئے۔ اگر چالیس دن کے

فدرها وصطف (سلى الله تعالى باروار والمر) درب تمر ملين وعربه المام) برؤرود باك يزحو تي يرجى يزحوب شك على تمام جهانول كروب كارمول يول -

وَ وران فَرْض وواجِب نَما زیں یاروزے قضا کئے تصفو وہ بھی پھرسے ادا کرے۔

(ماحوذ از فتاوي رضويه ج٤ ص ٤ ٣٥ تا ٢٥ ارضافاؤ نديشن لاهور)

5 ضَروري اَحْكام

من شہوت کے ساتھ اپنی جگہ سے جُدانہ ہوئی بلکہ بوجھ اُٹھانے یا بُلندی سے گرنے یافھلہ خارج کرنے کیلئے زورلگانے کی صورت میں

خارِج ہوئی توغسل فرض نہیں۔وضو بیمر حال ٹوٹ جائے گا۔

(مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٩٦)

فد من مصنع (من اخترانی علیدار بسنم) جوجمحه پر روز جعد دُرُ و درشریف پز ھے گا بیس قیامت کے دن اُس کی شفاعت کروں گا۔

مہ اللہ میں بیلی پڑگئ اور پییٹاب کے وقت یاویسے ہی بلاشہوت اِس کے قطر منکل آئے عسل فرض نہ ہواؤ ضوٹوٹ جائےگا۔

(بهار شریعت حصه ۲ ص ۳۸مکتبهٔ رضویه)

مستثق اگر اِحْتِلام ہونایا دہے مگراس کا کوئی اثر کپڑے دغیرہ پرنہیں توعنسل فرض نہیں۔ (فتادیٰ عالمہ گیری ج ۱ ص ۱۰)

ه اورنی اورنی اورنی اُتر تی ہوئی معلوم ہوئی مگر باہُر نکلنے سے قبل ہی معلوم ہوئی مگر باہُر نکلنے سے قبل ہی مناز پوری کرلی اب خارج ہوئی تؤئماز ہوگئی مگراب غسل فَرْضُ ہوگیا۔

(فتح القدير ج١ ص٤٥)

رنے ایک ہاتھوں سے مادہ خارج کرنے سے مسل فرض ہوجاتا ہے۔ یہ گناہ کا کام ہے۔ حدیث یا کہ الیا کے درانی کام ہے۔ حدیث یا ک میں ایسا کرنے والے کوملعو ن کہا گیا ہے۔ (مرانی الفلاح معه حاشبة الطحطاوی ص ٩٦) ایسا کرنے سے مردانہ کمزوری پیدا ہوتی ہے اور بار ہادیکھا گیا ہے کہ بالاً خِرآ دَمی شادی کے لائق نہیں رُہتا۔

من اسلی الله تانی ساید ارائم) جمل نے مجھ برو و زیمجھ دوسو بارؤ رُودیا ک بڑھا اُس کے دوسوسال کے گنا و تعاف ہول گے۔

مثحت زتى كاعذاب

م**ر كابر** عليم علي من المام المسنّت مولينا شاه احد رضا خان عليه رمة الرمن كي خدمت میں عرض کیا گیا ،ایک شخص مجلوق (مشت زنی کرنے دالا) ہے وہ اِس فیعل سے نہیں مانتاہے،ہر چنداس کو سمجھایا ہے،آیتحریر فرمائیں، اِس کا کیا حَشْر ہوگا اور اُس کوکیادعا پڑھنا جاہئے جس سے اُس کی عادت چھوٹ جائے؟ ا**ر شادِ اعلیمنر ت** :وہ گنہگار ہے ،عاصی ہے ،اِصرار کے سبب مُرَتکِب کبیرہ ہے ، فاسِق ہے ، حشرُ میں ایسوں کی (یعنی مشت زنی کرنے دانوں کی) متصلیاں گا بھن (یعنی علِد) أخْصِ گی جس ہے مجمع اعظم میں اُن کی ُرسوائی ہوگی اگر تو بہ نہ کریں تو اور الله غزَّرُ حَلِيمُعاف فرما تام جمع جام ،اورعذاب فرما تام جمع جام اسم عائے کہ لاحول شریف کی کثرت کرےاور جب شیطان اِس حَرکت کی طرف بلائے تو فورأدل سے مُعُوّجِه بخداغه وْخل موكرلاحُول يرصد مُمانِه جْگاندى مابندى كرے مُمانِ صَبح

مو مان مصطفرا (ملی انتقالی بارالبائم) اُس فنم کی تاک خاک آلود ہوجس کے پاس بیراذ کر ہواوردہ جھ پروُرُ دو پاک شریز ہے۔

کے بعد بِلا ناغہ سکورۂ اِخلاص مثبریف کا وِرُور کھے۔واللہ تعالی الم لِ (شَجَرہُ عَطّاریہ ص ۱۲ اپرہے مُرضَّح سورہُ اِخلاص گیارہ بار پڑھے اگر شیطان مع لشکر

کوشش کرے کا سے گناہ کرائے نہ کراسے جب تک کہ بیخود نہ کرے۔) مع بہتے یانی میں مسل کا طریقہ

آمر بہتے پانی مَثَلُ دریا، یانکر میں نہایا تو تھوڑی دریاس میں رُکنے سے تین باردھونے، تر تیب اور وُضویہ سب شنیں ادا ہو گئیں۔ اس کی بھی طَر ورت نہیں کہ اُعْضاء کو تین بار حَر کت دے۔ اگر تالاب وغیرہ تھہرے بانی میں نہایا تو انگر کت دے۔ اگر تالاب وغیرہ تھہرے بانی میں نہایا تو انگر کت دینے یا جگہ بدلنے سے تُکھیٹ (مَنْ لَی لَی مِن کَا مِنْ مَنْ بَارُ رَکت دینے یا جگہ بدلنے سے تُکھیٹ (مَنْ لَی لَی مِن کَا مِنْ مَنْ بَارِ رَک کَا مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ مُنْ مُنْ مُنْ کَا تُورْ ی کھڑا ہونا بار دھونے کی سنت ادا ہو جائیگی۔ برسات میں (یانل یا نوارے کے نیچ) کھڑا ہونا بار دھونے کی سنت ادا ہو جائیگی۔ برسات میں (یانل یا نوارے کے نیچ) کھڑا ہونا بانی میں وُضوکیا تو وُ ہی تھوڑی بہتے یانی میں وُضوکیا تو وُ ہی تھوڑی

____دينه

لے فت اوی رضو یہ شریف ج ۲۲ ص ۲۶۶ کی جکس کے هوشرُبا نقصانات کی تفصیلی معلومات کیفنے سگے مدینہ عفی عنہ کا صوف 18 صفحات کارسالہ "امرد پسندی کی تباہ کاریاں " پڑہ لیحنے ۔

8

۔ یعنو صدر مصطنعیٰ (سلی اللہ تعالیٰ علیہ اور سلم) جس کے پاس میرا ذکر ہواور دو جھے پر کوروشر نیف نہ پڑھے تو گول میں وہ مجول ترین فخص ہے۔

دیراس میں عُضْوَ کورَ ہنے دینا اور تھہرے پانی میں حُرکت دینا تین باردھونے کے قائم مقام ہے۔ (الدرائسہ حتار معہ ردالسحنار ج ۱ ص ۳۲۰) وضُواور عُسل کی ان تمام صورَ توں میں گئی کرنا اورناک میں یانی چڑھانا ہوگا۔

فَوّارہ جاری پانی کے حُکُم میں ھے

فاوی اہلسنت (غیرمطبومہ) میں ہے، فؤ ارے (یائل) کے نیچے مسل کرنا جاری پانی میں غسل کرنے کے حکم میں ہے لطنداا سکے نیچے مسل کرتے ہوئے وضو اور غسل کرتے وقت کی مُدّت تک تفہرا تو کیٹیٹ کی سنت ادا ہوجائے گی پُمنانچِه ورِحتار میں ہے،''اگر جاری پانی ، بڑے حوض یا بارِش میں وضواور غسل کرنے کے وقت کی مدّت تک تفہرا تو اس نے پوری سنت ادا کی۔ (در مخارع ردالحارج اص ۲۹۱) یا در ہے عسل یاؤ ضوائی کرنا اور ناک میں پانی چڑھانا ہے۔

فَوَّار ے کی احْتیاطیں

ا کر آپ کے حمّام میں فَوَ ارہ (SHOWER) ہوتواہے اچھی طرح دیکھ

پٌّند مهن مصعدیهٔ (سل اند قال ماید داریسنر) جس کے پاس میراؤ کر ہوااوراً س نے دُرُر ووشریف ند پڑھااً س نے جفا کی۔

لیجئے کہ اُس کی طرف مُنہ کر کے ننگے نہانے میں مُنہ یا پیڑھ قبلہ شریف کی طرف تو نہیں ہورہی ۔ اِستِنجا خانے میں بھی اِسی طرح اِ چتیا طفر مائے ۔ قبلہ کی طرف منہ یا پیڑھ ہونے کا معنیٰ یہ ہے کہ 45 وَرَج کے زاویہ کے اندراندر ہو۔ لہذا یہ احتیاط بھی خَر وری ہے کہ 45 وَرَب کے زاویہ کے باہر ہو۔ اس مسئلے سے اکثر لوگ ناواقف ہیں۔ ہے کہ 45 وَرَب کے زاویہ کی کارخ ورست سیجے

رمہر یائی فرما کراپنے گھروغیرہ کے ڈبلیو۔سی(.W.C.)اور فَوّ ارے کا رُخ پُرکاریا کسی آلے کے ذَرِیعے معلوم کر کے دیکھے لیجئے اگر غلَط ہوتواس کی اِصلاح فرمالیجئے تاکہ دنیا کی بیتھوڑی سی زَحْمت آ فِرت کی خوف ناک مصیبت سے حفا ظت کا سبب بن سکے۔

زیادہ احتیاط اِس میں ہے کہ .W.C قبلہ سے 90 کے دَرَج پر یعنی نَماز پڑھنے میں سلام پھیرنے کے رُخ کرد ہیجئے ۔ مِعمار عُمو مَا تعمیر اِتی سَہولت اور خوبصور تی کا لحاظ کرتے ہیں آ دابِ قبلہ کی پرواہ نہیں کرتے ۔مسلمانوں کومکان کی غیروا جبی بہتری کے

عرصان مصطف (سلى الله تعالى مار البسلم) جس ك باس ميراؤكر موااورأس في جمحه بروزود باك نه براها مختبق ووبد بخت موكيا_

بجائے آ بڑت کی حقیقی بہتری پر نظر رکھنی جا ہے۔

عے کچھ نیکیاں کمالے جلد آفرت بنالے

بھائی نہیں بھروسہ ہے کوئی زندگی کا

كب كب غسل كرناستن ب

جُمْعه،عيدُ الفِطر ، بَقَرعيد، عَرَ فه كدن (يعني 9دُو الحَيِّةُ الحرام)

اور إحرام باند ست و قُت نها ناسنت ہے۔ (فتادی عالمگیری جاص ١٦)

کب کب شل کرنامتج ہے

(۱) ُوتونبِ عَرفات (۲) ُوتُونبِ مُزدلفِه (۳) حاضِريَ حرم (٤) حاضِريَ

سرکارِ اعظم صلی الله تعالی علیه واله وسلم (۵) طواف (۲) موخولِ مِننی (۷) جَمروں پرِ مرکارِ اعظم صلی الله تعالی علیه واله وسلم (۵) طواف (۲) موخولِ مِننی (۷) جَمروں پر

کنگریاں مارنے کیلئے تینوں دن(۸) هب براءَت (۹) هب قَدْرُ (۱۰) عُرفه کی

رات (۱۱) مجلسِ میلا دشریف (۱۲) دیگرمجالسِ خبر کیلئے (۱۳) مُر دہ نہلانے کے بعد

موجد مصطف (سلى الدتالي عديد الدائم) جس في مجمد براك بارد رووياك برحا الله تعالى أس بروس وحتي معيجا ب

(۱٤)مجنون کومبئون جانے کے بعد (۱۵)غنثی ہے افاقہ کے بعد (۱۲)نشہ

جاتے رہنے کے بعد (۱۷) گناہ سے توبہ کرنے (۱۸) نئے کیڑے پہنے کیلئے

(۱۹) سفر سے آنے والے کیلئے (۲۰) اِستِحاضہ کا خون بند ہونے کے بعد

(٢١) نَمَا زِّكُوف وُضُوف (٢٢) نَمَا زِ اسْتِشْقا مِكِيلِيِّ (٢٣) خوف وتاريكي اور سخت

آندهی کیلئے (۲٤) بدن پرنجاست لگی اور بیمعلوم ند ہوا کہ س جگہ لگی ہے۔

(بهار شريعت حصّه ٢ ص ٤١)

ايك غسل ميں مخلف نتيں

جس پر چند خسل ہوں مُثَلًا اِحْتِلا م بھی ہُوا ،عید بھی ہے اور جُمعہ کا دن بھی ،

ہ ہے۔ تو تینوں کی بنیت کر کے ایک عُسل کرلیا،سب ادا ہو گئے اورسب کا تواب ملے گا۔

(الدرالمختار معه ردالمحتار ج ١ ص ٣٤١)

بارش میں عسل

لوگول كيما مفير كول كرنها ناحرام ب- (نساوى رضوي ج

. * **خو حان حصطفے** :(ملحان شانی بار استم) جبتم مرطین (جبم امام) پروُز دو یاک پ**رموتوجم پرگی پرمو** به فتک بشراتمام جهانوں کے دب کارمول ہوں۔

م٠٠٠ ٣) بارش وغيره ميں بھی نہا ئيں تو پا جامه ياشلوار كے او پرمزيدمو فی چا در لپيٺ

لیجئے تاکہ پاجامہ پانی سے چیک بھی جائے تو رانوں وغیرہ کی رنگت ظاہر ندہو۔

تك لباس والے كى طرف نظر كرنا كيسا؟

ر الماس تنگ ہو یا زُور سے ہوا چلی یا بارش یا ساحِلِ سمندر یا تُنہر وغیرہ

میں اگرچہ موٹے کپڑے میں نَہائے اور کپڑااِس طرح چِپک جائے کہ سِتْر کے کسی

كامِل عُضْوْمَثَلُا ران كي مَكْمُل كُولا كي كم بيئت (أبهار) ظابِر موجائے اليي صورت

میں اُس عُفُو (مخصوص) کی طرف دوسر کا نظر مرف کی اجاز نہیں۔ یہی حُکم تنگ لباس والے

کے بیتر کے اُنجرے ہوئے عُضْوِ کامِل کی طرف نظر کرنے کا ہے۔

فكففهات وقت خوب إحتياط

حمّام میں تنها نظے نبائیں یااییا یا جامد پہن کرنہائیں کہاس کے جبک

جانے سے رانوں وغیرہ کی رنگت ظاہِر ہوسکتی ہے توالیں صورت میں قبلہ کی طرف

غو جانِ جھ مَلْغَیٰ : (ملی اندُ تانی بار او بار کر بار کے جھے پرایک ؤرود پاک پڑ حااللہ تعالیٰ اُس پر دس رحشیں بھیجتا ہے۔

منه يا ببيهُمت سيجحَــُـ

عسل سے زلہ ہوجاتا ہوتو؟

ذُكام یا آشُوبِ خِیْم وغیرہ ہواور بیگمانِ سیح ہوکہ سرسے نہانے میں مرض بڑھ جائے گایا دیگراَ مراض پیدا ہوجا ئیں گے تو گئی سیجے ہناک میں پانی چڑھا ہے اورگردن سے نہا ہے ۔اورسر کے ہر حقے پر بِھیگا ہوا ہاتھ پھیر لیجئے شسل ہوجائے گا۔ بعد صِحَّت سردھوڈ الئے پوراغسل نئے سرے سے کرناظر وری نہیں ۔

(بهار شریعت حصه ۲ص ۳ ۳مدینهٔ المرشد بریلی شریف)

بالثى سے نَهاتے وقت إختياط

اگر بالٹی کے ذَرِیعِ غسل کریں تواحتیاطا اُسے تپائی (STOOL) وغیرہ پررکھ لیجئے تا کہ بالٹی میں چھینٹیں نہ آئیں۔ نیزغسل میں استِعمال کرنے کا گگ بھی فرش پر ندر کھئے۔ 44

خوصان مصطفها : (ملى دند تدان عدد البدائم) جم في يوس مرتب مح اودي مرتبر ثام ودود باك ع حاأت قيامت كدن مري شفاعت الحكا-

بال کی کرہ

بال میں رحر ہ پر جائے تو عُسل میں اسے کھول کریانی بہانا طروری نہیں۔

(بہارِ شریعت حصه ۲ ص ۳۱مدینة المرشد بریلی شریف)

"قرآن مقد س هے "كوئى فروف كى نبت سے ناپاكى كى حالت ميں قران ياك يرصفيا مچھونے كے 10 آداب

؞؞؞۩ؙ جس برغُسل فرض ہواُ س کومسجِد میں جانا،طُواف کرنا،قرانِ پاک حَچُونا،

بے چھوئے زَبانی پڑھنا،کسی آیت کالکھنا،آیت کاتعویذلکھنا(بداس

صورت ميں حرام ہے جس ميں كاغذ كا حكومًا بايا جائے ، اگر كاغذ كون جو كا

ككمناجائزم) (غيسر مطبوعه افتداوي اهلسنّت) ايماتعويذ چُمونا اليي

انگوشی چھوٹایا پہننا جس پرآیت یا مُروف ِمُقَطِّعات لکھے ہوں حرام ہے۔

(الدر المنعتار معه ردالمعتار ج١ص ٣٤٣) (موم جامع والي بالاسك مي

﴾ فعد هان مصطفها: (ملي دند قالي مداور منم) جمل في جمه پروس مرتبد ؤ رُود پاک پر هاالله تعالى أس پر موحمتين ناز ل فرياتا ہے۔

لپیٹ کر کپڑے یا چڑے دغیرہ میں سلے ہوئے تعویذ کو پہننے یا چھونے میں مُصا یُقہ نہیں۔)

میں **ایسے ک**یڑے یا رُومال وغیرہ سے قرانِ پاک پکڑنا جائز

ہج جوندا بے تابع ہون قران پاک کے۔ (ماحوذ ازردالمحتار جاص ۲۶۸)

مسک مرتب کی آستین، دویتے کے آنچل سے یہاں تک کہ چا در کا ایک کونا

اس کے کندھے پر ہے تو جا در کے دوسرے کونے سے قران پاک کو چھونا حرام ہے کہ بیسب چیزیں اس کے تابع ہیں۔ (المدرالسموندار معہ ردالسمونار

ج ا ص ٥٣٧ ، بهارِ شر يعت حصه ٢ ص ٤٦ مدينة المرشد بريلي شريف)

من قران پاکى آيت دُما كى نيت سے ياتب رك كيلي مَثَلًا

عُسل کا طریقہ (﴿فُنَ)

خوصان مصطفيا : (سلى الدنيالي عليه الرسلم) تم جهال بهي جوجمه برؤرُ ودير موتمها راؤرُ ووجمه تك بينجاب

بسم الله الرحمن الرحيم بإادائ شكركيك الحمدُ لِله ربّ العلمين ما سی مسلمان کی موت ما کسی شم کے نقصان کی خبر پر اِنسالِله وَانَّهَ اِللَّهِ وَانَّهَ اِللَّهِ رَاحِعُوٰن يا ثَنَاءَكَىٰتِيت سے بیری سورةُ الفاتِحه یا آیةُ الگرسی یاسورةُ الْحَشْر كَيْ آجْرِي تين آيات يرحيس اوران سب سُورَتوں ميں قران يرجنے كى نتيت ند بروتو كوئى كرج نهيل - (ما حوذ از فناوى عالمكيرى ج ا ص٣٨) مِينَ مَعْنِولِ قُلِ بِلاَلْفُظِ قُل بِهِ نِيتِ ثناء يرُّ هِ سَكِتْح بِي لِفظِ قُل كيساته ثناء كي نیت ہے بھی نہیں پڑھ سکتے کیونکہ اس صورت میں ان کا قران ہونا مُتُعَلَّین ے، نیت کو کچھ وَ خُل نہیں۔ (بہار شریعت حِصّہ ۲ص ٤٣ بريلي شريف) میں 🗗 ہے وُضوکو قران شریف پاکسی آیت کاپھُھو ٹا ترام ہے۔ بغیر چھوئے زَبانی باو مکھ کریڑھنے میں مُصا یَقتہ ہیں۔(ردالسمحتارج اص ۲۵۲، بہار

شريعت حصه ٢ ص ٢٤ مدينة المرشد بريلي شريف)

من جس برتن یا کورے پرسورہ یا آ بتِ قر انی لکھی ہوئے وضواور بے عسل

فوهان مصطّفيا : (ملى الله تال عليه الدائم) مجمد بردُرُ وو ياك كي كثر ت كروي شك ريتمبار ، ليّ طهارت ،

(فتاوی رضویه ج۱ص۳۹)

کواس کا چھو ناحرام ہے۔

مسك استعمال سب كيليئ مكروه ہے۔ ہاں خاص به زيّت شِفااس ميں

ياني وغيره و الكرييني مين حرج نهيل - (بهاد شريعت حصه ٢ص ٤٢)

مه الله قران پاک کارنمه فاری یا اُردُویاکسی دوسری زَبان میں ہواُس کو بھی م

پڑھنے یا چھونے میں قران پاک ہی کا ساھگم ہے۔

(فتاوی عالمگیری ج۱ ص۳۹)

ب وضود بي كمّابين جُهونا

ب وصوياده جس پرغسل فرض ہوان کوفِقهُ تفسیر وحدیث کی کتابوں کا

چھو نامَکُرُ ووِتنزیمی ہے۔(مساوی عسالہ گیری ج ۱ ص ۳۹)اورا گران کوکسی کپڑے سے چھوااگر چِداس کو پہنے یااوڑ ھے ہوئے ہوتومُھایقہ نہیں۔مگر آیتِ قرانی

یااس کے تر نجمے پران کتابوں میں بھی ہاتھ رکھنا حرام ہے۔

(بهارِ شریعت حصه ۲ص ۴۳ مدینة الرشد بریلی شریف)

(غسل کا طریقه (خق)

فو حان حصطف : (مله دخال طبدال بلر) جم ن كاب بم يلى بردد إلى تعالى جب يك براه مأى كاب بى تعاد بيكا فرشة ال كيا استفاد كرير ايل كر

بے وُضواسلامی رکتابیں پڑھنے والے بلکہ اخبارات ورسائل مُجھونے

والے بھی اِنھتیاط فرمایا کریں کہ مُمُو ماان میں آیات وتریجے شامِل ہوتے ہیں۔

نايا كى كى حالت مين دُرُود شريف يرمعنا

مسك عن يرغسل فرض بوأن كودُ رُودشريف اوردُعا ئيں پڑھنے ميں رُح جنہيں

مر بہتر مدے کہ وضویا گلی کر کے بڑھیں۔(بہار شریعت ج ۲ ص ٤٢)

_ بي الله الناكاجواب وينا أنكوجائز بـ (فناوي عالمكيري ج اص٣٨)

ُ الكَّلِي مِينِ INK كي ته جي بوكي بولو ؟

يكان والى ك نائس من آنا، لكصفوال ك نائس ميسياى كاجرم، عام لوگوں کیلئے مُکھی ، چھر کی بیٹ لگی ہوئی رَو گئی اور توجُه نه رہی توغسل ہو جائیگا۔

(الدر المعتار معه ردالمعتارج ١ ص ٦ ٣١ع) **بالمعلوم بوجائے كے بعد جُد اكر نا اور اس**

جگہ کا دھونا غروری ہے پہلے جونما زیر ھی وہ ہو گئے۔ (جَدُّالممتار ج١ص١١)

فعد صان مصطفيا (سلى اشتان عليه البيانم) جمي ركشت و دُود باك باح بي شكتهادا جمير بردُود باك بإحياتمهار كابول كيام مفرت ب.

بچه کب بالغ موتاب

کتابیں رکھنے کی ترتیب

مسلط قران پاک سب کِتابوں کے او پر رکھئے پھر تفسیر پھر حدیث پھر فقہ پھر

ويكراسلامي كتابيس - (الدرالمحتار معه ردالمحتار ج١ص ٢٥٤)

فوصان مصطفى (طلمندن بدوريم) جوج وايك مرتبدُ دُوش يف إحما بهالدُقال أس كياني قيرا واجراكما اورايك قيرا واحد بهازجنا ب

أوراق بش يُديايا عدهنا

مسلکل یادِ بینیات کے اُوراق میں پُو بیابا ندھنا،جس وسترخوان یا بچھونے پر اُشعار یا کسی بھی زَبان میں عبارات (جیسا کہ کمپنی کا نام

وغیرہ)تحریر ہوں انکا استعمال مُنع ہے۔

(ماخوذ از : الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص ٣٥٥_ ٣٥٦)

مرزبان كروف ترجى الدبكرنا واجد دردالمحنارج اص ١٠٧)

(مزید فصیلی معلومات کیلئے فیضان سقت کے باب 'فیضان بسم اللہ' صحاالے

ص١٢٣ تك كامُطالعة فرماليجيّـ)

اس کونکال دیا کریں۔

مُصلِّے بِ كعبةُ اللَّهُ شريف كي تصوير

اليسي مُصلِّ جن پر كعبةُ اللهُ شريف يا كنبدِ خَصْر ابنا مواموان كومُما زميل

فو مان مصطفيا (المائد تدال ميدار بهم) جو بحق پر در دو ياك براحمنا بحول كياده جنت كار استد بحول كيار

استِعمال کرنے سے مقدَّس شَبِیبہ پر پاؤں یا گھٹنا پڑنے کا اِمکان رَہتا ہے لہذا نماز میں ایسے مُصلّے کا استِعمال کرنا منابِب نہیں۔ (مُناوی اهلسنَّہ)

وسؤسول كالبكسبب

مخسل خانے میں پیشاب کرنے سے وَسوَ سے بیدا ہوتے ہیں۔ حضرتِ سیّدُ ناعبداللّٰہ بن مُغَفَّل رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ رسول کریم ، رءوف رَّ حیم علیہ، افت السلوةِ وَالنَّسلِم نے اِس سے مُنع فر مایا کہ کوئی شخص عسل خانے میں پیشاب کرے اور فرمایا ، ' بیشک عُموماً اس سے وَسوَ سے بیدا ہوتے ہیں''۔

(جامع ترمذی ج۱ ص ٥)

تَيَمُّم كا بيان

تَيَمُّم كے فرائض

تَ<u> مُ</u> مِين بَيْن فرض ہِين (1) نِيّت (۲) سارے منہ پر ہاتھ پھيرنا،

و فو صاف مصطفى السين المائد الدينم الميرك تست و ود ياك روع بالك تمهاد المي يووريك رد ماتهاد كابول كياد مفرت ب

(۳) مُهنیوں سُمیت دونوں ہاتھوں کامُشِح کرنا۔

(بهار شریعت حصّه ۲ ص ۲۰ مدینة المرشد بریلی شریف)

'نَیَکُم سیک کو ''کورس مُروف کانبت سے تیکم کا سُنیں

(۱) بسم الله شریف کہنا (۲) ہاتھوں کوزمین پر مارنا (۳) زمین پر ہاتھ مار کر گوٹ وینا (یعنی آ گے بڑھانا اور پیچھلانا) (٤) اُنگلیاں کھلی ہوئی رکھنا (۵) ہاتھوں کو جھاڑلینا لیعنی ایک ہاتھ کے انگو مٹھے کی جڑکو دوسرے ہاتھ کے انگو مٹھے کی جڑ پر مارنا مگر بیا اختیاط رہے کہ تالی کی آ واز بیدا نہ ہو (۱) پہلے مُنہ پھر ہاتھوں کا مُن کُر نا (۷) دونوں کا مُن کے یہ دریے ہونا (۸) پہلے سیدھے پھرا کئے ہاتھ کا مُن کُر کرنا (۹) داڑھی کا خلال کرنا (۱۰) اُنگلیوں کا خِلال کرنا جبکہ عُبار نہ ہی تو خلال فرض ہے خِلال کیلئے پھر وغیرہ کی ایسی چیز پر ہاتھ ماراجس پر غُبارنہ ہوتو خِلال فرض ہے خِلال کیلئے . هوهان مصطلعا (سل الله قابل عله الديسة) جو مجمع بر دونه جو دُرُ ودشر يف يز مصطلعا (سل الله عن الله عن الكرول كا

دوباره زمین پر ہاتھ مارناضَر وری نہیں۔

(بهار شریعت حصه ۲ص ۲۷ مدینة المرشد بریلی شریف)

تَيَمُّم كاطريقه(ش)

تیکھم کی نیت سیجے (نیت دل کے ارادے کانام ہے، ذبان ہے بھی کہدلیں تو بہتر ہے ۔ مُثُلًا یوں کہنے بے وضوئی یا بے عُسلی یا دونوں سے پاکی عاصل کرنے اور نماز عائز ہونے کے لئے تَبَدُّم کرتا ہوں) بسم اللہ پڑھ کردونوں ہاتھوں کی اُنگلیاں گشادہ کرکے کسی الیبی پاک چیز پرجوز مین کی قشم (مُثُلًا بُتُھر، پُونا، اینٹ، دیوار مُنْی وغیرہ) سے ہو مارکرئوٹ لیجئے (یعنی آگے بڑھا ہے اور پیچے لائے)۔ اورا گرزیادہ گردلگ جائے تو جھاڑ لیجئے اور اُس سے سارے مُنہ کا اِس طرح مُشْ سیجئے کہ کوئی دِصتہ رہ نہ جائے آگر بال برابر بھی کوئی جگہ رَہ گئ تو تیک شہم نہ ہوگا۔ پھردوسری بارای طرح ہاتھ زمین پر مارکردونوں ہاتھوں کا نا مُنوں سے لیکر کہنیوں سَمیت مُشْ سیجئے ماس کا ہمتر طریقہ یہ ہے کہ اُلئے ہاتھ کے انگو شے کے علاوہ خُیارائلیوں کا پُیٹ سید ھے ہمتر طریقہ یہ ہے کہ اُلئے ہاتھ کے انگو شے کے علاوہ خُیارائلیوں کا پُیٹ سید ھے

9

خد مان مصندیا (سلی اشتان ملیدالیستم) جس نے بچھ پر دو نیشھد دوسوبار ڈرو یاک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گزام تعاف ہول مے۔

ہاتھ کی پُشْت پرر کھئے اور انگلیوں کے ہمر وں سے کہنیوں تک لے جائے اور پھر وہاں سے اُلٹے ہی ہاتھ کی تقیلی سے سیدھے ہاتھ کے پیٹ کومُس کرتے ہوئے گئے تک لائے اور اُلٹے انگوٹھے کے پیٹ سے سیدھے انگوٹھے کی پُشْت کا مُشْح سیجئے ۔ اسی طرح سیدھے ہاتھ سے اُلٹے ہاتھ کا مُشْح سیجئے۔

(فتاویٰ تاتارخانیه ج۱ ص۲۲۷)

حُروف کی نسبت سے نَیمُم کے 25 مَدَنی پہول میک جمیری آگ سے جل کر راکھ ہوتی ہے نہ پھلتی ہے نہ زُم ہوتی ہے وہ زمین کی چنس (یعنی قسم)سے ہے اِس سے تَیمُم جا رَنے ۔ رَیتا، پُونا، ۔ فغر مان مصطفعا (صلی اشتعانی طبید الدملم) أس جحم کی ناک خاک آلود ہوجس کے پاس میر اڈکر ہواوروہ بھی پروڑ روپاک نہ پڑھے۔

سُر مه، گندهک، پختمر، زَبَر جد، فِیر وزه، عُقیق، وغیره بَو ابِر سے تَیَسمُ

جائز ب جا بان پرغبار مويانه بو - (البحر الرائق ج ١ ص ٢٥٦)

مل کی این ، چینی یامنی کے برتن سے تیکم جائز ہے۔ ہاں اگران پر کس

الیی چیز کاچرم (لعنی جشم یابته) ہوجوجنسِ زمین سے نہیں مَثَلَا کا نیج کاچر م ہوتو تَسَیمُ م جائز نہیں۔ (مناوی عالم گیری ج ا ص ۲۷)

ملک جس مِنْ ، بتقر وغیرہ سے تَیکُم کیاجائے اُس کا پاک ہوناظر وری ہے

یعنی نهاس پرکسی نُجاست کااثر ہونہ یہ ہو کہ چر^ا ف خشک ہونے سے نُجاست

كاثر جا تار با بو-(الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص ١٣٥) زيين، و ايواراور

وہ گر د جوز مین پر پڑی رہتی ہے اگر نا پاک ہوجائے پھر دھوپ یا ہواسے بہ

سُو کھ جائے اور نَجاست کا اثر خَثْم ہوجائے تو پاک ہے اور اس پرنماز جائز ہے مگراس سے نَیکُ نہیں ہوسکتا۔

مر المعربية المارية المراكبين المركبي المركبين
خرمین مصطفیا (سلیاند تال علیدال بسنم) جس کے پاس میراز کر ہواوروہ مجھ پر ڈر روشریف ندیز ھے تو لوگوں میں وہ کچوی ترین مختص ہے۔

ملی اگر کی لکڑی، کپڑے، یا دَری دغیرہ پراتی گر دہے کہ ہاتھ مارنے سے انگلیوں کا

نشان بن جائے تواس سے تَیمُم جائز ہے۔ (نتاوی عالمگیری جا ص۲۷)

من اینٹوں کی دیوارخواہ گھر کی ہو یامسجد کی اس سے تَیَـهُم جائز

ہے ۔ مگراس پرآئل پینٹ، بلاسٹک پینٹ اور مُیٹ فنش یاوال پیپر وغیرہ کوئی ایسی چیز نہیں ہونی جا ہے جوشِنِ زمین کےعلاوہ ہو، دیوار پر مار بل ہوتو کوئی حَرج نہیں۔

کی حاجت ہواور پانی پرتُگررت نہ ہووہ وُضو کی حاجت ہواور پانی پرتُگررت نہ ہووہ وُضو

اور عسل کی جگہ تیم کرے۔ (فتاویٰ فاضی عان معه عالمگیری ج۱ ص٥٠) پر السک بیاری کہ وضویا عسل سے اس کے بڑھ جانے یا دیر میں اچھا ہونے

كالميح انديشه موياخودا پناتجرِ به موكه جب بھى وُضوياغُسل كيا بيارى بڑھ

گئی یا یُوں کہ کوئی مسلمان اچھا قابل طبیب جو ظاہری طور پرفایت نہ ہووہ کہہ دے کہ یانی نقصان کرےگا۔توان صورَ توں میں تَیَسَمُ مَرَسَكَة

(الدرالمختار معه ردالمحتار ج١ ص ٤٤١)

فخد صد مصطف (مل اشتال طدالبيتم)جس كے پاس ميراؤكر موااورأس نے وُرُ ووشريف نديرُ حاأس نے جناك_

(۲۰

من اور پورے میں پانی نقصان کرتا ہوتو گلے سے نہا کیں اور پورے میں کہ میں اور پورے میں میں اور پورے میں کامسے کریں۔ (بہار شریعت حصه ۲ص ۲۰ مدینة المدشد بریلی شریف)

مراث جهال جارول طرف ایک ایک میل تک پانی کا پتانه بهوو بال بھی تَیکُم کرسکتے بیل۔ (الدرالمحتار معه ردالمحتار ج۱ص ٤٤١)

مهلا المراتناآب زم زم شریف پاس ہے جوؤ صُوکیلئے کافی ہے تو تیکھ مائز

مرس - (بهار شریعت حصه ۲ ص ۲ مدینة المرشد بریلی شریف)

سے اور ایک سردی ہوکہ نہانے سے مرجانے یا بیار ہوجانے کا قوی اندیشہ ہے اور نہانے کے بعد سردی سے بیخے کا کوئی سامان بھی نہ ہوتو تیکھ م جائز ہے۔

(فتاوی عالمگیری ج۱ ص۲۸)

مه المنظ قیدی کو قیدخانے والے وضونہ کرنے دیں تو تَبَهُم کرکے نماز پڑھ لے بعد میں اِعادہ کرے اور اگروہ وشمن یا قیدخانے والے نماز بھی نہ پڑھنے دیں تو اشارے سے پڑھے اور بعد میں اِعادہ کرے۔ (اَیصا) مومان مصطفیا (سلی الدُ تعالیٰ علیہ الدِ ہنم) جس کے پاس میر اؤکر موااوراً س نے جھے پرورُ وو پاک ند پڑ حافجیتن وہ ہر بخت ہو گیا۔

مسجد مين سور بالتها كغسل فرض هو كيا توجهان تهاؤين فورأتيك ممسجد

کرلے یہی اُحوکط (یعنی اِحتیاط کے زیادہ قریب) ہے۔ (مساحو ذاز فنساوی

رضویسہ ج۳ص ۶۹۲ رضسانساؤنڈیشن لاھور) پھر پائمرنگل آ سے تا خیر کرنا حرام

ہے۔(فتاوی عالمگیری ج ۱ ص ۲۸)

(فتاوی رضویه ج۳ص۲۰)

عورت عض ونفاس سے پاک ہوگی اور پانی پرقاد رنہیں توتیکم کرے۔

(بهار شریعت حصّه ۲ ص ۲ مدینه المرشد بریلی شریف)

مرک این جگرے کی ایس جگہ ہے جہاں نہ پانی ملتا ہے نہ ہی تیک می کیا گئی تو است جائے گئی ہو است جائے گئی تو است جائے گئی تو است جائے کہ وقت مناز میں نماز کی سی صورت بنائے یعنی تمام حرکات

فروان مصطفع : (ملى الله الله الدوار منم) جمع برؤ رُود باك كالشرت كروب شك يتمهاد الكي طهارت ب-

ئما زیلائیتِ نَماز بجالائے۔(بہادِ شدیعت حصه ۲ص۶۰)مگر پاک پانی یامِنی پرِقادرہونے پروضویا تیمؓ کرکے نماز پڑھنی ہوگی۔

مسلنظ وضواور شل دونوں کے تیکم کا ایک ہی طریقہ ہے۔ (بیضا س ۲۰) مسلنظ جس برغسل فرض ہے اس کیلئے بیضروری نہیں کہ وضواور عُسل دونوں کیلئے دونیک مرے بلکہ دونوں میں ایک ہی نیت کرلے دونوں ہوجائیں گاورا گرصر ف عُسل یا وضو کی نیت کی جب بھی کافی ہے۔

(فتاوي قاضي خان معه عالمگيري ج١ ص٥٣)

میں اور اسے وضوٹوٹ جاتا ہے یا عُسل فَرض ہوجاتا ہے اُن سے تَیَسَمُ م بھی ٹوٹ جاتا ہے اور یانی پر قادِر ہونے سے بھی تَیَسَمُ م ٹوٹ جاتا

(فتاوى تاتارخانيه ج١ ص٢٤٩ ادارة القرال)

مین اورنہ پھول وغیرہ بہنے ہوں تو نکال لے درنہ پھول وغیرہ بہنے ہوں تو نکال لے درنہ پھول میں میں میں ہوسکے گا۔ (بہارِ شدیعت حصہ ۲ص ٦٦)

فوصان مصطفی : (ملی دندن بلید داد به م) جم نے کاب می می مودد و اِک اکتابا عد با می کاب می کشد براه م ای کاب می انتخار کے درو

اِس بُرَشْحُ ہوناطَر وری ہے اگر منہ پر ہاتھ پھیر نے وقت کی نے ہونٹوں کوزور سے دبالیا کہ کچھ حِسّہ مُشْحُ ہونے سے رَہ گیا تونیک منہ منہیں ہوگا۔ اِس طرح زور سے آئکھیں بند کرلیں جب بھی نہ ہوگا۔

(بهار شریعت حصّه ۲ ص۲۳)

من الم الكون على المران وغيره بني بول تو أتاركران كي في باته بعمر نافرض ب-(

مراقى الفلاح معه حاشبة الطحطاوى ص ١٢٠) أسلامي ببنيس بهي چو ريال وغيره

ہٹا کراُن کے ینچیشٹ کریں۔ تیکھم کی احتیاطیں وضوسے بڑھ کر ہیں۔

مراع المارياب دست و ياخو د تَيَهُ منهيس كرسكنا تو كوئى دوسرا كرواد ب إس

میں تیک مگر وانے والے کی نتیت کا اعتبار نہیں،جس کو تیک مگر وایا جار ہاہے اُس کو

نیت کرنا ہوگا۔ (عالمگیری ج ۱ ص ۲٦)

مَدَنى مشوره : وُضوكِ أَرْكام سَكِينَ كَيكَ مِيرارِسالَهُ ' وَضوكا طريقة'

هر صان مصطفها (سلى الفرقاني على الدانية م) جي بركثرت بي ذرو ياك بإهوب شكة تهادا أي بروزود ياك بإهزائه بالدي كانبول كيليم مفرت ب

اورنَماز کے اُحکام سیکھنے کیلئے رِسالہ''نَماز کاطریقہ'' کامُطالَعَہ مُفید ہے۔ **یارتِ** مصطَفے اِعَدُوْ _{تَ}لَ صِلَى الله تعالیٰ علیہ دالہ دِستم ہمیں بار بارغسل کے مسائل

پڑھنے ، مجھنے اور دوسروں کو سمجھانے اور سنتوں کے مطابق عنسل کرنے کی تو فیق عطا

فرما المين بِجاهِ النَّبِيِّ الْأَمين سُلَّى اللهُ تعالى عليه والهوالم



طالبِ غمِ مدينه

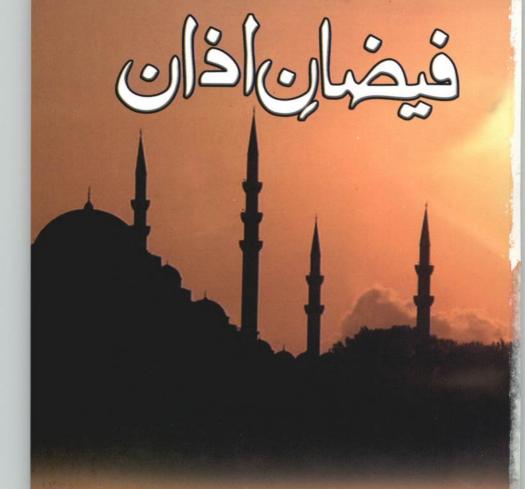
وبقيع ومغفرت



14رجَبُ العرجُب ١٤٢٦ه

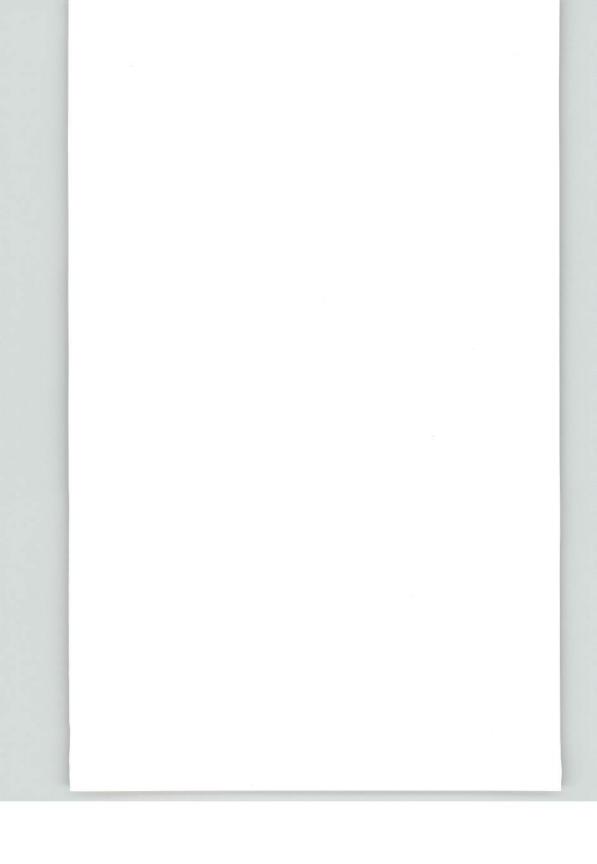
یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دیدیجئے

شادی تمی کی تقریبات، اجتاعات، اعراس اور جلوس میلا دوغیرہ بین مکتبة المدیند کے شائع کردہ رسائل تقسیم کرئے تو اب کمائے ۔گا کہوں کو بدنیت تو اب تحفے میں دینے کیلئے اپنی دکتانوں پر بھی رسائل رکھنے کامعمول بنائے ، اخبار فروشوں یا بچوں کے ڈریدیے اپنے محلہ کے گھر انگر میں وقفہ وقفہ سے بدل بدل کرسٹوں بھرے رسائل پنچا کرنیکی کی دعوت کی دھو میں مجائے۔
میر میں وقفہ وقفہ سے بدل بدل کرسٹوں بھرے رسائل پنچا کرنیکی کی دعوت کی دھو میں مجائے۔
صَلُوا عَلَى الْحَبِيب !

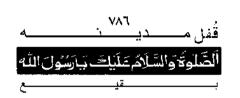


| 144 | اذان واقامت كجواب كاطريقه | 139 | ہ قریں کیڑے نہیں پڑیں گ |
|-----|----------------------------------|-----|--------------------------------|
| 153 | و قامت ك المذنى پعول | 139 | 💿 موتی کے گنبد |
| 157 | موشهبدول كالواب كمايي | 140 | ه گزشته گناه معاف |
| 165 | ادان کی دُعا | 140 | 💿 محچلیاں بھی استغفار کرتی ہیں |
| 166 | ايمانِ مُفَصَّل/ايمانِ مُجْمَل م | 141 | 👁 3 كرورُ 24لاكھ نيكياں كمايخ |
| 167 | £6 ·· | 143 | اذان كاجواب دين والاجنتى موكيا |

ورق الشئے ۔۔۔



فيضاباذان





اس رسالے میں ۔۔۔۔

قبريس كيڙ _ شيس پڙي سي ع ايمان مُفعَّل ،ايمان جُجُل ، ڇه كلے

اذان كاجواب دين كاطريقه محيليان استغفار كرتي بين

سوشہیدوں کا تواب کمائے 3 کروڑ 24 لاکھ نیکیاں کمائے

اذان كاجواب ديينه والاجتنى بهوكيا

ورق الليُّ ____

ٱلْحَمَّدُ لِلَّهِ رَبِ الْعَلَمِيْنَ وَالصَلوَٰةُ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ سَيِدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَابَعْدُ فَاعُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ ، بِشَمِ اللهِ الرَّحَمَٰنِ الرَّحِيْمِ ،

فيضانِ اذ ان

یه رِساله اوّل تا آخِر پورا پڑھئے۔قُوی امکان ھے که آپکی کئی غَلَطیاں سامنے آجائیں۔ **دُرُود شریف کی فضیلت**

مركا برمدينه، سلطانِ باقرينه، قرارِ قلب وسينه، فيض گنجينه صاحِبٍ مُعَطّر

پسینه صَلَّی اللَّهُ تَعَالَی علیه وَالهِ وَسَلَّم کا إِرشادِ رحمت بُنیا د ہے ،'' جس نے قرانِ پاک پڑھا،

ربّ تعالیٰ کی حمد کی اور نبی (صلّی الله تعالیٰ علیه داله دسلم) پر وُ رُ و دشریف پڑھا نیز اپنے مزید دا

منوصل رب سے مغفر ت طلب کی تو اُس نے بھلائی کواپنی جگہ سے تلاش کرلیا''۔ ل

صَلُّو اعَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمَّد

لے نفسیرِ دُرِّ منثور ج۸ ص ۲۹۸ بیروت

فروان مصطَفيا : (ملى الدن الديداد بنم) جوجه يردرود بإك يره هذا بحول كياوه جنت كاراستد بحول كيا-

''ازان''کے چار حُرُون کی نسبت سے اذان کے فضائل پر مُشتمل 4روایات (۱) قَبْرِ مِن كَبِرْ نِهِينِ بِرُونِ مِنْ

مہینے کے تا جدارصَلی اللہ تَعَالیٰ علیہ وَالہٖ وَسَلّم کا فر مانِ خوشگوار ہے،'' ثو ا ب کی خاطِر اذان دینے والا اُس شہید کی مانِند ہے جوخون میں بتھرو اہواہے اور جب مرے گا، قبر میں اس کے جسم میں کیڑ نہیں پڑیں گئے'۔

(اَلتَّرُغِيْب وَالتَّرُهِيْب ج اص ١٢ إدارالكتب العلميه بيرورت)

(۲)مو تی کے گئید

رَ حُمتِ عالَم،نورمُجَسَّم،شاهِ بني آدم صَلَى اللهُ تَعَالَى عليه وَالدِوَسَلَم کا فرمانِ معظم ہے، میں بنت میں گیا، اُس میں **موتی کے مُکنُد** دیکھے اُس کی خاک مُشک کی ہے۔ یو چھا،اے چمرئیل! یہس کے واسطے ہیں؟ عُرْض کی،آ ب صلّی الله تعالی علیه واله وسلم کی اُمّت کے مُوَّ ذِنو ی اورا ماموں کیلئے۔

(كنزالعُمَّال ج٧ ص ٢٨٧ حديث ٢٠٨٩ دارالكتب العلمية بيروت)

` فیضان اذ ان

ن مصطفعاً السلى مشات بالمدارة هم) جمل نے مجھ پرایک وُ رُود یاک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پردس رحمتیں بھیجنا ہے۔

(٣)گُزَشته گناه مُعاف

سلطان مدینهٔ شنگ الله تُعَالَی علیه وَالهِ وَسلَّم کا فرمانِ با قرینه ہے،جس نے

یا نچوں نَماز وں کی اذان ایمان کی بِنا پر بہ نیب ثواب کہی اس کے جو گناہ پہلے

ہوئے ہیں مُعاف ہوجا ئیں گے اور جوایمان کی بِناپر ثواب کیلئے اپنے ساتھیوں

ک^ی یا بچ نَمازوں میںامامت کرےاس کے گناہ جو پہلے ہوئے ہیںمُعاف کردیئے

ما ئیں گے۔ (كنزالعُمّال ج٧ ص ٢٨٧ حديث ٢٠٩٠ دارالكتب العلمية بيروت)

(٤)مچھلیاںبھی اِستِغفار کرتی ھیں

منفول ہے،اذان دینے دالوں کیلئے ہرایک چیزمغفرت

کی دعا کرتی ہے یہاں تک کہ دریا میں محصلیاں بھی ۔مُؤَ ذِن جس وقت اذ ان کہتا

ہے بغرِ شتے بھی دو ہراتے جاتے ہیںاور جب فارغ ہوجا تا ہے توفرِ شتے قبیامت

تک اُس کیلئے مغفرت کی دعا کرتے ہیں۔جو مُسؤَ ذِنسی کی حالت میں مرجا تا

ہےاُ سے عذابِ قبرنہیں ہوتااور مُوؤَ ذِن زَرْع کی شختیوں سے نج جاتا ہے۔ قبر کی شخق

. فعر مان مصطفعے: (ملى الفتان عليه البيام) جس نے مجھ پر يس مرتبه ؤ أرود پاک پڑھا اللہ تعالی أس پر سور حتيس نازل فرما تا ہے۔

اورتنگی ہے بھی مامون (یعنی محفوظ) رَہتاہے۔

(ملخُص از تفسيرِ سورهٔ يوسُف لِلغزالي مترجَم ص ٢ ٢مركزالاولياء لاهور)

اذان کے جواب کی فضلیت

مربع ك تاجدارسلى الله تعالى عليه واله وسلم في الكبار فرمايا ، "اب

عورَ تو!جب تم بلال كواذ ان وإ قامت كهتے سنوتو جس طرح وہ كہتا ہےتم بھى كہو

کاللہ عَدُوْ خِلُ تمہارے لئے ہر کیلم مے بدلے ایک لاکھنیکیاں لکھے گااور

ا یک بزار دَرَجات بکند فرمائے گا اور ایک بزار گناه مٹائے گا۔ 'خواتین نے

بيُن كرَعُرُض كى ، ية وعورَ تول كيليّ ہے مردول كيليّ كيا ہے؟ فرمايا،''مردول كيليّ

وُكُنات (كنزالعُمَال ج٧ ص ٢٨٧ حديث ٢١٠٠٥ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُو اعْسَلَسَى الْحَبِيبِ 1 صلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

3 كرور 24لاكونكيال كماية

میٹھے بیٹھے اسلامی بھائیو اللہ عَدِوْ حَدلٌ کی رَحْمت پر قربان! اُس نے ہارے لئے نیکیاں کمانا، اپنے وَ رَجات بڑھوانا اور گناہ بخشوا ناکس قَدَر آسان

[فيضانِ اذان

. چ فور صان مصطفعان (ملى الله تال بله الدائم) تم جهال بھي جو جھ پرؤ رُود پاهوتمهاراؤ رُود جھ تک پنتيا ہے۔

فرمادیا ہے۔ مگرافسوس! آئی آسانیوں کے باؤ بُو دبھی ہم غفلت کاشِکاررہے ہیں۔ پیش کردہ حدیث مبارک میں **جواب اذان** کی جونضلیت بیان ہوئی

ہے اُس کی تفصیل مُلا کظہ فرما ہے۔

"اَللَّهُ اسْحَبَسِ الْکُهُ اسْحَبَسِ" ید دوکلمات ہیں اِسطرے پوری اذان میں اللہ اسْحَبَسِ الْکُهُ اسْحَبَسِ الله کی بہن ایک اذان کا جواب دے پینی مُسؤَ ذِّن جو کہنا جائے تو اُس کو اللہ کھنیکیا ں ملیس گی ۔ کہنا جائے اسلامی بہن بھی دوہراتی جائے تو اُس کو اللہ کھنیکیا ں ملیس گی ۔ کہنا جائے اور ۱۹ ہزار گناہ مُعاف ہو نگے ۔ اور اسلامی بھائیوں کیلئے یہ سب وُ گنا ہے۔ فَجُر کی اذان میں دُومر تبہ اَلے سلوہ خُر کی اذان کے جواب میں ۱۷ کھنیکیاں ، ۱۷ ہزار دَ رَجات کی بُلندی اور ۱۷ ہزار گناہوں کی مُعافی ملی اور اللہ کی بھائیوں کی مُعافی ملی اور اسلامی بھائیوں کی مُعافی ملی اور اسلامی بھائیوں کی مُعافی ملی اور اسلامی بھائیوں کی مُعافی میں اُخر کی اذان کے جواب میں ۱۷ کھناتھ ہوئے اُور اور ۱۷ ہزار گناہوں کی مُعافی ملی اور اسلامی بھائیوں کیلئے وُ گنا۔ اِقامت ہوئے تو اِقامت کے جواب کا تواب بھی فِخر کی اذان کے جواب کا تواب بھی فِخر کی اذان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ اِدان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ اِدان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ اِدان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ اِدان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ اِدان کے جواب جتنا ہوا۔ الحاصِل اگرکوئی اسلامی بہن اِمِبِما م کیساتھ

(فيضانِ اذا

. فعر صانی مصطفیاً: (ملی الله تدانی علیدالبه منم) جس نے مجمد پر دس مرتبہ تاک اور دس مرتبہ شام درود پاک پڑھا أے تا

روزانه پانچوں نُمازوں کی اذانوں اور پانچوں اِ قاسُوں کا جواب دینے میں کا میاب ہوجائے تو اُسے روزانه ایک کروڑ باسٹھ لا کھ نیکیا ں ملیں گی، ایک لا کھ باسٹھ ہزار دَ رَجات بُلند ہوئے اورا یک لا کھ باسٹھ ہزار گناہ مُعاف ہوئے اوراسلامی بھائی کو دُگنالین کی کروڑ 24 لا کھ نیکیاں ملیں گی، 3 لا کھ 24 ہزار دَ رَجات بُلند ہو نگے اور 3 لا کھ بیکیاں ملیں گی، 3 لا کھ 24 ہزار دَ رَجات بُلند ہو نگے اور 3 لا کھ

اذان کا جواب دینے والا جنّتی ہوگیا

حضرت سپّدُ ناابوئمریرہ رض اللہ تعالی عند فرماتے ہیں کہ ایک صاحِب جن کا بظاہر کوئی بَہُت بڑا نیک عمل نہ تھا، وہ فوت ہو گئے تورسول اللہ عَدَّدَ جَلَّ رصلی اللہ تعالی علیہ دالہ وسلم اللہ علیہ ارضوان کی موجود گی میں فرمایا: کیا تمہیں معلوم ہے علیہ داللہ تعالی نے اسے جّت میں داخل کردیا ہے۔ اس پرلوگ مُسَمَّع تَجِب ہوئے کیونکہ بظاہر ان کا کوئی بڑا عمل نہ تھا۔ پُتانچہ ایک صَحابی رضی اللہ تعالی عنداُن کے گھر کئے اور ان کی ہوہ رضی اللہ تعالی عنہا سے بوجھا کہ اُن کا کوئی خاص عمل ہمیں بتا ہے ،

فروان مصطفى (سل الدقال بدار المرار مرا مجري رو روياك في كثرت كروب شك ريم باري المحارب ب

تو اُنہوں نے جواب دیا:اورتو کوئی خاص براعمل مجھے معلوم نہیں ،صِرْ ف اتنا

جانتی ہول کہدن ہویارات، جب بھی وہ اذان سنتے تو جواب ضَر وردیتے تھے۔

ورين (ملخص از ابنِ عساكرُ ج ٤٠ ص ٤١٣،٤١٢ دار الفكر ،بيروت)

اللَّهُ ءَزُرَحَنَّ كَى أَنْ يُورِ رَحُّمِتَ هو اور أَنْ كَـ صَدُّ قَـے همارى مِفْفِرت هو۔

مُنَهِ گذا کا حساب کیاوہ اگرچہ لا کھسے ہیں ہوا

مگراے عَفُو ترے عَفُو کا توجسا بے نہ کھمارہے

صَلُّو اعَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

اذان واقامت کے جواب کا طریقہ

مُوَ قِنْ صَاحِب کوچاہے کہ اُذان کے کلمات تھہر تھہر کر کہیں۔اللّٰہ اُکہرُ اللّٰہ اُکہرُ اللّٰہ اُکہرُ اللّٰہ اُکہرُ اللّٰہ اَکہرُ اللّٰہ اَکہر اللّٰہ اللّٰ

جب دوباره کے پیر کے:۔

جوالیا کرے سرکار مدینہ سلی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ دسلّم اسے اپنے بیچھے بیچھے جّت میں لے جا کمیں گے۔

حَىَّ عَلَى الصَّلُوة اور حَىَّ عَلَى الْفَلاَح كَجُواب مِين (جارون بار)

خوجان مصطفیا (ملى اشتان علیه الرسلم) مجر برکشت نورو پاک بره عب شک تبها دایمد بروزود پاک برهما تبهار بر مناتبار برگیا منفرت ب.

لَاحَوُلَ وَلَاقُوَّةَ إِلَّا بِاللَّه كَهِ اور بَهِ تربيه عِي كَدُونُوں كَمِ (يَعِنَ مُؤَذِّن نَـ

جو کہاوہ بھی کیےاور لاحول بھی) بلکہ مزید رید تھی مِلا لے:۔

مَاشَاءُ اللَّهُ كَانَ وَمَالَمْ يَشَاأُ تَرْجَد:جوالله عَدْوَخَلَّ نَ عِالِه والمواد جونيس

كَمْ يَكُنْ (درمختار معهٔ ردالمحتار ج ٢ - جاِ باند بوار

ص ۸۲ ،عالمگیری ج۱ص۵۷)

اَلصَّلُوهُ عَيْرٌ مِّنَ النَّوْم كي جواب مين كمي،

صَدَقْتَ وَبَرُرْتَ وَبِالْحَقِ تَرَهُم : تُوسِ اورنيوكار باورتُونَ فَيْ

نطقت. (ایضاً ص ۸۲) کہاہ۔

ا قامت کاجواب مُستَحب ہے۔اس کاجواب بھی ای طرح ہے

فرق اتنا بكر قَدْ فَامَتِ الصَّلوةُ كَ جواب مين كم،

الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله وَ الله والله وال

السَّمْواتُ وَالْأَرْضُ۔ آسان اورز مِن بين۔

(عالمگیری ج۱ ص ۵۷)

فيضانِ اذ ان

فو حان وصطفي (مل دندال بدروسنم) جوجم يراك مرتبه زووثريف برحتا بالله تعالى أس كيا الك قيرا طاج الكمتا اوداك قيراطاه بهاز جتاب

" صَدْقے یا رسولَ الله " کے ۱۶ گرُوف کی نسبت سے اذان کے 14 مَدَنی چول

می**کٹے یا نجوں ف**رض نمازیں ان میں مُٹھہ بھی شامل ہے جب جماعتِ اُولی

کے ساتھ مسجِد میں وَثْت پرادا کی جائیں توان کیلئے اذان سنّتِ مُوَ تُکدَه ہے اور اسکا حکم مِثْلِ واجِب ہے کہ اگراذان نہ کہی گئی تو وہاں کے تمام

(درمختار معه رد المحتار ج٢ص٠٦)

مدين المركوئي شخص شَهرك اندرگھر ميں نَماز بڑھے تو وہاں كى مسجِد كى اذان

لوگ گنهگار ہو نگے۔

اس کیلئے کافی ہے مراذان کہدلینامُستَحب ہے۔ (ابضاص ٦٢)

اوروہ ایک کوئی شخص شہر کے باہر یا گاؤں، باغ یا کھیت وغیرہ میں ہے اور وہ ایک اور وہ ایک میں ہے اور وہ

جگہ قریب ہے تو گاؤں یاشہر کی اذان کافی ہے پھر بھی اذان کہہ لیمنا بہتر ہے اور جوقریب نہ ہوتو کافی نہیں ۔قریب کی حدیدہے کہ یہال کی

اذان کی آوازومان پُنچی ہو۔ (عالمگیری جاص ٥٠)

فيضانِ اذ ان

خوصان مصطفى (سلى الله تالى طيدة الداملم) مجمد بردُرُ ووثر يف يردهواللهم بررحت بيميح كار

مسلفر نے اذان واِ قامت دونوں نہ کہی یااِ قامت نہ کہی تو مکروہ ہے اور اگر صرف اِ قامت کہہ لی تو کراہت نہیں مگر بہتریہ ہے کہ اذان بھی کہہ لے۔جاہے تنہا ہویااس کے دیگر ہمراہی وَ ہیں موجود ہوں۔

(درمختار معه درمحتار ۲۶ ص ۷۸)

وقت شروع ہونے کے بعداذان کہے اگروت سے پہلے کہدری یاوت سے پہلے کہدری یاوت سے پہلے کہدری یاوت سے پہلے کہدری یاوت سے پہلے کہدری اور دَورانِ اذان وقت آگیا۔ دونوں صور توں میں اذان دوبارہ کہئے۔ (عالم گیری ج اص ع ہ) مُؤَ ذِّن صاحبان کوچاہئے کہ وہ نقشہ رفطا مم الا وقات د کیھے رہا کریں۔ کہیں کہیں مُمؤ ذِّن صاحبان ورانیظا میہ وقت سے پہلے ہی اذان شروع کردیتے ہیں۔امام صاحبان اورانیظا میہ کی خدمت میں بھی مَدَ نی التجاہے کہوہ بھی اس مسئلہ (مَس ءَدلَہ) پرنظر کی خدمت میں بھی مَدَ نی التجاہے کہوہ بھی اس مسئلہ (مَس ءَدلَہ) پرنظر کی خدمت میں بھی مَدَ نی التجاہے کہوہ بھی اس مسئلہ (مَس ءَدلَہ) پرنظر

و فرون مصطف (سل الندخال مليه والدوخم) وسبة تمر طين (جبهم المام) مروز و و ياك يزحوق تحديد مجري يزهو ب شك شي تمام جهانو ل كرب كارسول بول.

مديث خواتين اني ممازادار بعتى مول ياقضااس مين ان كيلي اذان واقامت

(نحلاصة الفتاوي ج١ ص ٤٨)

کہنا مکروہ ہے۔

مد من عور تول كوجهاعت سي نمازاداكرنا ناحب انز ب-

(البحرالرائق ج ١ ص ٢١٤)

مريك في معجمدار بي بهي اذان د سكتا ب- (عالمكبرى ج اص ٥٥)

مدي ﴿ عِبِهِ وَصُوكَى ا ذِ ان صحيح ہے مگر بے وُصُو كا ا ذِ ان كہنا مكروہ ہے۔ (مدانسي

الفلاح معه حاشبة الطحطاوي ص ١٩٩ / فتاوي رضويه تخريج شده ج ٥ ص ٣٧٣)

مِينَا ﴿ خُصِنْتُ مِي ، فاسِق اگرچِه عالم ،ی ہو،نشہ والا ، پاگل ، بِغُسلا اور ناسمجھ

بچے کی اذ ان مکروہ ہے۔ان سب کی اذ ان کا اِعادہ کیا جائے۔

(دُرِّمُ حِتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحِتَار جِ٢ص ٧٥)

مدينا الم المرمُؤ ذِّن بى امام بهى بوتو بهتر برابضاً ص١٨٨ عالمكبرى ج١ ص٥٥)

خوصان مصطفها (ملى الدِّسَال بليه البدائم) جومجهر برروز جعدة أرووشريف يزشف كاشي قبيامت كرن أس كي شفاعت كرون كا

مس**جد** کے باہر قبلہ رُ دکھڑ ہے ہوکر ، کا نوں میں اُنگلیاں ڈال کر بُلند آ واز سے اذان کہی جائے مگر طاقت سے زیادہ آ واز بُلند کرنا مکروہ ہے۔ (عالمہ گبری ج1 ص ٥٠)

مری اُلُّ حَیَّ عَلَی السَّلوة سیرهی طرف منه کرکے کے اور حَیَّ عَلَی الْفَلاَحِ الْنُی طرف منه کرکے ، اگرچہ اذان نَماز کیلئے نه ہومَثُلُ بَحِّے کے کان میں کہی۔ یہ پھرنافقط مُنه کا ہے سارے بدن سے نہ پھرے۔ (دُرِنُ حَنَادِ مَعَنَا وَ مُنه کُلُ ہِ ہُوں اُلُوق ' اور' فلاح ' ' پر پہنچنے پر رُدُالُہ مَنازِح ہوں ہے کہ اور' فلاح ' ' پر پہنچنے پر نزاکت کے ساتھ وا کیں با کیں چھر سے کو تھوڑ اسا ہلا دیتے ہیں ، یہ طریقہ عَلَط ہے۔ وُرُست اندازیہ ہے کہ پہلے اچھی طرح وا کیں با کیں چھر و کرلیا جائے اِس کے بعد لفظ ' حَیَّ '' کہنے کی ابتداء ہو۔

خرمان مصطفیا (ملی اندُتان بلیدالد الدر نم) جمل في محمد بردوز تحدد وسوباردُرُ ودیاک برطانس کے دوسوسال کے گناه معاف مول محر

بھی اذ ان ہوجا ئیگی۔

"أذان بلالى " كنور وف كانست سے جواب اذان کے فئدئی پھول

میں **اُ اوان نَما**ز کے علاوہ دیگراذانوں کا جواب بھی دیاجائے گامَثُلُا بیّنہ

پيدا ہوتے وقت كى اذان _ (رَدُّالْمُحنَارِ ج٢ص ٨٢)

منتد **یوں کو مخطبے** کی اذان کا جواب ہر گز نہ دیٹا جائے یہی آفؤ ط

(یعنی احتیاط ہے تریب) ہے۔ ہاں اگر یہ جوابِ اذان یا (دوخطبوں کے

درمیان) دعا، اگردل سے کریں ، زبان سے تکفّظ اصْلاً نه ، وتوکوئ حَرَج

نہیں ۔اورامام یعنی خطیب اگر زَبان سے بھی جوابِ اذان دے یا دعاء

کرے باشیر جائز ہے۔ (فناوی رضویہ ج۸ ص ۳۳۰-۳۰)

رعائدگر از ان سُننے والے کیلئے اُذان کا جواب دینے کا حکم ہے۔ (عالم مگری

ج ١ص ٥٥) بُنُب (يعني جي جماع يا احبِّلام كي دجه سي خسل كي حاجت مو) بھي

اذان کا جواب دے۔البتہ حیض ونِفاس والی عورت، نُطبہ سننے والے، نَما زِجنازہ پڑھنے والے ، جِماع میں مشغول یا جوقصائے حاجت میں

مول أن برجواب مبيل _ (مرافى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص ٢٠٣)

مریکی جب اذان ہوتو اُتنی دیر کیلئے سلام وکلام اور جوابِ سلام اور تمام کام موقوف کرد پیجئے یہاں تک کہ تِلا وت بھی ، اذان کوغور ہے سنئے اور جواب د بیجئے اِ قامت میں بھی اِسی طرح سیجئے۔

(دُرِّمُ حَتَار مَعَهُ رَدُّالُمُ حَتَار ج٢ ص ٨٦ عالمگيري ج١ ص ٥٧)

روران چلنا ، پھرنا ،غذا، برتن کوئی سی چیز اُٹھانا ،رکھنا ، پھرنا ،غذا، برتن کوئی سی چیز اُٹھانا ،رکھنا ، حکمیلنا ،إشارول میں گفتگو کرنا وغیرہ سب کچھ

موقوف کردینا ہی مناسب ہے۔ موقوف کردینا ہی مناسب ہے۔

مهر الله عَرُور الله عَرُور عَلَى مِن مَسْعُول رہے اسكامَعا ذَالله عَرُو حَلَّ خاتمہ

ر بارشریت صد ۳۲ مدینة المرشد بریلی شریف) برا بروش این المرشد بریلی شریف)

مدي **است** پر چل رہا تھا كەاذان كى آواز آئى تو پہتر بيہ كەأتى دىر كھڑا

فيضانِ اذان

ه د مان مصطفیا (سلی اند تبال طیدال اید ملی ایم کی یا س میراز کر مواوروه مجمد پر دُرُ دو دشریف ند پڑھے تو لوگول شی و کنجو ل بر بی شخص ہے۔

ہوجائے پُپ جا ب سُنے اور جواب دے۔ (عالمگیری جا ص ٥٧)

مد المرچنداذانیں سُنے تواس پر پہلی ہی کاجواب ہے اور بہتریہ ہے کہ

سب كاجواب و __ (دُرِّمُعتَار مَعَهُ رَدُّالُمُعتَار ج ص ٨٢)

مهن المربوقتِ اذان جواب نه دیاتواگر زیاده دیرنه گزری موتوجواب

ر رُدُّالُمُحتَار ج٢ص ٨١)

"بامصطفے" كسات فروفكى نبت سے إقامت ك7 مَدَنى جول

مديد المعنى المام كالمين ليحي كفر من المهم المركبين المر

(ملخص از: فآويٰ رضويهج٥ص ٣٧٢)

مدير في القامت اذان سے بھی زیادہ تاکیدی سنّت ہے۔

(دُرَّمُحتَار مَعَهُ رَقُالُمُحتَار ج٢ص ٦٨)

فيضانِ اذان

ہ موم**ن مصنع**ا (ملی انتقال ملیدار ارتم) جس کے پاس میراؤ کر ہوااوراً سے وُرُ ووشریف نہ پڑھا اُس نے جفا کی۔ کما

مديث العامت كاجواب دينامُستخب - (عالمكيرى جاص ٥٧)

مهن المعنى المرايان من المرايات على المرايان من المرايات الم

(دُرِّمُحتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحتَار ج٢ص ٦٨)

مديد العَلَّم المُعَلِّم عَلَى الصَّلُوة اور حَىَّ عَلَى الْفَلَاح مِين

واكيس باكيل مُنه يُحيري - (دُرِّمُحتَار مَعَهُ رَدُّالْمُحتَار ج٢ص ٦٦)

اجازت ہے دوسرا کہ سکتا ہے اگر بغیر اجازت کہی اور مُؤَذِّن (یعن جس

نے اذان دی تھی اُس) کونا گوار ہوتو مکروہ ہے۔ (عالمگیری جاس اہو) ہے۔ (عالمگیری جاس اور) ہے۔ (عالم کی اُس کوئی مُخص آیا تو اُسے کھڑے ہوکرانیظار کرنا مکروہ

ہے بلکہ بیٹھ جائے اِس طرح جولوگ مسجِد میں موجود ہیں وہ بھی بیٹھے رہیں اوراُس وقت کھڑے ہول جب مُسكَبِّس حَسیَّ عَسلَی الْفَلاَح فيضانِاذان

۔ ﴾ چند مان مصطفیا (ملی اشتعال ملیہ اوسلم) جس کے پاس میراؤ کر ہوااوراً س نے جھے پرو رُودِ پاک نہ پڑھا تحقیق وہ ہر بخت ہو گیا۔ ﴿

(اَيضاًص٥٥)

پر پہنچے یہی حکم امام کیلئے ہے۔

"میرےعوثاعظم "کے گیارہ حُروف کی نسبت سے اذان دینے کے 11 مُستَحَب مواقِع

(۱) بیچ (۲) مغموم (۳) بمرگی والے (۶) غضبناک اور بدمزاج آ دَ می اور (۵) بیچ (۲) مغموم (۳) بمرگی والے (۶) غضبناک اور بدمزاج آ دَ می اور (۵) بدمزاج جانور کے کان میں (۲) گڑائی کی شد ت کے وقت (۷) آ تَشَ ذَ دَ گی (آگ لگنے) کے وقت (۸) میّبت دَ فُن کرنے کے بعد (۹) جِن کی سرکشی کے وقت (۱گئی) کے وقت (۱۸) میّبت دَ فُن کرنے کے بعد (۹) جِن کی سرکشی کے وقت (یاکسی پرجن سوار بود) والما نہ ہواً س

وقت نیز (۱۱) وَبا کے زمانے میں بھی اذان دینامُسْتَحَب ہے۔

(دُرِّمُحتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحتَار جِ ٢ ص ٥٠)

مسجد میں اذان دیناخلا فیست ہے

آ ح کل اکثر مسجِد کے اندر ہی اذان دینے کا رَواج پڑ گیاہے جو کہ خلاف ِسنّت ہے۔''عالمگیری''وغیرہ میں ہے اذان خارِج مسجِد میں کہی جائے ﴾ فيريان مصطفية (ملي الدنيال بليوال منه) جس نے مجھ پرايك بارۇ رُودِ ياك برطالله تعالى أس بروس ومتيس بھيجاہے۔

مسجد می**ں از ان نہ ک**ے۔ (منساویٰ عسائے مگیسر ی ج۱ ص ٥٥) **میسر ہے آف** عليحضرت،إمام أهلسنت، ولئ نِعمت،عظيمُ البَركت،عظيمُ الـمَـرْتَبت،پروانهِٔ شمْع رِسالت،مُـجَـدِدِ دين ومِلْت، حاميُ سنّت، ماحِيُ بدعت، عالِم شَرِيْعَت، بير طريقت، باعثِ خَيْر وبَرَكت، حضرتِ عَلامه موللينا الحاج الحافيظ القارى الشّاه امام اَحمد رَضا خان عدِره الأمن فرماتِ ہیں''ا یکباربھی ثابت نہیں کہ مُضُو رِ اقد سِ مَنْی الله تَعَالی علیہ وَ الہوسلم نے مسجد کے ا**ندراذ ان دلوائی ہو۔ (** فتباوی رضوبیہ تحریج شدہ ج^ہ ص ۲۱۶) س**یّدی اعلیُضر ت** رحمة الله تعالی علیه مزید فرماتے ہیں ،مسجد میں اذان دینی مسجد و در بالاِلٰی کی کشافی شیاد بی ہے۔(اُسُفاص ٤١١) صحب مسجد کے نیچے جہاں بُوتے اُتارے جاتے ہیں۔وہ جگہ خارج مسجد ہوتی ہے وہاں اذان دینابلا تک**ٹُف مطابق س**قت ہے۔ (اَیصاَ ص ، ، ٤) جُمعہ کی اذان ثانی جوآج کل (نطبہ ہے بل)مسجد میں خطیب کے مِثْمر کے سامنے سجد کےاندردی جاتی ہے بیجھی خِلا نبِسنّت ہے، بُمُعہ کی اذ انِ ثانی بھی

پُّ فور جان مصطفعيني والمواند تعالى عليد البديم) جب تم سرطين (جبه الدراير و و ياك بيز عوق جي يركي بيعوب شك شارقام جهانون كررب كارسول بورب

مسجِد کے باہر دی جائے مگر مُؤَذِن خطیب کے سامنے ہو۔

(فتح القدير ج٢ص٢٩)

سو شمیدوں کا ثواب کمائیے

سپیدی اعلی حضرت رحمة الله تعالی علیه فرماتے ہیں ، اِحیائے سقت عکماء کا تو خاص فرضِ منتقی ہے اور جس مسلمان سے ممکن ہوا س کیلئے خکم عام ہے ، ہرشہر کے مسلمانوں کو چاہئے کہ اسپے شہریا کم از کم اپنی اپنی مساجد ہیں (اذان اور جمعہ کی اذان ثانی مساجد ہیں (اذان اور جمعہ کی اذان ثانی مسجد کے بائر دینے کی) اِس سقت کو زندہ کریں اور سوسوشہ پدوں کا تواب لیس - (فضاوی رضویہ نخریج شدہ جہ ص ۲۰٪) رسول الله منگی الله تعکی الله تعکی علیہ قواب لیس مسئلہ کی تفصیل کیلئے فناوی رضویہ بی کے مشد کور مشد کور اور مشد کور اور مشد کور الله منالہ کی تفصیل کیلئے فناوی رضویہ بی مسئلہ کی تفصیل کیلئے فناوی رضویہ بی مسئلہ کی تفصیل کیلئے فناوی رضویہ بی می مسئلہ الا فائد ان اللہ منالہ کی منالہ فرمائے ۔

فيضان اذان

فنو هان مصطفط : (ملى الله تاليان اليام) جم في جمع برايك و رود باك برع ها الله تعالى أس بروس ومتي بهيجا ب-

اذان سے پہلے بیدُ رُودِ یاک پڑھئے

أَوْانَ وَإِقَامَتَ عَلَى بِسَمِ اللهِ الرَّخَمْنِ الرَّحِيْمِ بِرُّ *هَكُرُوُرُ*وو

وسلام کے پیچ پار صینے پڑھ کیجئے۔

اَلَصَّلُوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَسَارُسُولَ اللَّهِ وَعَسلَى الِكَ وَأَصُّلِيكَ يَسَا حَبِيْسَبَ اللَّهِ اَلَصَّلُوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَسَانَبَى اللَّهِ وَعَسلَى اللَّهُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَسَانَبَى اللَّهِ وَعَسلَى اللَّهُ وَأَصْلِيكَ يَسَانَبُ لُورَ اللَّهِ

پھروُ رُودوسلام اورا ذان میں فَصْل (یعن َیپ) کرنے کے لیے بیاعلان

يجيج أ'اذان كا إحترام كرتے ہوئے كُفْتُكُواوركام كاج روك كراذان كاجواب

و بیجتے اور فر میروں نیکیاں کمائے"۔ اِس کے بعد اُذان دیجئے ۔ درود وسلام اور

اِقامت کے درمیان بداعلان کیجے ' اِعتِ کاف کی قیت کر لیجے ، مو باکل فون ہوتو

. غور مان مصطفعاً: (من الشاق الميدالية منم) جمل في مجوير دس مرتبه وُرُود ياك بِرُ ها الشَّاتِحالَى أس برسومتين ما زل فريا تا ہے۔

پند کرد بیجے "۔ اذان وا قامت سے قبل تشریمهٔ اور دُرُودوسلام کے مخصوص چار صیغوں کی مَدَ نی اِلتجائِس شوق میں کرر ہاہوں کہ اسطرح میرے لئے بھی پچھ اور اب عامیان ہوجائے اور فَصْل (یعن گیپ رکھے) کامشورہ فقاوی رضویہ کے فیضان سے پیش کیا ہے۔ پُنانچہ ایک اِسْتِقْناء کے جواب میں امام اہلسقت رحمۃ اللہ فیضان سے پیش کیا ہے۔ پُنانچہ ایک اِسْتِقْناء کے جواب میں امام اہلسقت رحمۃ اللہ تعالیٰ علیفر ماتے ہیں، ''دُرُود شریف قبل اِ قامت پڑھنے میں کُرُن تہیں مگر اِ قامت سے فَصْل (یعنی فاصِلہ یا علیمِدگی) چاہئے یا دُرُود شریف کی آ واز ، آ واز اِ قامت سے فصل (یعنی فاصِلہ یا علیمِدگی) چاہئے یا دُرُود شریف کی آ واز ، آ واز اِ قامت سے ایسی جدا (مَثَلُ دُرُود شریف کی آ واز ، آ واز اِ قامت اور عوام کودُرُود شریف کی آ داز اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گی آ داز اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گئی آ دار اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گئی آ دار اِ قامت (یعنی اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گئی آ دار اِ قامت (یعنی اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گئی آ دار اِ قامت (یعنی اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ امتیاز رہے اور عوام کودُرُود شریف گئی آ دار اِ قامت (یعنی اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ اس کا مقبل کی تو دیشریف کی اُن در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کچھ بئت) ہو کہ ان در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کچھ بنیت کہ دو کو در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کچھ بنیت کے دو کی در سے مقال کی در شریف کی ایکٹر کی کے دی بنیت کی در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کے دو کی در شریف کی کے در اُن کی در شریف کی اُن کی در شریف کی اُن کی در سے مقال کے در کی در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کے دو کی در سے در اُن کو کور کی در شریف کی آ دار اِ قامت کی بنیت کی کی در شریف کی کی در شریف
(فتاوي رضويه تخريج شده ج٥ ص ٣٨٦)

وَسَوَ سَهُ : سركارِمد ينهُ مَنْ اللهُ تَعَالَى عليه وَ الهِ وَسَلَّم كَى حياتِ طَامِرَى اور وَ ورِخُلُفاتِ ا راشِد بن عليم ارضوان ميں اذ ان سے پہلے وُ رُود شریف نہیں پڑھا جاتا تھا لہذا ایسا هو هان مصطفعهٔ : (سل اندقال عليه الدينم) تم جهال يكي بهوجمه برؤز دو پرهوتمها داؤر دو جمعتك پنجها ب

کرناگری بدعت اور گناہ ہے۔ (معاذ الله عزوجل)

جواب وسوسه اگرية اعده سليم كرليا جائ كه جوكام أس دورمين نهيس

ہوتا تھاوہ اب کرنابُری بدعت اور گناہ ہے تو پھر فی زمانہ نِظام درهم برهم ہوجائیگا۔

بے شار مِثالوں میں سے فَقُط المِثالیں پیش کرتا ہوں کہ بیکام اُس مُبارَک دور

میں نہیں تھے اوراب ان کوسب نے اپنایا ہوا ہے۔(1) قرانِ پاک پر نُقطے اور ۔

اِعْرابِ خَجَاج بن یوسُف نے میں ہوئے۔(۲) اِس نے تم آیات برعکا مات کے طور پر نُقطے لگوائے۔(۳) قرانِ یاک کی چھیائی (٤) مسجد کے

وَسْط میں امام کے کھڑے رہنے کیلئے طاق ٹمامحراب پہلے نہ تھی وَلید مَر وانی کے

دَور میں سیِّدُ ناعمر بن عبدالعزیز رضی الله تعالی عندنے اِیجاد کی۔ آج کوئی مسجِدا س سے خالیٰ نہیں۔(۵) چھ کلمے(۲)علم صَرْف وَحُو(۷)علم حدیث اورا حادیث کی

اَقْمَام (٨) درسِ فظامی (٩) شرِ ثیت وطریقت کے خارسلسلے (١٠) زَبان سے

نماز کی نیٹ (۱۱) ہوائی جہاز کے ذَرِیعہ سفر حج (۱۲) جدید سائنسی ہتھیاروں کے ذَرِيْعِ جہاد۔ بیرسارے کام اس مبارَک دَور میں نہیں تھے لیکن اب انہیں کو کی گناہ نہیں کہتا تو آ خراذ ان وا قامت سے پہلے سیٹھے میٹھے آ قاصَلَی الله تَعَالُ علیہ وَالہ وَسَلَّم یردُ رُ ودوسلام پڑھناہی کیوں بُری بدعت اور گناہ ہو گیا! یا در کھئے کسی مُعا سَلے میں عُدَم جواز کی دلیل نہ ہونا خو دولیلِ جواز ہے۔ یقیناً ، یقیناً ، یقیناً ہروہ نئ چیز جس کوئمر کیعت نے مُنْ نہیں کیاوہ بدعت حَسنہ اور مُباح لیعنی اہتھی بدعت اور جائزے اور یہ اُمْرِ مُسَلَّم ہے کہ اذان سے پہلے دُرُ ووٹٹریف پڑھنے کو کسی بھی حديث مين مُنْعَ نهيل كيا كيا لهذامَنْعُ نه موناخود بخو دُ 'إجازت' بن كيااورا چھي ا پھی باتیں اسلام میں ایجاد کرنے کی تو خود مدینے کے تابور، نبیوں کے سرور، حُصُّو رِانُورصَنَّی اللهُ تَعَالٰی علیه وَالهِ وَسلَّم نے ترغیبِ ارشادِفر ماکی ہے اورمسلم کے باب '' كتابُ العلم'' ميں سلطا ن دو جہان صَلَى الله تَعَالَى عليه وَالهِ وَسَلَّم كارپه فر مانِ اجازت

فيضانِ اذ ال

فرمان مصطفعا : (ملى الدِّته في ما يدور منه) من برو رُوو باك كي كثرت كروب شك ريتمهار كلَّ طهارت ب-

نشان موجود ہے،

مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً جَم هُمُ مُ نَ مَلَانِوں مِن كُونَى نَكَ حَسَنَةً فَعُمِلَ بِهَا بَعْدَةً كُتِبَ طريقة جارى كيا اورا يح بعداس طريقة پر لَهُ مِثُلُ اَجُورٍ مَنْ عَمِلَ بِهَا وَلَا عَمل كيا گيا تواس طريقة پمُل كرنے والوں يَدَ مِثُلُ اَجُورِهِم شَىءً - كَانْ جُرَجِى اسكے (يعن جارى كرنے والوں يَدَ فَصُ مِنُ اُجُورِهِم شَىءً - كَانْ جُرجى اسكے (يعن جارى كرنے والوں وصحيح مسلم ج كام ٢٤١)

کے اُجر میں کی نہیں ہوگی۔

مطلب ہیرکہ جواسلام میں اچھا طریقہ جاری کرے وہ بڑے تواب کا حقدار ہے تو بلا ہُبہ جس خوش نصیب نے اذان وا قامت سے قبل وُ رُود وسلام کا رَواج ڈالا ہے وہ بھی توابِ جارِیّہ کامُستحق ہے، قِیامت تک جومسلمان اِس طریقے پڑمل کرتے رہیں گے اُن کوبھی تواب ملی گا اور جاری کرنے والے کوبھی [فيضانِ اذ ان

مو ان مصطفع : (من اند تعالى عليه الدوسةم) من نے تعاب على جو يوروو و كو لكه الا جب تك يمرانا م أكر كذب عن الكها متعارك تيرين مير

ماتارہے گااور دونوں کے ثواب میں کوئی کمی نہیں ہوگی۔

موسكتا ہے كى كے زِ بن ميں بيئوال ہوكہ حديثِ پاك ميں ہے، "كُلُّ بِدعَةٍ ضَلَا لَهٌ وَّ كُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النّارِ" لِعنى ہر بدعت (نى بات) گراہى ہاور ہرگراہى جہنّم ميں (لے جانے والی) ہے ۔ (مثلوۃ شریف ٣٠٠) إس حديث شریف

کے کیا معنیٰ ہیں؟ اس کا جواب رہ ہے کہ حدیثِ پاک حق ہے۔ یہاں بدعت ہے مُر ادب دعتِ سیّعَة لیعنی بُری بدعت ہے اور یقیناً ہروہ بدعت بُری ہے جو کسی

سنّت کے خِلا ف یاسنّت کومٹانے والی ہو۔ پُٹانچِہ سِیّدُ ناشیخ عبدالحق محدّث وہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں ، جو بدعت کہ اُصول اور قواعِد سنّت کے مُوافِق

اوراُس کے مطابق قِیاس کی ہوئی ہے (یعنی شَرِیْعت دسنت سے نہیں نکراتی) اُس کو بدعتِ حَسَنه کہتے ہیں اور جواس کے خِلا ف ہووہ بدعت گمراہی کہلاتی ہے۔

(اَشِيَّهُ اللَّهُعات ج1 ص ١٢٥)

ع بائد المدكم مواكولى عبادت كم لاكن تنبير

YA

فو مان مصطفيا (ملى الدعان ميدادينم) جرجم برايك مرتبه وروثريف برحماب القدقالي أس كيلي ايك قيرا له ابرالكستا اورايك قيرا طاحديها وجزاء

اذان کی دُعاء

ا ذان كے بعد مُؤَدِّن و سامِعِين دُرُودشريف پڙھ کريدُوعا پڙهيس: ـ

التّمُعُمّ رَبِّ هَنِ قِاللَّهُ عُوقِ التّالَّةِ وَالصّافِةِ

الْقَائِمَةِ الْتِ سَيْكَ نَامُحَمّ لَا لَوْسِيلَةً

الْقَائِمَةِ الْتِ سَيْكَ نَامُحَمّ لَا لُوسِيلَةً

قائم مَ مَاكِ وَبَهَ لِي مِرَادُ صَوْرَةً مِنْ مَالِي الْمُعِنْ وَمِلِهِ

والفَّضِيلَةُ واللَّدَ وَمَا الرَّفِيعَةُ وَالْحَنْ لُهُ مَالِي وَمِلَةً الرَّفِيعَةُ وَالْحَنْ لُهُ مَالَةً مُولِدُ اللَّهُ وَمِلَةً الرَّفِيعَةُ وَالْحَنْ لُهُ وَمِلَةً الرَّفِيعَةُ وَالْحَنْ لُهُ وَمِلَةً الرَّفِيعَةُ وَالْحَنْ لُهُ وَمَا وَرَأَنَ كَوَ مَلَ اللَّهُ وَالْمُولِينَ فَي اللَّهُ وَمُولِينَ فِي اللَّهُ وَمُولِينَ فِي اللَّهُ وَمُولِينَ فِي اللَّهُ وَمُلِينَ فِي اللَّهُ وَمُولِينَ فِي اللَّهُ الْمُعْلِينَ فَي اللَّهُ وَمُولِينَ فَي اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَالْمُعْلِينَ فَلِينَ الْمُعْلِينَ فَي اللَّهُ وَمُ اللَّهُ فَي اللَّهُ وَالْمُعْلِينَ فَي اللَّهُ وَمُ الْمُعْلِينَ اللَّهُ وَمُ اللَّهُ وَمُ وَلَا الْمُعْلِينَ وَمِنْ الْمُولِينَ وَمُنَا مِنْ الْمُعْلِينَ وَمِنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُؤْمِنَ وَالْمُولِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ وَالْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُؤْمِلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ الْمُعْلِينَ وَمُنْ اللْمُؤْمِنَ وَالْمُؤْمِلِينَ وَمُنْ اللْمُعِلِينَ وَمُنْ اللْمُؤْمِلِينَ وَمُنْ اللْمُؤْمِنَ وَالْمُؤْمِلِينَ وَمُنْ الْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَ

فروان مصلف (ملى الله تعالى عدواله بملم) جمي ركث ت ذرود باك إحوب شك تمهادا جمي روُرُود باك إدها تمهار كالأبول كيليم مفرت ب-

سنجيش ڪلم

. * فوجه به مصطفه (سلي الله تدال بيدار به منه) جوجي ميرد و في جعد دُرُ ووشر يف يز هيگا بيس قيامت كي دن أس كي شفاعت كرون گا_

فيضانِ اذ أن

خو میں مصطفیا (سلی الذنتان مایہ الدینمار) جس نے جمیر پر دونی نمید دوسویا روُز دو یاک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گناور ماف ہول گے۔

أَلْحَمُنَذَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلْمِينَ وَ الصَّلوَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ المُرسَلِينَ

أَمَّا بَعَدُ فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَيْطَنِ الرَّحِيْمِ مَا بِسُمِ اللَّهِ الرُّحَمَٰنِ الرَّحِيْمِ مَا بيان گڻڪيے کي تباہ کا ربياں

از شج طریقت،امیر اہلسنت ،بانی دعوت اسلامی حضرت علامہ مولانا ابو بلال محدالیاس عطار قادری رحقوی ضیائی است بری تمرطوب افسوس! آج کل بیان ،گٹکا ،خوشبو دارسونف سیاری مین پوڑی اور سگریٹ نوشی وغیرہ عام ہے۔اگر خدانخو استہ

آپ ان میں سے کسی چیز کے عادی ہیں تو ڈاکٹر کے کہتے پر بصدندامت چیوڑنا پڑ جائے اِس سے قبل ہیٹھے مجبوب صلی امتد تعالی عدوالدہ سلم کی امت کے او ٹی عنحوارسگ مدینہ علی عند کی ور دکھری درخواست مان کرچھوڑ د بیجئے۔

یہ ارد سمی ہیں ہے اور سے اور سک مدینہ کا میں اور دہم کی اور اور سے مان کر چاہور دہیے۔ بعض اوقات اسلامی بھائی کو پان مختلے ہے منہ لال کئے ہوئے دیکھکر ول جنتا ہے ،اور جب کوئی آ کر بتا تا ہے کہ میں نے بان ،گٹکا باسگریٹ کی عادت ترک کر دی ہے تو ل خوش ہوتا ہے۔امت کی خیر خواہی کے جذبے کے تحت عرض

نے پان، گُٹکا پاسگریٹ کی عادت ترک کر دی ہے تو ل خوش ہوتا ہے۔امت کی خیر خواہی کے جذبے کے تحت عرض ہے، بگٹرت پان، گٹٹکا دغیرہ کھانے والے کاسب سے پہلے منہ مُنافِّر ہوتا ہے۔ایک اسلامی بھائی جنہوں نے گٹٹکا کھا کھا کرمنہ لال کیا ہوا تھا اُن سے میں نے (لیمنی سگ یدیہ علی عنہ نے) منہ کھولنے کوکہا تو ہمشکل تھوڑا ساکھول پائے ، ذباین بائبر

نکالنے کی درخواست کی توضیح طرح سے نہ نکال سکے۔ پوچھا، منسیس چھالا ہو گیاہے؟ بولے، تی ہاں۔ میں نے أنکو پان بند کردینے کامشورہ عرض کیا۔ اُلم حصد للله عزوجل انہوں نے مجھ غریب کی بات مان کر ٹنکا کھانے کی عادت ترک کر

بدر ورسی میں سرورہ ہوں ہے۔ است مسلمان طرح من اور امتحان کرے۔ کیوں کدائ کا ذیادہ استعمال مندے زم گوشت وی ہے کردیتا ہے جس کے سبب منہ پورا کھولنا اور زبان ہونٹوں کے باہر نکالنا دشوار ہوجا تا ہے ، نیز چونے کا مسلسل

و و محت نردیتا ہے بس نے سبب منہ پورا ھولنا اور زبان ہوسوں نے باہر نکالنا دسوار ہوجا تا ہے ، بیز چونے کا مسمس استِعمال مُنہ کی جلد کو چھاڑ کر چھالا ہنادیتا ہے اور یہی منہ کا السر ہے ، ایسے مخص کو چھالیہ، گڑکا ، مین پوڑی اور پان وغیر ہ افورا حان چیٹر الینی جائے ورنہ یہی السرآ کے چل کر معاذ اللّٰہ عَرَّہُ جا کینسر کی شکل اختیار کرسکتا ہے۔

مان گُڻڪا اور پيٺ کا ^گينسر

یہ بھی خور فرما ہے کہ جو پھو نامنہ نے گوشٹ کوکاٹ سکتا ہے وہ پہیٹ کے اندر جا کرنہ جائے کیا کیا تباہی مجاتا ہوگا! چونا آنتوں اور معد ہے میں بھی بعض اَ وقات کٹ لگادیتا ہے فوری طور پراس کا پتانبیں چاتا۔ جب اَلسر حدے زیادہ بڑھ جاتا ہے تب کہیں معلوم ہوتا ہے۔ یہی اُلسر آگے ہو ھے کر پیٹ کے بیٹمر کا بھیا تک روپ دھارسکتا ہے۔

یان یا گٹکا اور گلے کا کینسر

یان یا گُڑکا کبٹرت کھانے والے کی پہلے پہل آواز میں خرابی پیدا ہوتی اور گلا بیار ہوجاتا ہے، اگر وہ اس "کلیف وسیمیہ (NOTICE) تصوُّر کرکے پان یا گٹکا ہے باز نہیں آتا تو ہڑھتے ہو ھتے سعاد الله عزّو ہو گئے کے کینسر (THROAT CENCER) تک نوبت پہنچ جاتی ہے۔کہا جاتا ہے گلے کے کینسر کے مریضوں میں ہے 60 فیصد سے لیکر 70 فیصد تعداد پان یا گڑکا کھانے والوں کی ہوتی ہے۔

یااللہ! من جل ہم سب نے ہمیشہ کیلئے رامنی ہواور پان مسلکے اور تمبا کونوشی وغیرہ کی تناہ کاریوں ہے بچائے۔

المين ببجاه النببي الامين صلى الدخال عليدال وسم

نمازكاطريقه



- 🐠 گردآلود پیشانی کی فضیلت 237
- مازتوڑنے والی 29 ہاتیں 239
- 🐽 گدھےجیامنہ 256
- م باف آستین مین نماز بر هناکیسا؟ 263
- 🐽 صاحب مزار کی انفرادی کوشش! 292
- 🗢 مال جاريائى سے أخھ كھڑى ہوئى! 294

قیامت کاسب سے پہلاسوال 174

مشديدزخي حالت مين نياز 176

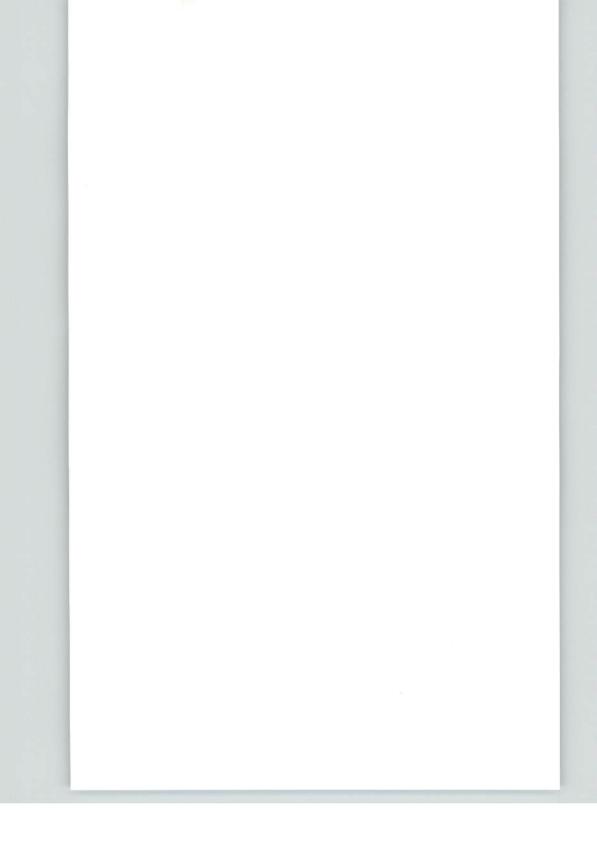
چورکی دوسمیں 179

وإسلامي بهنول كي نمازيس چندجگه فرق 191

٥ كارپيك كنقصانات 215

منتول كاليكاجم مستله 233

وَرَقِ اللَّهِ



نمازكاطريقه



ق تماز تو الي 29 باتيس 239

ه گدھے جیبامنہ 256

ه باف استين من نماز يزمنا كيها؟ 263

صاحب مزاد کی افغرادی کوشش! 292

٥ مال جاريائى سے أخد كمرى بوئى! 294

ى شدىددخى مالت بى نباز 176

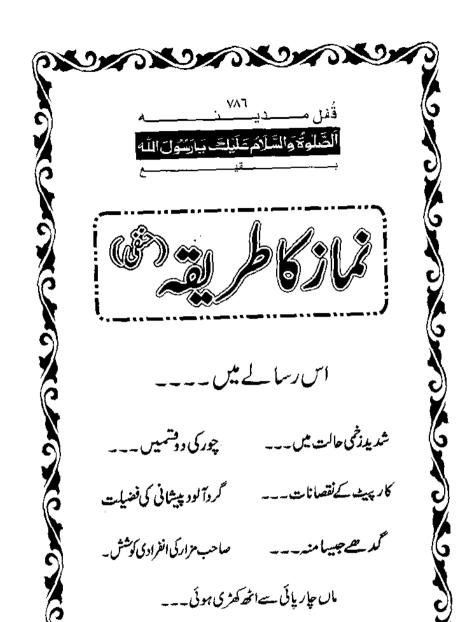
ه چور کی دوشمیں 179

٥ إسلامي ببنول كي فمازيش چند جكه فرق 191

، كارپيف كنتمانات 215

ى ئىنۇن كائىك اجم سىلە 233

وَرَقِ اللَّهُ ____



ورق الليخ ____

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِ الْعَلَمِيْنَ وَالصَّلُوٰةُ وَالسَّلَامُ عَلَىٰ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ الْحَمْدُ لِلَّهِ اللَّهِ الرَّحُمْنِ الرَّحِيْمِ اللهِ الرَّحْمَانِ الرَّحْمِيْنِ اللهِ الرَّحْمَانِ الرَّحْمِيْنِ اللهِ الرَّعْمِيْنِ اللهِ الرَّحْمِيْنِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الرَّعْمِيْنِ اللهِ اللهِ اللهِ الرَّعْمِيْنِ اللهِ الرَّهِ اللهِ المِ



شيطان لاكه روكه! يه رساله مكمَّل پر ه ليجئه ،

ان شاء الله عزوجل اس کے فوائد خود هی دیکھ لیں گے۔

ذُرُ ووشريف كى فضيلت

مركا يديد، سلطانِ با قرينه، قر ارقلب وسينه، فيض گنجدينه صلَّى الله تعالى عليه

والدوسلِّم نے نَمَاز کے بعد تَحدوثنَاء ودُ رُووشریف پڑھنے والے سے فر مایا '' دعاما نگ قُبول

كى جائے كى سُوال كر، ويا جائے گا۔ " (سُنن النَّسائى ج ١ ص ١٨٩ باب المدينه كراچى)

صَــُلُـو اعَـلَـی الْـحَبِیـب! صلّی اللّه تعــالیٰ علیٰ محمّد میٹھے شیٹھے اسلامی بھائیو! قران وحدیث میں نماز پڑھنے کے بے شار **هُنِ هَانِ عِصْطَفْيا** : (مني النامالية الإرائم) جو مجهي پر درود پاک پڙهنا جول گيا دو جنت کاراسته بحول گيا۔

فضائل اورنه برمض كى شخت سزائيس واردين، پُنانچه پاره ٢٨ سورةُ الْمُنافِقون

کی آیت نمبر ۹ میں ارشادِر بانی ہے،

يَأْيِّهُا الَّذِيْنَ الْمُنُوِّ الْاتْلُهِ كُمْ سَرِحَمه كَنْ الْايمان: المايان والوا المُوَالْكُمْ وَلَا الْوَلَادُكُمْ عَنْ تَهارِلِ اللهِ عَلْ اللهِ اللهِ وَلَى حِرْتَهِينَ المُوالْكُمْ وَلَا اللهُ اللهُ عَنْ تَهارِلِ اللهِ عَلْ اللهُ اللهُ وَلَا وَلَا وَلَا عَنْ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ

خِ اللَّهِ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَافِل ندر اور جواليا

فَأُولِيكَ هُمُ الْعَسِرُونَ ٥٠ كريتُو بي لوگ نقسان مين بين -

حضرت سيّد ناامام محربن احدزَ مَى عليه رَحْمَهُ اللّهِ الفَوى تَقُل كرتِ

میں، مُفَتِرِینِ کرام رَجِهَهُمُ اللّهُ تعالی فرماتے ہیں کیاس آیئتِ مبارَ کہ میں اللّه تعالیٰ کے ذِکر سے پانچ نَمازیں مُراد ہیں ، پس جُوَّخُص اپنے مال یعنی خریدو فَرُوخُتْ، مَعِیشَت ورُوزگار، ساز وسامان اور اَولا دمیں مصروف رہے اور وَ فَت پر نَماز نہ پڑھے وہ نقصان اُٹھانے والوں میں سے ہے۔

(كتابُ الكبائرص ٢٠دار مكتبة لحياة بيروت)

هُو صانِ مصطفیا : (سلی اندندن طیره اردام مراجس نے جمہر پرایک ؤرودیاک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پردس رمتیں جمیجا ہے۔

قیامت کاسب سے پہلاسُوال

مركا به مدينه، سلطانِ با قرينه، قرارِقلب وسينه، فيض تنجييهٔ صلَّى الله تعالى عليه

والہ وسلم کا ارشادِ حقیقت بُنیا و ہے،''قِیامت کے دن بندے کے اعمال میں سب سے پہلے **نما ز** کا سُوال ہو گا۔ اگر وہ دُ رُست ہو کی تو اس نے کامیابی پائی اور اگر اس میں کمی ہوئی تو وہ رُسوا ہوا اور اُس نے نقصان اُٹھایا۔

(كَنْزُ الْعُمَّالَ جِ ٧ص٥١١ حديث ١٨٨٨٣ دار الكتب العلميه بيروت)

نَمازی **کیلئے نو**ر

مرکار دوعالم، ندودِ مُجَسَّم ، شاهِ بن آدم، دسولِ مُحْتَسَّم عنّ الله تعلی میرکار دوعالم، ندودِ مُجَسَّم مثال کا در الله تعلی علی داند و الله علی داند و الله کا در شاور گرامی ہے، ' جو شخص نَماز کی حفاظت نہ کرے، اس نَماز قِیامت کے دن نور ، دلیل اور نجات ہوگی اور جواس کی حفاظت نہ کرے، اس کے لیے بُروزِ قِیامت نہ نور ہوگا اور نہ دلیل اور نہ بی نُجات ۔ اور وہ شخص قِیامت

. ﴾ فور هان مصطفط: (من الذتيان مايرانه به نم) جس نے مجھېروس مرتبه و رود پاک پڑھاانشرتعا لي اُس پرسورشتيں تازل فرياتا ہے۔

كه دن فرعون ، قارون ، بامان اور أبَيْ دَن خَلَف كِساتِه ، وكار ''

(مُجمعُ الزُّواثد ج ٢ ص ٢١ حديث ١٦١١ دارالفكر بيروت)

كس كاكس كے ساتھ حَشْر ہوگا!

الله الفَوى نَقُل كرتے ہيں بعض عُكمائے كرام دَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالى فرماتے ہيں كه

نُما ز کے تارِک کوان تھ پار (فرعون، قارون، ہامان اور اُنی بِن طَلْف) کے ساتھ اِس کیے

اٹھایا جائے گا کہلوگ عُمُو ماً دُولت ، حکومت ، وَزارت اور تبجارت کی وجہ ہے نما زکو

تڑک کرتے ہیں۔جو**فکو مت** کی مُشغولیَّت کےسبب نَمازنہیں پڑھے گا اُس کا

کثر فرعون کے ساتھ ہوگا، جودولت کے باعث نماز تُزک کریگا تو اُس کا قارون

کے ساتھ کشر ہوگا اور اگر ج**نجارت** کی مصروفیت کی وجہ سے نماز چھوڑے گا تو اس کو

مائے گا۔

فرمان مصطفى السل دفال ماياليس مم جهال يهى بوجم يرد روو يوعوتمهاراد رود جوتك ينتاب

مُلَّهُ مَكَّرٌ مدكے بَهُت بڑے كافِر تاجِر أبنى بن خَلَف كے ساتھ بروزِ قِيامت أَهُايا

(كتابُ الكبائرص ٢٦دار مكتبة لحياة بيروت)

شدید زُخُمی حالت میں نَماز

جنب حضرت ِسیِدُ ناعمر فاروقِ اعظم رض الله تعالی عنه پر قاتِلا نه تُمله ہوا تو گئی، عُرْض کی،اے امیسرَ السُمُؤ مِنِین!نماز (کادفت ہے) فرمایا، جی ہاں، سنئے!''جو شخُص نَماز کوضائع کرتا ہے اُس کا اسلام میں کوئی دِصّه نہیں ۔'' اور حضرت ِسیِدُ ناعمر فاروق رض اللہ تعالی عنہ نے **شد بدر آخی** ہونے کے باؤ جُو دِنَماز ادا فرمائی۔ (ایفا)

نَماز پَر نُور یا تاریکی کے اُسباب

حمضرت سبّد ناعُبادہ ہن صامِت رضی اللہ تعالی عند سے روایت ہے کہ نی آ رَحْمت شُفیعِ امّت ، شَهُنْشا وِ نُبَّوْت ، تا جدارِ رِسالت صلّی الله تعالی عایہ والہ وسلم کا فر مانِ عالیشان ہے،'' جو شخص الججھی طرح وضوکرے ، پھرنماز کے لیے کھڑا ہو، اِس کے

رُکوع، مُســـــُجــــو داور قِر ءَات کومکتَّل کرے تونما زکہتی ہے، **اللہ** تعالیٰ تیری جفاظت کرے جس طرح تو نے میری جفاظت کی ۔ پھراس نَما زکوآ سان کی طر**ف** لے جایا جاتا ہے اوراس کے لیے چمک اورنُور ہوتا ہے۔ پس اس کے لیے آسان کے درواز بے کھولے جاتے ہیں تنی کہاہےاللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں پیش کیاجا تا ہےاوروہ نَمازاُ سِنَمازی کی فَضاعت کرتی ہے۔اورا گروہ اس کا رُگوع ،سُے **جو د** اور قِر ءَات مکمَّل نہ کرے تو نَماز کہتی ہے،**اللّٰد** تعالیٰ تجھے چھوڑ دے جس طرح تُو نے مجھے ضائع کیا۔ پھراس نَما زکواس طرح آسان کی طرف لے جایا جا تا ہے کہ اس پر تار کی حیمائی ہوتی ہے اور اس پر آسان کے دروازے بند کر دیئے جاتے ہیں پھراس کو پُر انے کیڑے کی طرح لپیٹ کراس نَمازی کے منہ پر ماراجا تا ہے۔ (كنزالعُمَال ج٧ص١٢٩حديث ١٩٠٤٩)

خوصان مصطفيط : (سلى الدة ال طيد الدينم) مجمع برؤ أرود باك كى كثر سنة كروب شك يتمهاد ، لي طهارت ب

بْرے خاتِمے کا ایك سبب

حضرت سیّد نا امام بخاری ملیدهٔ التوالباری فرمات بین، حضرت سیّد نا فرکت التوالباری فرمات بین، حضرت سیّد نا کشخص کو دیکھا جو نماز پڑھتے ہوئے رُکوع فر کیف جو دیمان پڑھتے ہوئے رُکوع اور سُنجو دیورے ادائییں کرتا تھا۔ تو اُس سے فرمایا، ''تم نے جونماز پڑھی اگرای نماز کی حالت میں انتقال کرجا وُ تو حضرت سیّد نا محبر مصطفے سٹی اللہ تعالی ملید دالہ دِسٹم کے طریقہ پرتمہاری موت واقع نہیں ہوگ (صحبت بحد یہ دی وجھا، ''تم کب سے نمائی کی روایت میں بیدھی ہے کہ آپ رضی اللہ تعالی عند نے بوچھا، ''تم کب سے اِس طرح نماز پڑھ رہے ہو؟ اُس نے کہا، تھا کیس سال سے۔ فرمایا بتم نے کہا تھا کیس سال سے۔ فرمایا بتم نے کہا تھا کیس سال سے۔ فرمایا بتم نے کہا تھا کی تو دین میں تہیں موت آگئی تو دین میں تھی سال سے بالکل نماز ہی نہیں مرو گے۔

(سنَنِ نَسائي ج ٢ ص ٥٨ دارالحيل بيروت)

فو جان مصطفيد (على الدن لبدالد بنم) جمات ترب من مح وددد باك كماة جب مك براه م أى كزب على كلما ديك الم شعة الركة وترار مك

نَماز کا چور .

حضرت سبِّدُ نا ابوقتا وہ رض الله تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ سر کا رِ مدینہ،

قر ار قلب وسينه، فيض تنجينه، صاحِبٍ مُعَطَّر پسينه صَلَّى اللهُ تَعَالُ عليه وَاله وسلَّم كا فر ما نِ

با قرینہ ہے،''لوگوں میں بدترین چَوروہ ہے جواپی نُماز میں چوری کرے''،عرض

كى كئى، "يارسولَ الله عَدوَ وَجَلْ وَسَلَّى اللهُ تَعَالَى عليه وَالدوَسَلْم الله أَمَاز كا جِوركون هم؟ "فر مايا،

''(وہ جوئماز کے) رُگوع اور سُجدے پورے نہ کرے۔''

و مرافعه العام المحمد بن حنبل ج ٨ص ٣٨٦ حديث ٢٢٧٠٥ دار الفكربيروت)

چور کی دوشمیں

مُفترِشَهرِ حکیم الاُمّت حضرتِ مفتی احمد یا رخان علیهُ رَمْمة المئان اس حدیث کے تُحت فرماتے ہیں ،معلوم ہُو امال کے چورسے **نما زکا چور** بدتر ہے کیوں کہ مال کا چور اگرسز ابھی یا تا ہے تو کچھ نہ کچھ نُفع بھی اُٹھالیتا ہے مگر **نماز کا چور**سز ا

پوری پائے گااس کے لئے نفُع کی کوئی صورت نہیں۔مال کا چور بندے کاحق مارتا

ے جبکہ مما زکا چور الله عزو جا گاحق ، بیا الت ان کی ہے جونما زکوناقِص پڑھتے

ہیں اِس سے وہ لوگ درسِ عبرت حاصل کریں جو ہمرے سے نماز پڑھتے ہی نہیں ۔

(مِراة ج ٢ ص ٧٨ضياء القران پبني كيشنز)

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو!اوّل تولوگ نَماز پڑھتے ہی نہیں ہیں اور جو

پڑھتے ہیں ان کی اکثرِیَّت سنّتیں سکھنے کے جذبے کی کمی کے باعث آج کل سکھے طریقے سے نَماز پڑھنے سے مُحروم َ رہتی ہے۔ یہاں مُخْفَرُ اُنمَاز پڑھنے کا طریقہ پیش

کیا جاتا ہے۔ برائے مدینہ إبهُت نِیا دہ غور سے پڑھئے اوراپنی نَما زوں کی

إصْلاح فرماييّے: ـ

(۱۰)

خوصان مصطفعة (ملهدندلد، ادمم) جومح واليدمرتبدة ووفريف بإحتاب الدقعاليا أن يليخ اليد قيراط وباكستاد واليد قيراط احديها إجناب

نُما زکا طریقه ﴿مَنَني﴾

باؤ ضو قبلہ رُ و اِس طرح کھڑے ہوں کہ 'ونوں یا وُں کے بیجوں میں

ع چاراُ نگل کا فاصِلہ رہےاور دونوں ہاتھ کا نوں تک لے جائے کہاَ نگو تھے کان کی لَو

ہے چھو جا کیں اور اُنگلیا ں ندملی ہوئی ہوں نہ خوب کھلی بلکہ اپنی حالت پر

(NORMAL) رکھیں اور ہتھیلیاں قبلہ کی طرف ہوں نظر سُجد ہ کی جگہ ہو۔اب

جونَما زیرِ هنا ہے اُس کی نتیت تعنی دل میں اس کا پگا ارادہ سیجئے ساتھ ہی زَبا ن

ہے بھی کہد لیجئے کد زیادہ اچھا ہے (مَثَلُانیت کی میں نے آج کی ظہر کی خوارز کعت فرض

نماز کی ،اگر باجماعت پڑھ رہے ہیں تو یہ بھی کہدلیں پیچھےاس امام کے)اب تکبیرِ تُحْر بمید

لعنی الله اکبر کہتے ہوئے ہاتھ نیچلائے اور ناف کے نیچاس طرح باندھے

کہ سیدھی تھیلی کی گذی اُلٹی تھیلی کے سِرے پراور پیچ کی تین اُنگلیاں اُلٹی کلائی

خوصان مصطفى (سلى الدِّ تعلى على دارو منم) جى يرة رُودش يف يرصوالله تم يردهت تصيح كار

کی بیٹھ پراوراً نگوٹھااور پُھنگلیا (یعنی جھوٹی انگلی) کلائی کے اَعْل بَعْل ۔اب اس طرح **مُناء**یر ھئے:۔

الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله

بير تعوُّو برُعنے:

أَهُوَدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّبُطْرِ الرَّحِبُيعِ يَسِ اللَّهُ عَالَى كَانِهُ مِن آتا مون شيطان مردود -

ىچەر تىشېمىيەرلىھىغە:_

لِيسْدِيمِ اللهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْدِ اللهُ عَامِ عَرُوع هِ رَبُتِ مِهِ بِانَ رَمْتُ والا

و المعلقة المعلى الفرق اليارة الدينام) جب تم ترسلين (في باسام) يروز دو ياك يرموق محد يرمي يرموب شك عمل تمام جهانول كرب كارمول يول.

پُرمکنل سُورَة فا يَحَدَرُ هِـُ:

الْحَمْلُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ ﴿ سَرِجَمَهُ كَنَوْ الْالِمَانَ : سَبُ

الرَّحْمَانِ الرَّحِيدِيِّ وَلِكِ بَوْمِرِ الدِّنْنِ ۚ خُوبِياں اللهُ عزومَل كوجو ما لك سارے الرِّحْمَانِ الرَّ

جهان والول كاربيت رمهر بان رحمت

اليَّاكَ نَعْبُلُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ فَ وَالا ، روز جزا كا مالِك ـ بم مُجمى كو

اِهْدِينَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْدِيرٌ ﴿ يَجِينِ اوْرَجُمْ عَدِ وَإِينِ - بَمِ كُو

سیدهاراسة چلا،راستدان کاجن پرتو صِرَاط الَّذِین اَنْعَمْتُ عَلَیْهِمْ ﷺ نے اِحسان کیا، نداُن کادن پرغَفَب

عَيْرِ الْهَعْضُوبِ عَلَيْهِمْ مِيرِ الْهَعْضُوبِ عَلَيْهِمْ مِيرِ اللهِ عَلَيْهِمْ

<u>وَلَا الضَّالِيُنُ</u>

﴾ ﴿ خوصه مصطفى (سلى الله عنال الميام) جو مجمد برروز جعد أرا والشريف براهے كا بيس قيا مت كے دن أس كى شفاعت كروں گا۔

سُورۂ فیاتِحہ خُم کرکے آہستہ سے آمین کہئے۔ پھرتین آیا س ت یا ایک بڑی آیت جوتین حچوٹی آیوں کے برابر ہویا کوئی **سُورت** مَثَلًا سورۂ اِخلاص پڑھئے۔

بِسُمَ حِدِ اللَّهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِدِ يُحِرِ مَرجَمَهُ عَنَرُ الايمان اللَّهُ وَمِل

قُلُ هُو الله أَحِلُ ﴿ كَامِ عَبْرُوعَ بُويَاتُ مِرَانَ

الله السهارة الله وه والله وه و الله و ا

المُ يُولِنُ ﴿ وَلَمْ يَكِنَى اللَّهِ اللَّهِ عِلَا اللَّهِ اللَّهِ عِلَا اللَّهِ اللَّهِ عِلَا اللَّهِ اللَّه مع اللَّهُ وَلِي اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ كُفُو الْحِلُ ﴾

اور ندأس کے جوڑ کا کوئی۔

اب الله الشارك بي المنظم المن

ہوں۔ پیٹے بچھی ہو کی اورسَر بیٹھ کی سِید ھ میں ہواُ ونیجانیجانہ ہواورنظر قدموں پر ہو۔ كم ازكم تين بار**رُ كوع كي تنبي عني عشب حن** رَجِّب الْعَظِيثِيم كَيَر بِهُمِعِ (أَس مِنْ) لِنِي سَنَوْعِ اللّٰهُ لِهِ مَنْ حَسَمِ لَا هُ کہتے ہوئے بالکل سیدھے کھڑے ہوجا ہئے ، اِس کھڑے ہونے کو**قو مہ** کہتے ہیں۔اگرآپ **مُنفُو د**ہیں بینی اکیائماز بڑھدے ہیں تواس کے بعد کہئے۔ ٱ**للَّهُ مَّ**َرُتَّنِا وَلَكَ الْحَسَمُ لِهِمِ اللَّهُ أَكْبُرَكِةِ مِوعَ إِسْطِرَ س**جدے** میں جائے کہ پہلے گھٹنے زمین پرر کھئے پھر ہاتھ پھر دونوں ہاتھوں کے نیج میں اِس طرح سرر کھئے کہ پیلے ناک پھر پیشانی **اور بیرخاص نحیال رکھنے کہ** ناک کی نوک نہیں بلکہ ہڈی کھے اور پیشانی زمین پرجم جائے ،نظرناک پر

لدینه ایعنی پاک ہے میراعظمت والا پروردگار سے لعنی اللہ عزوجل نے اُس کی مُن لی جس نے اُس کی تعریف ک سع اے اللہ!اے ہمارے مالک!سب خوبیال تیرے ہی لیے ہیں۔

۔ پی مدن مصطنبا (سنی اند تعالی ملیدالبہ بنم) اس فتص کی ناک خاک آلود ہوجس کے پاس میر اذکر ہواور دو جھی پروُرُ ود پاک تدیز ہے۔

رہے، باز دؤں کو کر دٹوں ہے، بیپ کورانوں سے اور رانوں کو پینڈ لیوں سے جُد ا

ہ رکھئے ۔(ہاںاگرصَف میں ہوں تو باز وکر وٹوں سے لگائے رکھئے) ا**ور دونوں یا ول کی**

ا دسوں اُنگیوں کا زُخ اِس طرح قبلہ کی طرف رہے کہ دسوں اُنگیوں کے

پیٹ (بعن اُلکیوں کے تلوول کے اُم رے موئے منے) زمین بر کیے رہیں۔ ہصلیاں

م ازم مین بارتجدے کی میں سب طن رقبے کا الا علی

پڑھئے بھرسراس طرح اُٹھائے کہ پہلے بیٹانی بھرناک بھر ہاتھ اٹھیں۔

پھرسیدھاقدم کھڑا کر کے اُس کی اُنگلیاں قِبلہ رُخ کر دیجئے اور اُلٹاقدم بچھا کر پُر

اں پرخوب سید ھے بیٹھ جا ہے اور ہتھیلیاں بچھا کر رانوں پڑ گھٹنوں کے پاس

إ باك ب يروردگارسب سے بلند۔

غرمان مصطفیا (ملی اند نال ملید اور کا میراد کر مواوروه جمی پر دُرُ دوشر نف ندیز عیالو کول میں و انجوس ترین شخص ہے۔

رکھئے کہ دونوں ہاتھوں کی اُٹگلیاں قبلہ کی جانب اوراُ نگلیوں کے ہمر ے گھٹنو ل

کے پاس ہوں۔ دونوں تجدوں کے دَرِمیان بیٹ**ینے کو جُلسہ** کہتے ہیں۔ پھر کم از کم

ایک بار سُبْحٰنَ الله کہنے کی مِقدار مُقْمِریے (اِس وَتغدیم اَلْ مُعْدَا عُفِرْ لِیُ

یعنی اے اللہ ورجل میری مغفِرت فرما کہد لیمنامُستَّب ہے) پھر اَللَّهُ اَکْبَر کہتے ہوئے پہلے . .

سُجدے ہی کی طرح **دومراسُجد ہ** سیجئے ۔اب اِسی طرح پہلے سراُٹھائے پھر ماتھوں کو مھٹنوں پرر کھ کر پنجوں کے بل کھڑے ہوجائے ۔اُٹھتے وُقت پنیر مجبوری

، زمین بر ہاتھ سے ٹیک مت لگاہئے۔ بیآپ کی ایک رَکْعَت یوری ہو ئی۔اب

دوسرى ركعت مين بيدشب إلله الترشمين الترجيب يمير بره مر السحمد اور

سورة پڑھے اور پہلے کی طرح **رُگُوع** اور سَجدے کیجے دوسرے سجدے سے

سراً ٹھانے کے بعد سیدھاقدم کھڑا کر کے اُلٹاقدم بچھا کر بیٹھ جائے ڈور کئعت

﴾ ﴿ هو جد معطفها (ملى الله تعالى عليه البرائم) جس معلى بإس ميرا فركر تبوا اورأس نے ؤرّ ووٹريف نه پڑھا أس نے جفا ك

کے دوسرے سُجدے کے بعد بیٹھنا **قعدُ ہ** کہلاتا ہے اب قعد ہ میں مُنْ مَنْ مِنْ مِنْ سُرِ (تَ-شُهُ-هُد) پڑھئے:

تمام قُولى، فِعلى اورمال عبادتين الله التَّحَيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوْتُ وَالطَّبِيبُتُ ﴿ السَّلَامُ عَلَيْكَ مِن مِن يَكِ بِن سِلام بِوآبِ رِ أَيُّهُ النَّبِيُّ وَرَحْهِ مَنْهُ اللَّهِ اللهِ عَنْ ادراللهُ عَرْدِ مِلْ كَا رَحْتِينَ اور بَرَ کُتیں ۔سلام ہوہم پراوراللہ عز وجل وَيُرِكَاتُهُ ﴿ النَّهُ لَا هُرِ عَلَمْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ ٤ نِك بندول ير ـ مِن كواى الصُّالِحِيْنَ ٥ اسْتُهَكُ انْ لَا ويتابون كمالله بروبل كے مواكوئي معبود اللهٔ الله الله و أسنه ف نسب اور مين گواي دينا مول محمد (ملي الله وَرُسُولُكُهُ وَ

فومان مصطفیا (ملی الله تعالی ملیه الدینر) جس کے پاس میراؤ کر ہوا اوراُس نے مجھ پرد پرُ ودِ پاک نہ پڑھا تحقیق وہ ہر بخت ہو گیا۔

جب مَشَهُ د مِن لفَظِ لا كقريب بِنجِين توسيد هم اِته كى جي كى

أنكًى اوراً نَكُمو شِهِ كَا حَلَقه بنالِيجَ اور چُھنگليا (يعنى جِبونى أنگل)اور بِنُصَر يعنى اس

کے برابروالی اُنگلی کوشیلی سے ملاد بیجئے اور (اَشْھَدُ اَلْ کے نور اَبعد) لفظ لا کہتے

ہی کلے کی اُنگل اٹھائے مگراس کو اِدھراُ دھرمت ہلائے اورلفُظِ **اِلّا** پر گرا دیجئے اور**ن**وز اسب اُنگلیاں سیدھی کر لیجئے ۔اب اگر دوسے نِیادہ رَکَعْنَیں بڑھنی ہیں تو

َسُ اَکـــُلُـهُ اَکۡبَر کہتے ہوئے کھڑے ہوجاہئے۔اگر فرض نَمازیڑھ رہے ہیں تو تیسری

اور چھی رَ گفت کے قیام میں بشہ حِراللّٰاء الرّحمٰن الرّحِب يُعِرِ

اور اَلْحَدُدُ شريف پڑھے ، سُورَت ملانے كي ضرورت بيس باقى أفعال إسى

طرح بجالا بیئے اورا گرسنت وَنْفُل ہول تو سورۂ فانِحَه کے بعد سُورت بھی مِلا بیئے ترین

(ہاں اگر امام کے پیچھے نماز پڑھ رہے ہیں تو کسی بھی رَ گفت کے قِیام میں قِراءَت نہ کیجے

خد مان مصطفها (سلی اند تدن لید او در اید نام به مربی بارد کر در در پاک پر حاالله تعالی اُس پردس دستین بھیجا ہے۔

فاموش کھڑے رہے) پھرچار رکعتیں پوری کرکے **قعدہ آجیرہ ب**ی تشهد

ك بعدو روايراجيم عليه الصلوة والسلام، يراصك :-

اَللَّهُ يَّمُصَلِّ عَلَى عَلَى عَلَى السَّرُورِ مِل وَرُودِ يَقِيجِ (هار عروار)

وَعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى

صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرِهِيتِ مَهِ وَعَلَى اللهِ الْبُرهِيتِ مَهِ وَعَلَى اللهِ الْبُرهِيتِ مَهِ

اِتَّكَ حَسَيْدٌ مَّجِيدٌ ٥ پر بينگ تونر الإ بوائد رَكَ ہے۔اے

َ حَمَا اللَّكَ عَالَى إِبْرِهِ مِنْ مَدَ اللَّهِ اللَّهُ الرَائِمِ اوراكَى (مِذِهُ) ابرائِم اوراكَى وَعَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

الله حَدَرُتِنَا اتنا

پر کوئی ی دُعائے ما تُورہ پڑھئے، مَثَلُ بیدُ عابِرُ ھ لیجئے:

اے اللہ! عزوجل اے ربّ جارے

ہمیں وُنیا میں بھلائی دے اور

ہمیں آخرت میں بھلائی دے اورہمیں

في اللهُ أَنَّا حَسَنَةً وَفِي عَذَابِ النَّارِ عذابِ دوزخ سے بچا۔

پھرنمازختم کرنے کے لئے پہلے دائیں کندھے کی طرف منہ کرکے

الَسَّلَامُ عَلَيْكُمُ وَيَحْسَبَةُ اللّه كِيُرُادِراى طرح بائين طرف اب مُماز

تخم مولى . (مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٧٧٨ _غنية المستملي ص ٢٦١ كراچي)

اسلامی بہنوں کی مُماز میں چند جگہ فرق ہے

ندکورہ نما ز کا طریقہ امام یا تنہا مرد کا ہے۔ اسلامی بہنیں تکبیر تحریمہ

کے وقت ہاتھ کندھوں تک اُٹھا ئیں اور جا دَرسے باہَر نہ نکالیں۔ (الہدایہ معہ منہ

خد جان مصطفیا :(سل المذهن بدوار بنم) جس نے مجھ برایک وُ زود یاک بڑ ھالقد تعالیٰ اُس پروس رهمتیں جیجتا ہے۔ مدر معمون معروب معمون معمون معمون معمون معمون معمون معمون معمون استعمال معمون المعمون المعمون المعمون المعمون ا

سف در سرح ۱ ص ۲۶ کا ۱ میں اُلٹی تھیلی سینے پر چھاتی کے پنچر کھ کراسکے اُو پرسیدھی تھیلی رکھیں ۔ رُکوع میں تھوڑا تھکیں لیعنی اتنا کہ گھٹنوں پر ہاتھ رکھ دیں اُو پرسیدھی تھیئی رکھیں ۔ رُکوع میں تھوڑا تھکیں لیعنی اتنا کہ گھٹنوں پر ہاتھ رکھ دول اُور فد دیں اور گھٹنوں کو نہ پکڑیں اور اُٹھاں ملی ہوئی اور پاؤں تھیکے ہوئے رکھیں مردول کی طرح خوب سیدھے نہ کریں ۔ سُجد ہ سِیمٹ کر کریں لیعنی باز و کروٹوں سے بیٹ ران سے اور پنڈلیاں زمین سے ملا دیں ، سجدے اور مان سے اور پنڈلیاں زمین سے ملا دیں ، سجدے اور چھسے میں اور اُلٹا ہاتھ اُلٹی سُرین بی چیسے میں اور اُلٹا ہاتھ اُلٹی ران کے بیج میں اور اُلٹا ہاتھ اُلٹی ران کے بیج

میں رکھیں ۔ باقی سب طریقہ اُسی طرح ہے۔

(رَدُّ النُمتارج٢ص٩٥٢،عالمگيريج١ص٤٧ وغيره)

دونوں مٰتَوجِّه هوں!

اسلامی بھائیوں اور اسلامی بہنوں کے دیئے ہوئے اِس طریقہ نُماز

غو هان مصطفعاً: (مل شقه لي عيداب منم) جمس في مجيريوس مرتبه وُرُود بإك يرُو ها الله تعالى أس برسوح تيس نازل فرما تا ہے .

میں بعض باتیں **فر ض** ہیں کہ اس کے بغیر نما زہوگی ہی نہیں بعض **واجب** کہ اس کا جان بو جھ کر چھوڑ نا گنا ہ اور تو بہ کرنا اور نَما ز کا پھر سے پڑھنا واجب اور بھول کر چُھٹنے سے سُجِد ہ سُہو واجب اور بعض **سنّتِ مُوَّ گُلاہ** ہیں کہ جس کے چھوڑنے كى عادت بنالينا گناه ہے اور بعض مُستَحب ہيں كہ جس كا كرنا ثواب اور نه كرنا

گناه بیر، ـ (بهار شریعت حصه ۳ص ۳ مدینة المرشد بریلی شریف)

> **'یااللّه''**' کے چھ حُرُوف کی نِسبت سے نَماز کی 6شرائط

(۱) **طبها رت:** نَمَازی کابدن ٔلباس اورجس جگه نَمازیژ هر ہاہے اُس جگه کا ہر

قسم کی نج است سے باک ہوناضر ورک ہے (مَرافی الفلاح معه حاشية الطحطاوی ص٧٠

(۲) ستُسرِ عبورَت:(۱)مُردك لئے ناف كے نيچےسے لے كرگھٹوں

سمیت بدن کا سارا حصہ چُھیا ہوا ہوناضَر وری ہے جبکہ عورت کے لئے ان م**ا کچ**

خو هانِ مصطفعُ : (سنْ الله تدن لا بدوار به تلم) تم جهال بهي بهو مجهد بروُرُ و و پرهوتمها را وُرُ و دمجمه تک پهتپتا ہے۔

اُعْصاء: مُنہ کی ٹِکل' دُونوں ہتھیلیاں اور دونوں یاؤں کے تکو وں کے علاوہ سارا جِتْم چُھيا نالا زِمِي ہےالبتہ اگر دونوں ہاتھ (مِحَوں تک)، ياؤں (مُحُنوں تک) مکمَّل طاہر ہوں تو ایک مُفْتی بِبة قول برخما زؤ رُست ہے دالدوال معتار معه ردانه حتار ج ص ٩٣) [۲] اگر ايسا باريك كيڑا يہنا جس ہے بدن كا وہ حقبہ جس كائماز میں چھیا نافرض ہے نظرآ ئے باجلد کارنگ طاہر ہونمازنہ ہوگی۔ (فناوی عالم گیری ج١ ص٥٥) (٣) آج كل باريك كپڙوں كا رَواج بڙهتا جاريا ہے۔ايسے باريك کپڑے کا یا جامہ پہننا جس سے ران پاسٹر کا کوئی ھتیہ جبکتا ہو عِلا وہ نَماز کے بھی پہنا حمام ہے (بہارِ شربعت حصه ٣ص ٤٢ مدينة المرشد بريلي شريف) (٤) وَبِير (یعنی موٹا) کیڑا جس سے بدن کا رنگ نہ چمکتا ہو گربدن سے ایسا چیکا ہوا ہو کہ دیکھنے سے عُصْوُ کی ہیئےت (ہے ۔اُٹ)معلوم ہوتی ہو۔ایسے کپڑے سےاگر چہ نماز ہوجا نیگی مگراُ س عُضُو کی طرف دوسروں کونگاہ کرنا جا ئزنہیں (ددالسمعنارے ۲ ص . ﴾ فو **صانِ مصطَفهٔ** : (صلی اندین لایله دالبه به نم) جس نے جمعه پردن مرتبه ثنا اوری مرتبه ثنام درد و پاک پڑھا اے قیامت کے دن میر کی اثنا عت منے گا۔ پ

۱۰۳) ایبالباس لوگوں کے سامنے پہننامُنع ہے اور عورَ توں کے لئے بدرَجَہُ اُولُیٰ مُمانَعُت ۔ (بھارِ شریعت حصہ ۳ص ۶۲ مدینۂ المرشد بریلی شریف)(۵) بعض خواتین مکمُل وغیرہ کی باریک چاؤرنَماز میں اُوڑھتی ہیں جس سے بالوں کی سیابی چمکتی ہے یا ایسالباس پہنتی ہیں جس سے اُعضاء کا رنگ نظر آتا ہے ایسے لباس میں بھی نَماز نہیں ہوتی۔

(۳) استقبال قبله یعن نمازیں قبله یعنی کعبدی طرف مُندکرنا(۱) نمازی نے بلا عُذْر جان ہو جھ کر قبله سے سینہ پھیردیا اگرچہ فوراُ ہی قبلہ کی طرف ہوگیا نماز فاسِد ہوگئ اوراگر بلا قصد پھر گیا اور بُقَدُر تین بار' سُنہ خسنَ الله " کہنے کے وُقد ہے پہلے واکیس قبلہ رُخ ہوگیا تو فاسِد نہ ہوئی (البحرالران ج ۱ ص ٤٩٧) (۲) اگر مِرْف منہ قبلہ سے پھر اتو واجب ہے کہ فوراً قبلہ کی طرف منہ کر لے اگر مِرْف منہ کر اور خماز نہ جائے گی گر بلاغڈ رابیا کرنا مکر وہ تحر کی ہے۔ (خدہ المسنملی ص ۲۲۲ عرامی)

هو حان مصطفع (اسل مدتن لا يدور بنم) محمد برؤ زود ياك كى كثرت كروب شك يتمهاد سد الح طهارت ب

(۳) اگرایی جگہ پر ہیں جہاں قبلہ کی شنا خُت کا کوئی ذَرِیْدِنہیں ہے نہ کوئی ایسا مسلمان ہے جس سے پوچھ کر معلوم کیا جا سکے تو تَسَحَوِی (تَ ہِرُ رِی) ہیں ہیں ہیں ہو چئے اور چدھر قبلہ ہونا دل پر نِجے اُدھر ہی رُخ کر لیجئے آ ب کے تن میں وہی قبلہ ہے ۔ (الهداية معہ فتح الفدير ج ۱ ص ۲۳۳) (٤) تَسَحَوِی کر کے نما ذہر علی بعد میں معلوم ہوا کہ قبلہ کی طرف نما زنہیں پڑھی بنما زہوگئی لوٹانے کی حاجت نہیں ۔ (فتاوی عالمہ گی طرف نما زنہیں پڑھی بنما زہوگئی لوٹانے کی حاجت نہیں ۔ (فتاوی عالمہ گیری ج ۱ ص ۲۶) (۵) ایک محتمق قسحتوی کر کے (سوچ کر) نما ز پڑھ در ہا ہودومرااس کی دیکھا دیکھی اُسی سُمْت نما ز پڑھے کر کے گا قائیس ہوگی دومر ہے کے لئے بھی قسحتری کرنے گا تھی ہے۔

(ردالمحتارج٢ص١٤٢)

(٤) و صند بعن جونما زیر هنی ہے اُس کا وُقت ہونا طَر وری ہے۔ مَثَلُا آج کی نَمَا زِعُصْرادا کرنا ہے تو بیضر وری ہے کہ عَصْر کا وَثَت شُرُ وع ہوجائے اگر وقتِ فوهان وسطفيا : (ملي در والدينم) من كاب من الديدوروول كالعالة جب تك يراناماً كالاب ما العارية الركية استفاركرة وي كر

عَصْرَ شُرُ وع ہونے سے پہلے ہی پڑھ لی تو نَمازنہ ہوگی۔(غنیة الستعلی ص٢٢٤)

(۱) عُمُو ما مساجد میں فظام الا وقات کے نقشے آ ویزاں ہوتے ہیں ان میں

جومُستَنَدَ تَو قِیْت دان(تُو _قِیْت روَان) کے مُر تَّب کردہ اور عکمائے اہلسنت کے

مُصَدَّ قد ہوں ان سے نَمازوں کے اُوقات معلوم کرنے میں سَہولت رَہتی ہے(۲) اسلامی بہنوں کے لئے اوّل وثت میں نَمازِ فَجْرَادا کرنامُسْفَ حَب ہے اور باتی

۔ نماز دں میں بہتر یہ ہے کہ مُردوں کی جماعت کااقِظار کریں جب جماعت ہو چکے

مارون بین ، ربیع به ررون به تک می انتخاد رین بب این می ارسید پیم براهیس به (در معتار معه ردالمعتار ۲۰ ص ۳۰)

مر تین اُو قیات مَکُرُو هَه: (۱)طُلُوعِ آ فاّب سے لے کرمیں

مِنَك بعد تك (٢) عُرُ وبِ آفتاب ہے بیس مِنَك پہلے (٣) نِصْفُ النَّهار یعنی ضُحْوَهُ أَكْبرِ كَ ہے لے كرزَ والِ آفتاب تك _ان تینوں اُوقات میں كوئی نَما زَ جائز نہیں نُذُرض نہ واجب نِیَفُل نہ قضا۔ ہاں اگر اِس دن کی نَما زِعُصْرَہیں پڑھی تھی اور ﴾ ﴿ هو هانِ مصطفى (سلى اند تدال مديد الدسم) يحدير كرت ب ورود باك بإموب شك تبهادا محد بردر و باك بإهناتبهاد ، كما يول كيام مغرت ب-

مَكُرُوْهِ وفَت شُر وع ہو گیا تو پڑھ لے البقہ اتنی تا خیر کرنا حَرام ہے۔ ﴿ ذِرْ سِحنار سِعِه

ردالمحتار ج٢ص ٢٠ يهار شريعت حصُّه ٣ ص ٢٣مدينة المرشِد بريلي شريف)

دَوران مُما زمروه وفت داخِل موجائة و؟

غُروبِ آ فاب سے كم سے كم 20مِئك قبل نَما زِعَصْر كا سلام پھرجانا

چاہیۓ جبیبا کہ علیٰحضر ت امام احمد رضا خان علیہ رُحْمۃ الرُحمٰن فرماتے ہیں ،''مُمازِ

عَصْرِ مِيں جَتَنَى تاخير ہوافضل ہے جبکہ وقُتِ کراہت سے پہلے پہلے تُتم ہوجائے۔''

(منسادی رضویسه شریف حدید جه ص ۱۵۶) پھراگرا**س نے اِثنیاط کی اور نَماز میں**

، تَطُوِ بِلِكِ (يعِيٰ طُول ديا) كه وقُتِ كَراجَت وَسُطِ نَماز ميں آگيا جب بھی اس پر

ا عِبْرِ اصْ بِين " (فتاوى رضويه شريف جديد ج٥ ص ١٣٩)

(0) نیت: نتیت ول کے بلّے اراوے کانام ہے۔ (حاشبهٔ الطّحطاوی ص٥٢١

ک را ہے) (1) زَبان سے نیت کرنا ضَروری نہیں البتَّه دل میں نتیت حاضِر ہوتے

ہوئے زَبان سے کہدلینا بہتر ہے۔(فناوی عالمگیری ج اص ٦٠) عَرَ بِي مِيل كہنا بھى

و فعر جان مصطفعا (من من من الديمان) جوجي براك مرتبه وأروشريف في حتاب الله الألب المالي الكتابورا يك قيراط احمد بهاز جتناب

ضر ورئبين اردووغير وسي بهي زَبان مين كهد سكت بين - (مُلَحَّم ال دُرَ معتاد زِ ڈالے معتسارے ۲ ص ۱۱۳) (۲) نتی**ت میں** زَبان سے کہنے کا اُعِیمار نہیں یعنی اگر دل میں مَثُلُ طہری نتیت ہواور زبان سے لفظ عُصِّر نکلاتب بھی ظهری مُماز ہوگئ (درمعنار ر دالسه معتارج ۲ ص۱۱۲) (۳) نتیک کااد نی وَ رَجِه بیه ہے کدا گراُس وفت کوئی پوچھے کہکون ی نماز پڑھتے ہو؟ تو فوراً بتا دے۔اگر حالت ایسی ہے کہ سوچ کر بتائے كاتونكمازنه بوكي _ (فناوي عالم كبري ج اص ٢٥) (٤) فَرْضَ نَمَا زيين نتيت فرض بهي ضَر وری ہے مَثَلُا دل میں بینیت ہو کہ آج کی ظہر کی فَرْض نَماز بڑھتا ہوں۔ ‹ در معتار اردالسعتار ۲۶ ص۱۱۹) (۵) أصح (یعنی وُرُست ترین) بیرہے کنفل سقت اورتر اوت میں مُطلَق نَماز کی نیت کافی ہے مگر اصیباط یہ ہے کہ تر اوت کمیں تر اوت کیا سقت وَفَت كي نتيت كرے اور باقى سنتوں ميں سنت باسر كار مدينه منى الله تَعَالىٰ عليه وَالِهِ وَسَلَّم كِي مُمَّا بِعَت (يعني پَيروي) كي فتيت كرے واس لئے كه بعض مَثارَ خُرْ رَحِمَهُ مُ لللهُ تعالى: **ان مين مُطْلق نَماز كي نتيت كونا كافي قرار ديتة بين -**(منبة العصلي معه غنية

. و خوجان مصطفع الملى المارة من المارة والمرابع عوجي بايك مرتباذ أو وثريف يرحنا بالشرق في أس كيلي المرافع الوالي المرافع المارية الماري المرافع المارية الم

ے ۲۱) (۲) نَمَا زِنْفُل مِیں مُطْلَق نَمَا ز کی نیت کافی ہے اگر چہ نفُل نیّت میں ندہو۔ (درمعتار ، ردالمعتار ج۲ ص۱۶۶) (۷) بدنتیت که مُندمیر اقبله شریف کی طرف ہے شَر^ طنہیں ۔ (اَیصاً) (۸) اِ تُحَدّ امیں مُقتدی کا اِس طرح نیت کرنا بھی جائزے کہ جونمازامام کی ہے وہی نمازمیری ہے (عالمگیری جاس ٦٦)(9) ممّانی جنازه كى نتيت بيه، منمازالله فسؤون كے لئے اور دُعالِس مَيْف كيلي - (در معتار، ردالمعتار ج٢ص٢٦) (١٠) واوب مي واوب كي نتيت كرنا ضَر دری ہے اور اسے مُعنَّن بھی سیجئے مُثَلُّ عیدُ الْفِطْر ،عیدُ الْاصْلٰی ' مَذْ ر' نَمَازِ بعد طواف (واجبُ الطَّواف) يا و مُقُل نَما زجس كو جان بو جِهِ كر فاسد كيا ہو كه أس كي قَصا بھی واچب ہوجاتی ہے(حاشبة الطعطاري ص٢٢٢)(١١)ستجد والشكر الرحد الله ہے مگراس میں بھی نتیت ضَر وری ہے مَثَلُا ول میں بیزنیت ہو کہ میں سُخِدہُ شُکر کرتا مول - (الدرالمحتار معه ردالمحتارج ٢ ص ١٢٠) (١٢) سُحِيده سُمَّهُو مِيل بَعِي "صاحِب نهُرُ الْفَائِق'' کے نز دیک نِیّت ضَر وری ہے _{(اُنے} مَا) یعنی اُس وقت دل میں رہنیّت

فَر وری ہے۔

غد صان مصطفعا (ملى دندالد، بدائم) جوجمه پر درود پاک پڙهنا مجول گياوه جنت کاراسته بجول گيا-

ہو کہ میں تجدہُ سَہُو کرتا ہوں۔

ٱخِيْرَه(٧)خُرُوْج بِصُنُعِهِ-

(٦) تسكيبير تَصْريعه : يعنى نَمَا زَكُو ' اَللَّهُ أَكْبَر '' كهدَرَثُرُ وع كرنا

(عالمگیری ج ۱ ص ٦٨)

"بسمِ الله "كمات خروف كنسبت سے نماز كے 7 فرائض

(۱) تكبيرتُخريمه (۲) قِيام (۳) قِر اءَت (٤) رُكُوع (۵) مُحُود (۲) قَهِهُ دَ

(غنية المستملي ص٢٥٢ تا٢٨٦)

(1) تنكبير تَحْرِيْهَه : دَرحقيقت تكبيرَ تُحْرِيمه (يعنى تكبيرِ أولى) شرائطِ مُماز

میں سے ہے مگر نماز کے اُفعال سے بالکل ملی ہوئی ہے اِس لئے اسے نماز کے

فرائض سے بھی شمار کیا گیا ہے۔ (عنیة المستعلی ص٥٦) (۱) مُقتدی نے تکبیرِ تُحُریمہ کا لَفُظ'' اللہ'' امام کے ساتھ کہا گر'' اکبر'' امام سے پہلے خُتم کرلیا تو نماز نہ ہو فوصان مصطفها اسلى دخوان عدداد دام بحق ركش ت و دود ياك ياموب شك تبادا محديد زود ياك ياصاتبار كابول كيامنزت ب

گی ۔ (عائگیری جام ۲۸) (۲) امام کو**زکوع می**ں بایا اورتکبیر تح⁵ بیمه کہتا ہوا زکوع میں گیالینی تکبیراُس وَ قُت خُنم ہو کی کہ ہاتھ بڑھائے تو گھٹنے تک بُہنج حائے نَماز نہ ہو گی۔ (حیلاصۂ الفتاویٰ ج۱ ص ۸۳) (ایسےموقع پر قاعِدے کےمطابق پہلے کھڑے کھڑے تکبیرتح بمہ کمیہ لیجئے اِس کے بعداللہُ اکبر کہتے ہوئے رُکوع سیجئے ،امام کے ساتھ اگر زُکوع میں معمولی سی بھی شرکت ہوگئی تو رَکْعُنت مل گئی اگر آپ کے رُکوع میں داخِل ہونے ہے قبل امام کھڑا ہو گیا تو رَکْعت نہ ملی۔(۳) جو خُصْ تکبیر کے تَلَقُظ پر قادِر نہ ہومَثُلُا گونگا ہو پاکسی اور دجہ سے زَبان بند ہوگئی ہو أس يرتكُفُظ لا زِمْنِيس، ول مين إراده كافي ب- (نبيين الحقائق ج١ص٥٠١) (٣) لَقُطُ اللَّه كو اللَّهُ ما اكبركو اكبر بإ أكبار کہانماز نہ ہوگی بلکہ اگران کے معنی فاسد ہ بجھ کر جان بو جھ کر کہ تو کافر ہے۔ (در من اور دانسه منارج ۲ ص ۱۷۷) تمازیول کی تعداد زیاده بونے کی صورت میں

هر مان مصطنعهٰ (مل الله تعالى عليه والبه بنه م) جوجمحه پر رو زجمعه دُرُ و وشريف پره هيماً مين قبيا مت سكون أس كل شفاعت كرول گا-

پیچے آواز پہنچانے والے مکتروں کی اکثریّت عِلْم کی کی کے باعِث آج کل ''اکبر''کو''اکبار''کہتی سُنائی دیت ہے۔ اِس طرح ان کی این نَماز بھی تُوثی اوران کی آواز پر جولوگ انتقالات کرتے یعنی نَماز کی اَرکان اداکرتے ہیں اُن کی نَماز بھی ٹوٹ جاتی ہے۔ لہذا پغیر سیکھے بھی مُسکیّر نہیں بنا چاہئے(۵) پہلی رَکعَت کا زکوع مل گیا تو تکمیر اُو کی فضیات پا گیا۔

(عالمگیری ج ۱ ص ۹۹)

(**7) قبیسام : (۱) کی کی جانب قیام کی حدید ہے کہ ہاتھ بڑھائے تو گھٹٹول** تک نہ پنجیں اور پوراقیام یہ ہے کہ سیدھا کھڑا ہو۔(درمنحتار، دالمنحتار ۲ ص۱۶۳)

(۲) قِیام اتن دیر تک ہے جتنی دیر تک قِر اءَث ہے۔ بَقَدَ رِقِراءَ تِ فَرْض قِیام بھی فَرْض ، بَقَدَ رِ دادِب وادِب ، اور بَقَدَ رِسدَّت سدَّت ۔ (اَسْصَانِ) (۳) فَرُض ، وِثْر ،

عِيْدَيُن اور سنّ بن فَجْر مِين قِيام فَرْضَ ہے۔ اگر بلاعُدُ رَقِيْح كوئى يهِ مُعازين

۔ غ ند مان مصطفیا (سلی اند تالی سیدالد بند) جمل نے مجھ پر دوزنجمد دوسو باردُ رُود یاک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گنام ُعاف ہول گے۔

بیٹھ کرادا کرے گاتو نہ ہوں گی۔ را بُسنہ (٤) کھڑے ہونے ہے تھن کچھ تکلف ہوناغڈ رنہیں بلکہ قِیام اُس وقت ساقط ہوگا کہ کھڑا نہ ہوسکے باسُحد ہ نہ کر <u>سک</u>ے یا کھڑے ہونے یائجد ہ کرنے میں زخم بہتاہے یا کھڑے ہونے میں قَطَر ہ آتاہے یا چوتھا کی سِنْر گھلٹا ہے یاقر اءَت سے مجبور مُض ہوجا تا ہے۔ بوہیں کھڑا ہوسکتا ہے مگراس سے مرض میں زیاد تی ہوتی ہے یا دیر میں اچھا ہوگا یا نا قابلِ برداشت ت کلیف ہوگی تو بیٹھ کریڑھے۔ (غنیة المستعل ص۲۰۸) (۵) اگرعُصا (یا بیسا کھی) خادم یاد بوار پرٹیک لگا کر کھڑ اہوناممکن ہےتو فُرْض ہے کہ کھڑ اہوکر پڑھے ﴿ءَــبُّ ۔۔لی ص۲۰۸) (۲)اگرمِرْ ف إتنا کھڑ اہوناُمکِن ہے کہ کھڑے کھڑے تکبیر تُحْ یمہ کہہ لے گاتو فرض ہے کہ کھڑا ہوکراللّٰہ اکبو کہہ لےاوراب کھڑا رَ ہناممکن نہیں تو بیٹھ جائے۔ (غنية المستملي ص ٢٥٩)

خبسر دار! بعض لوگ معمولی تکلیف (یازخم) کی دجہ سے فرض

۔ چھنے صدر مصطنع (ملی اشاقال بار دار منم) اُس فض کی ٹاک خاک آلود ہوس کے پاس میرا ذکر ہواور وہ جھے پر دُرُود پاک شام عے۔

نمازیں بیٹے کر پڑھتے ہیں وہ اِس کھم فرعی پرخور فرما کیں بہتنی نمازیں قدرت قیام کے باؤ ہو دبیٹے کراوا کی ہوں ان کولوٹانا فرض ہے۔ اِس طرح و بیے ہی کھڑے نہ رَہ سکتے ہے گرعَصا یا دیوار یا آ وی کھرے نہ رَہ سکتے ہے گرعَصا یا دیوار یا آ وی کے سہارے کھڑے ہونا ممکن تھا گر بیٹے کر پڑھتے رہے تو ان کی بھی نمازیں نہ ہو کی ان کاکوٹانا فرض ہے۔ (مُلَکَّ ص اُر بہارِ شریعت کی بھی نمازیں نہ ہو کی ان کاکوٹانا فرض ہے۔ (مُلَکَّ ص اُر بہارِ شریعت حصہ کر بیٹے کی بیکی ہیں ہیں بغیر شرعی حصہ کر بیٹے کی بیکی بغیر شرعی میں بیری بنے میں بنا بنے میں
ا جازت کے بیٹھ کرئما زیں نہیں پڑھ سکتیں۔ بعض مساجد میں ٹرسیوں کا انتظام بھی ہوتا ہے بعض بوڑھے وغیرہ ان

پر بیٹھ کرفَرض نَماز پڑھتے ہیں حالانکہ چل کرآئے ہوتے ہیں ،نَماز کے بعد کھڑے کھڑے بات چیت بھی کر لیتے ہیں ۔ایسے لوگ اگر بغیر اجازت ِشُرعی بیٹھ کر

نَمازیں پڑھیں گے تو ان کی نَمازیں نہ ہوں گی۔(۸) کھڑے ہوکر پڑھنے کی

و موجه المعلقة (ملى الدن الدين الدين من كي باس ميراذ كر بواوروه جمه يرؤرُ ووشريف ندبرٌ حقوّ لوگول بيس وه نجول ترين مختص ہے۔

قدرت ہوجب بھی بیٹھ کرنفن پڑھ سکتے ہیں مگر کھڑے ہوکر پڑھنا افضل ہے

كه حضرت سيّدُ ناعبدالله بن عُمْرُو رض الله تعالى عنه مسي مَروى هـ، رحمتِ عالَم، نورِ بحسَّم، شاهِ بني آدم، رسول مُحتَشَم صلّى الله تعالى عليه والبوسَلْم في إرشاد فرما يأبيرُه

ا ، موہن و الے کی نماز کھڑے ہوکر بڑھنے والے کی نِصْف (یعنی آدھا ثواب) کر بڑھنے والے کی نماز کھڑے ہوکر بڑھنے والے کی نِصْف (یعنی آدھا ثواب)

ہے (میحمسلم جام ۲۵۳) البتہ عُذر کی وجہ ہے بیٹھ کر پڑھے تو تواب میں کمی نہ ہوگی ہے

جوآج کل عام رَواج بڑگیا ہے کہ نفل بیٹھ کر بڑھا کرتے ہیں بظاہر بیہ معلوم

ہوتا ہے کہ شاید بیٹے کر پڑھنے کو افضل سمجھتے ہیں ایسا ہے تو اُن کا خَیال عَلَط ہے۔ وِتْرُ

بوں ہے۔ میں میں ہوئے۔ کے بعد جو دور کوئر گفت نُفل پڑھتے ہیں اُن کا بھی یہی حکم ہے کہ کھڑے ہوکر پڑھنا

افضل ہے۔ (بہارشرایت ج ؛ ص ۱۷ مدینة المرشد بریلی شریف)

(٣) قد اءَت: (١)قر اءَت إس كانام ب كه تمام رُوف كَنارِن سے اواكے

جائیں کہ ہرکڑف غیر سے میچے طور برممتاز (نمایان) ہوجائے۔(عالمگری ج۱ ص

مند مدن مصطنع (سلى الدنيال عليه الديم) جس كے ياس ميراؤكر بولا وراً س نے وُرُ ووشريف شريخ حااً س نے جفاك _

٦٩)(٢) آ ہِستہ پڑھنے میں بھی بیضر وری ہے کہ خود کن لے۔(غسبة السست م ۲۷۱) (۳)اگرنژ وف توضیح ادا کئے مگراتنے آہستہ کہ خود ندسنااورکوئی رُکاوٹ مَثَلُا شوروَغَل يا ثِقُلِ سَماع**ت (یعنی اُونیا سننے کا مرض) بھی نہیں تو نَمَا زنہ ہو کی۔ (عالم گ**یری ج ۱ ص ۶۹) (٤) اگرچه خود سنناظر وری ہے مگریہ بھی اِحتیاط رہے کہ **یمر کی** (یعنی آہسة قراءَت دالی) نَماز وں میں قِر اءَت کی آ واز دوسروں تک نہ پہنیے، اِسی طرح نسبیجات وغیرہ میں بھی خیال رکھئے (۵) نماز کے عِلا وہ بھی جہاں کچھ کہنا یا پڑھنا مقرَّ رکیا ہے اِس ہے بھی یہی مراد ہے کہ کم از کم اِتنی آ واز ہو کہ خود من سکے مَثَلُا اَطُلَا ق دینے ، آ زاد کرنے یا جانور ذَنْح کرنے کے لئے اللّٰہ عز دِجل کا نام لینے میں إتني آ وازخَر وري ہے كہ خودىن سكے۔ (أے اُ) دُرُود شريف وغيرہ أوراد يرُ ھتے ہوئے بھی کم از کم اتنی آ واز ہونی جاہئے کہ ٹو دسُن سکے جبھی پڑھنا کہلائے گا۔ (۲)مُطلَقاً ایک آیت پڑھنافَرُض کی دورَ کعَتوں میں اور وِثْرِسُنَنُ اورنَوافِل کی ہر

۔ پنومان مصطنیا (سل ان خال ملیدالہ اللہ اللہ اللہ علی اللہ میں اور کر بھوااورائس نے جمھے پر د رُودِ پاک ند پڑھا تحقیق وہ بدبخت ہوگیا۔

۔ رَ كَعُت مِيں امام ومُنْفَرِ د (بعنی تنهائمازیز صنے والے) برِفْرض ہے۔ (مرانسی الفلام معہ پیة البط پیرطیادی چه ۲۲۶ (۷) مُقتَدی کونَما زمین قِراءَت جائز نہیں نہ سورةُ الْفاتِيحَة ن**ه آيت ـ نديم رحي (**يعني آبت قراءَت دالي) نَماز مي**ن نَجَمُر كي**(مین بلند آ واز سے قِر اءَت والی) نماز میں۔امام کی قِر اءَت مُقتدی کے لئے بھی کافی ہے۔(مراقی الفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۲۲۷)(۸) فَرُض کی کسی رَکعَت میں قِر اءَت نہ کی یافَقُط ایک میں کی نَماز فاسِد ہوگئی۔(عبالسگیری ۱۶ ص ۲۹) (٩) فَرَضُونِ مِیں نَفْہِرِ کُفَہرِ کُر قِر اءَت کرےاورترَ اورج میں مُعُوسِط اندازیراوررات ئے نُوافِل میں جلد پڑھنے کی اجازت ہے مگرایبا پڑھے کہ بھھ میں آسکے یعنی کم سے کم مَد کا جودَ رَجِه قارِیوں نے رکھا ہےاُ س کوادا کرے ورنہ حرام ہے،اس لئے کہ ترتیل سے (یعنی صُرِکُهر کر) قرآن یر صنے کا حکم ہے (درمندار ردالمعتار ج اول ص ۲۶۴) آج کل کے اکثر مُفّاظ اِس طرح پڑھتے ہیں کهَ مد کا ادا ہونا تو بڑی بات

مد من مصطنعا (ملیاند ندانی مذیرا درسمهٔ) جس نے مجھے برایک ہارڈ رُ ووِیا ک میڑھاللند تعالیٰ اُس بردس رختیں بھیجا ہے۔

ہے۔ بَعُلَمُونَ تَعْلَمُونَ كَيُواكَى لَفَظَ كَاپِيَانَہِيں چِلّانہ تَصْحِيْح ثُرُ وف ہوتی بلکہ جلدی میں لفُظ کے لفُظ کھا جاتے ہیں اور اِس پر تفاخرَ ہوتا ہے کہ فُلاں اِس قَدَر جلد پڑھتاہے! حالانکہاس طرح قرآنِ مجید پڑھنا حرام اور شخت حرام ہے۔

(بهارِشر نعت ج ۳ ص ۸۲ ۸۷۰ مدینة المرشد بریلی شریف)

خُرُو**ف کی صحیح ادائیگی ضَروری ھے** ائٹرنوگ ط ت ،سصف اوع، 8ح ، ض ذ ظ میں کوئی فُرق نہیں کرتے۔ یا در کھئے اُکڑ وف بدل جانے سے اگرمعنیٰ فاسِد ہو گئے تونماز نہ ہو گی ۔(بہارشریعت ھے۔۳ ص۰۸مکتبۂ رضویہ)مُثْلًا جس نے سَبُعُن رَبِي الْحَظِيثِ مِن عَظِيم كُوعَرِيمٌ (ظ ٤ بجاءًز) يره ديانمازهاتي رسي للنزاجس كي عظيم " صحيح اوا نرمو وه سُعِنُ دُنِّيُ الْكُربِيو بِرُحْ-(قانون شريعت حصه اول ص ١٩ فريد بك استال لاهور)

يًّ فو جاني صصطفياً : (ملى الدُمَاني عليد البوسم) من خ كتاب على جورود إك ألماة بب على يراع مواني كتاب عم العرز بي كليل استغار كريس كريد

خبردار إخبردارا خبردارا

جس سے نروف میچ ادانہیں ہوتے اُس کے لئے تھوڑی دہر مُثْق كرلينا كافى نہيں بلكه لازم ب كه انہيں كيھنے كے لئے رات دن پوری کوشِش کرے اور اگر تھیج پڑھنے والے کے پیچھے نماز پڑھ سکتا ہے تو فرض ہے کہ اس کے پیچھے پڑھے یا وہ آئیتیں پڑھے جس کے ئر وف سيح ادا كرسكتا هو _اور بيردونو ل صورَ تيس ناممكِن هول تو زَملهُ ، کوشش میں اس کی اپنی نماز ہوجائے گی۔ آج کل کافی لوگ اس مَرض میں مبتلا ہیں کہ نہ انہیں قرآن صحیح پڑھنا آتا ہے نہ سکھنے کی کوشِش کرتے ہیں ۔ یا در کھئے!اس طرح نمازیں ہر باد ہوتی ہیں ۔ (مُنَخَص از بھار شریعت حصه ۳ ص ۱۱٦) جس نے رات دن کوشش کی مگر سیھنے میں نا کام رہا جیسے بعض لوگوں سے صحیح خروف ادا ہوتے ہی نہیں اس کے لئے لا زمی

غو مانِ مصطَفیے :(مل_{ان}نه قالمیدارز نم)جو مجھ پرورود پاک پڑھنا بھول گیادہ جنت کاراستہ بھول گیا۔

ے کہ رات دن سکھنے کی کوشِش کرےاور زمانۂ کوشِش میں وہ **معذور** ہے اِس کی اپنی نُماز ہو جائے گی مُرضیح پڑھنے والوں کی امامت ہر گزنہیں کرسکتا۔ ہاں جو گڑ وف اس کے اپنے غلَط ہیں ؤہی دوسروں کے بھی غلَط ہوں تو زمانئر کوشش میں أیسوں کی امامت کرسکتا ہے۔اورا گر کوشش بھی نہیں کرتا تو خود اِس کی نَماز ہی نہیں ہوتی تو دوسر ہے کی اِس کے پیچھے کیا ہوگی!

(ماحوذ از فتاوي رضويه ج٦ ص٤٥٢ رضا فاؤنديشن لاهور)

مَدْرَ سَةُ الْمِد بِنْهِ

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! آپ نے قر اُءَت کی اَھَے بیّت کا بخولی

اندازہ لگالیا ہوگا۔ واقِعی وہ مسلمان بڑا بدنصیب ہے جو دُرُست قرآن شریف يرُ هنانهيں سيكھتا۔ ٱلْحَمْدُلِلّٰه عود حلَّ بلنج قرآن دسنَّت كى عالمگيرغيرسِا ﷺ كِي `` وعوت اسلامی 'کے بِشُار دارِس بنام' مَدْدَسَهُ الْمد ينه'' قائم ہيں اِن مِس

فرمان مصطفى (ئائد قال ياد الدائر) جم نے مجھ پراكيك وُرُود ياك بِرْ حاالقد تعالى أس بردى وحتين مجيجا ہے۔

مَدَ نَى مُنُولِ اورمَدَ نَى مُنُولِ كُوقرانِ پاک دِفْظ و ناظِر ہ کی مفت تعلیم دیجاتی ہے۔ ۔نیز بالِغان کوعُمو ما بعد نَمازِ عِشاء کُروف کی صحیح ادائیگی کیساتھ ساتھ سنتوں کی

تربیّت دی جاتی ہے۔کاش!تعلیم قرآن کی گھر گھر دھوم پڑ جائے۔کاش! ہروہ م

اِسلامی بھائی جوشیح قر آن شریف پڑھنا جانتا ہے وہ دوسرے اسلامی بھائی کوسکھا نا م شروع کر دے۔اسلامی بہنیں بھی یہی کریں یعنی جودُ رُست پڑھنا جانتی ہیں شروع کر دے۔اسلامی بہنیں بھی یہی کریں یعنی جودُ رُست پڑھنا جانتی ہیں

وہ دوسری اسلامی بہنوں کو پڑھا کیں اور نہ جاننے والیاں ان سے سیکھیں۔ ...

ان شَنَاءُ اللّٰه عَرَّوَ حَلَّ بِيمرتو برطرف تعليم قرآن كى بہارآ جائے گی اور سکھنے سکھانے

والول كيليّ ان شاء الله عَزْوَجَلُ ثُوابِ كَا أَنْبَارلُكُ جائِكُ اللهِ عَزْوَجَلُ ثُوابِ كَا أَنْبَارلُكُ جائ كار

ریبی ہے آرزو تعلیم قُر آ ل عام ہوجائے

تلاوت شوق ہے کرنا ہمارا کام ہوجائے

(1) رُكُسوع : إِنَّا بُهُلَا كَهِ ہِاتُهِ بِرُحائِ تَوْتُكُونُنْ كُونِيْ جَائِ بِيرُكُوعَ كَا أُدنَى

ي پخ<mark>ف مان مصطف</mark>يا (سلي اندفعال خيره برينم) جم نے جمهير مهم رتبه دُرُ دو يا ک پڙ هاالعد تعاليٰ آس پر سورمتين ناز لفر ما تاہے۔ منابعہ
وَرَجِه ہے۔ (دُرِّم معتاد مز دُالمعتار ج٢ص ٢٦١) اور پوراسيك پيھسيدى جيادے۔

(حاشية الطحطاوي ص٢٢٩)

سلطانِ متكة مُكرَّمه ، تاجدارِ مدينة منوَّر ه صلى الله تعالى عليه واله وسلم كا

فرمانِ عظمت نشان ہے ،اللّٰدعزوجل بندہ کی اُس نَماز کی طرف نظرنہیں فرما تا جس

میں رُکوع وسُنجو دے درمیان پیچسیدھی نہ کرے۔ رخی الله تعالیمنہ

(مُسنَدِ امام احمد بن حَبُل ج٣ص١١٧ حديث ١٠٨٠٣ دارالفكربيروت)

(0) سُجُود : (١) سلطانِ مكهُ مكرَّ مه، تا جدارِ مدينهُ منوَّ روصنَى الله تعالى عليه واله

وسلّم کا فر مانِ عظمت نشان ہے ، مجھے ضکم ہوا کہ سات ہڈ یوں پر سَجد ہ کروں ، منداور الم مناور دونوں گھٹنے اور دونوں پنجے اور بیے شکم ہوا کہ کپڑے اور بال نہ اسمیوں ۔ رصحیہ مسلم ج اص ۹۳ ر) (۲) ہر دَ شخصَت میں دُوبارسَجد ہ فَرض ہے۔

(در منعنساد، ردالسمعتار ج ص ١٦٧) (٣) سَجد عين پَيشاني جَمناطَر وري ہے-

فر مان مصلف (ملي دن الله والدار مني) تم جبال بهي وجهي برؤرُ ود يوهوتم بارازُرُ ووجهوتك بانتجاب ـ

جمنے کے معنیٰ یہ ہیں کہ زمین کی بختی محسوں ہوا گر کسی نے اس طرح تحدہ کیا کہ بیشانی نه جمی تو سجده نه هوگا-(عـالـمگیری ج۱ ص۷۰) ٤) کسی نُرُم چیزمَثُلُا گھاس (جیسا که باغ کی ہریالی) رُوئی یا قالین (CARPET)وغیرہ پرسُجدہ کیا تو اگر بیشانی جم گئی لعنی اتن و بی کهاب د بانے سے نید بے تو سجدہ ہوجائے گاور نہیں۔ (تبیسن السحفائق ج۱ص۱۱) (۵) آج کلمساجد پی**س کارپیپ (C**ARPET) بچھانے کا زواج پڑ گیا ہے(ہلکہ بعض جگہتو کارپیٹ کے پنچے مزیدنوم بھی بچھادیتے ہیں) کار بَیٹ برسَجدہ کرتے وقت اِس بات کا خاص خیال رکھنا ہے کہ بیثانی اپتھی طرح جَم جائے ورنه نَمازنه ہوگی۔اورناک کی ہڈی ندنی تونماز مکرو قِح بی واجبُ الا عاده موكى - (مُلَخَ ص از بهار شريعت حصّه ٣ص٧١) (٢) كماني دار (يعني اسپرنگ دالے) گد سے بر بیشانی خوب ہیں جمتی للبذائمازنہ ہوگی۔(ایسا) يٍّ خو صلين مصطفيا : (سلي الدُرتان مايد؛ لد منهم)جم ن جمي وي مرتبع او دن مرتبط م ودو ياك يو حاأت قيامت كون ميري شفاعت ملح ك

کارییٹ کے نقصانات

کار پیٹ سے ایک تو سَجد ہے میں کُشواری ہوتی ہے، مزید سے معنوں
میں اِس کی صَفا کَی نہیں ہو پاتی کھڈا کُھول وغیرہ بَحْعُ ہوتی اور جَراثیم پرورش پاتے
ہیں ، سَجدہ میں سانس کے ذَرِ نَعِہ جَراثیم ،گرد وغیرہ اندر داخِل ہوجاتے
ہیں ،کار پیٹ کارُ وال پھیپھڑوں میں جاکر چیک جانے کی صورت میں مَعَا ذاللہ
عزو حل کینمرکا خَطرہ پیدا ہوتا ہے۔ بَسااوقات بَحِے کار پیٹ پرقے یا پیٹاب وغیرہ
کرڈالتے ، پلیاں گذگی کرتیں ، چُو ہے اور چھپکلیاں مینگنیاں کرتے ہیں۔ کار پیٹ
ناپاک ہوجانے کی صُورت میں عُمُو مَا پاک کرنے کی زخمت بھی نہیں کی جاتی ۔ کاش
اگار پیٹ بچھانے کارَ واح ہی خُتُم ہوجائے۔

نایاك كارپیٹ پاك كرنے كا طريقه

كاربييك كاناياك حقد ايك بار دهوكر لاكاديجي يهال تك كدميكنا

فوجانِ مصطفعاً (سل الدين ل هذال بينم) جمه يرؤزوو پاك كي مثرت كروبي شك بيتمهار ك كي طبهارت ب

موقوف ہوجائے بھر دو آبارہ دھوکر لٹکا ہے جی کی ٹیکنا بند ہوجائے بھر تیسری بار
ای طرح دھوکر لٹکا دیجئے جب ٹیکنا بند ہوجائے گاتو پاک ہوجائے گا۔ پیٹائی ، جُوتا
اورمِٹی کا وہ برتن وغیرہ جس میں پانی جَذَب ہوجا تا ہو اِی طرح پاک ہے ہے۔ اگر
نا پاک کار پیٹ یا کیٹر اوغیرہ ہیتے پانی میں (مُثَلُ دریا بنَمَر میں یا ٹونٹی کے نیچے) اتن دیر
تک رکھ چھوڑیں کہ ظَنِ غالِب ہوجائے کہ پانی نُجاست کو بہا کر لے گیا ہے بھی
پاک ہوجائے گا۔ کار پیٹ پر بچھ پیشا ب کردے تو اُس جگہ پر پانی کے چھینے مار
دینے سے وہ پاک نہیں ہوتا۔ یا در ہے! ایک دن کے بیچے یا بچی کا بیشاب بھی
نا ماک ہوتا ہے۔

(تفصيلىمعلومات كيلئے بہارشر بعت حقيہ ٢ كامطالُه فرما ليجئے _)

(**٦) قَدَّهُ أَخِيرِهِ: لِعِنى نَمَا زَكَ رَّلَعَنَيْن لِورِى كَرِنْ كَ عَلِيداتَى دِيرَتَك** بيٹھنا كه پورى تَشَهُّد (لِعِن پورى التَّحِيّات) رَسُو كُهُ تَك پڑھ لى جائے فُرْض ہے(عللہ گیری جامر ۷۰) تُحارِرَ كُعَت والے فُرْض مِن چوتھى رَكَعَت (رَكَ عَت) فوصان مصطفیٰ : (ملی امندق لی بایدار دستم) می نے کتاب می جمد و دوو ا کسکھا توجب تک میرانام اس کتاب می کھوند ہے گافر شندال کیلے استفاد کرتے وہیں گے۔

کے بعد قَعدہ نہ کیا تو جب تک یا نجویں کا سجدہ نہ کیا ہو بیٹے جائے اورا آگر پانچویں کا سجدہ کرلیا یا تجر میں دوسری برنہیں بیٹے تیسری کا سجدہ کرلیا یا مغرب میں تیسری کا سجدہ کرلیا یا مغرب میں تیسری کا سجدہ کرلیا ان سب صور توں میں فرض باطِل ہو گئے۔ مغرب کے علاوہ اور نَمازوں میں ایک رَکعت مزید ملا لے۔ (عبد المستعلی ص ۲۸۶) کے علاوہ اور نَمازوں میں ایک رَکعت مزید ملا لے۔ (عبد المستعلی ص ۲۸۶) کوئی ایسا فِنگل قضد اُ (یعنی اِرادتا) کرنا جو نَمازسے بائر کردے۔ مرسلام کے علاوہ کوئی ایسا فِنگل قضداً پایا گیا تو نَماز واجب اُلا عادہ ہوگی۔ اور اگر پلا قصد کوئی اِس طرح کافعل یا یا گیا تو نَماز باطِل۔ (عبد المستعلی ص ۲۸۱)

"قیامت میں سب سے پہلے نماز کا سُوال ہوگا" کے نیں حُروف کی نبت سے تقریباً 30 واجبات

(١) تكبير تُحرِيمه مين لفظ 'اكلُّه أكبَس '' كهنا (٢) فَرضون كي تيسري اور

و فعد صاف مصطفع المعلى الله الدول على المراسلم) جمد بركثرت سه ذوو و ياك برموب شك تمهادا مجمد برد دُوو ياك برمانه بالدين كليم مغفرت سر

چۇتى زُكْعَت (زَكْ _عَت) كےعلاوہ باقى تمام نَما زوں كى ہرزَ گئت ميں البحمد شریف پڑھنا'سُورت ملانایا قرآنِ یاک کی ایک بڑی آیت جوجھوٹی تین آیتوں کے برابر ہویا تین چھوٹی آیتیں بڑھنا (٣)المحمد شریف کاسورت سے پہلے یر هنا(٤)المحکمد شریف اور سورت کے درمیان 'امین ''اور' بسُم اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" كےعلاوہ كچھاورنہ بڑھنا (۵)قِر اءَت كِفُوراُ بعدرُ كوع كرنا (۲) ایک سُجد ہے کے بعد بالتَّر تِیبِ دوسراسجدہ کرنا(۷) تُعَدِیلِ اَرکان لِعِنی رُكُوعٍ بَحُوُ دِ، تُومِه اورَ جَلْسه مِينِ كم ازكم ايك بار ' سُبْ خِينَ اللَّه' "كَيْنِي كَي مقدارُهُ همِرِنا (۸) قُو مه یعنی رُکوع ہے سیدھا کھڑ اہونا (بعض لوگ کمرسیدھی نہیں کرتے اس طرح ان کا داجب حُیُون جاتا ہے)(۹) جَلْسہ یعنی ڈوسَجد وں کے دَرمیان سیدھا بیٹھنا درہیے (بعض لوگ جلد بازی کی وجہ سے برابرسید ھے بیٹھنے سے پہلے ہی جبحدے میں چلے جاتے ہیں اس طرح ان کا واجب کَرک ہو جاتا ہے جا ہے کتنی ہی جلدی ہوسیدھا بیٹھنا لازمی ہے ور نہمَا ز

ن المعلق الم المعلق ال

مکروہ تُحری واجبُ الاعادہ ہوگی) (۱۰) تعدہُ اُولی واجب ہےاگر چہ نَما زِنْفُل ہو (دراصل د رُفُل کا ہر قُعدہ '' تعدہُ اُخیرہ'' ہےاور فَرض ہےاگر قُعدہ نہ کیا اور بھول کر کھڑا ہو گیا تو جب تک اس . زگفت کامحدہ نیکر لےلوٹ آئے اور محدہ سنہوکرے۔'') (بیارٹر بیت صنہ با صاحبہ ہند شد نند برلی ثریف ب اگرنفل کی تیسری رَکْعت کاسَجِد ہ کرلیا تو خیار پوری کر کے سَجِد ہُ سَہُؤ کرے۔سَجِد ہُ سَہُوْ اس لئے واجب ہوا کہا گرچہ نفل میں ہر دُورَ کئت کے بعد قَعد ہ فَرض ہے مگر ' تیسری پایانچویں (عدیٰ حدٰ الفِیاس) رَکعت کاسَجدہ کرنے کے بعد قَعدہُ اُولیٰ فَرْض كى بچائے وابدب ہوگيا۔ (مُلحصاً طحاوى ص ٤٦٦) (١١) فَرْضُ وَرُ اورسنّت مُو تَكده میں تَشَهُد (یعیٰ النَّحِیَات) کے بعد کچھنہ بڑھانا (۱۲) دونوں قَعدوں میں'' تَشَهُد مكمَّل يرهنا _ اگر ايك لفظ بهي مُجُهونا تو واجب ترك مو جائے گا اور سُجدهُ سَيَہُ و ابدب ہوگا (۱۳) فَرْضَ ، وِتُر اورسنتِ مُوَّكَّدہ كَ تَعدهَ أُولَى مِين تَشَهُّ ك بعدا كرب خَيالى مِنْ '. وَاللَّهُ وَحُلِّ عَلَى مُحَمَّلِ مِلْ اللَّهُ مَصَلَّ عَلَى سَيِّكِ مَا

فروان مصطفیا (مل اندهال بله اله منم) مجه برؤ أو دیاك كي كثرت كروب شك بيتمهار سلك طهارت ب

کہ لیا تو سجدہ مسکہ ہو واجب ہو گیا اور اگر جان بو جھ کر کہا تو نما زلوٹا نا واجب ہے

(در معنار ار دالسمعنار ج۲ ص۲۶۹) (۱۶) **رونو ل طرف سلام چھیر تے وقت لَفُظ** ب

''اَلسَّلامُ'' دُونوں باروادِب ہے۔اَلفُظ'' عَـلَیْکیم ''واجِب بیں بلکہ سفَّت ہے (۱۵)وِثر میں تکبیر قُنُوت کہنا(۱۲)وِثر میں دُعائے قُنُوت پڑھنا(۱۷)عِیدَ بیْن کی

. چه تکبیرین(۱۸) َعِیدَین میں دوسری رَ تُعَت کی تکبیرِ رُکوع اور اِس تکبیر کیلئے لَفْظِ^د'

أَكُـــُهُ أَكُبَــر ''ہوتا(۱۹)''جَرِّم ى مُمَاز''مَثَلُامغرِب وعشاء كى پہلى اور دوسرى

رَ کُعَت اور فَجْر 'جُمْعه 'عَِیدَ یَن'تَر اوِتِح اور رَمَصان شریف کے وِثر کی ہررَ کُعَت میں مع

امام کوجَمْر (یعنی اتن بکند آواز که کم از کم تین آدَمی سُن سکیں) سے قِر اءَ ت کرنا (۲۰)غَیرِ جُمْرِی نَماز (مُثَلُّاظُهر وعَصْر) میں آ جسته قرّ اءَت کرنا (۲۱) ہرفرض وواجب

کا اُس کی جگه ہونا (۲۲) رُکوع ہر رَ کُعَت میں ایک ہی بار کرنا (۲۳) سَجدہ ہر

رَ كُعَت مِين دُوہي باركرنا (٢٤) دوسرى رَ كُعَت سے پہلے قَعْد ہ نه كرنا (٢٥) جائج

ند خانی ملیه والدولم) جمل نے کتاب ہی ججہ برودوو یا کساتھا تا جب تک برواہ م اس کتاب شریا تھا دیے کا لڑھتے اس کیلیے استفار کرتے رہیں گے

، رَکعَت والی نَماز میں تیسری رَ گعَت پرقَعد ہ نہ کرنا (۲۲) آیت سَجِد ہ پڑھی ہو توسَّجِد هُ تِلا وت كرنا (٢٧) سُجِد هُ مِندَ بِي وَاجِب مُوامِوتُوسَجِد هُمِيدَ بِي وَكِرنا (٢٨) دو فَرْض یا دٚوواجب یافَرْض وواجب کے دَررمیان نین شبیج کی قَدَر(یعنی تین ہار''سُٹ خیز الله "كيني مقدار) وتفهرنه جونا (٢٩) امام جب قر اءَت كرے خواه بُلند آواز سے ہویا آہستہ آ واز سے مُقتدی کا کیپ رُہنا (۳۰) قِراءَت کےسواتمام واجبات میں امام کی پیر وی کرنا۔

نَهاز كي تقريباً 96 سُنَّتب تكبيرتح يمهك ستنيل

(۱) تکبیرتُحُ بْمِه کیلئے ہاتھ اُٹھانا (۲) ہاتھوں کی اُنگلیاں اپنے حال پر

(درمختار، ودالمحتار ۳۲ ص ۱۸۱، عالمگیری ج۱ ص ۷۱)

(Normal) چھوڑ نا، یعنی نہ بالکل ملا ہے نہ ان میں تناؤ پیدا کیجئے (۳) ہتھیلیوں

اوراُ نَظَيول كاپَيك قِبله رُومونا(٤) تكبير كے وقت سرنه جُھكانا(۵) تكبيرشروع

﴾ ﴾ هن جان مصطفيا (مليندن ليدارية) جوجي زئي مزنزة زور في باحت بالفرقال أس كيك تيرا فاجراكه الواح الاحتار بالجناب

کرنے ہے پہلے ہی 'دونوں ہاتھ کا نوں تک اُٹھالینا (۲) تکبیرِ قُنُوت اور (۷)

تكبيرِ اتِعيدَ بن مين بهي يهي ستّنين بين (درمنار ودالمعنار ٢٠ ص ٢٠٨) (٨)

امام كابُندا واز الله اكبر (٩) سكوع الله المراه المكورة

(۱۰) سلام کہنا (حاجت ہے زیادہ بُلند آ واز کرنا مکروہ ہے) (ر دالسسحنسار ج۲ ص۲۰۸))

(۱۱) تکبیر کے فوراً بعد ہاتھ باندھ لیناسنت ہے (بعض لوگ تکبیر اُولٰ کے بعد ہاتھ لاکا

ویتے ہیں یا کہنیاں بیچھے کی طرف جُھلانے کے بعد ہاتھ ہاندھتے ہیں انکا پیغنل سئت ہے

مِثْ كرم) (در مختار ، ردالمحتار ٢٢٩)

قِیام کی سنّتیں

(۱۲) مُرْد ناف کے نیچ سید ہے ہاتھ کی تھیلی اُلٹے ہاتھ کی کلائی کے جوڑ پر، چُھنگلیا اور اَنگوٹھا کلائی کے اَغُل بَغُل اور باقی اُنگلیاں ہاتھ کی کلائی کی پُشْت پرر کھے (غیبة السسنسلسی ص۲۹۶)(۱۳) پہلے ثناء(۲۶) پھر تَعَوُّدُ (

ثُر وع میں سنت ہے۔

(عالمگیری ج ۱ ص ۷٤)

خدمان مصطفه (مليانة مل عداله ملم) مجديرة ووشريف يرمواندتم يردمت يميح كا

تَ-عُوْ وَذَ) لِعِنْ أَهُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِ بِالرَّحِبُيعِ بِرُ هَا (١٥) ير مَسْمِيه (أس-م-يه) يعنى بيسيم الله الرحمين الرّحية يرهنا (۱۶)ان تینوں کوایک دوسرے کے فوراً بعد کہنا (۱۷) ان سب کو آہستہ پڑ ھنا باد، ردانسه حسار ج۲ ص۲۱) (۱۸) امین کبنا (۱۹) اس کوبھی آ بوسته کبنا (۲۰) تکبیر اُولیٰ کےفوراً بعد مُناء پڑھنا(ایفا) (نَماز میں تَعَوُّذ و تَسُمِیَه قِر اء ت كة ابع بين ادر مُقتدى يرقر اءَت نبين لهذا تَعَوُّذُ و تَسُمِيَه بهي مُقتدى کیلئے سقت نہیں۔ ہاں جس مقتدی کی کوئی رَکعَت فوت ہو گئی ہو وہ اپنی باقی رَ كُعَت اداكرتے وقت ان دونوں كوير هے (الهداية معه فتح القدير ج ١ ص ٢٥٣) (۲۱) تَعَوُّ ذَمِر ف بِبلَ رَكْعَت مِين باور (۲۲) تَسْمِيسَه بررَكْعَت ك

هند (منی الله تا دار الله تر) دب تم مُرسلين (عبه نوام) يردُ دود ياك پرهوتو جي يرهي پرهوب شك شن تمام جهانون كرب كارمول بول -

رگوع کی سُنتیں دکوع کی سُنتیں

(٢٣) رُكُوع كيليخ اللَّهُ اكبركم الهداية معه فنح القدير ج ١ص٢٥٧) (٢٤)

رُکوع میں تین بار ' میٹیٹن دَفِی الْعَظِینہ کہنا (۲۰)مَرْ دکا گھٹنو ل کو ہاتھ سے پکڑنا

اور(۲۷)اُ نُگلیاں نُو بُ گھلی رکھنا (۲۷) رُکُوع میں ٹانگیں سیدھی رکھنا (بعض لوگ

کمان کی طرح نیزهی کر لیتے ہیں بی مکروہ ہے)(عالمہ گیری - ۱ ص ۷۶) **(۲۸) زُکوع میں بیٹی**ھ

اچھی طرح بچھی ہوختؓ کہاگر یانی کا پیالہ بیٹھ پررکھ دیا جائے تو ٹھمَر جائے

- (مراقبي الفلاح معه حاشبة الطحطاوي ص٢٦٦) **(٢٩) رُكُوع مين مَر أُونيجا نيجا نه بو**

بیٹیر کی سیدھ میں ہو۔'' سر کار مدینہ مُنٹی اللہ تَعَالیٰ علیہ وَالدِوَسَلُم فر ماتے ہیں ،اس کی نَماز

نا كافى ب (يين كامِل نيس) جور كوع وتُحو دميس بيير سيدهي نبيل كرتا " (السس الكبرى - ٢

ص ١٢٦ دارال يحتب السعيلمية بيروت) سمر كاير مدينة صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عليه وَالهوَمنَّم فرمات ع مين ع

'' رُکوع وُنُو دکو پورا کر و کہ خداء زوجل کی تتم! میں شمصیں اپنے پیچھے سے دیکھیا ہول'' د

ند و الله و مصطفعاً (ملى الله تعالى عليه و الديمة منه المراوز جمعه ذر أو واثر رفيف برا حصاً الثن قبيا مت كه ون أس كى شقاعت كرون كا_

مسلم شریف ج ۱ ص ۱۸۰) (۳۰) بهتر بیه به کدالله اکبرکهتا هوارگوع کوجائے بعنی جب رکوع کی بیا میلیے بھکنا شروع کرے اور ختم رُکوع پر تبکیر ختم کرے (عداللہ گیری ج ۱ ص ۲۹) ایس مسافقت کو پورا کرنے کیلئے اللہ کی لام کو بڑھائے اکبر کی ب وغیرہ مسافقت کو پورا کرنے کیلئے اللہ کی لام کو بڑھائے اکبر کی ب وغیرہ کسی خرف کو نہ بڑھائے (بھارِ شریعت حصّہ ۳ ص ۷۷ مدینة المرشد بریلی شریف) اگر اللّٰهُ یا ایس کم یا اکمیار کہا تو نَما زفاسد ہوجائے گی۔

(دُرٍّ مختار ،ردالمحتار ج١ ص ٢٣٢)

قَومَه کی سُنتیں

(۳۱) زُلوع سے جب اُٹھیں تو ہاتھ لڑکا دیجے (۳۲) زُلوع سے اُٹھیں تو ہاتھ لڑکا دیجے (۳۲) رُلوع سے اُٹھے میں امام کیلئے سسّم بع اللّٰہ کے رُبّن اُلْکُ لِسے اِللّٰہ کَا رُبّن اُلْکُ اِلْکَ اَلْکُ مُل کہنا (۳۶) مُسْفَود (یِن بَهَا نَمَادَ بِرُحْدُ والے) کیلئے دونوں کہناست ہے رُبّن کُولک اُلک اُلک مُدل کہنے سے جی سفت ادا ہو کیلئے دونوں کہناست ہے رُبّن کُولک اُلک اُلگ مُدل کہنے سے جی سفت ادا ہو

. یا خور من مصطنعا (معلماند تعانی طبیدالدیشم) جس نے مجھ پر روز تخصد دوسو ہار دُرُود یا ک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گنامائدا ف ہوئی گے۔

سجدے کی ستتیں

(۳۷) سُجدے میں جانے کیلئے اور (۳۷) سُجدے سے اُٹھنے کیلئے اکسٹ اُکٹ اُکٹ کہ اُکٹ کہنا۔(العدایة مدخ القدین اص ۲۹۱) (۳۸) سُجدہ میں کم از کم تین بار مسبب کے من رکجے سے الاسٹ کمی کہنا (ایفا) (۳۹) سُجدے میں ہتھیلیاں زمین پررکھنا (۶۰) ہاتھوں کی اُنگلیاں ملی ہوئی قبلہ رُخ رکھنا (۶۱) سُجدے میں جا ئیں تو زمین پر پہلے گھٹنے پھر (۶۲) ہاتھ پھر (۶۲) ناک پھر (۶۲) ئیشانی رکھنا (ہ ٤)جب سَجدے سے اُٹھیں تو اسکا اُلٹ کرنا لینی (٤٦) پہلے پیثانی' پھر (٤٧)ناک' پھر (٤٨) ہاتھ، پھر (٤٩) گھٹنے اُٹھانا (٥٠) مَرِّ د

کیلئے سَجدہ میں سقت ریہ ہے کہ باز وکرؤٹوں سے اور (۱ ٥)رانیں پئیٹ سے جدا

مول (الهداية معه فتع القدير ج١ ص٢٦٦) (٥٢) كلا ئيال زيين يرنه بجيها يي بال

جب صَف میں ہول تو بازو کرو ٹول سے جداندر کھئے (ردالسند ارج ۲ ص ۲۰۷)

(۵۳) سَجد ه میں دونوں یا وَں کی دسوں اُنگلیوں کا پیٹ اِس طرح زمین پرلگا ہے

را الهداية معد فتح القدير ج ١ ص ٢٦٧)

جَلْسَه کی سنّتیں

(٤ ہ) دونوں سَجد وں کے نیج میں بیٹھنا اسے **جلسہ** کہتے ہیں (۵۵)

جَلْسہ میں سیدھا قدم کھڑا کر کے اُلٹا قدم بچھا کر اُس پر بیٹھنا (۵۲) سیدھے

بإؤل كى أنگليال قِبله رُخ كرنا (٧٥) دونول ہاتھ رانوں پرر كھنا۔

(تبيين الحقائق ج١ص١١١)

خدمان مصطنع (صلى الله من البيد البهام) جس كے پاس ميراؤ كر جواور وہ جمدي أرُ ووثر يف شريخ هيرة لوگوں ميں و انجوس آرين فخص ہے۔

دولمرى ركعت كيلي أمضنى سأتين

(۸۸) جب دونوں سجد ہے کرلیں تو دوسری رَ گفت کیلئے پنجوں کے

بل'(۵۹) گھٹنوں پر ہاتھ رکھ کر کھڑا ہوناستت ہے۔ ہاں کمزوری یا پاؤں میں

تکلیف وغیرہ مجبوری کی وجہ سے زمین پر ہاتھ رکھ کر کھڑے ہونے میں کڑج نہیں۔

(ردالمحتار ج٢ص٢٦)

َقَفُدہ کی سُتیں

(۲۰) مُرد کا دوسری رَ گئت کے سَجد دن سے فارغ ہوکر بایاں یاؤں

بچها کر (۲۱) دُونوں مُرِینُ اَس پر رکھ کر بیٹھنا اور (۲۲) سیدھا قدم کھڑا رکھنا

(٦٣) سيد هے ياؤل كى أنگليال قِبلدرُخ كرنا (الهداية معه فتح الفدير ج١ ص٥٧)

(۶۶) سیدها باته سیدهی ران پر اور (۶۰) اُلٹا باتھ اُلٹی ران پر رکھنا (۲۶)

اُنگلیاں! بنی حالت پریعنی (NORMAL) چھوڑ تا کہ نہ زیادہ گھلی ہوئیں نہ بالکل ملی

ه و من مصنعهٰ (سل الله تعالى مير البراد من البراد كر موااور أس في وُرُووشر يف نديرٌ ها أس في جفا كى _

ہوئیں (اینا) (۲۷) اُنگلیوں کے گنارے گھٹنوں کے پاس ہونا ، گھٹنے پکڑنا نہ حابئے (درمنت رمع ردالمحتارج ٢ص٥٦٠) (٦٨) **اَلتَّحِيّات مِين فَها وت** ير إشاره كرنا_إس كاطر يقه بيه ب كه چڤنگليا اور ياس والي كوبندكر ليجيّے ، أنگو شھے اور جَجُ والى كا حَلْقه باند صےَ اور (' لاّ ' ' بركلمه كى اُنگَلى اُٹھا ہےَ اس كو إدهراُ دهرمت ۶۰ س۲۶۱) (۲۹) دوسر سے قَعد ہ میں بھی اِسی طرح بیٹھتے جس طرح پہلے میں بیٹھے تھے اور مَشَهُد بھی بڑھے (۷۰)مَشَهُد کے بعددُ رُودشریف بڑھے الهدابة ـعـه فنح الـقـديـر ج١ ص٤ ٧٢) وُرُودِ ابراجيم يرُهنا أفضل ہے (بهـار شسريـعـنـ حصّه ٣ص٥٥) (٧١) نوافِل اورستتِ غير مُؤَكَّده كِ تعده أولَى مين بهي تَشَهُّد کے بعدو کُر ووشریف پڑھناسنت ہے (ردالسمندارج ۲ص۲۸،غنیة المستملی ص

٣٢٢) (٧٢) وُرُ ووشريف كے بعدوعا پڑھنا (درمعتار معه ردالمعتار ج٢ص٢٨)

مر مان مصطفها (سل الله تعانى ما دار به تم) جس کے پاس میرا ذکر ہوا اور اُس نے مجھ پرو رُ دو پاک ندیز مع تحقیق ووہد بخت ہوگیا۔

سلام پھيرنے كى سختيں

(۷۳) ان اَلفاظ کے ساتھ دوبارسلام پھیرنا :

الَسَّلَامُ عَلَيْكُمُ وَدَحُهَ بَهُ اللّه (٧٤) پِيلِسِدِ مَّ طرف پُر (٧٠)

اُلٹی طرف منہ پھیرنا (۷۶) امام کیلئے دونوں سلام بگند آ واز سے کہناست ہے۔

مگر دوسرا پہلے کی نسبت کم آ واز سے کہے (عبالسمگیسری جدص ۷۷) (۷۷) پہلی

بار کے سلام میں''سلام'' کہتے ہی امام نماز سے باہر ہوگیا اگرچہ عَلَیْمُ نہ کہا ہواں

وقت اگر کوئی شریکِ جماعت ہوتو اِ قتِداء صحیح نہ ہوئی ہاں اگر سلام کے بعد امام

في سجده سم السير المراس الم المراس ال

(۷۸) امام دا بے سلام میں خطاب سے اُن مُقتد یوں کی نتیت کرے جودائن

طرف ہیں اور ہائیں سے بائیں طرف والوں کی مگرعورَت کی نیت نہ کرے

۱ اگرچه شریکِ جماعت ہونیز دونو ل سلامول میں کراماً کارتبین اوراُن ملائکہ کی نتیت

خومدن مصطفه (ملى الفرقال عليه الديم) جمل في مجمع برايك بارؤ رودٍ ياك بإنه حاالله تعالى أس بروس ومتيس بهيجتاب-

كرے جن كوالله عزوجل نے جفاظت كيلئے مقرَّ ركيا اور نتيت بيس كوئى عَدَّرُمُعَتَّن نه

کرے (دُرِّ مسعنسار ج ۱ ص ۳۰۶) (۷۹) مُقتد ی بھی ہرطرف کے سلام میں اس

طرف والے مقتدیوں اور ان ملائکہ کی نِتیت کرے نیز جس طرف امام ہواس

طرف کے سلام میں امام کی بھی قیت کرے اور اگر امام اُسکے تحاف ی (یعنی ٹھیک

ہ ہے۔ سامنے کی سیدھ میں) ہوتو دونو ں سلاموں میں امام کی بھی نتیت کرے اور مُسنے فَسرِ د

مِرْف أن فِرِشتوں بى كى نتيت كرے (دُرِّ منعندار ج١ ص ٥٠٦) (٨٠) مُقتدى

کے تمام اِشِقالات (لینی رُکوع نجو دوغیرہ) امام کے ساتھ ہونا۔

سلام پھیرنے کے بعدی سنتیں

(۸۱) سلام کے بعدامام کیلئے سنت یہ ہے کددائیں یا بائیں طرف

زُخ کر لے، دائیں طرف افضل ہے اور مقتدیوں کی طرف زُخ کر کے بھی بیٹھ

سکتاہے جبکہ آخری صَف تک بھی کوئی اس کے سامنے (یعنی اس کے چبرے کی سیدھ میں)

فو هان مصطفع : (ملى النها لله المارة م) بسبة مرطين (مبر به مها) بدأو و باك به حقو بحد به مي موجوب شك عمل آم جها فول سك رسها را وو -

نَمَا زَنْهُ پِرُهِمَّا ہُورِ عَنِهُ المستعلى ص٣٣٠) (٨٢) مُنْفَرِ دَ بِغِيرِ رُحْ بِدِ لَے اگرو ہِيں دُعاما نَگَے تَوْ حَا مُزے۔ (عالمگیری ج ١ ص٧٧)

سُنّت بُهُدِيَّه كى سنّتيں

(۸۳) جِن فَرضول کے بعد سُنتیں ہیں ان میں بعدِ فرض کلام نہ کرنا

چاہئے اگر چ_وسنتیں ہوجا ^نیں گی مگر تواب کم ہوگا اور سنتوں میں تاخیر بھی مکر وہ ہے

اس طرح بوے بوے اور ادو و طا كف كى بھى اجازت نبيس عنية المستملى ص ٣٣١

ردالسسحتسار ج ٢ ص ٢٠٠) (فَرضول كے بعد) قبلِ سنت مختصر دعاء پر

قناعت چاہئے ورندسنتوں کا **تواب کم ہوجائےگا۔**(بھادِ شریعت حصّہ ۳ ص ۸ مدینة

السرشد بریلی شریف) (۸۵)ستن وفرض کے درمیان کلام کرنے سے اُصح (یعن

زرست رین) بیک ہے کہ سقت باطل نہیں ہوتی البقۃ نواب کم ہوجا تا ہے۔ _تیک حکم

ہراً س کام کا ہے جو مُنافی تُحرِ بمدہے (تنویسر الابصارمعه ردالمحتارج٢ص٥٥٥)

فد جان مصطفيط : (سل شقاني هداوية من)جس في مجمه برايك و روياك برط الشدقالي أس بروس ومتس بيجاب-

(٨٦) سنتيں وَ ہيں نہ پڑھئے بلكه دائيں بائيں' آگے پیچھے ہٹ كر پڑھئے يا گھر جا

كرادا كيجئ _ (عالمگيرى ج١ ص٧٧) (ستني پڙھ کيلئے گھرجانے كا دجے جوصل (يعني

فاصِلہ) ہوا اُس میں حرج نہیں ۔جگہ بدلنے یا گھر جانے کیلیے نمازی کے آگے سے گزرنا یا اُس کی

طرف اپناچېر ه کرنامگناه ہے اگر نگلنے کی جگد نه ملے تو وَ میں سَتَنیں پڑھ لیجئے)۔

سنتوركا ايك أهَمّ مُسَنَله

جواسلامی بھائی سقتِ قَبْلِیه یاسقتِ بَغْدِیه پڑھکر آمد ورفت اور بات

چیت میں لگ جاتے ہیں وہ سرکار اعلیٰ طر ت رض اللہ تعالیٰ عنہ کے اس فتو کی مبارّکہ سے درس عاصِل کریں پُنانچہ ایک راستِفتاء کے جواب میں ارشاد ہے،' سقتِ قَبْلِیَۃ میں اُولٰیٰ اوّل وقت ہے بشرطیکہ فَرْض وسقت کے درمیان کلام یا کوئی فعل منافی نئمازنہ کرے، اورسقتِ بَعْدِیّه میں مُسْتَحب فرضوں سے اِتِصال ہے گر میان پر آ کریڑ ھے تو فصل (یعیٰ فاصِل) میں حَرُج نہیں ،لیکن اجنبی افعال سے میر یہ کہ مکان پر آ کریڑ ھے تو فصل (یعیٰ فاصِل) میں حَرُج نہیں ،لیکن اجنبی افعال سے

فوصان مصطفها الما الشامل مدالية م)جس تجهيروس مرتبه وروياك روحا الله تعالى أس يرسومتين تازل فرماتا ب

فَصَل نه چاہئے بیفشل (فاصِلہ)ستَتِ قَبلیہ و بعدیہ دونوں کے ثواب کو ساقِط اور اُنہیں طریقۂ مَشنُونہ سے خارج کرتا ہے''۔

(فتاوي رضويه جديد ج ٥ ص ١٣٩ رضا فاؤنديشن مركز الاولياء لاهور)

(۱) اسلامی بہن کے لئے تکبیرِ تحر پمہاورتکبیرِ فُوت میں سنت بیہ کہ

کندهول تک ہاتھا تھائے (الهدابة معه نتح المفديسر جا ص٢٣٦) (٢)قيام ميں عورت اورخُنی (يعني بيجوا) اُلئے ہاتھ کی تقلیل سينے پر چھاتی کے پنچےر کھ کراُس کی بیٹ پر چھاتی کے پنچےر کھ کراُس کی بیٹ پر چھاتی کے پنچےر کھ کراُس کی بیٹ پر چھاتی ہے۔ پیٹ کیلئے رُکوع پیٹ پر سیدھی تقلیل کی بیٹ کیلئے رُکوع بیٹ کھٹنوں پر ہاتھ رکھنا اوراُنگلیاں کشا وہ نہ کرناسقت ہے (الهدایة معہ فنح الفدیر

77.

ج ١ ص ٢٠٨) (٤) رُكوع مين تھوڑ انجھكے لعني حِرْف إتنا كه ماتھ كھٹنوں تك پُنجُ

فوهان مصطفعا (ملى الدتال مايداليه ما) تم جهال بهي جوجي برؤرود برد موتمهاراؤرود جي تك بايتاب-

جائیں پیٹے سیدھی نہ کرے اور گھٹوں پرزور نہ دے فقط ہاتھ رکھ دے اور ہاتھوں
کی اُنگلیاں ملی ہوئی رکھے اور پاؤں جھکے ہوئے رکھے مُردوں کی طرح خوب
سید ھے نہ کردے (عالمہ گھری ج اص ۲۷) (۵) ہیمَٹ کر شجدہ کرے یعنی باز وکرو ٹول
سے (۲) پئیٹ رانوں سے (۷) رائیس پنڈ لیوں سے اور (۸) پنڈلیاں زمین
سے ملادے (۹) دوسری رَ گئت کے شجد ول سے فارغ ہوکر دونوں پاؤں سیدھی
جانب نکالدے اور (۱۰) اُلٹی سُرِین پر بیٹھے (الہدایة معد فتح الفدیر ج اص ۷۷)

''صَلَاقے یا رسولَ الله''کے ۱۶ کُروف کی نِسبت سے نَماز کے تقریباً ۱۸ مُستَمَبَّات

(۱) میت کے اُلفاظ زَبان سے کہدلینا(نسوبر اُلابُصار معه ردالمعتار ج۲ ص۱۱۳) جبکه دل میں نتیت حاضر ہوور نہ تو نماز ہوگی ہی نہیں (۲) قِیام میں دونوں مِنْجوں کے درمیان چاراُ نگل کا فاصِلہ ہونا(عالم مگیری ج۱ص۷۲) (۳) قِیام کی فرصان مصطفى : (سلى الفرتماني مليدوالدرنم) جم في يروس مرتبيع اوروس مرتبيرا مرورد پاك يز حاأب قيامت كرون مرى شفاعت في ا

عالت میں سَجِد ہ کی جگہٰ(٤) رُکوع میں دونوں قدموں کی پُشت پرُ (۵)سَجِد ہ میں ناک کی طرف'(۲) قَعدہ میں گود کی طرف'(۷) پہلے سلام میں سیدھے کندھے کی طرف اور (۸) دوسرے سلام میں الٹے کندھے کی طرف نظر کرنا (ئندویر الابصار بعه ر دالسعتار ج۲ ص۲۲) **(۹) مُنْفَرِ دکورُ کوع اورسَجِد وں میں تین بار سے زیادہ (** مگر طاق عدد مُثَلًا يانج سات نو الشبيح كهنا (ردالسمعتاريج ٢ ص٢٤٦) (١٠) ' وَلَيه ' وغيره مين حضرت ِسیّدُ ناعبداللّٰہ بن مبارَک رض الله تعالیٰ عنہ وغیرہ ہے ہے کہ امام کیلئے تسبیحات یا نج بارکہنامُستَکِ ہے۔(۱۱) جس کو کھانسی آئے اس کیلئےمُسٹُک ہے کہ جب تكميكن موندكها نسے (مرافى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٧٧٧) (١٢) بَمَا بَي آئے تومُنہ بند کئے رَبِعُ اور نہ رُکے تو ہونٹ دانت کے پنیچے دیاہیے ۔ اگر اِس طرح بھی نہ رُکے توقیام میں سیدھے ہاتھ کی پُشت سے اورغیر قیام میں اُلٹے ہاتھ کی پُشت سے مُنہ ڈھانپ لیجئے۔جَماہی روکنے کا بہترین طریقہ بیہ ہے کہ دل فو مان مصطّفنا : (مل مندته ال عليه الدائم) مجمد برؤ رُود پاک کی کثرت کرو بے شک ريتمهارے كے طہارت ہے۔

ميں خيال سيجيئے كەسركار مدينە صلَّى الله تَعَالىٰ عليه وَ الدوَسَلَم اور ديگر انبياء عليهم السلام كو جَما ہى

مجهى نهيس آتى تقى - ان شاءَ الله عَزَّوْ جَلَّ فوراً زُك جائے گى (مُنَعُما درمعتارو

ردالمحتارج ٢ ص ٢١٥) جب مُكبِّر حَى عَلَى الْفَلَاحِ لا

کے توامام ومقتدی سب کا کھراہ وجا ٹا(عدائے مگیری جا ص۷ہ مکنیۂ حقانیہ) (۱۶)

سَجِد ٥ زمين بريل حاكل مونال (مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص ٣٧١)

ر مرين المرين العربية المعربين عبد العربيز كاعمل

حُبِيَّةُ الْاسلام حفرت سِيدُ نااماً محمد غزالى عليه رحمة الله الوالْ قل فرمات

بين، ' حضرت ِسيِّدُ نامُمر بن عبدُ الْعزيز رضى الله تعالى عنه بميشه زمين بي يرسَجد وكرت

لین سُجد ہے کی جگہ مُصلّیٰ وغیرہ نہ بچھاتے''۔ (احیاء العُلُوم ج١ص٢٠٤ بروت)

گردآ لود پیشا نی کی فضیلت

حضرت سبِّدُ نا واثِله بن اسُقَع رض الله تعالى عندسے روايت ہے كه مُضُور

فو جان مصحّفيٰ (سن اندنمال مايدان منم) جم نے تزاب مي جم يورده يا ك العماق جب تك ميرانام أس كراب عمد الكوار شخراس كيل استغاد كرتے ديں گے

سرا پانور، شاوغيورسلى الله تعالى عليه واله وسلم كا فر مان يُرسُر ور هے، " تم ميں سے كوئى شخص جب تک نُمازے فارغ نہ ہوجائے اپنی پیثانی (کمٹی) کوصاف نہ کرے کیونکہ جب تک اُسکی بییثانی برنماز کے سُجدے کا نشان رُہتاہے فِرِ شتے اُس کے لیے دُعائے مغفِرت کرتے رَبّے ہیں۔

(مجمعُ الزوائد ج٢ص ٣١١حديث ٢٧٦١دارالفكر بيروت)

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! دَوران نَماز پیشانی ہے مِثَی چُھوانا بہتر نہیں اور مَعَاذَ الله عَزُوَ حَلْ مَكَبُّو كَطُور ير چھڑ انا گناہ ہے۔ اورا گرنہ چیڑانے سے تکلیف ہوتی ہویا خیال بٹتا ہوتو چیٹرانے میں حرج نہیں۔ اگر کسی کوریا کاری کا خوف ہوتو اسے جاہئے کہ نَماز کے بعد پیشانی ہے مِنْیُ صاف کرلے۔ و مان مصطفى (سلى الدت الى مادور منم) يحد ركرت الدوياك رحوب تك تهادا جيدي وزودياك برهماتهادك اول كيليمنظرت ب

'' بھائیونماز کے مُفسدات سیکھنا فرض ہے' کے اُنتیس کروف کی نسبت سے نَماز توڑنے والی 29 باتیں

(۱) بات کرنا(دُرِّم بحت ارمعه رداله جتارج۲ ص ٤٤٥) (۲) کمی کوسلام کرنا۔

(٣) سلام كا جوأب و ينا(مرافى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٣٢٢) (٤) جِعينك كا

جواب دینا (مُهازیس خودکو چھینک آئے قو خاموش رہے) اگر اَلْے مُدُ لِلّٰه کہدلیا تب بھی

تَرَجِ نبیں اور اگر اُس وفتُ تَمَدُ نه کی تو فارغ ہو کر کیے۔(عللہ کیری ج ۱ ص ۹۸) (۵)

خوشخری کن کرجواباً اَلْحَمْدُ لِله کمنا (عالد کری جام ۱۹) (۲) بُری خبر (یاکی ک موت

ىنى من إِنَّا يِلْهِ وَ إِنَّا اللَّهِ وَ الْحِيْلُ اللَّهِ وَالْحِيْدُونَ كَهَا (اَيَا) (٧)

ازان کاجواب دینا (عسانسه کیری جاص۱۰۰)(۸) الله مرد جمل کا نام من کرجوایا

" جَلَّ جَلَالُةً " كَهِنَا (غنية المستملى ص ٤٢٠) (٩) سركا يرمد بين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عليدة اله

وَسَلَّم كَ اسْمِ كَرامى من كر جوابا وُرُود شريف برُه هنا مَثَلًا صَلَّى الله وَكَالَى عليه وَاله وَسلَّم كهنا (

. في خوصان مصطفع (ملى د مالى مارسلم) جومى بايك مرتبداً ووثريف بإمنا بالله تعالى أك كيلة ايك قيراط اج مُعتاد وايك قيراط مديها (جمتا ب

عالمه گیری ج ۱ ص ۹ ۹) (اگر جل جلاله یا صَلَّی الله تَعَالیٰ علیه وَالهِ وَسَلَّم جواب کی نتیت سے نہ کہا تو نَما زندٹو ٹی) م

نماز میں رونا

(۱۰) دَردیامُصیبت کی وجہ سے بیالفاظ' آ ہ'''اُوہ'''اُف''''مُف'' نکل گئے یا آ واز سے رونے میں کُرف پیدا ہو گئے نماز فاسد ہو گئی۔اگر رونے میں صِرُف آنسو نظے آ واز وگرُوف نہیں نظے تو کُرج نہیں۔(عالسگیری جا ص۱۰) اگر نماز میں امام کے پڑھنے کی آ واز پر رونے لگا اور''ارے''''نغم''''ہاں'' زَبان سے جاری ہوگیا تو کوئی کُرج نہیں کہ یہ کھُوع کے باعث ہے اوراگرامام کی خوش الحائی حسیب سے الفاظ کے تو نماز ٹوٹ گئی۔ (درمعتار'ردالمعتارج ص٥٠)

نماز میں کھانسنا

(۱۱) مریض کی زَبان ہے ہے اختیار آہ! اُوہ نکلائماز نہ ٹوٹی یوں ہی چھینک، جماہی، کھانسی، ڈ کاروغیرہ میں جتنے مُرُوف مجبوراً نکلتے ہیں مُعاف ہیں۔ ﴿

16

خوصان مصطفعا (مل دن الديارية) جوجي روروو باك يزهمنا مجول كياوه جنت كاراسته مجول كيا-

درمعنار جاس ٤١٦) (١٢) پھو نکنے میں اگر آواز نہ بیدا ہوتو وہ سانس کی مثل ہے اور نَماز فاسِد نہیں ہوتی گر قصَداً پھونکنا کر وہ ہے اور اگر دو کرف پیدا ہوں جیسے اُف، تُف تو نَماز فاسِد ہوگئ۔ (غنیہ ص ٤٢٧) (١٣) کھنکار نے میں جب دو کُر وف ظاہر ہوں جیسے اُنْ تو مُفسِد ہے۔ ہاں اگر عَدْ ریاضچے مقصد ہومَ اُلُ طبیعت کا تقاضا ہویا آ واز صاف کرنے کیلئے ہو یا امام کولقمہ دینا مقصود ہویا کوئی آ کے سے گزرر ہا ہواس کو مُتو چِہ کرنا ہو اِن وُ ہُو ہات کی بنا پر کھا نسنے میں کوئی مُضا اِیَقہ ہیں۔

(درمختار 'ردالمحتارج۲ص٥٥٥)

دّورانِ نَمَاز د مَكِيمُر برُهنا

(۱٤) مُصْحَف شریف سے پاکسی کا غذ سے یامحراب وغیرہ میں لکھا ہوا

و مکھ کر قرآن شریف پڑھنا (ہاں اگریاد پر پڑھ رہے ہیں اور مُفٹھن شریف یامحراب وغیرہ پر

مِرْف نظر ہے تو حُرَج نہیں ،اگر کسی کاغذ وغیرہ پر آیات کھی ہیں اسے دیکھااور سمجھامگر پڑھانہیں اس

فوصان مصطفى (سلى افد تالى لىد الدوم) كى بركارت و ياك برام بالك تهادا الله بود وياك برامناتها د يكا اول كيات مفرت - -

میں بھی کوئی مُضایَقَۃ نبیں) ردائہ حتارج ۲ ص ۶۶) (۱۵) اسلامی کتاب یا اسلامی مضمون

وّورانِ نَما ز جان بوجه کرد یکهنااوراراد تا سمجهنا مکروه ہے(عسائسگیسری ج1ص ۱۰۱)

وُنیوی مضمون ہوتو زیادہ کراہیت ہے ،للہٰ ائماز میں اپنے قریب کتابیں یاتحریر

والے پیک اور شاپنگ بیگ،موبائل فون یا گھڑی وغیرہ اس طرح رکھئے کہان .

کی لکھائی پرنظر نہ پڑے یاان پررومال وغیرہ اُڑھا دیجئے ، نیز دورانِ نَما زَسُتو ن وغیرہ پر لگے ہوئے اسٹیکرز' اِشتہاراورفریموں وغیرہ پرنظرڈ النے سے بھی بچئے۔

عَمَلِ كشير كي تعريف

(١٦)عملِ كثير مُما زكوفاسِد كرديتا ہے جبكہ نه نُما زكے اعمال سے ہونہ

ہی اِصلاحِ نَمَاز کیلئے کیا گیا ہو۔ جس کام کے کرنے والے کو دُورے دیکھنے سے ایبا لگے کہ بینماز میں نہیں ہے بلکہ اگر گمان بھی غالِب ہو کہ نَماز میں نہیں تب بھی عمل کثیر ہے ۔ اور اگر دُور ہے دیکھنے والے کوشک وشبہ ہے کہ نَماز میں ہے یا نَماز كاطريقه

عندا (سل الله تعالى بلارة البسلم) جو جمع بررو في جعد وُرُو وشر يف يرا جي كاش قبيا مت كون أس كي شفاعت كرول كا-

نېين توعمل قليل ساورنماز فاسدند بوگي - (درمعتارمعه ردالمعتارج ٢ص٤٦٤)

ووران نما زلباس يبننا

(۱۷) و وران نَماز كرية يا يا جامه بېننايا تېبند باندهنا (ردالسحسار ج۲

ص ٤٦٥) (٨٨) وَورانِ نَما رَسِثْرٌ كُھل جِانا اور اسی حالت میں کوئی رُکن ادا كرنا يا

س تين بارسُبُخرَ، الله كيني كي مقدارو قفر كررجانا (درمعناد معه ردالسحنارج ٢ ص٤٦٧)

نمازمين تجمرنكلنا

(۱۹)معمولی سابھی کھانا یا بینامَثُلُ تِل بِغیر چیائے نگل لیا۔ یا قطرہ

منه میں گرااورنگل لیا(غنیة السستعلی ص۱۹۸) (۲۰) نَمَا زَمُر وع کرنے سے پہلے

ہی کوئی چیز دانتوں میں موجود تھی اسے نگل لیا تو اگر وہ چنے کے برابریا اس سے

زیادہ تھی توئماز فاسد ہوگئ اورا گرینے سے کم تھی تو مکروہ۔ (سرانی الفلاح معہ حاشبہ

السطىحىطادى ص٣٤١) (٢١) نَمَا زَسِ قِبلِ كُونَى مِينْ فِي جِيزِ كُعَا لَيُ تَقِي ابِ اس كَأَجْزِ ا

فنرمان مصطفیا (سلی اختران بدواب منز) جمل نے مجھ پررو نی مجمد دوسوباروُ زُود یاک پڑھا آس کے دوسوسال کے گناومُعاف ہول گے۔

منہ میں باتی نہیں چڑ ف کعابِ دَبَن میں پچھاڑ رَہ گیا ہے اس کے نگفے سے نَماز فاسِد نہ ہوگی(کے لاصّة الفناوی ج ۱ ص ۱۲۷) منہ میں شکر وغیرہ ہو کہ گھل کر حُلق میں پہنچتی ہے نَماز فاسِد ہوگئی(ایبنا) (۲۳) دانتوں سے خون نکلاا گرتھوک غالِب میں پہنچتی ہے نَماز فاسِد نہ ہوگئی(ایبنا) (۲۳) دانتوں سے خون نکلاا گرتھوک غالِب مہت تو نگلنے سے فاسِد نہ ہوگئی ورنہ ہوجا ئیگی (عالم گیری ج ۱ ص ۲۰۱) (غلّبہ کی علامت یہ ہے کہ اگر حلّق میں مزہ محسوس ہوا تو نَماز فاسِد ہوگئی بَمَاز توڑ نے میں ذاکتے کا اِعتِبار ہے اوروضوٹو نے میں رنگ کا لہٰذاؤضوا ہی وقت ٹو ٹما ہے جب تھوک مُر خ ہوجائے اورا گرتھوک اوروضوٹو نے میں رنگ کا لہٰذاؤضوا ہی وقت ٹو ٹما ہے جب تھوک مُر خ ہوجائے اورا گرتھوک زُر دے تووضو باتی ہے)

دَوران نَماز قِبُله سے اِنْحِراف

(۲۶) بلاغڈ رسینے کوسمتِ کعبہ ہے 45 وَ رَجِہ یا اس سے زیادہ پھیر نا مُفسِدِ نَماز ہے، اگر عُدُّ رسے ہوتو مُفسِد نہیں ۔مَثَلُ حَدَث (یعنی وضولوٹ جانے) کا مُمان ہوااور مُنہ پھیر اہی تھا کہ مُمان کی غلکی ظاہر ہوئی تو اگر مسجد سے خارج نہ ۔ پیٹر مان مصطنع (اسل انسقان الدوار سفر) اس فض کی تاک فاک آلود موجس کے پاس میر اذکر مواوروہ مجھ پر ذرو باک ند پڑھے۔

(درمختار معه ردالمحتارج۲ ص٤٦٨)

بُواہونَماز فاسِد نہ ہوگی۔

نمَاز میں سانپ مارنا

٠ (٢٥) سانپ بڪٽو کو مارنے ہے نَمازنہيں ٹوفتی جبکہ نہ تین قدم چلنا

ر بڑے نہ تین ضَرب کی حاجت ہوور نہ فاسِد ہوجائے گی۔ (غنیة المستعلی ص٢٢٥)

سانپ کچھوکو مارنا اُس وقت مُباح ہے جبکہ سامنے سے گزرے اور ایذا دینے کا

خوف ہو،اگر تکلیف پہنچانے کا اندیشہ نہ ہوتو مارنا مکروہ ہے (عالمگیری ج۱ ص۱۰۳)

(۲۶) یے دریے تین بال اُ کھیڑے یا تین جُو کیس ماریس یا ایک ہی جُو ں کوتین بار

ارائماز جاتی رہی اوراگر پے در پے نہ ہوتو نَماز فاسِد نہ ہوئی مگر مکروہ ہے (اینا)

نماز میں کھیاتا

(۲۷) ایک رُکن میں تین ہار گھجانے سے نَماز فاسِد ہوجاتی ہے یعنی

یوں کہ گھجا کر ہاتھ ہٹالیا پھڑتھجا یا پھر ہٹالیا بید^د وبار ہواا گراب ای طرح تیسری بار

و فعد صابع مصطفها : (منل الشقال عدد البديقم) جم في يوس مرجمي اودي مرجبها مودو باك يز حاأت قيامت كدن يرى شفاعت لي ي

کیا تو نَما زجاتی رہے گی۔اگرایک بار ہاتھ رکھ کر چند بار کڑکت دی تو بیا ایک ہی مرتبہ کھجانا کہا جائیگا۔ (عالم گیری ج اص ۱۰۶ عنبة المستملی ص ۲۲)

اللّٰهُ اكبر كهنے میں غَلَطیاں

(۲۸) تکبیرات اِنتِقالات میں الملّٰهُ اکبو کے اَلِف کودراز کیا یعنی

الله یا اکبر کہایا''ب' کے بعد اَلف بر حایا یعن'' اکبار' کہا تو نَماز فاسِد ہوگئ

اوراگرتکبیرِتُح بید میں ایسا ہواتو مُمازشر وع بی نہوئی درمعندر معدردالمعندر ج۲

ص۷۷۷) اکثر مُسکّبِو (یعن جماعت میں امام کی تکبیرات پرزورے تکبیریں کہدکرآ واز پہنچانے

والے) پیفَلَطیاں زِیادہ کرتے ہیں اور یوں اپنی اور دوسروں کی نمازیں غارَت

كرتے ہيں۔للنداجوان أَحَكام كواچھى طرحِ نہ جانتا ہوائے مُكَبِّر تَهٰمِيں بنتا جاہئے۔

(٢٩) قِر اءً ت يا اُذ كارِنَماز ميں اليي غلطي جس ہے معنیٰ فاسِد ہوجا ئيں نَماز

فاسد ہوجاتی ہے۔ (دُرِّم حتار معه ردالمحتار ج٢ص٤٧)

﴾ فند من مصطفه (سل مذهالي عله او ملم) جس كے پاس مير اذكر جوا اور أس نے وُرُر ورشريف شەپڑ ھا أس نے جفاكى _

"پِكَا نَمازي بِلاشك جِنْتُ الْفِردوس كا حقدار هے"كے

بتیس حُروف کی نسبت سے نَماز کے 32 مَکْرُوهاتِ تَحْریمه

(۱) داڑھی بدن یالباس کے ساتھ کھیلٹا(عسالسسگیسری جاس ۲۰۰۶)

(۲) کپڑ اسَمَیْنا۔جبیبا کہ آج کل بعض لوگ سُجدے میں جاتے وقت یا جامہ

وغیرہ آ کے یا پیچھے سے اُٹھا لیتے ہیں (غنیة المستعلی ص٣٧٧) اگر كپڑا بدن سے

چپک جائے توایک ہاتھ سے چھڑانے میں ک^{رج نہی}ں۔

كندهول برجإ درائكانا

(٣)سَدَل يعني كبرُ النكانا ـ مَثَلُاسَر يا كنده يراس طرح سے جاوريا

۔ رومال وغیرہ ڈالنا کہ دونوں گنارے لٹکتے ہوں ہاں اگرایک گنارا دوسرے کندھے

بر الديا اور ومر النك ربا م تو حرج نبيل (در منتسار مسعبه ردالسمة سار ج٢

ص ٤٨٨) (٤) آج كل بعض لوگ ايك كندھے پر إس طرح رومال ركھتے ہيں كه

﴾ خد مان مصطف (ملی الله تعالی مار الله منه کار می کے پاس میراؤ کر ہوا اور اس نے مجھ پرور رُ دو پاک ندیز حافجین وہ بدبخت ہوگیا۔

اس کاایک بسر اپئیٹ پرلٹک رہاہوتا ہےاور دوسرا پیٹھ پر۔اِس طرح نَماز پڑھنا مکروہ تَحْرِی ہے(بہارِ شریعت حصّہ ۳ س ۱۹۰) (۵) دونوں آستینوں میں سےاگرایک آستین بھی آ دھی کلائی سے زیادہ چڑھی ہوئی ہوتو نماز مکروؤٹخریمی ہوگی۔

(دُرِّمختار معه ردالمحتار ج۲ ص ٤٩٠)

طُبمی حاجت کی شتت

(۲) بیثاب، پاخانه یارِح کی شدّت ہونا۔اگرنمازشُر وع کرنے

سے پہلے ہی ہدّ ت ہوتو وقت میں وُسُعت ہونے کی صُورت میں نَمَاز ثُمر وع کرنا ہی گناہ ہے۔ ہاں اگراییا ہے کہ فَر اغت اور وُضو کے بعد نَماز کا وقت خُتم ہوجائے گا تو نَماز پڑھ لیجئے۔اوراگر دَ ورانِ نَمازیہ حالت پیدا ہوئی تواگر وقت میں گنجائش ہوتو نَماز توڑ دینا واجب ہے اگراسی طرح پڑھ لی تو گنہگار ہونگے۔

(ردالمحتارج٢ص٢٩٤)

. نَماز کاطریقه

نَماز میں کنگریّاں هٹانا

(٧) وَورانِ مُما زَكنَكُرِيّا ل بِتانا مكرو وَتُحريمي ہے (غنية المستملى ص٣٥٨)

حضرت ِسپِّدُ نا جابِر رضی الله تعالی عنفر ماتے ہیں ، میں نے دّورانِ نَما زَکنگری مُجِهُونے

ہے معلق بارگاہِ رسالت میں سُوال کیا ،ارشاد ہوا،''ایک بار۔اورا گرنُو اِس سے

بچتوسیاه آنکھوالی سواُ ونٹنیول سے بہتر ہے۔'' (صحبح ابن نحزَیعة ، حدیث ۸۹۷،

ج ۲، ص ۵۲، الد کتب الاسلامی بیرون بال اگرس**دّت کے مطابِق سَجدہ ادانہ ہوسکتا ہوتو**

ایک بار ہٹانے کی اجازت ہے اور اگر بغیر ہٹائے واجب ادا نہ ہوتا ہوتو ہٹانا

واجب ہے جاہے ایک بارسے زیادہ کی حاجت پڑے۔

انگلیاں چَثْخاناً

(٨) نَمَا زُمِين أَنْكُليال بِنْخُاناً ل (درمعنار معه ردالمعنار ج٢ ص٩٢ ٤)

حساتم السمحقِّقين حضرت علَّا مدابنِ عابِدين

فوهان مصطفها (اسل الدَوَق عليدالورش) من يا كاب عل محري دود إك كعاق وب كله يراه مأن كاب عراكعاد بها أرشة الركية استفادكرت وي ك

شامی رحمة الله تعالیٰ علیه فرماتے ہیں ، ابن ماجبہ کی پروایت ہے کہ سر کار مدینہ سلی اللہ تعالیٰ عليه واله وسلم **نے فر مایا،'' نَمَا ز مِين اِین اُنگلیاں نہ پُنتُخایا کرو۔'' سن** سن ایس ماجہ ج ۱ م ص ٥١٤ حـديث ٩٦٥ دارالمعرفة بيروت منجتبي كي حوالي قن كيا، سلطان دوجهان، صُبَنْشاہِ کون ومکان، رُحمتِ عالَم میان سلّی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ دسلم نے'' انتظارِ مُماز کے دَوران أنگلياں پَھٹانے سے مُنْع فرمايا۔''مزيدايك رِوايت ميں ہے،''نُماز كيلئے جاتے ہوئے اُنگلیاں پُھٹانے سے مُنْع فرمایا۔'اِن احادیث مبارَ کہ ہے یہ تینٰ ۔ اُحکام ثابت ہوئے (الف) نَماز کے دَوران ادر تَوابع نَماز میں مَثْلُا نَماز کیلئے جاتے ہوئے ،نماز کا اِنتِظار کرتے ہوئے اُنگلیاں چٹخانا **مکرو ڈِٹر نمی** ہے (ب) ُ خادِجِ نَماز (یعیٰ تَوابِعِ نَماز میں بھی نہو) میں بغیر حاجت کے اُنگلیاں چٹخا ن**ا مکرو ہ** تنزيكي ہے (ج) خارج نماز ميں كى حاجت كے سبب مَثَلُا ٱلكَّيوں كوآرام و بینے کیلیے اُنگلیاں چنخا نامم اللہ (یعنی بلاکراہت جائز) ہے (در معتدار معہ ر دالمعتدار

ج٢ص٥٠ عطب مدسان (٩) تَشْرِيك لِعِن ابك باته كَ انْكليال دوسر عباته كَ انْكليول مِن وُالنار غنية المستعلى ص ٣٦٨ مركا يومد ينه الما الله تعالى عليه والهوسم في الكليول مِن وُالنار غنية المستعلى ص ٣٦٨ مركا يومد ينه الله الله تعالى عليه والهوسم فرمايا، "جوم عجد كه اراو عد في فك تو تَشْبِيك لِعِنى ابك باته كى انگليال دوسر عباته كى انگليول مين ندوالے بيشك وه ممّاز (حَمَّم) مين مهر وسند دوسر عباته كى انگليول مين ندوالے بيشك وه ممّاز (حَمَّم) مين مهر وسند است حد بن
(مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٢٤٦)

تمرير باتحدركمنا

(۱۰) کمریر ہاتھ رکھنا (ایہ صابع) نماز کے علاوہ بھی (بلاغڈر) کمریر (

لعنی دونوں پہلوؤں کے وَسُط میں) ہاتھ مہیں رکھنا چاہیے (در معنار معه ردالمعنار ج۲ ص٤٩٤) الله کے محبوب عزوجل وصلی الله تعالی علیه واله وسلم فرماتے ہیں، ' مکر پر ہاتھ فو مان مصطفيا : (ملى الفقد في مله والبرينم) جم ن مجمدي ايك أزودياك يرحا القدتعالي أس يرول ومتيس بهيجاب ـ

ر کھنا جہتم یوں کی رائعت ہے' (السنن السکبری ج۲ ص ٤٠٨ حدیث ٣٥٦٦ دار السکت العلمیة بیروت) لیمنی میر یہود یوں کا فیکل ہے کہ وہ جہتم میں ورنہ جہتم یوں کیلئے جہتم میں کیاراحت ہے! (عاشیہ بہارٹر بعت صفہ عص ۱۵ امکتہ اسلام یال بور)

آسمان کی طرف دیکھنا

(۱۱) نِكَاهِ آسان كَى طرفُ أَهُا ناداب سرائية ج آصر ٢٨) الله كَ محبوب

عزد جل وسلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ دسلم فرماتے ہیں ،'' کیا حال ہے اُن لوگوں کا جونماز میں
آسان کی طرف آئنھیں اُٹھاتے ہیں اِس سے بازر ہیں یا اُن کی آئنھیں اُ چک لی
جا کمیں گی۔ (صحبح بعاری ۲۳ ص۲۰) (۱۲) اِدھراُدھرمُنہ پُھیر کرد یکھنا، چاہے
بورا مُنہ پھر ایا تھوڑا۔ مُنہ پُھیرے پغیر حِرْف آئنھیں پھرا کر اِدھراُدھر ب
غیر ورت د یکھنا مکروہ تنزِ نہی ہے اور نادِراً کی غرض سیح کے تخت ہو تو کرج
نہیں (بہارٹر بعت، صنہ عص ۱۹۶) سرکا رِمد بینہ سلطانِ با قرینہ قرارِقلب وسینہ فیض

فد مان مصطفع : (ملى الله تعالى مايد والرسلم) جس نے بھے برايك و روياك بر معااللہ تعالى أس بروس رحتين بھيجا ہے۔

سخیینه ملی اللہ تعالیٰ علیہ والہ دسلم فر ماتے ہیں، 'جو بندہ نماز میں ہے اللہ عزوجل کی رُحمتِ خاصّہ اُس کی طرف مُتوجِه رُہتی ہے جب تک اِدھراُ دھرنہ دیکھے، جب اُس نے اپنا منہ پھیرااُس کی رُحمت بھی پھر جاتی ہے' ۔ راب و داؤد جا ص۲۳۶ حساست ۹۰۹ داراحیاء التراث العربی بیرون) (۱۳) کمرد کا سَجد ہے میں کلائیاں بچھانا۔

(درمختار معه ردالمحتارج ٢ص٢٩٤)

نمازی کی طرف دیکمنا

(۱۶) کسی شخص کے مند کے سامنے نماز پڑھنا۔دوسر مے شخص کو بھی نمازی کی طرف مُنہ کرنا ناجائز و گناہ ہے کوئی پہلے سے چِمر ہ کئے ہوئے ہواوراب کوئی اُس کے چِمر سے کی طرف رُخ کر کے نَماز شروع کرے تو نَماز شُر وع کرنے والا شخبہگار ہوااوراس نَمازی پرکراہت آئی ورنہ چِمرہ کرنے والے پرگناہ وکراہت ہے (درمعنار معہ ردالمعنارج ۲ ص ۶۹) جولوگ جماعت کا سلام پیمر جانے کے

خد مان مصطفى (ملى الد تعالى عليد الديمة م) حمل في مجمد يراكيك باردُ زودِ ياك يرم هاالله تعالى أس يردس ومتيس بعيجا ب

بعدایے مَین پیچھے نَمازیرٰ ھنے والے کی طُرُف چہر ہ کر کے اُس کود کیھتے ہیں یا پیچھے جانے کیلئے اُس کی طرف مُنہ کر کے کھڑے ہوجاتے ہیں کہ بیسلام پھیرے تو نکلوں ، پائما زی کے ٹھک سامنے کھڑ ہے ہوکر یا بیٹھ کراغلان کرتے ، دُرْس دیتے ، بیان کرتے ہیں بیسب تو بہ کریں (۱۵) نَماز میں ناک اور مُنہ ٹیجھیا نا(عــالـہگیری ج ۱ ص ۲۰۱) (۲۱) **بلاضَر ورت كه نكار (يعني بلغم وغيره) نكالنا (**غنية المستعلى ص ٣٣٩) (۷۷) **قَصْد أَبِمَهُ مَّى لِيمَا**(مرافعي اليفيلاح معه حاشية الطحطاوي ص۶۰۳) (ا**گرخود بخو و** آ ئے تو حَرَج نہیں گر رُو کنامتخب ہے) اللّٰہ کے محبوب عز وجل وصلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم فرماتے ہیں،'' جب نَماز میں کسی کو جَما ہی آئے تو جہاں تک ہوسکے روکے کہ پیطن منه میں داخِل ہوجا تا ہے۔' (صحیح مسلم ص۱۶) (۱۸) اُٹٹا قرآن مجید پڑھنا كرنًا (مرافى الفلاح مع حاشبة الطحطاوي ٣٤٥) مَثَلُ (و قُومَهُ اور و كَالْسَهُ عِيلَ يَعْمُ

خوصان مصطفى در مى اشتال دارات كاريت مرسلى (جبهادا) بروزودياك برمود بحديد بكي برموسية كما يس تام جانون كدب كارمول بول-

أركوع بالإواث

سیدھی ہونے سے پہلے تی کئجد ہے میں چلاجانا (عالمگیری ج۱ص۷۰۷) اِس گناہ میں مسلمانوں کی اچھی خاصی تعداد مُلَوَّ ث نظر آتی ہے، یاد رکھئے!جتنی بھی نمازیں اِس طرح پڑھی ہوں گی سب کا لوٹا نا واجب ہے(۲۰)''قِیام'' کے علاوہ اُ مسى اورموقع يرقر آن مجيد يره هنا (مسرافسي السفسلاح مسعمه حساشية السطسطساوي ص ۲۱) قر اءَت رُكُوع ميں پہنچ كرختم كرنا (ايضاً) (۲۲) امام سے يہلے مُقتدی کا رُکوع و مُحُود و غیرہ میں چلا جانا یا اِس سے پہلے سر اُٹھانا۔ ـــحنـــار ج٢ص١٢ه) حضرت ِسبِّدُ نالهام ما لِك رضىالله تعالى عنه حضرت ِسبِّدُ ناابو مُرِيرِه رضی الله تعالی عنه ہے روایت کرتنے ہیں کہ سر کا رصلی الله تعالیٰ علیہ والہ وسلم فر ما یا ، جو امام سے پہلے سرأ ٹھا تا اور جھ كا تا ہے أس كى پيشانى كے بال شيطان كے ہاتھ مين مين (مُؤطًا امام مالك حديث ٢١٢ ج١ ص ١٠٢ دارالمعرفة بيروت) حضرت سيّة تا

ا ہو ہُر برے دخی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے ، اللہ کے محبوب عز وجل وسلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلّم

هو صان مصطفيا : (ملى الله تعالى بليدال الرسلم) جمس في مجمي براكيك و روياك برحالفد تعالى أس بروس ومتس بهيجاب-

فرماتے ہیں،'' کیا جو شخص امام سے پہلے سَراُٹھا تا ہے اِس سے ڈرتانہیں کہ اللہ تعالیٰ اس کا سرگدھے کا سرکردے۔ (صحبح مسلم، ج۱، ص۱۸۱)

گدھے جیسا ہُنہ

معرت سید نااما م نو وی علی رقمهٔ الفرالقوی حدیث لینے کیلئے ایک بڑے مشہور شخص کے باس دِ مشق گئے۔ وہ پر دہ ڈال کر پڑھاتے ہے، مدتوں تک اُن کے باس بہت کچھ بڑھا مگر اُن کا مُنہ نہ دیکھا، جب زَ مانۂ دراز گُزرااور اُن کار خشہ صاحب نے دیکھا کہ اِن کو (یعنی امام نَووی) کو علم حدیث کی بَہُت خواؤس ہے توایک روز پر دہ ہٹا دیا! دیکھتے کیا ہیں کہ اُن کا گر معے جیسا ممنہ ہے!! اُنہوں نے فرمایا، صاحبزاوے! دورانِ جماعت امام پر سَبقت کرنے سے ڈرو کہ یہ حدیث ہوئی بین کہ اُن کا گر معے جیسا ممنہ ہے!! اُنہوں مدیث ہوئی بینی میں نے اے مُسْتَبُعَد (یعنی بعض راویوں کی عدَم مِحت کے باعث درور زیر جب مجھ کو بہتی میں نے اے مُسْتَبُعَد (یعنی بعض راویوں کی عدَم مِحت کے باعث اُن کی بینی بعض راویوں کی عدَم مِحت کے باعث درور زرق کہ ایس باعث ایا میں بینی بعض راویوں کی عدَم مِحت کے باعث درور زرقیاس) جانا اور میں نے امام پر قضد اُسْبَقت کی تو میر امُنہ ایسا ہوگیا جیسا

غوصانِ مصطفعة! (سل هذه الدائم) جس نے مجھروم مرتبدُ رُود پاک پڑھا الله تعالیٰ آس پر سومتیں تازل قرما تا ہے۔

تم د مکیرے ہو۔ (بهار شریعت حصه ۳ ص ۹ مدینةالمرشد بریلی شریف) (۲۳) دوسرا کپڑا ہونے کے باؤ بُو د حِرْ ف یاجامہ یا تُہبند میں نُماز یرْ ھنا (۲۶)کسی آنے والے شَناسا کی خاطِر (یعنی ٓ وَ بَھُت کیلئے)امام کائماز کو طُول دینا(عالمگیری ج ۱ ص ۱۰۷) اگراس کی نَماز پر اِعانت (مدد) کے لئے ایک دوسیج كى قَدُ رَطُولِ دِيا تُوتَرَ جِنْهِينِ (ايضاً) (٢٥) زمينِ مَغُصُوْبَه (يعني ايبي زمين جس برِ ناجائز بَضه کیاہو) یا (۲۲) یُرا یا کھیت جس میں زَ راعت موجود ہے (مرافی الفلاح معه حاشیة البط حطاوی ص۲۰۸، درمنعتار معه ر دالسعتار ۲۳ ص۲۰) یا (۲۷) مجتے ہوئے کھیت میں ﴿اَصْنَ مِیا (۲۸) قبر کے سامنے جبکہ قبراور نَمازی کے بچی میں کوئی چیز حائل نہ ہونَماز پڑھنا_{(عسال}مگیری جاس۷۰۰)(۲۹) گفّار کےعیاد**ت خانوں میں**نَمان یر صنا بلکہان میں جانا بھی ممنوع ہے (ردالمحتار ج۲ ص٥٥) (۳۰) گرتے وغیرہ کے بٹن گھلے ہونا جس سے سینہ گھلا رہے مکروہ ِتَح کی ہے

هو جان و مصطفعاً : (ملى الله من الله عليه والدسلم) تم جهال بھي بوجھ پرؤز ود پرهوتم باراؤز و جھوتک پنچتا ہے۔

ہاں اگر نیچے کوئی اور کپڑا ہے جس سے سینٹہیں گھلا تو مکروہ تنزیبی ہے۔

نَماز اور تصاویر

(۳۱) جاندار کی تصویر والالباس پہن کرنماز پڑھنا مکرو وتحریمی ہے نماز کے علاوہ

بھی ایسا کیڑ ایبنناجا ترنبیں (درِّمت ارمعه ردالمعتارج ۲ ص۲۰۰) نمازی

کے سر پر یعنی چھت پر یا سجدے کی جگہ پر یا آ گے یا دائیں یابائیں جاندار کی تصویر

آ ویزاں ہونا مکروہ تَح یمی ہےاور پیچھے ہونا بھی مکروہ ہے مگر گزَشتہ صُورُتوں سے کم۔

اگرتصورِفَرْش پر ہےاوراس پرسَجد ہٰہیں ہوتا تو کراہَت نہیں۔اگرتصورِغیر جاندار

کی ہے جیسے دریا پہاڑ وغیرہ تو اس میں کوئی مُصالَقة نہیں ۔ اِتنی جیموٹی تصویر ہو جسے

ز مین پرر کھ کر کھڑے ہو کر دیکھیں تو اُغضاء کی تفصیل نہ دکھائی دے (جیبا کے مُمُو ما

طواف کعبہ کے منظر کی تصویریں بُہُت چھوٹی ہوتی ہیں یہ تصاویر) نَما زکیلئے باعثِ کراہت

. فعر مان مصطفع : (ملى در الدر منر) جم ن جم يروس مرتب كالدروس مرتبراً مردود باك باطأ ساتي است كدن ميرى شفاعت مل ك

نہیں ہیں (غنبة المستملی ص ۴۶ مدرمعتار معه ردالمعتار ۲ ص ۲۰۰۰) ہال طواف کی بھیٹر میں ایک بھی چہر ہ واضح ہو گیا تو مُما نَعَت باقی رہے گی۔ چہر ہ کے علاوہ مُثلًا ہاتھ ، یا وَں ، بیٹھ ، چہر سے کا بچھلا صقعہ یا ایسا چہر ہ جس کی آنکھیں ، ٹاک ، ہونٹ وغیرہ سب اعضاء مِٹے ہوئے ہوں ایسی تصاویر میں کوئی کڑے نہیں۔

"یارب اتیری پسند کی نَماز پڑھنے کی سعادت ملے" کے تینتیں گروات تَرْزیہ

(۱) دوسرے کپڑے مُیسَّر ہونے کے باؤ بُو دکام کاج کے لباس میں نماز

پڑھنا۔ (غنبہ السنسلی ص٣٦٧) مندمیں کوئی چیز لئے ہوئے ہونا۔ اگراس کی وجہ سے قِرُ اعَت ہی نہ ہوسکے یا ایسے الفاظ تعلیں کہ جوقر آن پاک کے نہ ہول تو نَماز ہی فاسِد ہوجائے گی (در سعنسار ، ردائسسسندار) (۲) سُستی سے نظے سرنَماز پڑھنا (عالم سالہ کی ایمامہ شریف کر بڑا تو اُٹھالینا افضل ہے (عدائسہ کیسری جاص ۲۰۱) نَماز میں ٹویی یاعِمامہ شریف کر بڑا تو اُٹھالینا افضل ہے

فو جان مصطفیا : (سل اند تال ملیدالب منم) مجمد مرؤ أرود پاک كي كثرت كروب شك بيتمبار سال طهارت ب

جبکہ عمل کثیر کی حاجت نہ پڑے ورنہ نماز فاسد ہو جائے گی ۔اور بار ہاراٹھانا یڑے تو جھوڑ دیں اور نہاٹھانے سے کھئوع وکھئوع مقصود ہوتو نہاُٹھانا افضل ہے۔ (درمنحتارمعه ردالمه حتار ج۲ص ۹۹۱) اگر**کوئی ننگے بمرئما زیڑھ رہاہویا اُس کی ٹو بی** گر یڑی ہوتو اُس کو دوسراشخص ٹو لی نہ یہنائے (۳) رُکوع یاسَجد ہ میں بلا ضَر ورت تین مارے کم تبییح کہنا (اگر َو تَت تنگ ہویاٹرین چل پڑنے کےخوف ہے ہوتو حرج نہیں۔ اگرمقتدی تین تبیجات نہ کہنے مایا تھا کہ امام نے سراٹھالیا توامام کا ساتھ دے) (٤) نَمما ز میں بیشانی سے خاک یا گھاس چھڑ انا۔ ہاںا گران کی وجہ سے نماز میں دھیان بٹتا ہوتو چھوانے میں کرج نہیں (عسالہ محبری ج اص ۱۰۱) (۵)سُجد ہوغیرہ میں اُنگلیاں قِبلہ سے پ*نگیر و یٹا*(فتباوی قباضی عبان معه عالمیگیری ج۱ ص۱۱۹) (۲) مرو**کاسجدہ** میں ران کو پیٹ سے چیکا دینا (عسالے مجبری ج ۱ ص ۱۰) (۷) نماز میں ہاتھ یا سر کے اشارے سے سلام کا جواب وینا(درمنعت ارمعه ردالمعتار ج۲ ص٤٩٧) زَبان

فروان وصلفى : (ملى دفعان بايدة م) جمن أكاب عن مجديد وإلى تصافر جب يك برانام أكراب عمد المعار عام أكراب على المعار عن الميار المراكب

سے جواب وینامُفسدِ نَما ز ہے (مرافی البفلاح معه حاشیة الطحطاوی ص۲۲ قدیمی كتب حانه) (٨) نَماز مِين بلاعُدُّ رجارز انولعني چُوکڙي ماركر بيڻھنا (غنبه اله م ٣٣٩) انگرائي لينااور (١٠) إرادَتاً كھانسنا^{، گھن}كا رنادغنيـه الـمسنـم . ۴۶٪ اگر طبیعت حاہتی ہوتو تَرَج نہیں (۱۱) سَجدے میں جاتے ہوئے گھٹنے سے بیلے بلاغذ رہاتھ زمین پررکھنا (عبالہ گیری جلاص ۱۰۷) اُٹھتے وقت بلاغڈ ر باتھ سے بل گھٹنے زمین سے اُٹھانا (غنیہ السستعلی ص ۳۳۰) (۱۳) رُکوع میں *مر*کو بی<u>ٹ</u>ے سے اُونیجا نیجا کرنا (غنیہ المستعلی صه۳۲) (۱۶) نَماز میں ثَنَا 'تَعُوُّ وْ'تَسْمِیهُ اور ا مین زور سے کہنا(عــالـمگیری ج_{ال ۱۰۷}) ۔ **(۱۵) بغیر غذ رد بواروغیرہ برخیک** زگانا _(ایعنا)(۱۶) رُکوع میں گھٹنوں پراور (۱۷) سَجدوں میں زمین پر ہاتھ نہ رکھنا (۱۸) دائیں بائیں مجھومنا۔اورتَراؤح لیعنی بھی دائیں یاؤں پراوربھی بائیں یاؤں برزوردینا بیسلنت ہے (باز بعد صند عصر ۲۰۱) اور سُجد ے کیلئے جاتے ہوئے سیدھی

فرصان مصطفیا اسل اند قال علده الدينم) يحو ركت ، و دُود باك ياموب شكتم ادائي برد دُود باك ياماتمهار ، كنابول كيايم نفرت ب_

طرف زور دینااوراً تُصنے وقت اُلٹی طرف زور دینامُسخب ہے ۔ (ایپنا م ۱۰۱) (١٩) نَماز مِين آئکھيں بندرکھنا ۔ ہاں اگر ُحُثُوع آتا ہوتو آئکھيں بندرکھنا افضل ے (درمعتار 'ردالمعتار ج۲ص ٤٩٩) (٢٠) جلتی آگ کے سامنے نماز را هنا شُمُع مِائِرَاغ سامنے ہوتو کرج نہیں (عالمگیری ج1ص۸۰۸) (۲۱)الیی چیز کے سامنے نَما زیرُ هناجس سے دِهیان بیٹے مَثْلُا زِینت اورلَہُو ولَعِب وغیرہ (دلیستار ج۱ ص ٤٣٩)(٢٢) نَمَازُ كَيلِيَّ وَوِرْ نَا (٣٣) عام راسته (٢٤) گورْ اوْ النِّي جَلَّه (٢٥) َمَذُ بَحَ یعنی جہاں جانور ذَبْحَ کئے جاتے ہوں وہاں (۲۲) اِصْطَبْل یعنی گھوڑے باندھنے کی جگۂ (۲۷)غُسل خانۂ (۲۸)مُوَیثی خانہ حُصُوصاً جہاں آونٹ باند ھے جاتے ہوں'(۲۹)اِستِنجاخانہ کی حَمِیت اور (۳۰) صَحر امیں پلاسُتر ہ کے جبکہ آ گے سے لوگوں کے گزرنے کا إمكان ہو۔ان جگہوں يرنما زيڑھنا (عنبة الىسسىلى ص ۳۲۹) (۳۱) بغَير عُدُّ رِماتھ سے مکھی مجھر اُرُلٹا (فتداوی قیاضی حیان میہ عالمیکیری فوجان مصطفع (ملى الذى ل بياد بشم) بوجي باكيد موتبدة ووثريف بإحتاب الشاقال أس كيلخ اكيد قيرا طاج الكمتا اواكيد قيرا طاحد بهاذ جمتاب

۱۱۸ س ۱۱۸) (نماز میں بھوں یا تجھرایذاویتے ہوں تو پکڑ کر مارڈالنے میں کوئی حَرَج نہیں جبکہ عملِ کثیر سے نہ ہو۔ (بھارِ شریعت) (۳۲) ہروہ عملِ قکیل جوئمازی کیلئے مُفید ہوجا مُز ہے اور جومُفید نہ ہووہ مُکروہ (عالم گیری ج۱ ص ۱۰۹) (۳۳) اُلٹا کپڑا پہننا یا اَوڑھنا۔ (ناؤی رضویہ ۲۲۰،۲۰، ناوی اہلیک غیر مطبوع)

بإف آستين مين نماز پڙهنا کيها؟

آومی آسین والا گرتایاتی پہن کرنماز پڑھنا مکروؤ تنزیبی ہے جبکہ
اس کے پاس دوسرے کیڑے موجود ہوں۔حضرت صُدُرُ الشَّرِ نَعِمفتی محمد امجدعلی
اعظمی علیہ رحمۃ القوی فرماتے ہیں: ' جس کے پاس کیڑے موجود ہوں اور صِرَف نیم
آستین (یعنی آرھی آسین) یا بنیان پہن کرنماز پڑھتا ہے تو کراہت تنزیبی ہاور
کیڑے موجود نیں تو کراہت بھی نہیں' (فضاؤی استحدیہ حصہ اص ۱۹۲ مکتبۂ رصویہ
باب السدید کو بھی) مفتی اعظم پاکستان حضرت قبلہ مفتی وقا زُالدین قادِری رضوی علیہ دور کی ماری کرنماز بڑھا کے بات کام کائ کرنے علیہ دور القوی فرماتے ہیں ، ہاف آسین والا کرتا تجمیص یا شکرے کام کائ کرنے علیہ دور القوی فرماتے ہیں ، ہاف آسین والا کرتا تجمیص یا شکرے کام کائ کرنے

خو هان مصطفها (ملى ندخان بدياب نم) جو مجى پر در دوياك پر هنا بحول كيا ده جنت كارات بحول كيا

والےلباس میں شامِل ہیں (کہ کام کاج والالباس پہن کرانسان مُعَرِّ زین کے سامنے

جاتے ہوئے کتراتا ہے) اِس لئے جو ہاف آسٹین والا گرتا پہن کر دوسر بےلوگوں

کے سامنے جانا گوارانہیں کرتے ، ان کی نَماز مکروہِ تنزیمی ہے اور جولوگ ایسا

لباس پہن کرسب کے سامنے جانے میں کوئی مُرائی محسوں نہیں کرتے ،ان کی نماز

مروه الفتاوى ج٢ص٢٤٦)

ظُنْم کے آجری دوفل کے بھی کیا کہنے

ظُمْم کے بعد کچار آگئت پڑھنامستخب ہے کہ حدیثِ پاک میں فرمایا جس نے طُہْر سے پہلے چاراور بعد میں کچار پرمُحافظت کی اللہ تعالیٰ اُس پرآگ حرام فرمادےگا۔ (سنن نسانی حدیث ۱۸۱۷ میر ۲۲۰۷ درالعبل بدردن) علیّا مہسیّد طحطاوی علیہ رحمۃ القوی فرماتے ہیں کہ بسرے سے آگ میں داخِل ہی نہ ہوگا اور اُس کے گناہ

مِثادیئے جائیں گےاوراس پر (بندوں کی حق تُلَفیوں کے) جومُطالبَات ہیں اللّٰہ تعالیٰ

هر صلين مصطفية (سلى الذتنالى عدد الدائم) بحد يركش ت در دوياك برهوب شك تبهاد اليحد بردُرُ دوياك بره عناتمها دع كتابول كيليم منفرت ب-

إمامت كا بيا ن

مر دِغیرِ مُعذور کے امام کے لئے چیوٹٹرطیں ہیں:۔

(۱) صحيح العقيد همسلمان ببونا (۲) بالغ بهونا (۳) عاقِل ببونا (٤) مَرْ د بهونا

(۵) قراءَت سيح مونا (۲) معذورنه بونا (درمعتار مع ردالمعتار ج ۲ ص ۲۸۶)

ں مصطنعا (ملی الله تاب المبدار المرام) جو مجھ بررو نہ جسرور کر ووٹٹریق پڑھے گا میں قبیا مت کے دن آس کی شفاعت کروں گا۔

صلىاله تقال علموالموم وعلمهم الساري

'یا امامَ الْانْئِیا'' کے تیرہ کروف كانسيت سوا فتداء كا 13 شرائط

(۱) نتیت (۲) اِتبداءاور اِس نتیت اِتبداء کا تُحْر یمه کے ساتھ ہونا یا

تكبيرَ تَحْرِ يمه ہے يہلے ہونا بشرطيكہ پہلے ہونے كي صورت ميں كوئي أجنبي كام نتيت و

تحُرِّیمہ میں جُد ائی کرنے والا نہ ہو(۳)امام ومُقتدی دونوں کاایک مکان میں ہونا

(٤) دونوں کی نَمازا یک ہویاامام کی نَماز ،نَما زِمُقتدی کوایئے شِمْن میں لیے ہو(۵)

امام کی نَماز کا مذہب مُقتدی پر صحیح ہونا اور (۲) امام ومُقتدی دونوں کا اے صحیح

سمجھنا(۷)شُرائط کی موجودَ گی میںعورت کائحا ذی(برابر) نہ ہونا(۸)مُقتدی کا

امام سے مُقدَّم (بعن آگے) نہ ہونا (۹) امام کے انتِقالات کاعِلَم ہونا (۱۰) امام کا

مُقیم یامسافر ہونامعلوم ہو(۱۱) اَرکان کی ادائیگی میںشریک ہونا (۱۲)ارکان کی ادائیگی میں مُقتدی امام کے مِثْل ہویا کم (۱۳) یُونہی شرائط میں مُقتدی کا امام

الم المناه مصطفى (سلى الله تعالى عليه الدينم) جم في جمي إرد في تحمد ووسوبارة أردوياك برها أسك ووسوسال كالنام تعاقب مول ك-

(ردالمحتارج۲ ص۲۸۶ تا۲۸۵)

ے زاہد نہ ہونا۔

اقامت کے بعد امام صاحب اعلان کریں:

ا بنی ایر بیان ،گرونین اور کندھے ایک سیدھ میں کر کے صَف سیدھی کر

لیجئے۔ دوآ دمیوں کے بیج میں جگہ چھوڑ نا گناہ ہے، کندھے سے کندھامُس لیعنی کچ

کیا ہوا رکھنا واچب ، صَف سیدهی رکھنا واچب اور جب تک اگلی صَف کونے تک

پوری نه ہوجائے جان بوجھ کریچھے نَما زشروع کر دینا ترک واچب ،حرام اور گناہ

ہے۔15 سال سے جھوٹے نابالغ بچو ں کوصفوں میں کھڑاندر کھئے ،انہیں کونے

میں بھی نہ بھیجئے چھوٹے بچ ل کی صَف سب سے آبٹر میں بناہے۔

(تفصیلی معلومات کیلئے دیکھئے: فتاوی رضویہ ج ۷ ص ۲۱۹ تا ۲۲۰رضا فاؤنڈیشن لاہور)

جماعَت کا بیان

عاقِل ، بالغ ،آزاداور قادِر پرمسجِد کی جماعتِ اُولی وادِب ہے ہلاعذُر

مند میں مصطفیا (سلی اند شالی ۱۱ ، ابدہ تنم) اُس فضل کا تک خاک آلود ہوجس کے پاس میراؤ کر ہواور وہ جھے پر وُرُو و پاک نہ پڑ ہے۔

ایک باربھی جھوڑنے والا گنہگار اور مستحقِ سزاہے اور کئی بار ترک کرے تو فاسِق

مُردُّودُ الشَّبِادُة (یعن اُس کی گواہی قابلِ تَبَولُنہیں) اور اس کوسخْت سز ا دی جائے گی اگر

پر وسیول نے سکوت کیا (یعنی خاموثی اختیار کی) تو وہ بھی گنهگار ہوئے (در سے سارد

ردالسمعتار ج٢ ص٢٨٧) لِعض فَقَهائ ركرام رُحِمَهُمُ اللَّهُ تعالى فرمات بيل كه "جو

هخَصْ اذان من کر گھر میں اِ قامت کا انتِظار کرتا ہے تو وہ گنہگار ہو**گ**ااوراُس کی

شهاوت (بعنی گوایی قبول نہیں)'' مناوج ومنی الدی تعالی علیہ واله کا کیا۔

"یا دسول الله مدین بلالو" کیس مروف کی نسبت سے ترک جماعت کے 20 اعدار

(۱) مریض جے سجِد تک جانے میں مشقت ہو(۲) اُپاچی (۳) جس کا

پاؤں کٹ گیا ہو(٤)جس پر فالج گرا ہو(۵) اتنا بوڑھا کہ سجدتک جانے سے

عاجِز ہو(۱) اندھااگرچہ اندھے کے لئے کوئی ابیا ہوجو ہاتھ پکڑ کرمسجِد تک پہنچا

خد من مصطفیا (ملی دخته ال طیدالد سنم) جس کے پاس میراذ کر جوابرہ مجھ پر دُرُ دوشریف شریز ھے ولوگوں شی وہ کجوس ترین فض ہے۔

دے(۷) سخت بارِش اور (۸) شدید کیچڑ کا حائل ہونا (۹) سخت سردی (۱۰)

یخت اندهیرا(۱۱) آندهی (۱۲) مال یا کھانے کے ضائع ہونے کا اندیشہ (۱۳)

قَر ض خواہ کا خوف ہے اور بیرننگ دست ہے (۱۶) ظالم کا خوف (۱۵) پا خانہ

(١٦) پیشاب یا (۱۷) ریح کی حاجب شدید ہے (۱۸) کھانا حاضِر ہے اورنفُس کو

اس کی خواہش ہے (۱۹) قافِلہ چلے جانے کا اُندیشہ ہے (۲۰) مریض کی

تیار داری کہ جماعت کے لئے جانے سے اِس کو تکلیف ہوگی اور گھبرائے گا۔ بیہ

سبترك جماعت ك ليح علدُ ربيل - (درمعتارمع ردالمعتارج ٢ ص٢٩٦ تا٢٩٣)

کُفُر پر خاتمے کا خوٹ

إفطار پارٹیوں ، دعوتوں ، نیاز وں اور نعت خوانیوں وغیرہ کی وجہ سے

فرض نَمازوں کی مسجِد کی جماعتِ اُولی (یعنی پہلی جماعت) ترک کرنے کی ہرگز

فندمده مصطفیا (مل مذعن مدید ادبه نم) جس کے پاس میراؤ کر ہوا اور اُس نے وُ رُ دوشریف نہ پڑھا اُس نے جفا کی۔

اجازت نہیں ، یہاں تک کہ جولوگ گھریا ہال یا بنگلہ کے کمیاؤنڈ وغیرہ میں تُراو تک کی جماعت قائم کرتے ہیں اور قریب مسجد موجود ہے تو اُن پر واہب ہے کہ پہلے فُرْضَ رَكُعْتِين جماعت أولى كيهاته مسجد مين اداكريں _جولوگ بلاعدٌ رِشَرْعی باؤ بُو دِقدرتُ فَرْضَ نَمَا زمسجد میں جماعتِ اُولی کے ساتھ ادانہیں کرتے اُن کو دُرجانا جائے کہ سرکارِمدینه، راحَت قلب وسینه، فیض گنجینه، صاحِب مُعطَّر یسین^ی ملَّ الله تعالیٰ علیہ والہ وسلَّم کا فر مانِ عبرت نشان ہے،''جس کو یہ پیند ہو کہ کل اللہ تعالیٰ سے مسلمان ہوکر ملے تو وہ ان کیانچ نمازوں (کی جماعت) پر وَہاں یابندی کرے جہاں ا ذان دی جاتی ہے کیوں کہ اللہ عز دجل نے تمہارے نبی صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلّم کے لئے سُنَن ھُلای مَشْرُ وع کیں اور یہ (باجاعت) نَمازیں بھی سُنَن ھُلای سے ہیں اورا گرتم اینے نبی کی سنت جھوڑ دو گے تو گمراہ ہوجا ؤگے۔' (مسلم شریف ج۱

ہ مان مصطنے (ملی اللہ تعالی مار دار ہلم) جس کے پاس میر اؤ کر ہوا اور اُس نے مجھ پرو رُودِ پاک ند بڑھا محتیق وہ ہر بحث ہو گیا۔

ص ۲۳۲) اِس حدیث مبارک سے اِشارہ ملتاہے کہ جماعت اُولیٰ کی بابندی کرنے والے کا خاتمہ بالخیر ہوگااور جو ہلا شُرعی مجبوری کےمسجد کی جماعتِ اُولیٰ ترک کرتا ہے اُسکے لئے مَسعَ اذَ اللّٰہ عزوجل کُفْریرِ خاسمے کا خوف ہے۔جولوگ ئو ائو اوئستی کی وجہ سے پوری جماعت حاصِل نہیں کرتے وہ **توجُہ فر**ما ^کیں کہ میرے آقا علیحضری نامام اَبلِسقت مولینا شاہ احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰ فرماتے ہیں،''بَحُرُ الرَّ الٰق'' میں ہے،قدیہ میں ہے،اگراذانسُن کروُنُولِمسجد (یعنی سجد میں داخِل ہونے کیلئے) اِ قامت کا انتظار کرتار ماتو گنهگار ہوگا۔'' (منساوی رصوبہ ج۷ ص ۱۰۲ ملاب حر الوالق ج۱ ص ۲۰۶) ف**قاوی رضو بیشریف کے اُس صُفُحہ پر ہے ،''جو** شخص اذ ان سُن کر گھر میں اِ قامت کا انتِظار کرتا ہے اُس کی شہادت ^{یعنی گواہی} قَبِولَ بِينٍ - ' (البحر الرائق ج ١ ص ٤٥١) عيم الشي المالي محاسمة على المالي الماسية المواقامة

غرمان مصطفیا (ملی امذ قال ملیدالیومنم) جمس نے جمعے پر ایک بارو زود پاک پڑے ھااللہ تعالیٰ اس پر دس رسٹیں جیجیا ہے۔

تكمسجِد مين نهيں آجا تابعض فُقَهائِ كرام رَحِمَهُ مُهُ اللّهُ تعالىٰ كنز ديك وه گنهگاراورم دووُ الشَّهادت يعني گوا ،ى كيلئے نالائق ہے تو جو پلائڈ رگھر ميں جماعت قائم كرتا يا بغير جماعت نَماز پڑھتا يا مَعاذ الله عزو حل نَماز ،ى نهيں پڑھتا أس كا كيا حال ہوگا!

بارتِ مصطَفِي اعز وجل وصلى الله تعالى عليه والهوسلم جمين يا نجول نَما زين مسجِد

کی جماعتِ اُولی میں پہلی صَف کے اندر تکبیرِ اُولی کے ساتھ ادا کرنے کی ہمیشہ

سعاوت نصيب فرما ـ اهين بجاه النّبيّ الأهين صلى الله تعالى عليدوالهوالم

میں گیا نچوں نمازیں پڑھوں ہاجماعت

ہو توفیق الی عطا یا الہی عرب^{جل}

صَلُواعَلَى الْحَبِيب! صلى الله تعالىٰ على محمَّد

فو صان صصطفط (ملى من عندار الفراع) جو محدي أيك مرتبد زود فريف باحتاب الذهاق أس كيك ايك قيرا ها برلكمتا اورايك قيرا ها مديها زجزاب

"یار سول پاک"کنوحروف کی نبست سے نماز ورکے 8مکرنی پیول

(۱) نماز ور واجب سے دالب حد الرائق ج ٢ ص ٦٦) (٢) اگر بير چھوٹ جائے تو اس کی قُصالا زِم ہے (درمعتبار 'ردالمعتار ج۲ص۲۲ه) (۳)وِیْر کاوقت عشاء کے فرضول کے بعد سے صح صاوِق تک ہے (مرافی الفلاح معہ حساشیة الطحطاوی ص۱۷۸) (٤) جوسو کراُٹھنے برقادِر ہواُس کیلئے افضل ہے کہ پچھلی رات میں اُٹھ کر بہلے تھے۔ بھرو اگرے پھرو اگر (غنبة المستعلى ص٤٠٣)(٥) إس كى تين ركعتير ي (مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوى ص٥٧٥) (٢) إس مي قَعدة أولى واجب ہے، صرف تَشَهد بڑھ کر کھڑے ہوجائے (۷) تیسری رَ تُعَت میں قر اءَت کے بعد تکبیر قُنُوت کہنا واجِب ہے(درمنت ارمع ردالمعتار ج۲ص ۵۳۰)(۸) جس طرح تكبيرتح يمه كهتي بين إى طرح يهله باته كانون تك أثفايئه بجراليلَّهُ اكبو كَبُرُ حاشبة الطحطاوى ص٣٧٦) (٩) چر باتھ با ندھكردُ عائے تُنوت يرُ ھے۔ فو **مان مصطفی** (سلی اندتن فی به دار دینم) جمیع مرو کروز پاک کی کنثر ت کرو بے شک بهتمبار سے لئے طہارت ہے۔

دُعائے قُنُوت

مزوجل اے اللہ ہم تجھ سے مدد چاہتے ہیں اور تجھ سے

بخشِش ما نَگَتے ہیں اور تھ پر ایمان لاتے ہیں اور

تی پر مجروسه رکھتے ہیں اور تیری بہت انھی

تعریف کرتے ہیں اور تیرا مشکر کرتے ہیں اور

و كُخْلَع و كَنْ و كُ مَنْ يَعْجُوكُ الله عَلَى الله و الله كرت إورالك كرت إين اور

اَللَّهُ عَرْايًا لَكَ نَعُبُلُ وَكَكَ جِهِورْتِ بِنِ أَن فَضَ وَجِوتِ مِن الْرَانَ رَبِّ

نصری و کشری و کا کید کے تسلی اے اللہ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور

تیرے بی لئے نماز پڑھتے اور مجدہ کرتے ہیں اور

تیری ہی طرف دوڑتے اور خدمت کیلئے حاضر

ہوتے ہیں اور تیری رُحمت کے العبدوار ہیں اور

تیرے عذاب ہے ڈرتے ہیں بیٹک تیراعذاب

كافِروں كوملنے والا ہے۔

ٱللهُ مَّرِانَا لَسُتَعِيْنُكَ وَلَسُتَغُومُكَ وَتُوْمِنُ بِكَ وَنَتُوكَكُلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي عَلَيْكَ وَنَتُوكَكُلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي عَلَيْك

الخَيْرُ وَلَشُكُولِكَ وَلَا مُكُفِّهُ كَا

وَنَخْشَلَىٰعَكَابِكَ إِنَّ

وَ نَحْفِلُ وَ نَرْجُوا رَحْمَتُكَ

عَنَ ابَكَ بِاللَّفَّالِيُ لَجُقُ

﴾ خور جان مصطفع : (سلي الدقال عليه الديم) جم سنة كذب على مجر يردو باكسكو أوجب تكديرا وم أن كذب على تكوار شاد كالم يتنا استفاد كرية وجرب تكديرا

(١٠) وعائے قُنُوت کے بعدو رُووشریف پڑھنا بہتر ہے (غنیة المستعلی ص٢٠١)

(۱۱) جودُ عائے قُنُوت نہ پڑھیں وہ یہ پڑھیں:

يا بدبيرهين: الله مُحَدَّا عُفِر فِي السَّالِي معفِرة الماديد

(مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٣٨٥)

(۱۲) اگر دُعائے فَسنُوت پڑھنا بھول گئے اور زُکوع میں چلے گئے تو واپس نہ لوٹے بلکہ تجدہ سُہُوکر لیجئے (عالمہ گیری جامس ۱۱) (۱۳) وِٹر جماعت سے پڑھی جارہی ہو (جیما کہ کروم خماک الگر باکر اجسے میں پڑھتے ہیں) اور مُقتدی فُنُوت سے فارغ نہ ہوا تھا کہ امام رُکوع میں چلاگیا تو مُقتدی بھی رُکوع میں چلاجائے۔

(عالمگیری ج۱ص،۱۱،تبیین الحقائق ج۱ص۱۷۱ملنان)

خوصان مصطفية اصلى مند تهانى مليده الديملم) مجري كثرت ساؤرود باك برعوب شك تمبادا مجري وُزُدود باك برعماتهار بالعابول كيليم مفرت ب-

سَجْدَةً سَهُوً كا بيان

(۱) واجبات نِمَاز میں سے اگر کوئی واجب مُھولے ہے رَہ جائے یا فرائض وواجهات نُماز میں مُھولے سے تاخیر ہوجائے تو سجد واجب بردور در مُعنار معنا لوٹا نا واجب ہے (اَینا) (۳) جان بوجھ کر واجب تَرک کیا تو سَجَد ہَسَٰہُوَ کا فی نہیں بلکہ نماز دوبارہ لوٹا ناواجب ہے۔ (اَیناً) (٤) کوئی ایساواجب ترک ہواجو واجہاتِ نَماز سے نہیں بلکہ اس کا وُجُو بِ اُمْرِ خارج سے ہوتو سجدہُ سَہُوُ واجِب نہیں مَثْلًا خلاف تَرتب قرآن ياك يرهنا ترك واجب (اور گناه) ہے مگر اس كا تعلُّق واجِهات نِمَاز سے نہیں بلکہ واجِهات تِلا وَت سے ہے لہٰذا سَجَدہُ سَہٰو نہیں (البقہ اس ہے تو یہ کرے)(اُیفا)۔(۵)فَرْضُ تَرک ہوجانے سے نَماز جاتی رَہتی ہے مجدہُ سَهُوْ ہے اِس کی تَلا فی نہیں ہوسکتی للہٰ دادوبارہ پڑھئے (۲) سنتیں یا مُستَسَحَبّات

فوجان مصطفها (مل دن لد، السام) بوجح برايك مرتبدؤ ووثريف إحتاج الله تعالى أص كيك ايك قيراطا بركه متااورايك قبراط احديها وجناب

مَثُلُ ثَنا' تعوُّه ذ' نَسمِيهُ مِين' تكبيرات إنتقالات اورتسبيحات كے ترک سے تحدہُ سَهُوْ واجب نہیں ہوتا ، نَماز ہوگئ (فتح القدير ج ١ ص ٤٣٨) مگر دوبار ہ ير ه لينا مُستَحب ہے بھُول کرتر ک کیا ہو یا جان بو جھ کر (۷) نَمَا زمیں اگرچہ دُنُ وابِب ترک ہوئے ، َسُرُوْ کے دوہی سَجد ہے سب کیلئے کافی ہیں (رَدُّالمُحتَّارِ جِ٢ ص ٢٥٥) (٨) تَعْدِ مُلِ اُر کان (مُثَلُّا رُکوع کے بعدسیدھا کھڑا ہونا یا دوئجدوں کے درمیان ایک بارسجن اللہ کہنے کی مِقدارسِدِها بینصنا) بھول گئے بحیرہ سَبُو واجب ہے (عبالسکیسری ج ۱ ص۱۲۷) (۹) . قُنوت ماتکبیر قُنوت بھول گئے سجدہ سُہُؤ واجب ہے(عالے مگیری ج ۱ ص ۱۲۸)(1**۰**) قر اءَت دغيره كسى موقع يرسو چنے ميں تين مرتبه'' منسيكي مَ اللَّهُ كَهَ كَا وَ قَعْهِ گزرگیا مجدهٔ سَهُو واجِب ہوگیا ﴿ رَدُّالْــُــحنَــارج ٢ ص ٥٥٥) (١١) سَجِد هُسَهُو کے بعد بھی ٱلتَّحِيَّا ت (آتُ ـتَ ـيَ -يَات) يرُ هناوادِب بـــالتَّحِيَّات يرُ هكر سلام بھیر بے اور بہتر ہیے کہ دونوں قَعدول (یعنی سُجد ہ سُہُوْ سے بہلے اور بعد) میں وُ رُ ود

في خد من مصطف (منى الله الله الله الله الله علم المين الله بها الله المرادة وواياك بالعوق مجمد يكا يامو بيشك على تام جهانول كدر بالارول الول.

شریف بھی پڑھنے(عالمگیری جاص ۱۲) (۱۲) إمام سے سُرو ہوااور سَجد وَسُہُو کیا

تومُقندى پر بھى تحبده واجب ہے ((دُرِّمُ حمَّار مَعَ لَهُ رُدُّالْمُحتَارِج ٢ص٨٥٦) (١٣) اگر

مُقتدی سے بحالتِ اِقتِد اَسَوْ واقع ہوا توسَجد وَسَوْ واجِب نہیں (عالہ گہری جا ص

۱۲۸) اورنما زلوٹانے کی بھی حاجت نہیں۔

نهایت آبم مسئله

كثيراسلامى بھائى ناواقِفِيّت كى بِناپراپى نَماز ضائِع كر بيٹھتے ہيں لھذا يہ

مسُلہ خوب توجّہ سے پڑھئے (۱۶) **مسمُو ق** (یعنی جوایک یا کی رَّنعَیں فُوت ہونے

ے بعد نمازیں شابل ہوا) کوامام کے ساتھ سلام چھیرنا جائز بیس اگر قصد ا

مجیر **یکا تو نماز جاتی رہے گی اورا گر بھول کرامام کے ساتھ بلا وَ قُلَمہ** فورا سلام چھیرا تو کڑج نہیں لیکن میہنا درصورت ہے (یعن ایسا بُہُت ہی کم

ہوتا ہے) اور اگر بھول کرسلام امام کے پچھ بھی بعد پھیرا تو کھڑا ہو

ونماز كاطريقه

غو مان مصطفیہ (مسی اند خان ملید البر الممام) جو مجھ پر روز جمعی کر روزشر لف پڑھے کا میں قبیا مت کے دن اُس کی شفاعت کروں گا۔

جائے اپن مَماز بوری کر کے سُجد وسَمُو کرے۔ (دُرِّمُ حَنَار مَعَهُ رَدُّالُمُحَار ج

ص ۱۰۹) مسبُوق امام کے ساتھ سَجد ہُ سَہُؤکرے اگرچہ اس کے شریک

ہونے سے پہلے ہی امام کوسَہُوْ ہُوا ہواوراگرامام کے ساتھ سَجدہُ سَہُوْ نہ کیااورا پی وَقِیّه پڑھنے کھڑا ہوگیاتو آ خِر میں سَجدہُ سَہُوْ کرےاوراس مَسبُوق سے اپنی ٹماز میں

بھی سُہُو ہوا تو آ خِر کے یہی سَجد ہےاس امام والے سُہُو کیلئے بھی کافی ہیں۔

(عالسگیری جا ص۱۲۸) (۱۲) قعدهٔ اُولی میں مَشَهُد کے بعدا تناپڑھا

الله هُ مَعَ صل على مُحَدِّبِ "توسَجدهَ سَهُوْ وابِب ہے اس كى وجہ يہيں كەُدُرُ ودشريف يڑھا بلكہ إس كى وجہ يہ ہے كہ تيسرى دَشُحَعَت كے قيام ميں تاخير

موئی ۔للہٰ دااگر اتنی دیریتک خاموش رہاجب بھی سجد ہُسَہُو واجِب ہے۔

حكايت

حضرت سيِّدُ ناامامِ اعظم الوحنيفه رضى الله تعالى عنه كوخواب مين سركارِ مدينه ،

فی معان مصطنع (ملیاند تعانی ملید الرسلم) اُس شخص کی تا ک خاک آلود ہوجس کے پاس میر او کر ہواوروہ مجھے پروُرُود ہاک ند پڑھے۔

سلطانِ باقرینه،قرارِقلب وسینه،فیض گنجینهٔ صنّی اللهٔ تَعَالیٰ علیه وَاله وَسنّم کا دیدار ہواسر کارِ نامدارصَلَی اللهٔ تَعَالیٰ علیه وَاله وَسنّم نے اِسْتِفسار فر مایا' وُ رُ ووشریف پڑھنے والے پرتم نے سُجدہ کیوں واجِب بتایا ؟ عُرض کی ، اِس لئے کد اِس نے بھول کر (یعنی عفلت ہے) پڑھا۔سرکارِعالی وقارصَلَی اللهٔ تَعَالیٰ علیہ وَالهِ وَسنّم نے بیہ جواب پسندفر مایا۔

(دُرِّمختار معه ردالمحتار ج٢ص٧٥٧)

(۱۷) کی قعدہ میں قشہد سے کھر وگیا تو سجد وسمبو واجب ہے

نَمَا زُفْل ہو یافرض ۔ (عالمگیری ج ١ ص ١٢٧)

شجدهشهؤ كاطريقه

اَلَتَّحِیَّاتُ پڑھ کر بلکہ افضل ہے ہے کہ دُرُ و دشریف بھی پڑھ لیجئے ،سیدھی طرف سلام پھیر کر ڈوسجد سے بیجئے پھر تَشَۃ ہے۔۔۔۔، دُرُ و دشریف اور دُعا پڑھ کرسلام پھیر دیجئے۔ (فتاوی فاضی حان معہ عالمگیری ج اص ۱۲۱)

ند مان مصطفیا (سلی ادر اسلم) جس کے پال میراذ کر دواور وہ جھ پر دُرُ دوشر نف ند پڑھے تو لوگوں میں وہ مجنوبی ترین مختص ہے۔

سحدہ سَمُو کرنا بھول جائے تو۔۔۔

س**َجِدهُ** سَهُوُ كرنا تفااور بھول كرسلام چھيرا تو جب تك مسجد سے باہر نہ ہوا ركے (دُرِّمنعتار معه ردالمعتارج ٢ص٥٥) ميدان ميں بواجب تك صَفول سے مُتَجاوِز نہ ہو یا آ گے کوسجد ہ کی جگہ سے نہ گز را کر لے جو چیز مانع بنا ہے مَثْلًا کلام وغیرہ مُنا فی ٰنَمَازا گرسلام کے بعد یا کی گئی تواب سَجد ہُسَہُونہیں ہوسکتا۔

(دُرَّمُ حَتَار مَعَهُ رَدُّالُمُ حَتَار ج٢ص٥٥٥)

سَجْدة تِلاوَت اور شَيطان كي شامَت

اللَّه كر مَحْبوب ١٤انائِر غُيُوب، مُنزَّة عَن الْعُيُوب ءَزْدَحَلُ

وَ صَلَّى الله تعالى عليه واله وسلَّم كا فر مانِ جنت نِشان ہے، جنب جنب آ وُمَى آيتِ سَجدہ مِرْ ھ كرسَجده كرتا ہے، شيطن ہٹ جاتا ہے اور روكر كہتا ہے، ہائے ميري بربادي! ابنِ آ دم کوئجدہ کا حکم ہوا اُس نے سُجدہ کیا اُس کیلئے بنت ہے اور مجھے حکم ہوا میں نے

. مومان مصعندا (سل الله تعالى لبر الديمة) جس كے پاس ميراؤ كر ہوا اور اُس نے وُرُو دِيشر بيف ند پڙ ھا اُس نے جفا كى -

اِنْكَارِكِيامِيرِ لِيَ دُوزِ خ ہے۔ (صحیح مسلم، ج١، ص١١)

إِن شَاءَ اللَّه عَزَمَعَلُ هِر مُراد پوري هو

جس مقصد کیلئے ایک مجلِس میں سُجدہ کی سب (یعنی ۱۶) آیتیں پڑھ

كرسجدے كرے الله عزدجل أس كا مقصد بورا فرمادے گا۔خواہ ایک ایک آیت

پڑھ کراُس کا تجدہ کرتا جائے یا سب پڑھ کرآ فِر میں 14 سُجِر سے کرلے۔

(غنيه،درمختار وغيرهما)

''قُرانِ مَجِيد''کے آٹھ حُروف کی نسبت سے سَجُدہُ تِلارَت کے 8مَدَنی پھول

(۱) آیتِ تَجده پڑھنے یاسُننے سے تَجده وابدب ہوجا تاہے پڑھنے میں یہ

شُرُط ہے کہ اِتنی آواز میں ہو کہ اگر کوئی عُدُ رنہ ہوتو خودسُن سکے، سُننے والے کے

لئے بیضر وری نہیں کہ بالقَصْدُ شنی ہو ہلا قَصْدُ سُننے سے بھی سَجدہ وابِدب ہوجا تا ہے۔

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۳۲)

فور من مصطفیا (ملی اشتمان بدود اسام) جس کے پاس میرا ذکر ہواا دراً س نے مجھ مرد را دوپاک ندر موسا محقق دوہ برخت ہوگیا۔

(۲) کسی بھی زَبان میں آیت کا تَرجَمه پڑھنے اور سننے دالے پر سجدہ واجب ہوگیا، سننے دالے نے بیسمجھا ہو یا نہ سمجھا ہو کہ آیئتِ سَجدہ کا ترجَمہ ہے۔البقہ بیضر ورہے کہاسے نہ معلوم ہوتو بتا دیا گیا ہو کہ بیآیت سَجدہ کا ترجَمہ تھا اور آیئت پڑھی گئی ہوتو اِس کی ضَر ورت نہیں کہ سننے دالے کو آیتِ سَجدہ ہونا بتایا گیا ہو۔

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۳۳)

(۳) سجدہ واجب ہونے کے لئے پوری آیت پڑھنا ضَروری ہے لیکن بعض رَحْهَهُ شِرِاللهُ الْمَهِ بِين عُلَمْ مائے مُتَأْخِوِين (مُ-تَ-ءَخُ -رِثرين) كِنُزديك وه لفظ جس ميں سجده كا مادَّه پايا جاتا ہے اس كے ساتھ قبل يا بعد كاكوئی كفظ ملاكر پڑھا تو سجد هُ تِلاوت واجِب ہوجاتا ہے لہذا اِحْتیاط یہی ہے كہ دونوں صورَ توں میں سجد هُ تلاوت كیا جائے۔

(مُلَحُّصاً فتاوى رضويه ج٨ ص ٢٢٣-٢٣٣ رضا فاؤنڈيشن لاهور)

(٤) **آيئتِ** سَجده بيرونِ نَماز برُهي تو نورُ اسَجده كرلينا دادِب نہيں ٻالبته وُضوہوتو

خدمان مصطفة (ملى اند تدان بدوار دام) جمل في مجمع برايك بارؤ رُودٍ پاك يرْ حاالله تعالى أس يروس ومتيس بعيجا ہے۔

بوتو تا خیر مرووتنز یمی ہے۔ (ننویر الابصار مع رَدُّالمُحتَّار ج ٢ ص ٥٨٣)

(٥) سَجِد وَ تلاوت نَماز میں فوز اکرنا واجِب ہے اگر تاخیر کی لیعنی تین آیات سے

زِیادہ پڑھلیا تو گئنہ گار ہوگااور جب تک نَماز میں ہے یاسلام پھیرنے کے بعد کوئی

نَماز کے مُنافی فِعل نہیں کیا توسُجد ہُ تلاوت کر کے بحدہ سُہو بجالائے۔

(دُرِّمُعتَار مَعَةُ رَدُّالُمُحتَار ج٢ص ٥٨٤)

خبردار إهوشيارا

(٢) رَمَضانُ المُبارَك مِن تراوح ياصَبينه مِن الرحِه شريك نهون ب

شک اپی ہی الگ نَماز پڑھ رہے ہوں آیتِ سَجدہ سُن لینے سے آپ پر بھی سَجدہُ

تِلا وت واجِب موجائے گا۔ كافر يا نابالغ ہے آ يہتِ سَجد هُ سُنى تب بھى سَجد هُ تِلا وت

ہواُن کاغلَبہ طن کے اِعتبار سے حساب لگا کراُ تنی بار ہاؤ ضو بحدہُ تِلا وت کر کیجئے۔

هر ولين مصطفعة إرامليان شال مليه الهام)جب تم سرطين (جبهالام) يرؤؤوو باكسية جمد يرجى يدمو بيشك عمل قام جهانو ل كدب كارمول بول.

سَجُّدةً تِلاوت كا طريقه

(٧) كمرُ ابوكر الله (كالم الشاركم كهنا بوائحد ه مِن جائ اوركم

ے میں بار سبح طن رقب الا علی ہے بر الله اک ا

كېتا بوا كفر ا بوجائ_ پېلى، پېچىدونول بار **الله اكتاب** كېناسنت بادر

کھڑے ہوکر سُجدہ میں جانااور سُجدہ کے بعد کھڑا ہونا پیڈونوں قِیا مستحب۔

(عالمگیری ج۱ ص ۱۳۵)

(٨) تحجدة تلاوت ك لئ كالله كالمناه

أَثْمَانًا مِن السَّمِينِ تَشَعُد مِن السَّلَامِ (تنوير الابصار مع ردالمحتارج ٢ ص ٥٨٠)

سَجُدةً شُكر كا بيان

اُولا و بیدا ہوئی، یا مال پایا یا گئی ہوئی چیزمل گئی یا مریض نے شِفا پائی یا مُسا فِر واپَس آیا اُلْفَرُض کسی نِعمت کے مُصول پر سُجْدہُ مُشکر کرنا مُستَّب ہے اِس کا فوطان مصطفيا (الماندتان مدان منم)جس نے مجھ پرایک وُرُود پاک پر طالقد تعالی أس پروس رحتین معیجاہے۔

طریقہ وُ ہی ہے جو مجد وہ تلاوت کا ہے (عدائہ گیری ہے ۱ ص ۱۳۶) اِسی طرح جب مجھی کوئی خوشخبری یا نعمت ملے تو سجد و شکر کرنا کارِثواب ہے مَثَلُا مدینہ مؤّرہ کا دیزہ لگ گیا بھی پر **اِنفِرادی کوشِش کا میاب ہوئی** اور وہ **دعوت اسلامی** کے سنٹوں کی تربیّت کے **مکد نی قافلے م**یں سفر کیلئے تیار ہوگیا بھی سُنّی عالم باعمل کی زیازت ہوگئی ، مُبارک خواب نظر آیا ، طالبِ عِلْم دین امتحان میں کا میاب ہوا ، آفت تُکی یا کوئی دھمن اسلام مُراوغیرہ وغیرہ۔

نَمازی کے آگے سے گزرنا سخُت گناہ ھے

(۱) سرکار مدینه، سلطانِ باقرینه، قرارِقلب وسینه، فیض گنجینه، صاهِبِ مُعَظِّر پسینه، باعِثِ نُوْ ولِسکینهٔ عَلَی اللهٔ تَعَالی علیه وَالدِوَسِلُم نے فرمایا: ''اگرکوئی جانتا که اپنے بھائی کے سامنے نَماز میں آ ڑے ہوکرگز رنے میں کیا ہے تو سوہرس کھڑار ہنا اس ایک قدم چلنے سے بہتر سمجھتا''۔(سنسن ابین مساجہ حدیث ۹۶۱ تا ۱۳۰۰ ص ۰۰ م . فهو مان مصطفعا: (ملى الدعال عليه البرينم) جمس نے جميروس مرتبه ؤ رو ياك پڑھا الله تعالى أس پرسور حتيم ناز ل فرما تاہے۔

دارالسب عسرونة بیسرون (۲) حضرت سیّد ناامام ما لِک رضی الله تعالی عنفر ماتے بیں کہ حضرت سیّد نا کَعْبُ الْاَحْبار رضی الله تعالی عند کا ارشاد ہے: '' نَمَا زَی کے آگے سے گزرنے والا اگر جانتا کہ اس پر کیا گناہ ہے تو زمین میں دهنس جانے کوگزرنے سے بہتر جانتا۔'' (مُؤطَّ المام مالك حدیث ۲۷۱ ج اص ۱۹۶ دارالسعرِفة بیروت) نَمَا زمین اس کی کے آگے سے گزرنے والا بے شک گناہ گار ہے مگر خود نَمَا زَی کی نَمَا زمین اس

____كوكى فَرِق بَيْس بِيرْتال (مُلَحَّلُ فتاوى رضويه ج٧ص٤٥٢ رضا فاؤن ثيش الاهور)

"بارسول خُدانظر كرم" كيندُره رُوف كانبت سينمازى كآ كيت كررن كيار عين 15 أخكام

(۱) مَیدان اور بروی مسجِد میں نَمازی کے قَدَم سے مَو صَعِ سُجود تکر کَر نانا جائز ہے۔ **مَو صَعِ سُجود** سے مُرادیہ ہے کہ قِیام کی حالت میں سَجود میں سُجود ہے۔ اس کے سَجدہ کی جَدُنظر جَمَائے تو جتنی دُورتک نگاہ تھیلےوہ مَو صَعِ سُجود ہے۔اس کے

خد مان مصطفعاً : (مل الدتال الدوارة م على عم جهال بعي جوجه يروزُ وويز موتمهارا ورُ ووجي تك يهيّما بير

ورمیان سے گزرنا چائز نہیں (نبین الحقائق ج1ص ١٦٠) مَوضَع سُجو د کا فاصِلہ انداز أقدم سے لے کرتین گزتک ہے دفانون شریعت حصّه اوّل ص ۱۳۱ فرید بك اسٹال مرکز الوب، لامور) للبذامیدان میں نمازی کے قدم کے تین گڑ کے بعد ہے گز رنے میں حَرَج نہیں (۲) مکان اور حِیموٹی مسجد میں نمازی کے آ گے اگرسُتر ہ (یعنی آڑ) نہ ہو توقدم سے دیوارقبلہ تک کہیں ہے گز رنا جائز نہیں (عبالسگیری ج ۱ ص ۲۰۱) (۳) نَمازی کے آ گےسُمْر ہ یعنی کوئی آ ڑ ہوتو اُسسُمّر ہ کے بعد سے گزرنے میں کوئی حُرْج نہیں (اَیضا)(٤)سُتْر ہ کم از کم ایک ہاتھ (یعنی تقریبا آ دھاگز) اُونچا اورانگل برابرموثا ہوتا جا ہے (مرانی البقالاج معہ حاشیة الطحطاوی ص ۲۶۰) (4) امام کاسُتُر ہ مقتدی کیلئے بھی سُتْر ہ ہے۔ یعنی امام کے آ گے سُتْر ہ ہوتو اگر کوئی مُقتدی کے آ گے ے گزرجائے تو گناہ گارنہ ہوگا_{(زَقَالْسُم}خسا_{ت ۲}ص٤٨٤) (۲) وَرَخُتُ آ وَ مِي اور جانوروغیره کابھی سُثر ہ ہوسکتا ہے (عبائب گیری ہے ۱ ص۱۰۶)(۷) آ دَ**می کو اِس حالت** میں سُرِّ ہ کیا جائے جبکہا س کی بیٹی نمازی کی طرف ہور حاشیة الطحطاوی ص

فو مان مصطفها : (ملى درق في مايدون برسم) جس في يوس مرتبرة ادون مرتبرا مدود باك يوحاأت قيامت كدن ميرى فقاعت في ا

رَ دُالْمُحتَادِج ٢ ص٩٦ ٤) (اگرنَمَا زيرُ جنے والے کے مَين رُخ کی طرف کسی نے مُمَهٰ کیا تواب کراہت نَمازی پرنہیں اُس مُنه کر نیوالے پر ہے،الہٰذاامام کے سلام پھیرنے کے بعد مُروکر پیچھے دیکھنے میں اِحتیاط ضَر وری ہے کہ آپ کے عَین پیچھے کی جانب اگر کوئی اپنی بَقیّه نَمازیرٌ هه رما ہوگا اور اُسکی طرف آپ اپنامُنه کریں گے تو گنهگار ہوں گے(۸) ایک شخصُ نَمازی کے آ گے سے گزرنا جا ہتا ہے اگر دوسرا شخص اُ سی کو آٹر بنا کراس کے چلنے کی رفتار کے عَین مطابق اُس کے ساتھ ہی ساتھ گز ر حائے تو پہلا مخص گنہگار ہوا اور دوسرے کیلئے یہی پہلا مخص سُتْر ہ بھی بن گیاد رَدُّالْهُ مُنْ مَا رَجِهُ صِ ٤٨٢) (٩) نَمَا زِبا جماعت مِين الكَّلْصَف مِين جَلَّهُ بُونِے ك باؤ بُو دکسی نے پیچھے نما زشر وع کر دی تو آنے والا اُس کی گردن پھلانگا ہوا جاسکتا ب كداس في الني تُرمت ايني آب كھوئى (دُرِنْ حنَار مَعَهُ رُدُالْمُحنَار ج ٢ ص ٤٨٣) (۱۰)اگرکوئی اِس قَدَراو نجی جگه برنَمازیرُ هر ہاہے کہ گُزرنے والے کے اَعْضاء نَمازی کے سامنے ہیں ہوئے تو گزرنے والا گنہگار ہیں۔(عالمگیری جاص ۱۰۶) **خوصانِ مصطفعہٰ** : (سلیانڈ تدنی ملیہ والہ بنم) مجھ پرؤ رُود پاک کی کثر ت کرد ہے شک پیتمہارے لئے طہارت ہے۔

(۱۱) دو شخص نَمازی کے آگے سے گزرنا جاہتے ہیں اِس کا طریقہ یہ ہے کہان میں سے ایک نمازی کے سامنے پیٹے کر کے کھڑا ہو جائے ۔اب اس کوآ ڑبنا کر دوسرا گزر جائے۔ پھر دوسرا پہلے کی بیٹھ کے پیچھے نُمازی کی طرف پیٹھ کر کے کھڑا ہوجائے۔اب پہلا گزر جائے بھروہ دومرا جدھرہے آیا تھا اُس طرف ہٹ جائے (اُینا)(۱۲) کوئی نَمازی کے آگے ہے گز رنا چاہتا ہے تو نَمازی کواجازت ہے کہ وہ اسے گزرنے ہے رو کے خواہ'' منتہ جی می اللّٰلی کے یاچم (یعنی بلند آ دازے) قِر اَءَت کرے یا ہاتھ یاس یا آ نکھ کے اشارے سے منع کرے۔ اِس سے زیادہ کی اجازت نہیں ۔مَثُلُ کیڑا کیڑ کر جَھٹکنا یا مارنا بلکہا گرعمل کثیر ہو گیا تو نماز ہی الله عند عند الطحطاوي ص ٣٦٧ مرافي الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص ٣٦٧) (۱۳) تشبیح واشاره دونوں کو بلاضَر ورت جَمَعَ کرنا مکروہ ہے (دُرُمُعتَادِ مَنا زُدُمُلْمُحتَارِ ج ۲ مر ۲ ۸ ۶) (۱٤)عورَت كےسامنے ہے گزرے توعورَت تَصْفِق (تَص ـ فِيقٌ) ہے مُنْعُ كرے يعني سیدھے ہاتھ کی انگلیاں اُلٹے ہاتھ کی پُشت پر مارے۔اگر مرد نے تَصْفِیق کی اورعورت

نے تبیح کہی تو نَماز فاسِد نہ ہوئی مگر خلاف سِنت ہوا (ایضاً) (۱۵) طواف کرنے والے

کودوران طواف نُمازی کے آگے سے گزرتا جائز ہے۔ رُڈالسُعنَار ج مر ٤٨٢)

الشعبان المعظم الإيكان المعظم الإيكان المعظم المعظم المعلم المعظم المعلم المعظم المعلم المعظم المعلم المعل

سیرمون کی حالت میں کھایا برمس بیدا کرتا ہے۔ (ریون القلوب جمع ۱۹۸۹)

یہ دِ ساف پڑہ کر دوسرے کو دیدیجنے شادی ٹی کی تقریبات ،اجماعات ،آحراس اور مجلوس میلا دوغیرہ میں مکتبۃ المدینہ کے شائع کر دہ رسائل تقسیم کر کے ثواب کمائے ،گا ہوں کو بہ نیب ثواب تخفے میں دینے کیلئے اپنی و کانوں پر بھی رسائل رکھنے کا معمول بنائے ،اخبار فروشوں یا بچوں کے ڈریعے اپ مخلہ کے کمر کھر میں وقفہ وقفہ سے بدل بدل کرسٹنوں بحرے رسائل پہنچا کرنیک کی دوت کی دھو میں مجائے۔ صَلُوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد فوصان مصطفيا (الماسدنان بداربنر) جوجي يردروو باك برحنا بحول كياوه جنت كاراست بحول كيا_

صاحِبِ مزار کی انفرادی کوشِش

ملے ملے اسلامی بھا تو الحمدُ لله عزو عل دعوت اسلام كمدنى

ماحول میں بُزُ رگوں کا بَہُت ادَب کیا جا تا ہے، بلکہ سچی بات یہ ہے کہ اللہ رت العرِّ ت عَزُو َ حَلَّى عنايت سے دعوت اسلامی فيضان أولياء بى كى بدولت چلى ربى ہے۔ پُٹانچہ ایک اسلامی بھائی کا بیان کردہ ایک صاحب مزار ولی الله علیہ رحمۃ الله کی مَدَ نی قافِلے کے لئے **انفرادی کوشِشش** کاایمان افروز واقِعہ اینے انداز میں پی*ش کر*تا ہوں «اَل**َّحِمدُ لِلْهِ عَدُّرَ حَلَّ عاشِقانِ رسول** کا ایک مَدَ نی قافِلہ **چکوال** (پنجاب پاکتان) سے مُظفَّر آباد اوراَطراف کے دیباتوں میںسٹُوں کی بَہاریں لُنا تا ہواایک مقام'' انوارشریف' واردہوا، وہاں سے ماتھوں ماتھ کے اراسلامی بھائی تین دن کیلئے مُدَ فی قافِلے میں سفر کیلئے عاشِقانِ رسول کے ساتھ شریک ہوئے ،ان جاروں میں'' انوار شریف'' کے صاحب مزار بُزُ رگ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے

خوصان مصطفى (سى در من البداد ومنم) جور كرات ين و وول يوسو منك تبداد التي يروود باك يوسنا تبدار عاليول كيا

خانوادے کے ایک فرزند بھی تھے۔ **مَدُ ٹی قافِلہ** نیکی کی دعوت کی دھومیں مچاتا ہوا '' گڑھی دوپرفے'' پہنچا۔ جب انوار شریف والوں کے تین دن مکمَّل ہو گئے تو

صاحِبِ مزار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے رہنتے دار نے کہا، میں تو واپس نہیں جاؤں گا

کیوں کہ آج رات میں نے اپنے ''حضرت''رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کوخواب میں دیکھا ،فر ما

رہے تھے،'' بیٹا! بلیٹ کر گھر نہ جانامکہ نی قافِلے والوں کے ساتھ مزید آ کے سفر

جاری رکھو۔'' **صادِب مزار**ر منہ اللہ تعالی علیہ **ی انزر ادی کو پشش کا ب**یدواقِعہ سُن کر مَدَ نی قافِلے میں خوش کی لہر دوڑ گئی،سب کے حوصلوں کو مدینے کے ۱۲ جا ندلگ گئے

اور انوارشریف سے آئے ہوئے جاروں اِسلامی بھائی ہاتھوں ہاتھ مَدَ نی قافِلے

میں مزیدآ گےسفر پرچل پڑے۔

اولیائے کرام ان کافیضانِ عام لوٹنے سب چلیں قافیے میں چلو اولیا کا کرم تم پہ ہو لا جَرَم مل کے سب چل پڑیں قافیے میں چلو . ﴾ ﴿ غرون مصطفها (ملى الشاقال طيرة الدينم) جومجمع برروز جهد وُرُووشر يف بره هيرًا عمن قبيامت كردن أس في شفاعت كروس كال

ماں چارپانی سے اُٹھ کھڑی ھوئی!

باب المدین کراچی کے ایک اسلامی بھائی کے بیان کا خلاصہ ہے، **میری اتی جان** بخت بہاری کے سبب حیار یائی سے اُٹھنے تک سے مَعذ ورتھیں اور ڈاکٹروں نے بھی جواب دیدیا تھا۔ میں سنا کرتا تھا کہ **دعوت اسلامی** کے سنّوں کی تربّیت کے مَدَ نی قافِلوں **میں عاشِقان رسول** کے ساتھ سفر کرنے سے وعا ئیں قُبول ہوتیں اور بیاریاں دُور ہوتی ہیں۔ پُٹانچہ میں نے بھی دل باندھااور **دعوت اسلامی** کے سنتوں کا نور برساتے عالمی مَدَ فی مرکز فیضان مديينه كاندرقائم "مُدَ في تربيت كاه" مين حاضر موكرتين دن كيلي مَدَ في قافِل میں سفر کا ارادہ طاہر کیا، اسلامی بھائیوں نے نہایت شفقت کے ساتھ ہاتھوں ہاتھ لیا، عاشِقانِ رسول کی مَعِیَّت میں ہمارا م**کد ٹی قافِلہ** بابُ الاسلام سندھ

نَماز كاطريقه

۔ فیدر میں مصنف (سل دند قان ملیدالبریئم) جمس نے جمھے پررد نیجمعہ دوسوبارڈ رود یاک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گٹاوٹھا ف ہوں گے۔

کے **صحرائے مَدینہ** کے قریب ایک گوٹھ میں پہنیا ، دَورانِ سفر **عاشقانِ رسول** کی . فد مات میں دعاء کی درخواست کرتے ہوئے میں نے انمی حان کی تشویشناک حالت بیان کی، اِس پراُنہوں نے امّی جان کیلئے خوب دعا 'میں کرتے ہوئے مجھے کافی دِلاسہ دیا، امیر قافِلہ نے بری زَری کے ساتھ ا**نفر ادی کو بیشش** کرتے ہوئے مجھے مزید 30 دن کے **مَدَ نی قافِلے می**ں سفر کیلئے آمادہ کیا ، میں نے بھی نتیت کر لی۔ میں نے اتمی حان کی *جن*ّت یا لی کیلئے خوب *گر گر ا* کرؤ عا کیں کیں، تین دن کے اِس مَدَ نی قافِلے کی تیسری رات مجھے ایک روش چیرے والے بُوْ دُك كى زِيارت بوكى ، أنهول نے فرمایا ، " اپنی انمی جان كی فِكر مت كرو ان شَاءُ اللّٰهِ عَزْوَخِذَ وهِ حِتَّت باب ہو حاسمیں گی۔'' تین دن کے **مَدَ فی قابلہ** ہے

فارغ ہوکر میں نے گھر آ کر در واز ہے پر دستک دی ، **در واز و کملا تو میں جیرت**

نَماز كاطريقه

پورون مصطفها (ملی اند قال ملیدال اسلم) أی شخص کی ناک فاک آلود ہوجس کے پاس میراد کر بواوروہ مجھ پرؤ زود پاک ندیز ھے۔ مستور مصطفها

سے کھڑے کا کھڑارہ گیا، کیوں کہ میری وہ بیاراتی جان جو کہ چار پائی سے اُٹھ تک نہیں سکتی تھیں اُنہوں نے اپنے پاؤں پر چل کر دروازہ کھولا

تعا! میں نے فَر طِمُسرَّ ت سے مال کے قَدَم چومے اور مَدَ نی قافِلے میں دیکھا ہوا

خواب سنایا۔ پھر مال سے اجازت لیکر مزید 30 دن کیلئے عا**برقان رسول** کے

ساتھ مَدَ فَى قافِل مِين سفر پرروانه ہو گيا۔

مال جو بیار ہو قرض کابارہو ارنج وغم مت کریں قافلے میں چلو مربّ و بیار ہو التجا کیں کریں باب رَحْمت گھلیں قافلے میں چلو ربّ کے در پرمُھلیں التجا کیں کریں باب رَحْمت گھلیں قافلے میں چلو دل کی کا لک وُصلے مرضِ عِصیاں ٹلے آؤسب چل پڑیں قافلے میں چلو

صَلُواعَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

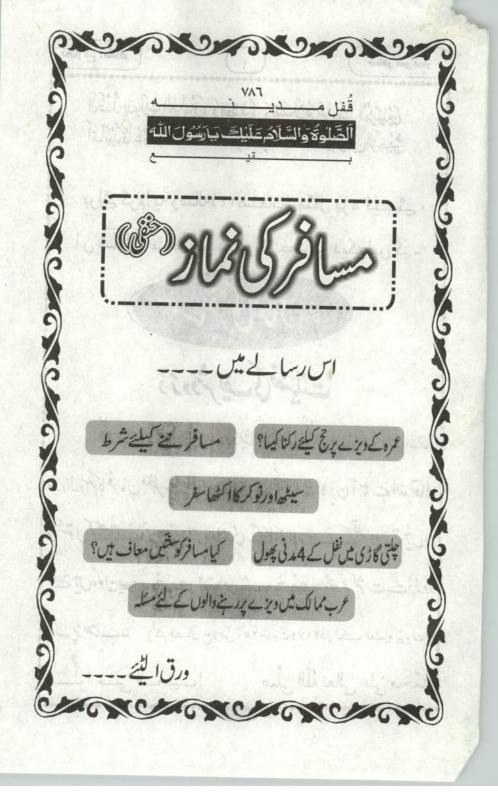
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ اللَّهِ السَّهُ اللَّهِ

صَلُواعَلَى الْحَبِيبِ الصلَّى اللَّهُ تعالَىٰ على محمَّد

مسافركي نماز



وَرَقِ اللَّئِحَ _ _ _



الْحَمْلُ بِلْهِ رَبِ الْعُلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى بَيْدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَأَ عُوْدُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّحِيْمُ السِّيمِ اللهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمُ

برائے کرم! یه رِساله (۲۶ صَفَحات) مکمَّل پڑھ لیجئے، ان شَاءُ الله عَرُّوَجَلَّ اِس کے فوائد خود هی دیکھ لیں گے۔

مسافری نماز ﴿

ورورشريف كى فضيلت

ووجہاں کے سلطان، مرؤر ذیثان، مجوب رُخمن عَدَّ وَجَلَّ وَصَلَّى الله تعالیٰ علیہ والد وسلّم کا فرمانِ مغفرت نیشان ہے، جب جُمعرات کا دِن آتا ہے الله تعالیٰ غیر است کا دِن آتا ہے الله تعالیٰ فرمانِ مغفرت نیشان ہے، جب جُمعرات کا دِن آتا ہے الله تعالیٰ وہ فر شتوں کو بھی چا ہے جن کے پاس چا ندی کے کا غذا ورسونے کے قلم ہوتے ہیں وہ کھتے ہیں، کون بیوم جُمعرات اور شب جُمعہ جُمع پر کثرت سے وُ رُود پاکستے ہیں، کون بیوم جُمعرات اور شب جُمعہ جُمع پر کثرت سے وُ رُود پاکستے ہیں، کون بیوم جُمعرات اور شب جُمعہ جُمع پر کثرت سے وُ رُود پاکستے ہیں، کون بیوم جُمعرات اور شب جُمعہ کے بیارہ کیا محمد کے اس کی الله تعالیٰ علیٰ محمد صداً وا علیٰ علیٰ محمد صداً وا علیٰ علیٰ محمد کے اس کون بیور کا کون محمد کون علیٰ محمد کے بیارہ کون بیور کا کون کے بیارہ کون بیور کا کون کے بیارہ کون کے بیارہ کون بیور کا کون کے بیارہ کون بیور کے بیارہ کون کے بیارہ کی بیارہ کی کون کے بیارہ کون کے بیارہ کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کے بیارہ کون کے بیارہ کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کون کے بیارہ کے بیارہ کون کون کے بیارہ کون کون کون کے بیارہ کون کون کون کے بیارہ کون کے

مسافر کس نَماز

فرمانِ مصطَفيا : (سل مدعان مد او منم) جومجه پر درود پاک بره هنا مجول گیاوه جنت کارات محول گیا-

الله تبارَك وَ تَعَالَىٰ سورةُ النِّسَآءَكَ آيت نمبرا • امين ارشادفرما تا ہے:۔

ترجَمهٔ كنزالايمان: اورجبتم زين

میں سفر کر دنو تم پر گناہ نہیں کہ بعض نمازیں

قَصْرِ ہے یڑھو۔اگرتمہیںاندیشہ ہوکہ کافِر

تمہیں ایذا دیں گے،بے شک عفار

تمهار بے تھلے وشمن ہیں۔

وإذاضر بتئم فيالأنض فكش عكنكم فيناع أن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلُوةِ قُولُكُ خِفْتُو أَنْ يَفْتِنَكُمُ الْذَيْنَ كَفُرُوْا إِنَّ الْكَفِرِيْنَ كَانُوْا

لَكُمْعِلُوالْمُبِينَاْ ﴿ السَاء ١٠١

صدرُ الا فاضِل حضرت علا مدمولينات وحديثهم الدّين مُر ادآبادي عليه

كْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي فِرِهَاتِي بِي ، خُوفِ عَقَارِقَصْرِ كَ لِيَحْثُرُ طَبْيِس، حَفرتِ سِيّدُ نا

ر رمنی در روزعانی عدم یعلیٰ بن اُمَیّیہ نے حضرت ِسبیدُ ناعمر فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے عَرض کی کہ ہم تو

امْن میں ہیں، پھرہم کیوں قَصْر کرتے ہیں؟ فرمایا،اِس کا مجھے بھی منجب ہوا تھا تو

T

خوصانِ مصطّفنياً : (منل الذهابي عبد الديمة) جمل في جميد يرايك وُ رُود ياك يره ها الله تعالى أس يروس رحمتين بهيجما ب

میں نے سرکارِ مدیدنهٔ منوَّدہ صلّی الله تعالی علیداله دِسَّم سے دریافت کیا۔ کھُو رِاکرم، نورِ مُجَسَّم، شاٰوِ بن آ دم، رسولِ مُحْتَشَم صلّی الله تعالی علیداله دِسَمُ نے ارشا دفر مایا کرتم ہارے لئے بیاللہ عَزْدَ حَلْ کی طرف سے صَدَقہ ہے تم اس کا صَدَقة قَول کرو۔

(صحیح مسئم ج ۱ ص ۲۳۱)

اُمِّ الْسَمُ وَ مِنِينَ حَفَرتِ سَيِّدُ تَنَاعَا بُعْهِ صِدّ لِقَدْرِ فَى اللهُ تَعَالَى عَهَارِ ولدَّتَ فرما تی ہیں ، نَمَا ز 'دورَ کَعَت فَرْض کی گئی پھر جب سرکا پر مدینه مٹی الله تعالی علیہ والہ وسلم نے ہجرت فرمائی تو کچارفرض کی گئی اور سفر کی نَمَا زاُسی پہلے فَرْض پر چھوڑی گئی۔

(صحیح بخاری ج۱ ص ۲۰۰)

حضرت سیّد ناعبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنها مت روایت ہے ، الله کے حبیب ، حبیب الله کے حبیب ، حبیب عزو مَل الله تعالی علیه واله وسلّی الله تعالی علیه واله وسلّی الله تعالی علیه واله وسلّی دو رَ تُحقیق مقرّ ر فرما کیں اور بید بوری ہے کم نہیں لیعنی اگر چید بظاہر دورَ تُحقیق کم ہو گئیں مگر ثواب

٤

﴾ خو مان معطف (اسل الله من الله والدام) جس في مجيروس مرتبدو روو ياك رو ها الله تعالى أس يرسوم على مازل فرما تا ب-

ا عج میں دوئی چار کے برابر بیں۔ (سنَنِ ابن ماجه ج٢ص٥٥ حدیث ١٩٤ دارالمعرفة بيروت)

شُرْعی سفر کی مَسافت

شُرُعاً مسافِر وہ فُخُف ہے جوساڑھے 57 میل (تقریباً92 کلومیٹر)

کے فاصلے تک جانے کے ارادے سے اپنے مقام اِ قامت مَثْلُ شہریا گاؤں سے

بإَبَر الوكبيات (مُلَخَصاً فتاوى رضويه ج٨ص ٢٧٠ رضا فاؤنليشن مركز الاولياء لاهور)

مُسافر کب هوگا؟

مخطن نیت سفرے مسافر نہ ہوگا بلکہ مُسافر کا عکم اُس وَقَت ہے کہ بستی
کی آبادی سے باہر ہوجائے شہر میں ہے تو شہر سے ، گاؤں میں ہے تو گاؤں سے
اور شہروالے کیلئے یہ بھی ظروری ہے کہ شہر کے آس پاس جوآبادی فہرسے معصل
(مُنْ ۔ تَ ۔ صِل) ہے اس سے بھی باہر آجائے۔

(دُرِّمُختَار ، رَدُّالُمُحتَارج٢ ص ٥٩٩)

خرجان مصطفط (سني مدهاني مليدان استم) تم جهال يمي موجمه برؤرُ دو يزموتها داؤرُ دوجهيتك يهنيما ب-

آبادی خَتَم هونے کا مطلب

آبادی سے بائر ہونے سے مُر ادبیہ کہ جدھرجار ہاہے اُس طرف

آبادی نَشَم ہوجائے اگرچہ اُس کی مَحاذات میں (یعنی برابر) دوسری طرف تُمّم نہ

(غنية المستملي ، ص٥٣٦)

ہوئی ہو۔ **فنائے شہر کی تعریف**

فنائے شَهرے جو گاؤں منتصل ہے شہروالے کیلئے اُس گاؤں سے

باہر ہوجا ناضَر وری نہیں کو نہی شہر کے **مُتّب صِل** باغ ہوں اگر چِداُن کے نگہبان اور کام

کرنے والےان باغات ہی میں رَہتے ہوں ،ان باغوں سے نکل جاناضر وری نہیں۔

(ردالسسنسارج٢ ص ٥٩٥) **فِنائے** شہرے بابَر جوجگہ شہرك كامول كيلتے ہومَثُلًا

قبرِستان، گھوڑ دوڑ کامیدان ، کوڑا بھینکنے کی جگہا گریہ شہرسے مُتَصِل ہوں تواس سے

بابر ہوجاناضر وری ہے۔اورا گرشہروفنا کےدرمیان فاصِلہ ہوتونہیں۔(ایفاص ۲۰۰)

خوصان مصطف : (ملى الشاق ل بدواله بنم) جس نے جمد بروس مرتبر گا اوروں مرتبر ثام ورود یاک پڑھا أسے قیامت کے وال جری الخفاصت سلے کی۔

مُسافر بسننے کیلئے شرط

سفرکیلئے یہ بھی ضروری ہے کہ جہاں سے چلاوہاں سے تین دن کی راہ (
یعن تقریبا 92 کلومیٹر) کا ارادہ ہواورا گر دودن کی راہ (یعن 92 کلومیٹر سے کم) کے
ارادہ سے نکلاوہاں پہنچ کر دوسری جگہ کا ارادہ ہوا کہ وہ بھی تین دن (92 کلومیٹر)
سے کم کاراستہ ہے یونہی ساری دنیا گھوم کرآئے مسافر نہیں (غنبہ ، درمعنارج ۲ ص
سے کم کاراستہ ہے یونہی ساری دنیا گھوم کرآئے مسافر نہیں (غنبہ ، درمعنارج ۲ ص
کیا کہ مُثالُ دُو دن کی راہ پر بہنچ کر بچھ کام کرنا ہے وہ کرکے پھر ایک دن کی راہ کیا کہ مُثالُ دُو دن کی راہ کی تقریب ارادہ نہ ہوا۔
طاؤل گانو بہتین دن کی راہ کامُنتھ کی ارادہ نہ ہوا۔

(بهارشرایت حصه ٤ ص ٧٧ مدينة المرشد بريلي شريف)

وَطن کی قسمیں

وطن کی دونشمیں ہیں (1) وَطَنِ اصلی : یعنی وہ جگہ جہاں اس کی

Υ

فو مان مصطفیا : (ملى الدتانى بادارية مى جى رد رود ياك كى كثرت كرد بينك ريمهار يالى طيخ طهارت ب

بیدائش ہوئ^ی بیدائش ہے یا اس کے گھر کے لوگ وہاں رہتے ہیں یا وہاں سُکُونَت کر لی اور پیہ

ارادہ ہے کہ یہاں سے نہ جائے گا(۲) وطنِ إقامت: لعنی وہ جگه که مسافر

نے پندَره دن یااس سے زیادہ کھیرنے کا وہاں ارادہ کیا ہو (عدد محدی ج ۱ ص ۱۵۰۰)

وطنِ اقامت باطل ہونے کی صور تیں

وطنِ إ قامت دوسرے وطنِ إقامت كو باطِل كرديتا ہے يعنی ايک جگه

پندَرہ دن کے ارادہ سے تھہرا پھر دوسری جگہ اشنے ہی دن کے ارادہ سے تھہرا تو

پہلی جگہاب وطن ندرہی۔ دونوں کے درمِیان مَسافتِ سفر ہویا نہ ہو۔ یُونہی وطنِ

إقامت وطن اصلی اورسفرسے باطل ہوجاتا ہے۔ (عدم عبری ج ۱ ص ۱۶۰)

سفر کے ڈو راستے

سمسی جگہ جانے کے دوراستے ہیں ایک سے مُسافتِ سفر ہے دوسرے

ہے ہیں توجس راستہ سے بیرجائے گا اُس کا اعتبار ہے ، نز دیک والے راستے سے گیا

20

﴾ ﴿ فوجانِ حصطفها : (طايدندنال طيدادوشم عن من كاب على محديدوو إك العالة وب على براه م أس كاب على العار عندار عدايس عليه

تومسافر نہیں اور دُوروالے سے گیا تو ہے اگرچہ اس راستہ کے اختیار کرنے میں اس

كى كوئى غُرُضِ مَعِي فه مو (عالمگيرى ج١ ص ١٣٨، درمختارمع ردالمحتار ج٢ ص ٦٠٣)

مسافر کب تك مسافر هے

مُسافِر اُس وقت تک مسافِر ہے جب تک اپنی بستی میں پُنُجُ نہ جائے یا آبادی میں پورے 15 دن تھہرنے کی نئیت تہرلے بیاُس وفٹ ہے جب پورے تین دن کی راہ (یعن تقریباٰ 92 کلومیٹر) چل چکا ہوا گر تین منزِل (یعن تقریباٰ 92 کلو میٹر) پہنچنے سے پیشتر وا پُسی کا ارادہ کر لیا تو مسافر ندر ہاا گرچہ جنگل میں ہو۔

(دُرُمُحتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحتَار ج٢، ص١٠٤)

سفر ناجائز هو تو؟

سفر جائز کام کیلئے ہویا ناجائز کام کیلئے بَہر حال مسافر کے اُحکام جاری ہول گے۔ غو صان مصطَف (سلى الد منانى عليه والبروسم) مجور كرشوت ساؤر وو باك بإهوب شك تمهادا جحد برؤر وو باك بإهمان تمياد كيلي مغفرت ب-

سيبثها ورنو كركا إكتفحا سفر

ما ہانہ یا سالانہ اِ جارہ والانو کرا گراپنے سیٹھ کے ساتھ سفر کرے توسیٹھ

کے تابع ہے، فرماں بر دار بیٹا والید کے تابع ہے اور وہ شا بگر دجس کو اُستاد سے کھا تا

ملتا ہے وہ اُستاد کے تابع ہے یعنی جونیت مَتُبُوع (یعنی جس کے تابع ہے) کی ہے

وُ ہی تابع کی مانی جائیگی۔ تابع کوچاہئے کہ مَتُبُوع (مَتُ ۔بُوع) کومُوال کرے

وہ جو جواب دے اُس کے بُمُو جِب عمل کرے۔اگر اُس نے پچھ بھی جواب نیادیا تو

د کھھے کہ وہ (یعنی مَتوع)مُقیم ہے یا مسافِر ،اگرمُقیم ہے تو اپنے آپ کو بھی مُقیم

سمجھے اور اگر مسافر ہے تو مسافر ۔ اور یہ بھی معلوم نہیں تو تین دن کی راہ (یعنی

تقریبا 92 کلومیٹر) کا سفر طے کرنے کے بعد قَصْرٌ کرے، اس سے پہلے بوری

یڑھےاورا گرمُوال نہ کرسکا توؤ ہی حکم ہے کہ مُوال کیااور کچھ جواب نہ ملا۔

(مُلَخُصاً رَدُّالُمُحتَارِ، ج٢،ص٢٦١٦)

وحانٍ مصطفع (مل هنان عدال الله) جوجي بالكرجرة ووثريف باحتاج الشقال أل كيك الكر قيرا فاجراكمنا ورك قيرا فاحد يماز جزاء

کام هوگیا تو چلا جاؤں گا!

مسافر کسی کام کیلئے یا اُ حْباب کےانتظار میں دوجیاً رروزیا تیرہ چودہ دن کی نتیت سے تھہرا ، یا بیدارا دہ ہے کہ کام ہوجائے گا تو چلا جائے گا ، دونوں صورتوں میں اگر آ جکل آج کل کرتے برسوں گزرجا ئیں جب بھی مسافر ہی ہے، نَماز قَصْرُ (عالمگیری، ۱۰ ،ص۱۳۹)

عورَت کے سفر کا مسئلہ

عورَت کو بغیرمُحُرِم کے تین دن(تقریبا92 کلومیٹر)یا زیادہ کی راہ جانا ھا ئرنہیں _۔ نابالغ بیچہ یامُعُنُو ہ(یعنی نیم یاگل) کے ساتھ بھی سفرنہیں کر سکتی ،ہمراہی میں بالغ مُحرم یا شو ہر کا ہوناضَر وری ہے۔(عالمگہری جا ه ١٤٢ عورت ،مُر ابيق (قريبُ البُلُوغُ لِرُكا) مُحرِ م (قابلِ اطمينان) كے ساتھ سفر کرسکتی ہے۔'' مرائق بالغ کے حکم میں ہے۔'' (ناؤی عالمگیری جام ۲۱۹) محر م

11

فرمان مصطفى (سلى الله تعالى على دالدوسم) مجدي رد رو ورشريف يرهوا للهم يردهت يسيح كار

كيليَّ ضَر ورى ہے كہ تخت فاسِق ، بيباك ، غير مامون نه ہو ۔

(بهار شریعت حصّه ٤ ص ٨٤ مدينة المرشد بريلي شريف)

عورَت کا سُسرال و مَیکا

عورت بیاہ کرسُسر ال گی اور یہیں رَہے سَبے لگی تومَیکا (یعن عورت کے والِدَین کا گھر) اِس کیلئے قطن اصلی ندر ہا یعنی اگر سُسر ال تین منزِل (تقریباً 92 کلومیٹر) پر ہے وہاں سے مُلکے آئی اور پندَرہ دن تھہرنے کی نتیت ندکی تو قَصْر پڑھے اور اگر میکے رَہنا نہیں چھوڑا بلکہ سُسر ال عارضی طور پرگئی تو میکے آتے ہی سفرخَتم ہوگیا نَماز پوری پڑھے۔ (بھارِ شریعت حضہ ؛ ص ۸۶ مدینة السرند بربلی شریعت)

عَرَب مِمالِكِ مِين ويزا پر رَهني والون كا مسئله

آج کل کار دبار دغیرہ کیلئے کئی لوگ بال بچوں سمیت اپنے ملک سے سے مفتول میں مدور اور در اللہ سے سے مفتول میں اس

دوسرے ملک منتِقل ہوجاتے ہیں۔ائے پاس مخصوص مدّت VISA کہوتا ہے۔

خد صابي مصطفها (سل الله تعالى عليد والبديم) جب تم مُرطين (بليم العام) يو أو ودياك يزمون مجمي يرجى يزموب الك شي المراب الدي المول الول ــــ

(مُثَلًا عَرَب امارات میں زیادہ سے زیادہ تین سال کا رِ ہائثی دیز املتاہے) یہ ویز اعارضی ہوتا ہےاور مخصوص قم ادا کر کے ہر تین سال کے آخر میں اِس کی تَجدید کروانی پڑتی ے ۔ پُونکہ ویزا کُدُ ودمُدّ ت کیلئے ملتا ہے لمخدابال بنتے بھی اگرچہ ساتھ ہوں اِس کی امارات میں مُستِقل قِیام کی نتیعہ بے کار ہے اور اِس طرح خواه كوئى 100 سال تك يهال رب أمارات اسكاوطين اصلى نبيس بوسكتا_ یہ جب بھی سفر سے لوٹے گا اور قِیام کرنا جا ہے تو اِ قامت کی نتیت کرنی ہوگی ۔مَثَلًا دئی میں رہنا ہے ادرستوں کی تربیت کیلئے دعوت اسلامی کے مَدَ فی قافلے میں عاشِقانِ رسولِ ملَّى الله تعالى عليه والهوسلم كي ساتھ تقريباً 150 كلوميٹر دُور واقع أمارات كدارُ النحلاف الوظهي كاس في سنّنو ل بحراسفرا ختيار كيا-اب دوباره وي من من آ کراگراس کومُقیم ہونا ہے تو 15 دن یااس سے زائد قبام کی نیٹ کرنی ہوگی ورنہ مبافر کے آڈکام جاری ہوں گے۔ ہاں اگر ظاہرِ حال بینی (UNDER STOOD)

ھنا (سلی اندعالی بدو البینغر) جو مجھ پر روز جھدؤ رُ ووٹر یف پڑھے گا میں قیامت کے دن اُس کی شفاعت کرول گا۔

یہ ہے کداب15 دن یااس سے زیادہ *عرصہ بیؤ بنی میں ہی گزارے گا* تو مقیم ہو گیا۔ اگر اِس کا کاروبار ہی اِس طرح کا ہے کہ مکتل 15 دن را**ت بیڈ بٹی می**ں نہیں رہتا، وقیاً فو قیاً شُرعی سفر کرتا ہے تو اِس طرح اگرچہ برسوں اپنے بال بچّوں کے یاں و بی آنا جانارہے بیمسافر ہی رہے گااس کونماز قصر کرنا ہوگی۔ایے شہر کے باہُر وُوروُور تک مال سیلا ئی کرنے والےاورشہر بہشہر، ملک بہ ملک بچھیرے لگانے والے اور ڈرائیورصا حِبان وغیرہ ان اَحْکام کو نِہْن میں رکھیں۔

زائر مدینه کیلئے ضَروری مَسْئله

جس نے اِ قامت کی نیت کی مگراُس کی حالت بتاتی ہے کہ پندرہ دن نهُمْ بِيَا لَوْنَيْتُ صَحِيمُ نَهِينَ مَثَلًا حَجَ كُرنِ كَيااور ذِي المحتَّةُ المحرام كامهينة شُروع ہوجانے کے باؤ بُو دیندرہ دن ملک معظمه میں تھہرنے کی تیت کی توبیزیت بریار ہے کہ جب حج کاارادہ کیا ہے تو (15 دن اس کوملیں گے بی نہیں کہ) 8 ذِی السحيَّةُ السحدام) منخی شریف (ادر 9 کو) نمر فات شریف کوخر در جائیگا پھر اِنے دنوں تک (یعنی 1 دن مسلسل) منگ معظمه میں کیونکرتھ ہرسکتا ہے؟ منمی شریف ہے دائیس منک ہے کہ رقبہ صحیح میں منت میں میں میں میں اور اس میں میں میں میں اور اس میں میں میں میں میں میں میں میں میں

ہوکرنیت کرے تو سی ہے (دُرِّم حضارہ ج۲، ص۷۲۹ء عالم گیری ، ج۱، ص ۱۵، جبکہ واقعی 15 یازیادہ دن منگہ معظمہ میں تھرسکتا ہو، اگر ظنِ عالب ہوکہ 15 دن کے اندراندر مدینہ منوّرہ یا وطن کیلئے روانہ ہوجائے گا تواب بھی مسافر ہے۔

عمرہ کے ویزہ پر حج کیلنے رکنا کیسا ؟

فرمان مصطّفي (من اشتال ميدار منم) محديدة رُدوش يف يراحواللهُم يرومت بميح كار

نمازقهر بی ادا کرنی ہوگ۔ ہاں اگر دوبارہ VISA مل گیا توا قامت کی نیت کی جا
سکتی ہے۔ یاد رہے! جس قانون کی خِلاف ورزی کرنے پر ذکت ، رشوت اور
جھوٹ وغیرہ آفات میں پڑنے کا اندیشہ ہوائی قانون کی خِلاف ورزی جا رَنہیں۔
مجانچہ میرے آقاعلی حضرت، امام اَہلسنت، مولینا شاہ امام اَحمد رضا خان علیہ
رحمہ اُلد عمن فرماتے ہیں: مُباح (یعنی جائز) صورَ توں میں سے بعض (صورَ تیں)
قانونی طور پر بُرم ہوتی ہیں ان میں مُلوَّث ہونا (یعنی ایے قانون کی خلاف ورزی
کرنا) اپنی ذات کواذیت و ذرّت کیلئے پیش کرنا ہے اوروہ ناجا مُزہے۔ (خسادی
دخویہ ج۷۱ میں ۲۷) لہذا بغیرہ کا تو کہ کے کیلئے کر کئے میں کہ ہمایا جی کیلئے
کرکنا جائز نہیں نے بی قانو نی فرائع سے جی کیلئے کر کئے میں کام یا بی حاصِل
کرنے کورمَعاذَ اللّٰه عَرَوْ بَلُ فرائع سے جی کیلئے کر کئے میں کام یا بی حاصِل
کرنے کورمَعاذَ اللّٰه عَرَوْ بَلُ اللّٰه وَرَائع سے جی کیلئے کر کئے میں کام یا بی حاصِل
کرنے کورمَعاذَ اللّٰه عَرَوْ بَلُ اللّٰہ وَرائع سے جی کیلئے کر کئے میں کام یا بی حاصِل
کرنے کورمَعاذَ اللّٰه عَرَوْ بَلُ اللّٰہ وَرائع ہے۔

قصر واجِبھے

مُسافِر پرواجِب ہے کہ نُماز میں تَصر (تَص ۔ز) کرے لینی چار آ کئت والے فرض کو دو پڑھے اِس کے حق میں دوہی رَکعتیں پوری نَماز ہے اور قَصدُ اچار پڑھیں اور دوپر قعدہ کیا تو فرض ادا ہوگئے اور تچھلی دور کختیں نَفل ہوگئیں گر گنا ہگارو عذابِ نار کا حقدارہے کہ واجِب ترک کیا لہٰذا تو بہکرے اور دور کعت پر قعدہ نہ کیا تو

فور من مصطلوا (ملى الله تعالى عبد البدائم) جم كم يا من مير الذكر مواوروه مي يددُ دوشريف شديد ميرة لوكول شي و كجوس تريق فنس ب-

ا فرض ادانہ ہوئے اور وہ نماز نُفل ہوگئ ہاں اگر تیسری رَ گعَت کاسَجد ہ کرنے سے

پیشتر اِ قامت کی نیت کر لی تو فرض باطل نه ہوں گے تگر قبیام ورُکوع کا اِعادہ کرنا ہو س

گااور تیسری کے سَجدہ میں نیّت کی تو اب فرض جاتے رہے یونہی اگر پہلی دونوں یا

ایک میں قر اعت ندکی نماز فاسِد ہوگئی۔ (عالم کیری ج۱ ص ۱۳۹)

قَصْر کے بدلے چاری نیت باندھ لی تو۔۔۔۔؟

مُسافِر نے قَصَر کے بجائے کچار رَ گئت فَرْض کی نیت باندھ لی پھریاد م

آنے پر دو پرسلام پھیر دیا تو نماز ہوجائے گی۔ اِی طرح مُقیم نے چار آ کئت دند کر گالا میں میں دند کر میں کا میں میں میں میں میں میں کا میں کا میں میں کا میں کا میں کا میں کا میں کا میں

فرض کی جگہ دُّورَ کعَت فرض کی نیت کی اور جار پرسلام پھیرا تو اُس کی بھی نَما زہوگئ۔ ِ فَتُهَائے َ رَکرام ِ رَحِمَهُمُ اللهُ تعالیٰ فرماتے ہیں '' نتیتِ نَما زمیں تعدادِ رَکعات کی تعیین

(تَع _ بِینُن) یعنی تقرُّ رکر ناظر وری نہیں کیونکہ ریضِمنا حاصِل ہے۔ نتیت میں تعداد

مُعَيّن كرنے ميں خطا نقصان وہ ميں۔ (دُرِمُعتَار مَعَهُ رَدُّ الْمُحتَار ج ص ٩٨٠٩٧)

ہ ہند مان مصطفر (صلی اختیال عیدار بھم) جس کے پاس میراؤ کر ہوااوراً س نے وُرُ ووٹریف شریخ صااُس نے جفا کی۔

مسافر امام اور مُقيم مُقتدى

ا تزراه کا گفتیم یا مسافر ایک شرط به بھی ہے کہ امام کا کُقیم یا مسافر ہونا معلوم ہوخواہ نمازشر وع کرتے وقت معلوم ہوایا بعد میں ، لہٰذا امام کوچا ہے کہ شر وع کرتے وقت اپنا مسافر ہونا خلا ہر کردے اور شر وع میں نہ کہا تو بعد نماز کہہ دے کہ مقیم اسلامی بھائی اپنی نمازیں پوری کرلیں میں مسافر ہوں۔'' (در فنارج ۲۰ میں اعلان کر چکا ہے جب بھی بعد میں کہدے کہ جولوگ اُس وقت موجود نہ تھے اُنہیں بھی معلوم ہوجائے۔اگر امام کا مسافر ہونا خلا ہر تھا تو نماز

ك بعدوالا بياعلان مُستحب ب- (دُرِم حتار ،ج٢، ص ٧٣٥ ـ ٧٣٦، دار المعرفة بيروت)

مُقيم مُقتدى اور بَقِيَّه دُو رَكْعَتيب

قَصْر دالی نَماز میں مسافر امام کے سلام پھیرنے کے بعد مُقیم مُقتدی جبا پی بَقِیَّهُ نَمازاداکرے تو فَرْض کی تیسرگی اور چوقلی رَکْعَت میں سورہُ الْفاتِیحَة پڑھنے کے بجائے انداز اُاُ تنی دیر چُپ کھڑار ہے۔

(مُلَخُصاً بهار شریعت حصّه ٤ ص ٨٦ مدينة المرشد بريلي شريف)

فد مله مصلف (سل الشامال مليود البائم) جس ك باس ميراؤكر موااوراً س في محصر برد رود باك مدير حافقيق و هد بخت موكيا_

کیا مسافر کو سُنتیں مُعاف ھیں؟

سنتول میں قصر نہیں بلکہ پوری پڑھی جائینگی،خوف اور آوا آوی (یعنی گھبراہٹ) کی حالت میں سنتیں مُعاف ہیں اور اُمن کی حالت میں پڑھی جائینگی۔

(عالمگيري، ج ابس ١٣٩)

کی و این آخیر (بیرون شهر سے مُر ادوہ جگہ ہے جہاں سے مسافر پر قَصْر کرنا واجب ہوتا ہے) سُو اری پر (مَثَلُ چلتی کار، بس، ویگن، بیں بھی نَفْل پر هسکتا ہے اور اس صورت میں اِستِقبالِ تبلہ یعنی قبلہ رُخ ہونا) شُر طنہیں بلکہ سُواری (یا گاڑی) جس رُخ کو جارہی ہوا دھر بی مُنہ ہوا ور اگر اُدھر مُنہ نہ ہوتو نَما ز جائز نہیں اور شُر وع کر نے وقت بھی قبلہ کی طرف مُنہ ہونا شُرطنہیں بلکہ سُواری (یا گاڑی) چدھر جارہی ہے اُسی طرف مُنہ ہوا ور رُکوع و سُنجو ہو اُسْجو ہو اِسْجو ہو اسْجو ہو اِسْجو ہو اُسْجو ہو اُسْرِ اِسْدِ اُسْرِ اِسْدِ اُسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرُ اُسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرُ اُسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اِسْرِ اُسْرِ اِسْرِ
ه د معنه المعاهدة المعالمة المائم) جس نے مجھ پرایک بارؤ اودیاک مع حاللہ تعالیٰ اُس پروس حتیں محمیجا ہے۔

یست ہو۔(یعنی رُکوع کیلئے جس قَدَ رجُھ کا ہتجدے کیلئے اُس سے زیادہ چُھکے)

(دُرِّمُ حَنَاد مَعَهُ رَدُّالُمُحتَادِج ٢ ص ٤٨٧) * فَي مُرين وغيرهاليي

سُواری جس میں جگہ مل سکتی ہے اُس میں قبلہ رُخ ہو کر قاعِد ہ کے مطابق نُوافِل بِرْ <u>ص</u>نے ہوں گے۔

؞ ﴿ اللَّهُ اللَّهُ مِن رَبِّ والاجب گاؤں ہے باہر ہُوا توسُواری (گاڑی) پر نَفْل يرْهِ سَكْتاب.

(زُدُّالُمُحتَّارِجِ ٢ ص ٤٨٦)

ری اور پڑھتے می**رون** شہر مُواری پرنَما زشُر وع کی تھی اور پڑھتے پڑھتے شہر میں داخِل ہوگیا توجب تک گھرنہ پہنچائواری پریوری کرسکتا ہے۔

(دُرَّمُ خِتَار ج٢ ص ٤٨٨،٤٨٧)

م الم الله على گاڑى ميں بلاغذُ رِشَرَ عَي فَرْضَ وسقتِ فجرُ وتمام واجبات جيسے وِثر ونُذُ راوروهُ نَقَل جس كوتو ژ ديا هواورسَجِدهُ تِلا وت جبكه آيتِ سَجْده زيين پر تِلا وت کی ہوادانہیں کرسکتا اوراگر عُذر کی وجہ سے ہوتو ان سب میں شُرْ ط بیہے کہ اگر ممکن ہوتو قبلہ رُو کھڑا ہوکرادا کرے درنہ جیسے بھی ممکن

(۲۰

في جاني حصطفياً :(طهادَ قال طروادِهُم) دِسِتْم مِركِين (جبهلام) دِوَة ووياك دِموق تجه بِرجي دِموب فنك شماقا مِبهانون سك وسكاده ل بول-

(درُ مُحتَارج ٢ ص ٤٨٨)

-5%

مسافر تیسری رکفت کیلئے کھڑا ھو جانے تو۔۔۔۔۔؟

المرسافر قَصْر والى نَمَاز كى تيسرى رَكَعَت شروع كردي واس كى دو

صورَ تیں ہیں(۱) بَقَدُر**دَ مُعْمَدُ فَعُدُ فَ**انْجِرِهِ كَرچِكَا تَفَاتُوجِبِ تَكَ تَيْسرى رَكْعَت

کا تجدہ ندکیا ہولوٹ آئے اور تجدہ سُہُوْ کر کے سلام پھیر دے اگر نہ لوٹے اور

کھڑے کھڑے سلام پھیردے تو بھی نَماز ہو جائے گی مگرستت تُرکُ ہوئی۔اگر پیز

تیسری رَکْعَت کاسجدہ کرلیا توایک اور رَکْعَت مِلا کرسُجدہُ سُہُو کر کے نَما زمکنُل کرے سیسری رَکْعَت کاسجدہ کرلیا توایک اور رَکْعَت مِلا کرسُجدہُ سُہُو کر کے نَما زمکنُل کرے

یہ آجر ی دورَ گفتیں نَفْل شُارہوں گی (۲) قَعْدُ ہُ اُخیرہ کیے بغیر کھڑا ہو گیا تھا تو جب سے ۲

تک تیسری رکفت کا تجدہ نہ کیا ہولوٹ آئے اور تجدہ کہو کر کے سلام پھیردے

اگر تنیس ی ریخت کاسجده کرلیا فُرْض باطِل ہو گئے اب ایک اور رَیُخت ملا کرسجدہ ُ سُہُو کر کے نَما زمکمَّل کر بے تھاروں رَیُختیں نَفْل شَار ہُوا گی (دُورَ کُفت فرض ادا

كرنے ابھى ذيتے باقى بيں) (ماخوز از دُرِمُحتَار مَعَهُ رَدُالمُحتَار ج م ٥٠٠)

خد حان مصطفعہ ؛ اسل مندندں می*دہ او*نلم) جس نے مجھ پرایک ؤ اُر وہ **یاک بڑ ح**الاندا**تھائی اُس پر دس رمشین بھیجا ہے۔**

سفر میں قَضا نَمازیں

حالتواِ قامت میں ہونے والی قُضائمازیں سفر میں بھی پوری پڑھنی ہوں گی اور سفر میں قُصا ہونے والی قَصْر والی نَمازیں مُقیم ہونے کے بعد بھی قَصْر طالب تموید المالیکی نفوج المالیکی مفعرت ۲۷ رسب المود مخفرت ۲۷ رسب المود ہی پڑھی جا ئیں گی۔

یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دیدیجنے

شادی تمی کی تقریبات ،اجتیاعات ،اعراس اور مجلوس میلا د وغیره میں مکتبۃُ المدینہ کے شائع کردہ رسائل تقسیم کرے ثواب کمایئے ، گا ہوں کو بہ انيعة ثواب تخفي مين دينے كيلئے اپني وُ كانوں برنھي رسائل ركھنے كامعمول بنایئے ،اُخبارفَروشوں یا بچوں کے ذَرِیعے اپنے مُحلّہ کے گھر گھر میں وقفہ وقفہ سے بدل بدل کرسٹنوں مجرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دعوت کی دعوش مجائے۔ صَلُوا عَلَى الحبيب! صَلَّى الله تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد

غو <u>مان مصطفعہ</u> (ملیانڈ نا ملہ داہد مغر) جس نے جھیرہ میر شدو زود پاک پڑ ساانڈ تعالی اس پرسور متیں ناز لی فرما تا ہے۔

حِفْظُ بُھلا دینے کا عذاب

يقيناً حِفظِ قُرانِ كريم كارتوابِ عظيم ب، مكريادرب حفِظ كرنا آسان، مكر

مُمرِ کِھر اِس کو یا در کھنا د شوار ہے۔ مُفّاظ و حافظات کو چاہئے کہ روزانہ کم انہ کم ایک پارہ لازِ ما تِلا وت کرلیا کریں۔ جو مُفّاظ دَمَ صَانُ الْعبارَك کی آمد سے تھوڑا عرصہ بِل فَقَط مُصَلِّی سنانے کیلئے مزِل بگی کرتے ہیں اور اِس کے علاوہ مُعَادُاللَّه عزوجل سارا سال غفلت کے سبب کئی آیات بُھلائے رہتے ہیں، وہ بار بار پڑھیں اور خوف خُدا عزد جل سے لرزیں۔ نیز جس نے ایک آیت بھی بُھلائی ہے وہ دوبارہ یا دکر لے اور بُھلا نے جو گا جو گاہ ہوا اُس سے سمّی تو بہ کرے۔

منط جو قرانی آیات یاد کرنے کے بعد بھلا دیگا بروزِ قِیامت **اندها** اُٹھایا

وانگار (ماخذ: پ١٦ ظه ١٢٠١٢٥)

فرامين مصطفع سلى الله تعالى عليداله وسلم

میری اُمّت کے ثواب میرے نُظُور پیش کیے گئے یہاں تک کہ میں نے ان میں وہ تِزکا بھی پایا جسے آ دَ می مسجِد سے نکالتا ہے اور میری اُمّت کے گناہ میرے نُظُور پیش کیے گئے میں نے اِس سے **بڑا گناہ** نہ دیکھا کہ کسی آ دَ می کوقران کی ایک

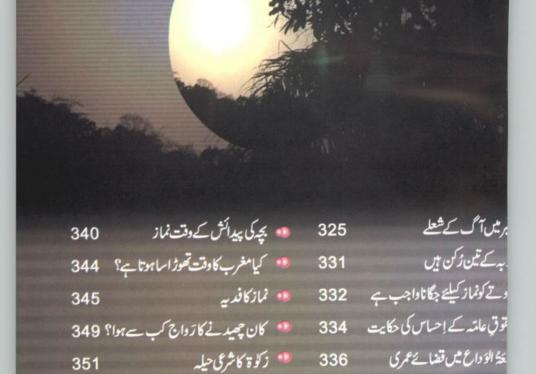
مُورت باایک آیت باد ہو پھروہ اُت بھلا دے۔ (جامع ترمذی حدیث ۲۹۱۶) می**ے جو** مخص قران پڑھے بھراہے بھلا دے تو قیامت کے دن اللہ تعالیٰ سے **کوڑھی** ہوکر ملے۔ (ابو داو د حدیث ۲۷٤ م

مک تیامت کے دن میری اُمت کوجس مناہ کا پورابدلہ دیا جائے وہ بیہ ہے کہاُن میں سے کسی کوقر آن یا ک کی کوئی سُورت یا دُقعی پھراُس نے اِسے بَھلا دیا۔ (كنزُ العُمّال حديث ٢٨٤٦)

مهيئ اعليلحضوت،إمام أهملسنّت، امام أحمد رُضا خان عيرهمة الرَّطن فرماتے ہیں،''اِس سے زیادہ نادان کون ہے جسے خداا کی ہمّت بخشے اوروہ اسے اینے ہاتھ سے کھودے اگر قُدراِس (حفظِ قرانِ پاک) کی جانتا اور جوثواب اور دَ رَجِاتِ اِس بِرِمُوعُود ہیں (لیعنی جن کاوعدہ کیا گیاہے)ان سے واقِف ہوتا تواسے جان ددل ہے زیادہ عزیز رکھتا۔''مزید فرماتے ہیں،''جہاں تک ہو سکے اُس کے یڑھانے اور حِفظ کرانے اور خود یا در کھنے میں کوشش کرے تا کہ وہ ثواب جواس پر مَوعُو د (بعِنی دعدہ کئے گئے) ہیں حاصِل ہوں اور بروزِ قبیا مت **اندھا کوڑھی** اُٹھنے ہےنجات یائے۔

(فتاوی رضویه ج۲۳ ص ۹٤٧،٦٤٥)

قضانمازونكاطريقه

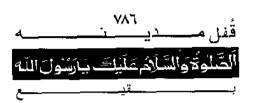


🚥 مِسكين كى تعريف

338

نائے عمری کاطریقہ (حَنفی)

وَرَقِ اللَّئِحَ _ _ _



اس رسالے ہیں۔

🖈 قبریس آگ کے شعلے 🖈 توبہ کے تین زکن ہیں

الله كوني عامر كاحماس كى دكايت المحمد الوداع على قضاع عمرى

🖈 تفائع مرى كاطريقه 🖈 نماز كافديه

ورق الليخ ـ

1

اَلْحَمْلُ بِلْدِرَتِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّكَلَامُ عَلَى سَبِرِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَا اَبْدُونَا عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمَ الْمُرسِلِقُوالرَّحْنِ الرَّحِيْمِ

شیطان لاکھ روکے یه رِساله (۳۶صَفَحات) مکمَّل پڑھ لیجئے ،



وُرُودشريف كى فضيلت

ر **دُو**جہاں کےسلطان،سروَرِ ذیثان مجبوبِ رَحْبِ مِنْ عَزُوجَلُ و صلَّى الله

تعالی ملیہ دالہ وسلّم کا فرمانِ مغفِرت نِشان ہے، مجھ پر دُرُ و دِیاک پڑھنا پُلن صِر اط پر

نورے جوروز بھید مجھ پرائتی بار دُرُودِ پاک پڑھے اُس کے اُسٹی سال کے گناہ

مُعاف، بوجاً كيل كـ (حامِع صَغيرص ٣٢٠ حديث ١٩١ ٥دار الكتب العلمية بيروت)

صلُّوا عملي المحبيب! صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمّد

فر مان مصطَفي : (مل مدنون عدد او مم) جو محديد ورود ياك يوهنا مجول كياوه جنت كاراستر مجول كيا-

قَضًا کرنے والوں کی خرابی

جان بوجھ کرنماز قصا کرڈالنے والوں کے بارے میں یارہ ۳۰سور ہ

الماعُون كي آيت نمبر كاور٥ مين ارشاد بوتاب:

فُولِلُ لِلْمُصَلِّنِ ﴿ اللهُ يَنْ يَنِي سَرِجَمَةُ كَنزالايمان: توان مُمَازيول كَ

هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سِأَهُونَ فَ خرالِ عِدا يْنْمَازَ عَالَهِ لَا يَضْ بِن -

سورة الماغون كي تت نبره كي باركيس جب حضرت سيدنا

سُعد بن ابی وقاً ص رضی الله تعالی عنہ نے بارگاہِ رسالت میں اِستِفسار کیا تو سرکارِ نامدار

صلَّى الله تعالى عليه داله وسلَّم نے ارشا دفر مايا ، (اس سے مُر ادوہ لوگ ہيں) جومُما زوَ قت گز ار

کر بڑھیں۔ (سنَن الكبري للبيهقي ج٢ ص ٢١٤ دار صادر بيروت)

بیان کرده آیت نمبر عیس' وَیل' کا تذیره ہے، صَدْدُ الشَّریعه

بُـدُدُ الطَّو بِيقِه حضرت مولينا محمدام وعلى اعظمى عليه رحمة القوى فرمات عبي جهنم ميل

ایک'' وَمِل'' نامی خوفناک وادی ہے جس کی تختی سے خود جہتم بھی پناہ مانگتا ہے۔

خوصان مصطففي : (ملى الدنواني عيد الدينم)جس في جي يرايك وروياك برها الله تعالى أس يروس ومتيس بهيجاب-

جان بوجھ كرنماز قَصا كرنے والے أس كے ستحق ہيں۔

(بهارشريعت حصه ٣ ص ٧ مدينة المرشد بريلي شريف)

حضرت امام محمد بن احمد ذَهِ بي عليه رحمة الله القوى فرمات بين ، كها كيا ب كه

جہتم میں ایک **دادی** ہے جس کا نام'' قر**بل'**' ہے،اگراس میں پہاڑ ڈالے جا ئیں تو وہ بھی اس کی **گرمی** سے بگھل جا ئیں اور بیان لوگوں کاٹھکا نہ ہے جو**ئما ز**میں سُستی

کرتے اور ق ثَت کے بعد **قصاء ک**رے پڑھتے ہیں مگریہ کہ وہ اپنی کوتا ہی پرنادِم ہوں

اور بارگا و خداوندى عَزُو جَل مين توبكرين (كتابُ الكبائر ص ١٩ دارمكتبة الحياة بيروت)

س کُھِلنے کی سزا

مركار مدينة منوره ،مردارِمكَّهُ مكرَّ مه من الله تعالى عليه والهوسَّم في صحابهُ كرام عليم الرضوان سے فرمایا ، آج رات کو و خص (یعنی جرائیل علیه السلام اور میكائیل علیه السلام) میرے پاس آئے اور مجھے اُرضِ مُقدَّ سه میں لے آئے۔ میں نے دیکھا كه ایک فخص لیڑا ہے اور اس كے ہمر ہانے ایک شخص بیشتہ سو اُٹھائے كھڑا ہے اور تضائمازون كاطريقه

خوصان مصطفيا: (مني ودتان ماروم المام) جس في جوير ومرتبد وروياك برها الشقالي أس برسومتين نازل فرما تاب.

یے دریے بیشھو سے اُس کا سرگیل رہا ہے، ہربار کُسَجَلنے کے بعد سر پھرٹھیک موجاتا ہے۔ میں نے فرشتوں سے کہا، سُب الله عَزْدَ عَلَ بیكون ب؟ انہوں نے عُرض کی ،آگے تشریف لے چلئے (مزید مناظر دِکھانے کے بعد) فِر شتول نے عُرض کی ، که بیبلاهنص جوآب ملی الله تعالی علیه داله دستم نے دیکھا بیدوہ تھا جس نے قران باُد کر کے چھوڑ دیا تھااور**کر ُ ض** نَمازوں کے **قانت سو** جانے کا عادی تھا اِس کے ساتھ بد برتا وُقِيا مت تک ہوگا۔ (مُلَعُص از:صحیح بعادی ج۲ص۲۳)

میصے میں اسلامی مماتیو! قران یاک کی آیت یا آیات یاد کرنے کے

بعدغفلت ہے بھلا دینے والے اور بالخُصوص سُستی کے باعِث فجر کی نَما ز کیلئے نہ

اُٹھنے والوں کیلئے مقام عبرت ہے۔اب جان بوجھ کرنماز قطعا کردینے والی ایک

عورت کےعذابِ قَبر کا درُ دناک داقِعہ مُلا حُظہ ہو۔ پُنانچہ

قَبر میں آگ کے شعلے

ایکض کی بہن فوت ہوگئی۔ جب اُسے دَفن کر کےلوٹا تو باد آیا کہ

خوصان مصطفى (السادة من الميدادية) تم جهال يمي بوجي بردُرُود بر موتبهارادُرُود بحتك بيتاب -

رقم کی تھیلی قَبْر میں گرگئی ہے پُنانچہ قبرِستان آ کرتھیلی نکالنے کیلئے اُس نے اپنی بہن کی قبشر کھود ڈالی! ایک دل ہلا دینے والامنظراُس کے سامنے تھا، اُس نے دیکھا کہ بہن کی فَبْرِ میں آگ کے شعلے بھڑک رہے ہیں! پُنانچہ اُس نے بُوں تُو ں فَبْرِیر مِتَى ڈالی اورصدے سے پُورپُورروتا ہوا مال کے پاس آیا اور یو حیصا، پیاری امّی جان! میری بہن کے اعمال کیسے تھے؟ وہ بولی بیٹا کیوں یو چھتے ہو؟ عُرْض کی، میں نے اپنی بہن کی قَبْر میں آم کے کے فعلے بھڑ کتے دیکھے ہیں۔ "بٹن کر مال بھی رونے لگی اور کہا،'' افسوس! تیری بہن **نماز ب**یں سُستی کیا کرتی تھی اور مما فرقصا كرك يره ماكرتي تقى - " (مُكاشَفَةُ القُنُوب ص ١٨٩ دار الكتب العدمية بيروت) میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! جب قصا کرنے والوں کی ایسی الی سخت سزائیں ہیں توجو بدنھیب سرے سے ممازی نہیں بڑھتے ان کا کیا آنجام ہوگا!

اگر نَماز پڑھنا بھول جائے تو۔۔۔۔؟

تا جدار رسالت ، فَهَنْشا وِنُبُوَّت، پیکرِ مجودوسخاوت، سرا پارَحْمت ، محبوب ربُ العزِّت عَـــرُّوَ حَــلُ وصلَّى الله تعالی علیه داله وسلَّم نے ارشا وفر مایا ، جو**قما ز**سے سو

فو مان مصطفع : (ملى الدَمَال عدد الدِيمَ) جم ن جمي ول مرتبعُ الدون مرتبط مددد باك يره ما أسد قيامت كون يرى شفاعت سلم كيد

جائے یا **مجول** جائے توجب یا دآئے پڑھ لے کہ ؤہی اُس کا **وقت** ہے۔

(صحيح مسلم ج ١ص ٢٤١)

منیر فقہائے کرام رَحِمَهُ اللهُ تعالى فرماتے ہیں ، سوتے میں یا بھولے سے

نَمَا زَقَعَا ہُوگئ تو اُس کی قَصَا پڑھنی **فرض ہے ا**لبتہ قَصَا کا گناہ اس پرنہیں مگر بیدار

ہونے اور بادآنے پراگر و فت مروہ نہ ہوتو اُسی وقت پڑھ لے تا خیر مکروہ ہے

(عالمگیری جاس ۱۲۶)

مجبوری میں ادا کا ثواب ملے گا یا نہیں؟

ا تکھے نہ کھلنے کی صُورت میں نَمازِ نَجْرِ' 'قَطا' ' ہوجانے کی صورت میں

''ادا'' کا ثواب ملیگایانہیں۔ اِس ضِمَن میں میسرے آف اعلیٰ حضوت ،اِمام

أهلسنت، ولى نِعمت،عظيمُ البَركت،عظيمُ المَرْتَبت، بروانةِ شَمْع

رِسالت ،مُجَدِّدِ دين ومِلَّت، حامي سنَّت ، ماحِي بِدعت، عالِم شَرِيْعَت ،

پيرِ طريقت، باعثِ خَيْر وبَرَكت، حضرتِ علامه مولينا الحاج الحافِظ

فو**جان مسطّفه** : (ملی افد تعالی ملیده البرمنم) جمعه برؤ رُود پاک کی کثر ت کرو بے شک ریتمهارے لئے طہارت ہے۔

القاری الشّاہ امام اَحمد رَضا خان عدره الرحن فنّاوی رضویہ هم ۱۲ اپر فرماتے ہیں،"ر م**ااوا** کا ثواب مِلنا ہداللّٰہ عَـــزُوَ حَــلُ کے اختیار میں ہے۔

صَلُواعَلَى الْحَبِيب! صلّى اللّه تعالىٰ على محمّد

تُوبُوا إِلَى اللّه! اسْتَغُفِرُ اللّه
صَلُوا عَلَى الْحَبِيب! صلّى اللّه تعالىٰ على محمّد

رات کے آخری حصّہ میں سونا

مُماز کا وَتت داخِل ہو جانے کے بعد سوگیا پھر وثت نکل گیا اور مُماز قصا ہوگئ تو قَطْعاٰ کَنهگار ہوا جبکہ جا گئے پرض<mark>ی اعتماد</mark> یا جگانے والاموجود نہ ہو بلکہ فخر میں وُخولِ وَقت سے پہلے بھی **مونے** کی اجازت نہیں ہو سکتی جبکہ اکثر حصّہ فوجان مصطفع : (طهدة من عداد عم) بس خ كاب على في دروياك ألما في بسبك برانام أس كاب عما كماريكا فرخ اس كيا استعاد كرة ريس مك

رات کا جا گئے میں گز را اور ظنِ غالب ہے کہ اب سو گیا تو وَ قت میں آنکھ نہ کھلے

(بهايشرايت حصه ٤ ص ٤٤ مدينة المرشد بريلي شريف)

رات دير تك جاگنا

مير المام المام الم المام الم

بھرے اجتماعات وغیرہ ہیں رات دیرتک جاگئے کے بعد سونے کے سبب اگر نمانے فی اندیشہ ہوتو ہے۔ نیت اعتفاف مسجد میں قیام کریں یا وہاں سوئیں جہاں کوئی قابلِ اعتماد اسلامی بھائی جگانے والاموجود ہو۔ یا اِلارم والی گھڑی ہو جہاں کوئی قابلِ اعتماد اسلامی بھائی جگانے والاموجود ہو۔ یا اِلارم والی گھڑی ہو جس سے آنگھل جاتی ہو گرایک عکد دگھڑی پر بھروسہ نہ کیا جائے کہ نیند میں ہاتھ لگ جانے سے یا یوں ہی خراب ہوکر بند ہوجانے کا اِمکان رُہتا ہے، دو یا اِسب طَر ورت زائد گھڑیاں ہوں تو بہتر ہے۔ فُقہائے کرام دَجمعهُ اللّهُ تعالٰی فرماتے میں ''جب بیا تد بیشہ ہوگئے کی مُمارُ جاتی رہے گی تو بلا خرورت ورت والی مورت فرائے۔

أر رُدُّالُمُحتَار، ج٢، ص٢٧ ملتان) (رَدُّالُمُحتَار، ج٢، ص٢٧ ملتان)

و خوجان مصطفی (سلی اند منال بایدالدمنم) جمه بر کثرت به ذود پاک پرموب شکه تهمارا جمه پروزود پاک پرمیانتهار به کتابوں کیلیسفزت ب

اداءُ قَضا اور واجِب أَلَاعاده كي تعريف

وس چیز کابندوں کو تھم ہے اُسے وَ قَت میں بجالانے کو اوا کہتے ہیں اور وَ قَت میں بجالانے کو اوا کہتے ہیں اور معنار معہ ردالمحنار ہے مس ۱۹۳۷) اور وَ قَت جُم ہونے کے بعد عمل میں لانا قصا ہے (درمعنار معہ ردالمحنار ہے مس ۱۹۳۷) اور اگر اس تھم کے بجالانے میں کوئی خرابی بیدا ہوجائے تو اس خرابی کو دُور کرنے کیلئے وہ عمل دوبارہ بجالانا اِعاوہ کہلاتا ہے اپیدا ہوجائے تو اس خرابی کو دُور کرنے کیلئے وہ عمل دوبارہ بجالانا اِعاوہ کہلاتا ہے (درمعنار معہ ردالمحنار ہے مسلم کر مُمازِ فَجُر ' جُمُعه مُماز قَصانہ ہوئی بلکہ ادا ہے (درمعنار معہ ردالمحنار ہے صرح میں وَقت کے اندرسلام میمر نالازی ہے ورنہ مُمازنہ ہوگی (بھار شریعت

حضه ٤ ص ٤ مدينة السرشد بريلي شريف بلاغذُ رِشَرُعى بَمَا فرقَها كرد يناسخت گناه هم اس برفرض م كداكس كي قعما پڙھاور سچ ول سے تو بہ بھی كرے تو بہ يا حَبّے مقبول سے إن شاء الله غرور حل تاخير كا گناه مُعاف ہوجائيگا (در معندار مده دول سے مندار ج٢ ص ٢٦١) تو بدأسي وقت صحح م جبكه قصا پڑھ لے اس ١٦١) كوادا كئے بغير فو حان مصطفيط (ملىدتنان درداراتم) جوجمع بايك مرتبة زود ثريف باحتاب الشقائ أس كيك ايك قيراط اجراكه تا المديما وجناب

توبہ کئے جانا تو بنہیں کہ جوئما زاس کے ذیے تھی اس کونہ پڑھنا تو اب بھی ہاقی ہے

اور جب گناه سے بازندآ یا تو توبه کہال ہوئی؟ (درمعتار معه ردالمعتار ج٢ص ٢٦٨)

امنی در روز این این میروز این این میروز این این میروز این میروز این میروز این میروز ا

پيكرِ جود وسخاوت،مر**ا يا رَحمت محبوبِ ربُّ العرِّ ت** عَـدُّوَ حَلَّ وصلَّى الله تعالى عليه واله وسلّم

نے ارشادفر مایا، کہ گناہ پر قائم رہ کرتو بہ کرنے والا اپنے ربّ عَزَّوَ هَلُ ہے مُنْهِ فَهِا (

لعنى غداق) كرف واليكى طرح ب- (خَفُ الإبعان حليث ١٧٨٧-٥ ص ٤٣٦ دارالكتب العلمية بروت)

توبہ کے تین رُکُن ھیں

صندرُ الْأَفَاضِل حضرت علا مستيد محد تعيمُ الدّين مُر ادآبادي عليه رحة

الهادی فرماتے ہیں،'' توبہ کے تین رُکن ہیں: (۱) اِعِیر انبِ بُرم (۲) مُدامت (۳)

عزْمِ مَرِّكَ _الرَّمُناه قابِلِ تَلا في ہے تو اُس کی تَلا فی بھی لازِم _مَثَلُا تارِکِ صلوٰۃ

(يعنى مُمَازِرُك كردي وال) كى توبه كيليّ مُمَازوں كى قعما بھى لازِم ہے۔

(تَرْالِنُ العرفانُ ص ارضا اكيلْمي بمبئي)

فوهان مصطفيا (ملي مذه الدارية) بحديدة روشريف يدهواللهم يرومت يميع كار

سوتے کو نَماز کیلئے جگانا واجب ھے

کوئی سور ہا ہے یا نماز پڑھنا بھول گیا ہے تو جےمعلوم ہے اُس پر

وابعب ہے کہ سوتے کو جگادے اور بھو لے ہوئے کو یا دولا دے (بھار شریعت حصه

٤ ص ٤٤) (ورند كَنهُار هوكًا) يا در ب إجكانا يا يا دولانا أس وَ قت واجِب موكًا جَبَد ظَنِ

غالِب ہو کہ ریئماز پڑھے گاور نہ واجب نہیں۔

فَجْر كا وقُت هو **گيا أَتُ**هو!

ملے بیٹے اسلامی بھائیو! خوب مدائے مدیندلگائے یعی سونے

والوں کوئماز کیلئے جگاہے اور وُ حیروں نیکیاں کمائے۔ دعوتِ اسلامی کے مَدَ نی

ماحول میں فجر کے لئے مسلمانوں کو جگانا **صدائے مدین**دلگانا کہلاتا ہے، **صدائے** ۔

مدیندوادِب نہیں، نَما زِفْر کے لئے جگانا کارِثواب ہے جو ہرمسلمان کو حب موقع کرنا جاہئے۔ صَدائے مدینہ لگانے میں اِس بات کی احتیاط ضَروری ہے کہ کسی

مسلمان کوایذاءنہ ہو۔ حکایت: ایک اسلامی بھائی نے مجھے (سگِ مدید علی

منوصة وصطفها (منل الشاقة المطيد البريتم المبين البيم المام) برؤرود ياك برحوة محد برمك برحوب شك شي تمام جهانول كوب كارمول الول-

عنہ کو) بتایا تھا،ہم چند اسلامی بھائی می**گا فون** پر فجر کے وَتَت صعدائے مدین الگاتے ہوئے ایک گلی ہے گز رے ۔ایک صاحب نے ہم کوٹو کا اور کہا کہ میرا بختے رات بھرنہیں سویا ابھی ابھی آنکھ گلی ہے آ ب لوگ **مُیگا فون** بند کر دیجئے۔ہم کوان صاحیب پر بڑاغصّہ آیا کہ نہ جانے کیبامسلمان ہے،ہم نُماز کیلئے جگارہے ہیں اور یہ اِس نیک کام میں رُ کاوٹ ڈال رہاہے! خیر دوسرے دن ہم پھر**صدائے مدینہ** لگاتے ہوئے اُس طرف جانگلے توؤ ہی صاحب پہلے سے گلی کے نُسٹے ٹر برغمز وہ کھڑے تھے اور ہم ہے کہنے لگے ، آج بھی بچیہ ساری رات نہیں سویا ابھی ابھی آ نکھ لگی ہے اِس لئے میں یہاں کھڑا ہو گیا تا کہ ہاری گلی سے خاموثی سے گز رنے کی آپ حضرات کی خد مات میں درخواست کروں۔ اِس سے معلوم ہوا کہ بغیر میکا فون کے صدائے مدینداگائی جائے۔ نیز بغیر میکا فون کے بھی اس قَدُ ربُلند آوازیں نہ نکالی جائیں جس سے گھروں میں نَماز و تلاوت میں مشغول إسلامي بهنوں بضعيفوں ،مريضوں اور بچو ں كوتشوليش ہويا جواوّل وقت ميں يڑھ

قضا نَمازون كاطريقه

فومان مصنام (ملی اند تال ملیدالباسل) جو مجمع بردونی جمعه دُرُ و درشریف براهے گایس آنیامت کے دن اُس کی شفاعت کروں گا۔

کرسور ہاہواُس کی نیند میں خلل پڑے۔ اور اگر کوئی مسلمان اپنے گھر کے پاس معدائے مدینہ لگانے سے روکے تو اُس سے ضد بُخت کرنے بجائے اُس سے معدائے مدینہ لگانے سے روکے تو اُس سے ضد بُخت کرنے بجائے اُس سے معانی ما نگ کی جائے اور اس پڑھسن ظن رکھا جائے کہ یقینا کوئی مسلمان نئماز کیلئے جگانے کا مخالف نہیں ہوسکتا۔ اس بچارے کی کوئی مجبوری ہوگی۔ اگر بالفرض وہ بے نئمازی ہوتو بھی آپ اُس پڑخی کرنے کے بجاز نہیں ، کسی مناسب و قت پر انتہائی نئمازی ہوتو بھی آپ اُس پڑخی کرنے کے بجاز نہیں ، کسی مناسب و قت پر انتہائی نئمازی ہوتو بھی آپ اُس پڑخی کرنے کے باندر محافیل میں نئمی اذائی فجر و غیرہ کے بولاوہ بے موقع نیز محکوں یا مکانوں کے اندر محافیل میں انسیکر استعمال کرنے والوں کو بھی ایپ اُسیکر استعمال کرنے والوں کو بھی ایپ ایپ گھروں میں عبادت کرنے والوں ، شیرخوار بچوں اور سونے والوں کی ایڈ اوکو پیش نظر رکھنا جا ہے۔

حُقُوقِ عامّه کے اِحساس کی حکایت

معامّلہ میں بے حدثم اللہ کا خیال رکھنا بَہُت ضَر وری ہے، ہمارے اُسلاف اس مُعامَلہ میں بے حدثم اللہ ہُوا کرتے تھے پُتانچ پہ محسجمةٔ اُلاسسلام حضرت ِسیّدُ ناامام غد من مصعندا (من الله حال عدار الله) جمل في مجمد يرد و أيثحه دومو ياروُ زود ياك يزعا أس كه دوموسال كم كنا وتعاف بول محسد

محدغُز الی علیہ رحمۃ اللہ الوالی فرماتے ہیں ،حضرت ِسیِّدُ نا امام احمد بن حنبُل رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ^ ^ .

کی خدمت ایک شخص کئی سال سے حاضِر ہوتا اور عِلْم حاصِل کرتا۔ ایک بار جب آیا

ا تو آپ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اُس سے مُنہ پھیر لیا۔اُس کے بَاِصِر اداستِفسار پرفر مایا، اینے مکان کی دیوار کے سڑک والے کونے برتم نے گارالگا کر قد آ دم (یعنی انسانی قد

ے برابر)اس کو آ گے بڑھا دیا ہے حالانکہ وہ مسلمانوں کی گزرگاہ ہے۔ یعنی میں تم

سے کیے خوش ہوسکتا ہوں کہتم نے مسلمانوں کاراستہ تنگ کردیا ہے! (احباء العلوم

جه ص ۹۹ دار صادر بسروت بهال وه لوگ بهی عبرت حاصل کریں جوای گھرول

کے بائمر چبوتر ہے وغیرہ بنا کرمسلمانوں کاراستہ تنگ کرتے ہیں۔

جلد سے جلد قَضا کر لیجئے

جمس کے ذِمّہ قُصائمازیں ہوں اُن کا جلد سے جلد پڑھنا واجِب ہے مگر بال بچوں کی پرورِش ادرا پی ضَر دریات کی فَر اہمَی کے سبب تاخیر جا ئز ہے۔للہٰ دا کار وبار بھی کرتار ہے اورفُر صت کا جو وَ تَتْ ملے اُس میں قَصا پڑھتا رہے یہاں

تك كه پورى بوجا كيس _ (درمختار معه ردالمحتار ج٢ص٢٦)

(10)

۔ ﴾ پندر مان مصطفیا (سل اللہ تعالیٰ علیدالد بنم) اُس فنل کی ناک فاک آلود ہوجس کے پاس میراذ کر بواوروہ جھے پر وُرُود پاک نہ پڑھے۔

چْھپ کر قَضاء کیجئے

قصائمازیں چھپ کر پڑھئے لوگوں پر (یا گھروالوں بلکے قریبی دوست پر بھی)

إِسْ كَا إَظْهِارِنْهُ سَيْحِيِّ (مَثَلُا بِيمِت كَهِا سَيْحِيُّ كَهْ مِيرِيَّ آجْ كَيْ فَجْرِ قَصَاء مُوكَّى يا مِين قَصاء عِمري كرر مِا

مول وغيره) كمركناه كاإظبار بهي مكرو وتحر يمي وكناه مع (رداسه ماري من ١٥) للبذا

ا گرلوگوں کی موجود گی میں وُرْر قَصا کریں تو تکبیرِ فُنُوت کیلئے ہاتھ نہ اُٹھا ئیں۔

جُمْعَةُ الْوَداع مِينِ قَضائع عُمري

رَمَى صَانَ الْسَمِبَارَكَ كَآخِرَى جُسمُعِه مِينَ بَعْضَ لُوكَ بِإِجَاعِتَ

قَضائِ عُمر ی پڑھتے ہیں اور یہ بچھتے ہیں کہ عمر جرکی قصا کیں اِسی ایک نمازے ادا

مو گئي بير باطِل محض ب-ر ماحود از شَرْعُ الزَّرقاني علَى اَلمَواهِبُ المُدُنِيَّة ج٧ ص ١١٠

دارالمعونة بدون مفرسر شبير حكيم الأمت حضرت مفتى احمد يارخان عليدهمة الحنّان فرمات

میں، جُمعَةُ الْوَداع كِظهروعَهُرْكِ درميان باره رَكْعَت نَفْلُ دُودُورَ تُعت كَ

مد مان مصطفیا (سلی اختمان بلی البیاش) جس کے پاس میراؤکر اداده و مجمع پرؤرُ دوشریف شریخ صافولوگول عمل دو تجوس ترین مختص ہے۔

نیت سے پڑھے۔اور ہرز گئت میں سور ۃ الفاتِحہ کے بعدایک بار ایکۃ المگرسی
اور نین بار' قُل ہُو اللّٰہ اُحَد''اورایک بار سُور ۃ الفلق اور سور ۃ النّاس پڑھے۔
اس کا فائدہ یہ ہے کہ جس قدر مُما زیں اِس نے قصا کر کے پڑھی ہونگی۔ان کے قضاء
کرنے کا گناہ اِن شاء اللّٰہ عَرْدَ حَلْ مُعاف ہوجائے گا یہ بیں کہ قصائما زیں اس
سے مُعاف ہوجا کیں گی وہ تو پڑھنے سے ہی اوا ہونگی۔ (اسلامی زند گی ص ۱۰۰)

عُمر بھر کی قَضا کا حِساب

جس نے بھی نئمازیں ہی نہ پڑھی ہوں اوراب تو فیق ہو کی اور **قدمائے** عُ**مری** پڑھنا چاہتا ہے وہ جب سے بالغ ہوا ہے اُس وَ تت سے نَماز وں کا حساب لگائے اور تاریخ بُلُوغ بھی نہیں معلوم تو اِحتیاط اِس میں ہے کہ عورت **نوسال** ک عُمر سے اور مَر د **باروسال** کی عُمر سے نَماز وں کا حساب لگائے۔

(ماحود از فتاوي رضويه ج٨ص٤ ٥١رضافاؤ ندّيشن لاهور)

. پخر میں مصطنع (مثل اند قدن عیدالد بنم) جس کے پاس میراذ کر ہوااوراً س نے دُرُ ووٹٹر نیف نہ پڑھا اُس نے جٹا کی۔

قَضا کرنے *میں* ترتیب

قعهائےئم ی میں یوں بھی کر سکتے ہیں کہ پہلے تمام فبحریں ادا کرلیں پھرتمام ظہر کی نمازیں اِسی طرح عَصْر ُمغرِ باورعشاء۔

(فتاوي قاضي محان مع عالمگيري ج١ص٩٠١)

قَ**ضا نے عُمری کا طر یقہ**(^{حَق}ٰ)

قطعا ہرروز کی ہیں رَگئتیں ہوتی ہیں۔ دُوفرض فَجْرِ کے عَجَارِظهر ، خَارِعَفر ، س تین مغرِ ب ، حَیارعِشاء کے اور تین وِتر۔ نیت اِس طرح کیجئے ، مَثَلُ قوس**ب**

ے بہلی فر جو جھ سے قصا ہوئی اُس کوادا کرتا ہوں'۔ ہرنمازیس

ای طرح نِیَّت سیجے جس پر بکثرت قصائمازیں ہیں وہ آسانی کیلئے اگر یُوں بھی ادا کرے تو جائز ہے کہ ہر رُگوع اور ہر سُجُدہ میں تین تین بار سُنجیلی رُدِنی الْحَظِ نیمِ، سُبجی زُرِدِتی الْاعلیٰ

کی جگہ چِرْف ایک ایک بار کہے۔ مگریہ ہمیشہ اور ہر طرح کی نماز میں یا در کھنا جا ہے کہ

جب رئوع میں پورا کہنے جائے اُس وقت سُہ خنَ کا ''سِین''ثُر وع کرےاور جب عظیم کا'' میم '' ختم کر چکے اُس وقت رُکوع ہے سراٹھائے ۔اِسی طرح سُجدہ میں بھی کرے۔ایک تخفیف تو بیہوئی اور دوسری بیہ کہ فرضوں کی تیسری اور کچوھی رُکھت میں اَلْحَمْد شویف کی جگه فَقَط'' سُبْحْنَ اللهِ '' تین بار که کر رُکوع کرلے۔ مگر وِثْر کی . تينوں رَنْعَتوں مِیں اَلْحَمْد شریف اور سُورت دونوں ضَر وریزهی جائیں۔ تیسری تُخفیف یہ کہ قعد وُ اُخیرہ میں تَشَهُٰ یہ لیمنی اَلتَّےجیّات کے بعد دونوں وُ رُودوں اور دعا کی جگہ مِنْ اللَّهُوَّ صَلَّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَاللَّهِ كُهُ رَر سلام پھیردے ^{کے} چوتھی تخفیف ہے کہ وٹر کی تیسری رَکعیَت میں دعائے قُنُو ت ک جگه اللهٔ اکبر که کرفقط ایک باریا تین بار رکت اعتقی کی سمیے -

(مُلَخَّص از فتاوي رضويه ج٨ص٥٥ ارضافاؤنديشن لاهور)

نَمَازِ قَصْر كَى قَضاء

أكر حالتِ سفر كى قَصائما زحالتِ إقامت مين برهيس كيتو قَصْر بى

خد مدن مصطفی (صل الله تدال المدار الدار من علم ميرا يك بارو رووياك يرد هاالله تعالى أس يروس وحتيس بهيجاب ..

پڑھیں گے اور حالتِ اِ قامت کی قُصا نَما زسفر میں قَضا کریں گے تو پوری پڑھیں گے بعنی قُصر نہیں کریں گے۔ (دالسحنارج ۲ ص ۲۰۰)

زَمانهء ارْتداد كي نَمازيي

وَ وَ مَعَاذَالله عَرُوحَلُ مَوْتَد بوكيا بهراسلام لايا توزمانه إرتِداد مِوْتُكُ بِهُ اللهِ عَرُوحَانه إرتِداد

کی نمازوں کی قطانہیں اور مُرتکہ ہونے سے پہلے زمانہ اسلام میں جو نمازیں جاتی رہی تھیں اور مُرتکہ ہوئے اور کا جاتی ہوئے اور کا تھیں اور کی تصادادِ جارہ میں جاتی ہوں کا تعلق میں جاتی ہوں کا تعلق کی تعلق کا تع

بچّہ کی پیدائش کے وَقْتُ نَماز

دائی (MIDWIFE) نماز پڑھے گی تو بچپر کے مرجانے کا اندیشہ ہے، نماز قصا کرنے کیلئے بیمنڈ رہے۔ ﴿ رَدُّالْمُدْحَادِ ، ج ٢ ص ٥١٩) بچپر کا سربائمر آگیا باشد شد کئے گئے۔

اور نفاس سے پیشتر وَ فَت نُشَم ہو جائیگا تو اِس حالت میں بھی اُس کی ماں پر نَماز پڑھنا فَرْض ہے نہ پڑھے گی تو گنہگار ہوگی۔(رَدُّاكُمُ حَسَار، ج٢ ص٥٩٥) سی برتن

میں بچہ کا سرر کھ کر جس ہے اُس کو نقصان نہ پہنچے نماز پڑھے مگر اس ترکیب سے

فوجان مصطفيا : (ملي شال بليدال منم) ديسة مرطين (جيه ام) و دُود ياك باحق بحي يام ويا يشك بمن تمام جافون كرب ادمول بول -

پڑھنے میں بھی بچنے کے مرجانے کا اندیشہ ہوتو تاخیر مُعاف ہے۔بعدِ نفاس اِس نَماز کی قضار ہے۔ (رَدُّالُمُحتَاد،ج٢ص٩٩ ٥لنان)

مریض کو نَماز کب مُعاف ھے؟

اییامریض کهاشارہ ہے بھی نَما زنہیں پڑھ سکتااگریہ حالت پورے چھ وثت تک رہی تو اِس حالت میں جونمازیں فوُت ہو کیں اُن کی قضاواجِب نہیں۔

(رُدُّالُمُحتَّار،ج٢ص٥٧٠ ملتان)

عُمر بھر کی نَمازیں دوبارہ پڑھنا

جس کی نما زوں میں نقصان و کراہت ہووہ تمام مُرکی نَمازیں پھیرے

تو اچھی بات ہے اور کوئی خرابی نہ ہوتو نہ جا ہے اور کرے تو فجر وعَصْر کے بعد نہ

پڑھے اور تمام رِ گُغتیں بھری پڑھے اور وِر میں فُنُوت پڑھ کر تیسری کے بعد قعدہ کر

کے، پھرایک اور ملائے کہ چارہ وجا کیں۔ (رَدُّالْمُحتَار، ج اص ۱۳۸ ملتان)

ہیں۔

قضائمازون كاطريقه

فر مان مصطفى الاسلى من الدار من الدار من المراجع من المراجع المراجع الله تعالى أس يروس ومس يحيق بال

قَضا كَالَفُظ كَهِنا بِهُولِ كِيا تُو؟

الميم عليم المام المستنت مولينا شاه احمد رضا خان مليده الأطن فرمات

ہیں، ہمارے عکماء تَصْرِی خُو ماتے ہیں، قصابہ نیتِ اداادرادا بہ نیتِ قضاد ونوں سیح

(فتاوي رضويه ج٨ص ١٦١ رضا فاؤنڈيشن مركز الاولياء لاهور)

نوافل کی جگہ قَضائے عُمری پڑھئے

قعا نَمَازين نوافِل سے اَہمٌ ہیں یعنی جس وَقَت نَفْل پڑھتا ہے اُنہیں

چھوڑ کراُن کے بدلے قصا کیں پڑھے کہ ہوٹی اللِّمَه ہوجائے البتہ تراوت کاور

باره رئتين سُفَتِ مُوَ تَكده كى نه جِهور عـ (رُدُّالمُه مَار،ج اص ۵۳۱ مان)

فَجْر و عَصْر کے بعد نوافل نہیں پڑہ سکتے

نماز فجر اورعَصْر کے بعد وہ تمام نوافِل ادا کرنے مکر وہ (تح یم) ہیں

جوقَصْداً ہوں اگرچہ تَسجِيةُ الْمسجِد ہوں،اور ہروہ نَماز جوغیر کی وجہ سے لازِم مَثَن ` مار میں سینی فارسی کے دیر کم میں میں ہوں۔

ہو۔مَثَلُا مَذْ رادرطواف کے نوافِل اور ہرؤ ہنما زجس کوٹشر وع کیا پھراسے تو ڑ ڈالا ، گھھ نہ میں ہیں تقدیم سے سے

اگرچه وه فجر اورعشر کی سنتیں ہی کیول نہ ہول۔ (در مخارج اس ۱۱)

. ﴿ هُوهِ عِنْ مِصطَفِياً (ملى الله تالى بدوليه منم) جمل نے مجھور دسم متبدؤ أو ودياك پڑھا اللہ تعالیٰ أس پرسور مثنی ناز ل فرما تا ہے۔

قعما کیلئے کوئی وقت مُعَیَّن نہیں عمر میں جب پڑھے گابّے ہی المبدِّ ہے۔ حارَگا _گرمُطلُوع وَغُرُوب اورزَ وال کے وَ قت نَما زنہیں پڑھ سکتا کہ ان وثنوں میں

جائی**ها بر سون و مروب اور روان سے و ست مار بین پر طاستا کہ ان و یون** نم**از جائز نبین۔** (علامگبری ج ا ص ۱۳۶ کونته)

ظُهر كى چُار سنتيى رُه جانيى تو كيا كرے؟

بعد چارز کعت سفّتِ قبلیہ ادا سیجے کنانچہ سرکار اعلیٰصر ت رحمۃ اللہ تعالیٰ علی فرماتے ہیں، ظمیر کی پہلی عیار سنتیں جو فرض سے پہلے نہ پڑھی ہوں تو بعد فَرْض بلکہ فد ہب ارْجَجَ (یعنی پندیدہ تر میں پندیدہ تر مین یہ بعد یہ کے پڑھیں بشرطیکہ مُنوز وقتِ ظُیر

ِ إِنَّى هُوبِ (مُلَخُصاًفتاوى رضويه ج٨ص ١٤٨ رضا فاؤنديشن مركز الاولياء لاهور)

فَجُر كِي سُنّتين رَه جائين توكيا كرك؟

سنتیں بڑھنے ہے اگر فَجُرُ کی جماعت فوت ہوجانے کا اندیشہ ہوتو بغیر و م

رڑھے شامِل ہو جائے۔ گرسلام پھیرنے کے بعد پڑھنا جائز نہیں۔ ُطلُوعِ آفا۔ کے کم از کم ہیں مِئٹ بعد سے کیکر **خسٹھو کہ گہو ہی** تک پڑھ لے کہ

مُسْکُنُ ہے۔ (ماخوذاز فتاوی رضویه جدید ج۷ ص ٤٢٤، بھار شریعت حصه ٤ ص ١٢)

کیا مفرب کاوتَّت تھوڑا سا ھوتاھے؟

مغرب کی نماز کا وقت نُمر وبِآ فتاب تا ابتِدائے وَقَتِ عشاء ہوتا ہے۔ به وتتُ مقامات اور تاریخ کے اعتبار سے گھٹتا بڑھتا رَہتا ہے مَثْلًا باب المدینہ کراچی میں نظامُ الاوقات کے نقشے کےمطابق مغرب کا وَقت کم از کم ایک گھنٹہ 18 مِنْك بهوتا ہے۔۔فَقَهَائے كرام رَحِمَهُمُ اللَّهُ تعالٰی فرماتے ہیں، وروز أبر (یعنی جس دن بادُل حیلائے ہوں اس) کے سوامغر ب میں ہمیشہ بعجیل (یعنی جلدی) مُستَحَب ہےاور دُورَ کُعَت ہے زائد کی تاخیر مکر و وَتنزیبی اور پغیرغذُ رسفر ومرض وغیره اتنی تاخیر کی که ستارے گتھ گئے تو مکروہ تُحریمی ۔ (درمیعت رج ۱ ص ۲۶۶، عالم گیری ج۱ ص ٤٨) **سرکا را ملیخ**ضر ت امام ابلسنّت مولینا شاه احدرضاخان علیدهمة ارْمٰن فرماتے ہیں، اِس (یعنی مغرِب) کا وَ ثَنْتِ مُسَخَب جب تک ہے کہ ستارے خوب ظاہر نہ ہو جا ئیں ،اتنی دیر کرنی کہ(بڑے بڑے ستاروں کے علاوہ) چھوٹے چھوٹے ستارے بھی جیک آئیں مکروہ (ٹُحری) ہے۔

(فتاوي رضويه ج٥ص٥٥ رضا فاؤنديشن لاهور)

 (Y_{ξ})

عفروعشاء سے پہلے جور گفتیں ہیں وہ سُقَتِ غیر مُوَّ تَحدہ ہیں ان کی قصانہیں۔

تَراوِيح كَى قَضاء كَا كِيا خُكُم هے؟

جب تَر اوت کوت ہوجائے تو اُس کی قَصاءِ نہیں، نہ جماعت سے نہ تنہا اوراگر کوئی قَصاء کر بھی لیتا ہے تو بیے جُدا گانۂ نُفُل ہوجا ئیں گے، تَرَ اوت کے سے ان کا تعلَّق نہ ہوگا۔ (مُلَعَّصا دُرِّ مُعناد ج ١ ص ١١)

نَماز کا فذیہ

جن کے رِشتے دارفوت ہوئے ہوںوہ اِس مضمون کا ضَرورِمطالَعَه فرمائیں

میت کی مُرمعلوم کر کے اِس میں سے نُوسال عورَت کیلئے اور باُرہ سال مُرْد کیلئے نابالغی کے نکال دیجئے۔ باقی جتنے سال بچے ان میں حساب لگائے کہ کتنی مذت تک وہ (لیمیٰ مرحوم) بے نُمازی رہایا بےروزہ رہا، یا کتنی نُمازیں یاروزے اس کے ذمّہ قَضَا کے باقی ہیں۔ زیادہ سے زیادہ اندازہ لگا لیجئے۔ بلکہ چاہیں تو نابالغی کی عمر کے بعد بَقیّہ تمام مُرکا حساب لگا لیجئے۔اب نی نُمازایک ایک صَدَقهُ فِطر خیرات کیجئے۔ایک صَدَ قَهُ فِطْر کی مقدارتقریباً دُوکلو بِچاس گرام گیہوں یااس کا آ ٹایااس کی رقم ہے۔اورا یک دن کی چھنما زیں ہیں یانچ فرض اورا یک وتر واجب ۔مَثُلُا دُوکلو پچاس گرام گیہوں کی رقم 12 رویے ہوتو ایک دن کی نمّاز وں کے 72 رویے ہوئے اور 30 دن کے 2160 رویے اور بارہ ماہ کے تقریباً 25920 رویے ہوئے ۔اب کسی منیت یر • ۵ سال کی نَمازیں باقی میں توفِدْ سَدادا کرنے کیلئے 1296000 رویے خیرات کرنے ہوں گے۔فلہر ہے ہرفخص اتنی قم خیرات كرفى كى إستِطاعت (طاقت) نبيس ركهما ، إس كيليّ عُكُمات كرام رَحِمَهُمُ اللهُ نعالى نے شُرْعی جِلیہ ارشادفر مایا ہے ۔مَثَلُا وہ30 دن کی تمام نَمازوں کی فَدیہ کی نتیت سے 2160 رویے کسی فقیر (فقیر اور مسکین کی تعریف س ابست فرمایئے) کی مِلک کردے، یہ 30 دن کی نَماز دن کافیڈ بیادا ہو گیا۔اب وہ فقیر یہ رقم دینے والے ہی کوہبَہ کر دے(یعنی خَفّے میں دیدے) یہ قبضہ کرنے کے بعد پھر فقیر کو 30 دن کی نما زوں کے فڈیے کی نتیت سے قبضہ میں دے کراس کا مالیک بنا دے۔اِس طرح کوٹ پھیر کرتے رہیں یوں ساری نماز وں کافیڈ بیادا ہو جائے گا(ما حوذ از فتساوی بیزازیه معه عالمگیری ج ٤ ص ٦٩) **30 وان کی رقم کے ذَریاجے ہی**

جیلہ کرنا شُرِ طنہیں وہ تو سمجھانے کیلئے مِثال دی ہے۔ اگر بالفرض 50 سال کے فیڈ یوں کی رقم موجود ہوتو ایک ہی بار کوٹ ہتھیر کرنے میں کام ہوجائے گا۔ نیز فظر ہ کی رقم کا حساب بھی گیہوں کے موجودہ بھاؤسے لگانا ہوگا۔ اِی طرح فی روزہ بھی ایک صَدَ قدُ فِطْر ہے (در معدار معد ردالمد حدارج میں ایک صَدَ قدُ فِطْر ہے (در معدار معد ردالمد حدارج میں ایک میڈ یہ اواکرنے کے بعدروزوں کا بھی اِی طریقے سے فیڈ یہ اواکر سکتے ہیں۔ غریب و امیر سبھی فید میہ کا جیلہ کر سکتے ہیں۔ اگرؤر ثاایت مرکومین کیلئے میمل کریں تو یہ میت کی زبر دست الداد ہوگی، اِس طرح مرنے والا بھی اِن شدائے اللہ عزوم لوش کے بعض لوگ کے بوجھ سے آزاد ہوگا اورؤر ٹا بھی اُجروثو اب کے ستحق ہوں گے۔ بعض لوگ مسجد وغیرہ میں ایک قرآن پاک کائٹ کہ دے کرا پنے مین کومنا لیتے ہیں کہ ہم نے مرحوم کی تمام نمازوں کافیڈ بیاداکردیا بیان کی غلط نہی ہے۔

(تفصیل کیلئے دیکھئے:فتاویٰ رضویہ ج۸ص۸۶ ارضا فاؤنڈیشن لاھور)

مرحومہ کے فڈیہ کا ایك مسئلہ

عورت کی عادت ِحیض اگر معلوم ہوتو اس قَدَّر دن اور نہ معلوم ہوتو ہر

مہینے سے تین دن نو برس کی تمر سے مشتقیٰ کریں مگر جتنی بارخمل رہا ہو مدّتہِ خَمْل کے مہینوں سے ایّا م حَیض کا اِسْتِناء نہ کریں۔عورت کی عادت در بار وُ نِفاس اگر معلوم ہوتو ہجھٹیں کہ نِفاس اگر معلوم ہوتو ہجھٹیں کہ نِفاس معلوم ہوتو ہجھٹیں کہ نِفاس کے لئے جانب اقل (کم سے کم) میں شُرْعاً ہجھ تقدیم نہیں ممکن ہے کہ ایک ہی مئٹ آ کرفور آیاک ہوجائے۔ (ماحوذ از فتاوی رضویہ جرص ؟ ٥ ارضا فاؤنڈیش لاھور)

100 كوژوں كاجيله

عیمے بیٹھے اسلامی بھائیو! نماز کے فِد یہ کا جِیاد میں نے اپی طرف سے نہیں لکھا۔ رحیلہ مُرْی کا جواز قرآن وحدیث اور فِقْدِ حَفَی کی مُعْتَمر کُتُب میں موجود ہے۔ چنانچ حضرت سِیّدُ نالیّو ب علی نَیِنساؤ عَلَیْهِ الصّلوةُ وَالسّلام کی بیاری کے زمانے میں آپ علیالصلاۃ والسلام کی ذوجہ محتر مدرض الله تعالی عنها ایک بارخدمت سرا پاعظمت میں تا خیرے حاضر ہو کیں تو آپ علیالصلاۃ السلام نے تتم کھائی کہ ' میں تذکر سے مورس کوڑے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عزوجل نے انہیں سو تندر کرست ہو کرسوکوڑے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عزوجل نے انہیں سو تندر کرست ہو کرسوکوڑے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عزوجل نے انہیں سو تندر کرست ہو کرسوکوڑ ہے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عزوجل نے انہیں سو تندر کرست ہو کرسوکوڑ ہے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عزوجل نے انہیں سو تندر کرست ہو کرسوکوڑ ہے ماروں گا' جست حتیاب ہونے پراللہ عن ہوئے۔ نیا ہوئے کے انہیں سوئے۔ نیا ہوئے کو ماروں گا میں ہے :

وَخُلْ بِيلِ لَكُ ضِغْتًا فَاضْرِبْ ترجَمه كنزالايمان: اورفر الله اینے ہاتھ میں ایک جھاڑو لے کر اِس يِّهٖ وَلا تَعَنَّثُ

(بارہ ۲۳ ع ۱۳) سے مارد سے اور تم نہوڑ۔

" عالمگیری" میں جیلوں کا ایک مستقل باب ہے جس کا نام" کتاب

الحِيل''ہے پُٹانچہ'' عالمگیری کتاب الحِیل'' میں ہے،''جوجیلہ کسی کاحق مارنے یا

اس میں شُبہ پیدا کرنے یا باطِل سے فَریب دینے کیلئے کیا جائے وہ مکردہ ہے اور

جوجیلہ اس لئے کیا جائے کہ آ ؤ می حرام سے نی جائے یا حلال کو حاصِل کر لے وہ ا تجھا ہے۔ اس قتم کے حیلوں کے جائز ہونے کی دلیل اللہ عز دجل کا پیفر مان ہے:

وَخُذُ بِيكِ لِكَ ضِغُتُكُا فَأَخْرِبُ لَهُ عَنَا لابِمان : اور فرايا كه

این ہاتھ میں ایک جھاڑ ولیکراس سے يّه ولا تحنث

(باره ۲۳ ع ۱۳) مارد اورتم نتوز -

(فتاویٰ عالمگیری ج۱ص۳۹)

کان چَھید نے کا رَواج کب سے ھوا؟

جیلے کے جُواز پر ایک اور دلیل مُلا کظہ فرمائے پُٹانچہ **معفرت** سیّدُ نا

عبداللهابن عبّاس رض الله تعالى عنها ہے روایت ہے کہ ایک بار حضرت وسیّد ثنا سارہ

گائے کے کوشت کا تھنہ

اُمُ الْمُوُ وَمِنِين حَفِرتِ سَبِدَ تُناعا بُعْهِ صِدَ يقدر ض الله تعانى عنها سے روایت کے دوجہاں کے سلطان ، سرور ذیثان ، مجوب رَحْمان عَزْوَجَلُ وَمَنَى الله تعالى عليه واله وسَلَمَ کی خدمت میں گائے کا گوشت حاضر کیا گیا ، کسی نے عُرض کی ، بیا گوشت حضرتِ سَبِدَ تُنا ہر رہ و من الله تعالى عنها پر صَدَقَه مُواتھا۔ فر مایا: هُو لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةً لِعِنَى مِي اللهِ مَا اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ ا

زکواۃ کا شُرعی حیلہ

راس مدیث یاک سے صاف ظاہر ہے کہ حضرت سیّد ثنا بریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنها جو كه صَدَ قد كي حقد ارتهي ان كوبطور صَدَ قد مِلا موا كائے كا كوشت اگر چدان كے حق میں صَدَ قد ہی تھا مگران کے قبضہ کر لینے کے بعد جب بارگاہِ رسالت میں پیش كيا گيا تھا تو أس كاحكم بدل گيا تھا اوراب وہ صَدَ قد ندر ہاتھا۔ يوں ہى كوئى مستحق شخص ز کو ۃ اپنے تُبضہ میں لینے کے بعد کسی بھی آ دمی کو تحفۃ دے سکتا یا مسجد وغیرہ کیلئے بیش کرسکتا ہے کہ مذکورہ مستحق شخص کا بیش کرنااب ز کو ۃ نہ رہا، ھدیّہ یاعُطِیّہ ہوگیا۔ فُقُهَا ے کرام رَحِمهُ مُداللَهُ مَعدالي وَكُوه كَا شُرِئ حِيلِه كرنے كاطريقه يوں ارشاد فرماتے ہیں، **زکوۃ** کی رقم مرُ دے کی تجہیز و تکفین یامسجد کی تعمیر میں صَرْف نہیں کر سکتے كةَ مَليك فقير (يعنى فقير كو ما إلك كرنا) نه يا في تنفي _ا گران أمور مين خُرْج كرنا جا بين تو إس كاطريقة بدي كفقيركو (زكوة كى قم كا) ما لِك كردين اوروه (تعمير معجد وغيره مين) مر فرے،إس طرح ثواب دونوں کو ہوگا۔ (دالمحتارج ٣٤٣ ص٣٤٣)

100 افرادكوبرابربرابرتواب ملي

میر مسجد المامی معاتبوا دیکها آپ نے اکفن دفن بلکتعمر مسجد

میں بھی حیلۂ شُرُ عی کے ذَرِیعہ زکوۃ استِعمال کی جاسکتی ہے۔ کیونکہ زکوۃ تو فقیر کے حق میں تھی جب فقیر نے تُبضہ کرلیا تو اب وہ مالک ہو چکا، جوچاہے کرے ۔حیلۂ شُرُ عی کی بُرُ کت ہے دے دالے کی زکو ہ بھی ادا ہوگئی اور فقیر بھی مسجد میں دیکر ثواب کا حقد ار ہوگیا۔ فقیر شَرُ عی کو حیلے کا مسئلہ بے شک سمجھا دیا جائے ۔حیلہ کرتے وقت ممکِن ہوتو زیادہ افراد کے ہاتھ میں قم پھر انی حاہے تا کہسب کوثواب ملے مَثْلًا حِیلہ کے لئے فقیرشُر عی کو ۱۲الا کھر دیے زکو ۃ دی ،قبضہ کے بعد وہ کسی بھی اسلامی بھائی کو تُحْفَةُ دیدے بہجمی قبضے میں کیکر کسی اور ما لک بنادے، یوں بھی یہ نیٹ تواب ایک دوسرے کو مالیک بناتے رہیں ،آخر والاسجدیاجس کام کے لئے جیلہ کیا تھا اُس کیلئے دیدے توان ش**ا**ءَ اللّٰه عَزْوَ حَل سَبْحِي كوباره باره لا ك*اروپے صَدَ قَد كرنے كا* ثواب مليگا_پُتانچيه حضرتِ سیّدُ نا ابوہُر برہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ، تاجدارِ رسالت، شَہنْشاہِ نُبَّ ت ، پیکر بُو دوسخاوت،مرایا رَحُمت مجبوبِ ربُّ العزّ ت عُسزَّوَ خيل وصلَّى الله تعالى واليوسلَّم نے ارشا وفر ماما، ،اگرسوہاتھوں میںصَدَ قد گزراتوسب کُوؤییا ہی تُواب ملیگا جیسادینے والے کیلئے ہےاوراس كَابُرُ مِيْنَ يَجْهِ كُلُ فَهُ مِوكَى - (تاريخ بغداد ج٧ص ١٣٥ دارالكتب العلمية بيروت)

فقير كى تعريف

فقیروہ ہے کہ (الف) جس کے پاس کچھ نہ پچھ ہو گرا تنا نہ ہوکہ نوساب کو گئی جائے (ب) یا نِصاب کی قَدَر تو ہو گراس کی حاجب اَصُلِیّہ (یعیٰ فَر دریاتِ زندگی) میں مُسُنَفُ رَق (گھر اہوا) ہو۔ مَثَلُّ رَہِ کامکان خانہ داری کا سامان 'سُو اری کے جانور (یا اسکوڑیا کار) کاریگروں کے اُوزار 'پہننے کے کپڑے خدمت کیلئے لونڈی نفلام عِلمی شُغل رکھنے والے کے لیے اسلامی کتا ہیں جواس کی خرورت سے زائد نہ ہوں (ج) اِسی طرح اگر مُد یُون (یعنی مُقروض) ہے اور قرین (یعنی مُقروض) ہے اور ایس کی نیا گئی نِصا میں ہول۔ (دوالمدحدار ج میں ہول۔ (دوالمدحدار ج میں ہول۔ (دوالمدحدار ج میں ہول۔ (دوالمدحدار ج میں ہول۔

مسكين كى تعريف

مسكين ده ہے جس كے پاس كھ نہ ہو يہاں تك كد كھانے اور بدن بھي نے كيلئے اس كائتان ہے كہ لوگوں سے سُوال كرے اور اسے سُوال حلال ہے فَقِيركو (يعنى جس كے پاس كم از كم ايك دن كا كھانے كيلئے اور پہنے كيلئے موجود ہے) بھير فكر ورت ومجودى سُوال حرام ہے اور ايسوں كے سُوال پر وينا مجى

۱۰۰ و کی۔ سرو سکھ۔

(قضائمازون كاطريقه

نا جا تزيء وين والا كمن كا ربوكا . (فتاوي عالمكيري ج ١ص١٨٥)

میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! معلوم ہواجو بھ کاری کمانے پر قادر ہونے

کے باؤ بُو دبلا غُر ورت ومجبوری بطورِ پیشہ بھیک مانگتے ہیں گُنہگار ہیں اورایسوں

کے حال سے باخبر ہونے کے باؤ بُو دان کو دینے والے اپنی زکو ۃ وخیرات ہر باد
کرنے کے ساتھ ساتھ مزید گئیرگار بھی ہوتے ہیں۔

طالب غیصہ سنگ

طالبِ غِمِدِينظ بغرج بغرج

یہ رِ سالہ پڑھ کر دوسرے کو دیدیجنے

شادی تمی کی تقریبات ،اجتماعات ،اعراس اور جلوسِ میلا د وغیرہ میں مکتبۃ المدینہ کے شائع کردہ رسائل تقسیم کر کے تواب کما پئے ، کا ہوں کو بہ

نتیب ثواب تخفے میں دینے کیلئے اپنی دُ کانوں پر بھی رسائل رکھنے کا معمول بنایئے ،اخبار فروشوں یا بچوں کے ذَیہ لیے اپنے مخلہ کے گھر گھر میں وقلہ وقلہ سے

بدل بدل کرسٹنوں بمرے رسائل ہینچا کرنیکی کی دعوت کی دھومیں مجائے۔

صَلُّوا عَلَى الحبيب! صَلَّى الله تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد

ز کو ہ کے حیلے کے بارے میں سُوال وجواب

س: زكوة كاجيله كسطرح كياجائ؟

ن: کسی نقیرِ شُرعی کویاس کے وکیل کو مالِ زکو قاکا الک بنادیا جائے وہ اس مال پر فتضد کرنے کے بعد کسی بھی کام (مجد کی تغیر دغیر ہ) میں صَرِ ف کر دے۔ یول زکو قادا ہونے کے ساتھ ساتھ دونوں تواب کے بھی حقدار ہوں

ئے۔ان شاءَاللہ عَزُو خلّ۔

س: آپ نے ارشاد فرمایا،' شَرُعی فقیریااس کے وکیل' یہاں وکیل سے کیائر ادہے؟ نت: اس سے مُر ادوہ فخص ہے جسے شَرُعی فقیر نے اپنی زکو ۃ وُحُول کرنے کی

اجازت دی ہویااس نے خوداس سے اجازت لی ہو۔

•: تو کیا وکیل بھی مال زکوۃ پر قبضہ کرنے کے بعد اسے کسی بھی کام میں صُرِ نے کرنے کا اختیار رکھتاہے؟

البته اگراسے فقیر نے اجازت دی ہویااس نے خود اجازت لی ہوتو

كرسكتاہے۔

عن: فقیر شُرعی نے وکیل کواپنی زکو ہ کسی بھی کام میں مَرْ ف کرنے کی اجازت دی تھی یا اُس نے خود ہی لی تھی ،تو کیا اِس صورت میں بھی شُرعی فقیر کو مال زکو ہیں قبضہ کرناضر وری ہوگا؟

ن : جی نہیں کیونکہ وکیل کا قبضہ مُسوَ تِحسل (یعنی وکیل کرنے والے) کا ہی قبضہ کہلائے گا۔

و: چندہ دیتے یا حیلہ میں رقم لوٹاتے وقت دینی یا ساجی کام کیلئے گئی اختیارات دینے کے مُخیاط الفاظ بتادیجئے۔

ح: مَمْلُا دَعُوتِ اسلامی کو چندہ دیتے یا حیلہ میں رقم لوٹاتے وقت دینے والا یہ کیے،'' بیرقم دعوتِ اسلامی جہاں مناسب سمجھے وہاں نیک وجائز کام میں ''د خرچ کرے''۔

🕶 : ﴿ کَثْرَى فَقیراہے وکیل کوز کو ۃ لیکر دعوتِ اسلامی کے مَدَ نی کاموں میں صَرْ ف

کرنے کے گلی اختیارات کس طرح دے؟

ج : وکیل کو کہنے کے مُختاط الفاظ یہ ہیں،'' آپ میرے لئے جوبھی زکو ۃ وُصول کریں اُسے دعوتِ اسلامی (یافلاں فردیا دارہ) کو یہ کہہ کو دے دیجئے کہ ہے رقم

دعوت اسلامی (یافلان فردیاداره) جہال مناسب سمجھے نیک و جائز کام میں خرج سے

-2

س: چندهؤ صول کرتے وقت کہنے کے مُتاط الفاظ بھی بتادیجے؟

ج : ﴿ زَكُوهُ ، فِطر ه ،صَدَ قاتِ واجِه مِن كُلِّي اختيارات لينے كى حاجت نہيں كيوں كـ

إس ميں کسی بھی مستحق کو مالِک بنانا شُرط ہے لوگ اگر چپه زکوۃ وغیر و بظاہر

دعوتِ اسلامی کودیتے ہیں مگر در حقیقت وہ دعوتِ اسلامی والوں کواپنی ز کو ۃ یا

فطرہ کا''وکیل''بناتے ہیں لے لفذادعوتِ اسلامی میں اِس کا ٹٹر ٹی جیلہ کیا جاتا

ہے جس کا طریقہ اور محتاط الفاظ بیان کئے گئے ۔صدقات واجبہ کے ملاوہ جو انفاظ بیان کئے گئے ۔صدقات واجبہ کے ملاوہ جو

چنده دیا جاتا ہے وہ نفلی صدقہ کہا! تا ہے۔ پُٹانچہ ایسا چندہ نیز قربانی کی کھال

لیتے وقت مُحّناط الفاظ یہ بیں ،'' آپ اجازت دید بیخے کہ آپ کا چندہ یا گھال

تج کراس کی رقم دعوت اسلامی جہاں مناسب سمجھ وہاں نیک و جائز کام میں

خرج کر کرے۔'' دینے والا'' بال'' کہددے یا کسی طرح بھی آپ کی بات سے
مُحْفِق ہوجائے تو کافی آسانی ہوجائے گی ور نداس کھال سے ملنے والی رقم یا

چندہ کو دعوت اسلامی کے معروف طریق کارے مطابق ہی خرج کرنا ہوگا ، اگر

سی اور نیک کام میں خرج کردیا تو تا وال اداکر ناہوگا یعنی جتنی رقم خرج کی ور بہت اور

پلے سے اوٹانی پڑے گی ۔ بہتر یہ ہے کہ مذاورہ خماحہ رسید پر لکھ دیا جائے اور
جو چندہ یا کھال دیے اُس کو پڑھا یا یا پڑھ کرنے نادیا جائے۔۔

س: توان کس طرح ادا کرنا ہوگا؟

نے: جس نے کھال یارقم وغیرہ دی اسے دیدے یااس کی اجازت سے خریج کر ہے۔
• اس طرح توبیک مشکل ہوجائیگ کیونکہ چندہ وغیرہ دینے والوں کا تو یہ جینا

ا كثر دشوار بوتا ہے، كوئى آسان حل بتاياد يجئے _

ج: بنانہ ہونے کی صورت میں اتنی رقم جوتا وان کی مکہ میں ادا کی جائے اسے انہیں

کاموں میں صُرْ ف کریں جن کے لئے چندہ وغیرہ دینے والوں نے کہاتھا۔

کُشُلاً مسجد کے لئے چندہ لیااوراہے مدرّئہ میں خرج کردیا تواب اتن رقم اپنے یلنے سے مسجد میں خرچ کی جائے۔

س :اگرکسی نے خاص مدرُسُہ کے نام پر چندہ دیا تو کیاوہ دعوتِ اسلامی کے دیگر مَدَ نی کاموں میں خرچ کر سکتے ہیں؟

ج: نہیں کر سکتے ۔اگر کیا تو تاوان دینا ہوگا۔ کیوں کہ شُرعی مسکلہ یہ ہے کہ جس تر (یعنی کام) کیلئے چندہ لیا اُسی میں خُرج کرنا ہوگا۔ خُسی کہ اگر نے گیا تو جس نے

(یہ میں میں کی میں برق کرنا ہوگا ہے کہ ایک کرنا ہوگا ہے کہ ایک کہ ایک کرنا ہوگا ہے کہ ایک کرنا ہوگا ہے کہ ایک

دیا اُس کولوٹا ناہوگایاس کی اجازت سے خُرْج کرناہوگا۔

مئلہ معلوم نہ ہونے کی وجہ ہے اگر کسی نے زکو ۃ یافطر ہ بغیر جیلہ ''ٹری کے غیر مجرز نواز میں فعل ملر خرج کے شاہدہ تا ہو گہاتہ کا اعلی تا ہے ؟

مُصْرُ فِ ذِكُوةَ وفِطر ه مِين خرج كردُ الا موتواس كي توبه كا كياطر يقد ؟

ن : یہاں جہائت عُذر نہیں۔ اِس نے کیوں نہیں سیھا! اگر بالفرض کس نے زکو ہیا

فِطره کی رقم کو بغیر جیلهٔ شُرعی غیرِ مَصرَ ف زکو ة و فِطر ه میں خرج کر ڈ الا تو تو بہ

کیساتھ ساتھ اُس پر تاوان بھی لا زِم آئیگا۔ مُثَلُّ کسی نے دعوت اِسلامی کوز کو ۃ

دی اور ذمته دار نے بغیر دبیلہ کئے وہ رقم تعمیرِ مسجِد یامُدَرِّس کی تخواہ یا ای طرح

کے نیک کاموں میں صُرْ ف کردی تو اُسے پنے سے ندکورہ طریقۂ کار کے مطابق

تاوان ادا کرنا ہوگا اگرچہ وہ رقم لا کھوں بلکہ کروڑوں کی ہو، اِس کیلئے فَقَط تو بہ کافی نہیں ۔

جس نے لاکھوں روپے کی زکو ہ بغیر حیلے کے غیرِ مَصرَ ف میں فر ف کردی ہو

اوراب مسئله معلوم ہوا ہومگر تا وان دینے کیلئے رقم نہ ہوتو کیا کرے؟

قریر شرعی ہے تو اُس پر جتنا تاوان ہے اُتی زکوۃ دیکراُس کواس کا مالک بنادیا جائے اب جن جن کی زکوۃ کا اس نے غلط استِعال کرڈ الا تھا مذکورہ طریقۂ کارے مطابق تاوان ادا کرے۔

اگر کسی سید نے یہ بھول کی ہوتو کیا کرے کیوں سید سے تو زکو ہ کا حیلہ بھی نہیں

كريكتغ؟

ج: اگر کسی سیّد نے مُثَلًا زید کے ایک لا کھروپے کی زکو ۃ غیرِ مُصْرَ ف میں مُثرَف کے دری تو اب بطور چندہ ملی ہوئی زکو ۃ کا کسی فقیرِ شُرعی کو مالِک بنادیا جائے۔ فقیرِ شُرعی قبضہ میں لینے کے بعد وہ رقم سیّد صاحب کی نَذُر کرویں ،اب سیّد صاحب قبیر شرعی قبضہ میں لینے کے بعد وہ رقم سیّد صاحب کی نَذُر کرویں ،اب سیّد صاحب قبضہ کر لینے کے بعد اُس رقم کو تاوان کے مَدّ میں ادا کریں اور تو بہ بھی کریں۔

: دعوتِ اسلامی بَہُت ہی ہوئی تحریک ہے ، ہر فردمسائل سے واقف نہیں ہوتا ، ان مُعاملات کاحل کیا؟

ج: جس پر زکوۃ فرض ہوئی اُس پر یہ بھی فرض ہے کہ زکوۃ کے ضروری مسائل سیکھے اِسی طرح چندہ لینے والے پر بھی بیفرض ہے کہ اِس کے ضروری مسائل سیکھے۔ ہر ذمتہ دار کو چاہئے کہ جس کو چندہ یا قربانی کی کھالیس وُصول کرنے کی اجازت ویں اُس کی تربیت بھی کریں۔ س : کیاجیلہ کرتے وقت تُمْر عی فقیر کو بیہ کہہ سکتے ہیں کہ داپس دے دینا ،ر کھمت

ييماد ييره: م

ج : نه کیج - بالفرض ایسا که بھی دیا تب بھی زکوۃ کی ادائیگی وحیلہ میں کوئی فُرْق نہیں پڑے گا کیونکہ صَدَ قات وزکوۃ اور تُحفہ دینے میں اِس قتم کے شَر طِیّۃ اَلفاظ فاسِد ہیں۔اعلیٰ حضرت ،امام اہلِ سنّت مُجَدِّدِدین وملّت

مولا ناشاه احمر رضاخان عليه رحمة الرحن فقاوي شامي رئساب السريسة ، بساب

''رُمُورُف ج٣ص ٢٩٣مطيوعه ملتان ڪيحوالے سے فرماتے ہيں،'' بِهداور ضدَ قد شرطِ فاسد سے فاسد نہيں ہوتے''

(فقاد کی رضویه ج ۱۰ ص ۰۸ ارضافا ؤنڈیشن مرکز الا دلیاءلا ہور)

س: محضورا گر جیله کرنے کیلئے شرعی فقیر کوز کو قادی جائے اور وہ لے کر رکھ

لے تو کیااب اس سے نیک کاموں کیلئے بجر انہیں لے سکتے؟

ح: نہیں لے سکتے ، کیونکہ اب وہ مالک ہو چکا اور اسے اپنے مال پر اختیار

س: اِس طرح پھر جیلہ کیسے کروایا جائے؟ اگر کسی فقیرِشُر کی نے لاکھوں روپے کی زکو ۃ رکھ لی تو؟ اس کا کوئی مَدَ نی طریقہ ارشاوفر مادیجئے۔

ج: اس کاایک بہترین طریقہ بیان کرتے ہوئے میرے آ قااعلیٰ حضرت رہۃ الله تعالى عليه ارشاد فرمات بين، 'إس كالب خليش طريقه بيرے كه مَثَلًا مال ز کو ہے بیں رویے سید کی نُذُر یا مبجد میں صُرْ ف کیا جا ہتا ہے کسی فقیر عاقِل بالغ مُصْرُ ف زكوة كوكوئى كيرُ المثُلُ ثوبي ياسيرسواسير عُلّه وكهائ كه یہ ہم شمصیں دیتے ہیں مگر مفت نہ دیں گے بین روپے کو بیجیں گے ، یہ رویے شمصیں ہم اینے پاس سے دیں گے کہ ہمارے مطالب میں واکیس كردو، وه خواه خواه راضي موجائے گا، جانے گا كه مجھے توبہ چيز يعني كيڑايا غلّه مفت ہی ہاتھ آئے گا ،اب نیج شُرعی کر کے ہیں رویے بدنیت زکو ۃ اسے دے، جب وہ قابض ہوجائے اپنے مطالبہ ثمّن (یعنی اب وہ قیت

جوخرید وفروخت کے وقت طے ہوئی تھی فقیرے اپنے مُطالَبہ میں) لے لے، اوّل تو وہ خود ہی دے دے گا کہ ہمرے سے اسے ان روپوں کے اپنے یاں رُہنے کی اُمّید ہی نہ تھی کہ وہ گرہ سے جاتا سمجھے،اسے توجر ف اِس کیڑے یا غُلّے کی اُمّید تھی وہ حاصل ہے توا نکار نہ کرے گااور کرے بھی تو يه جرأ وحمين لے كدوه إس قدراس كامكد يون (بعني مُقروض) إاور دائن (لعنى قرض دين والا) جب اين درين (قرض) كى جنس سے مال مَد يُون یائے توبالا تفاق ہاس کی رضا مندی کے لےسکتا ہے،اب بدرویے لے کربطورِخو دُنڈ رِسیِّد با بِنائے مسجد میں صُرْ ف کردے کہ دونوں مُر ادیں حاصل میں '۔ (فقاوی رضویہج ۱۰ ص ۱۰۸ رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاءلا ہور)

ع: برائ مهربانی بیان کرده طریقه آسان اُلفاظ میں بتاد یجئ:

ج: فَضَانِ رضائے عُرْضَ كرنے كى سُعْى كُرتا ہوں ، زَيدِ عَاقِل و بالغ جو كه نقيرِ شَرْعى ہے اس سے ایک لا كھروپے زكوة كا جيله كروانا ہے مگر خَدْشہ ہے كه یہ تم رکھ لے گاتو اُس کومَٹُا ایک قلم دکھا کرایک لا کھروپے میں اُدھار ہے ۔
د بجئے اور دہ قَلَم پر قبضہ کرلے اِس طرح وہ آپ کے ایک لا کھروپے کا مقروض ہوگیا ،اب اُس کو ایک لا کھروپے زکوۃ کا مالِک بناد بجئے اِس کے بعد اُس سے ایک لا کھروپے قرضہ کا مطالبہ کیجئے۔ بِالْفرض وہ نہ بھی دے تعد اُس سے ایک لا کھروپے قرضہ کا مطالبہ کیجئے۔ بِالْفرض وہ نہ بھی دے تو چھین کر بھی لے سکتے ہیں۔

و: جیله کرنے کیلئے فقیرِ شرعی نه ملے تو کیا کسی صاحب نِصاب کو فقیرِ شُرعی بنانے کا بھی کوئی جیلہ ہے؟

ن : کی ہاں ، بہت آسان طریقہ ہے۔ مُثَلُّ زیدِعاقِل و بالِغ کے پاس حاجتِ اَصِلِیّہ سے زائد 50000 پاکتانی روپے ہیں اور یوں وہ صاحبِ نصاب ہے۔ اِس کواتنا قرضدار بناد بیجئے کہ وہ صاحبِ نِصاب نہ رہے مُثَلُّ اُس کوایک عِطْر کی شیشی ایک لاکھ روپے میں بیچ د بیجئے وہ شیشی پر قبضہ کر لینے کے بعد فقیرِ شُرعی ہوگیا کیوں کہ اگر وہ اسے یاس موجود ساری رقم بھی

دے دے تب بھی 50000 کا مقروض رہے گا۔اب اس کوایک ساتھ جتنی بھی زکو ہ کی رقم مُثَلًا بچاس لا کھرویے دے دیجئے وہ قبضہ کرنے کے بعدجا ہے تو اس میں سے قرضہ بھی ادا کر دے اور بقیّہ رقم بھی کسی کام میں صَرِ ف کرنے کیلئے دیدے۔ یوں بھی ہوسکتا ہے کہ مَثَلًا وہ ساری ہی رقم مسجد بنانے کیلئے دیدے اور پھرآپ جا ہیں تو اُس کا قرضہ مُعاف کردیجئے بلکه اُس کے زکو ۃ کی رقم پر قبضہ کرتے ہی آپ نے اپنا قرضہ مُعاف کر دیا تب بھی کرج نہیں ۔ بیہ یا درہے کہ قرض کی ادائیگی یامُعافی کی صورت میں زید مٰدکورا گرچہ حیلہ کی رقم لوٹا چکا ہوغنی یعنی صاحب نصاب رہے گا۔ کیوں کہ قرض کی اوائیگی یا معانی کی صورت میں اس کے یاس حاجت اصلیہ سےزائد 50000 روپے پہلے کے موجود ہیں۔ اگراس کے ساتھ مزید جیلے کرنے ہوں تو اس کومقروض ہی رہنے دیجئے یا بار بارمقروض بناتے رہے۔

(قضائمازون کاطریقه

س: کیاچیک کے ذَریعے جیلہ ہوسکتاہ؟

ج: جنهيں _ چيك كؤر يعزكوة ادانهيں موسلق _

س : بینک سے بڑی رقم نکلوانے اور پھرشَر عی فقیر کے قبضہ میں دینے پھراس

ہے لے کر دوبارہ بینک میں جمع کروانے میں ترج ہوتا ہے کوئی آسان حل ارشاد فرماد بیجئے۔

ج: شرعی نقیراینے نام سے بینک میں اتنی رقم کا اِکا وَنٹ کھلوالے کہ وہ شری فقیر ہی رہے پھر جتنی رقم زکو ق کی مدمیں اسے دینی ہے اسے بتا کر اس

۔ کےا کا ؤنٹ میں جمع کروادی جائے۔ جب وہ رقم اس کےا کا ؤنٹ میں

جمع ہوگئ تو زکوۃ ادا ہوگئ اب وہ کسی بھی نیک یا جائز کام میں صَر ف

كرنے كے لئے كسى كواختيار ديدے۔اس كى تفصيل پہلے بيان ہو چكى۔

فرون من الله تعالى عليه والدوسة "جوت ير مون كر باؤ مو وجمعرا المراب الم

(سُنَن ابی داؤد ج ٤ص ١٣٣٢ حديث ٤٨٠٠)

الُحَمْدُ يِلْهِ رَبِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلَّهُ وَالسَّكَلَامُ عَلَى مَيْدِ الْمُعْمِلِينَ اَمَا اَبِنَدُ فَأَ عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْمُ يِسْمِ اللَّهِ الرَّمْنِ الرَّحِيمُ

بچّے کو محبِد میں لانے کی حدیث میں ممانعت ھے

سلطان مدينة قرارقلب وسينه فيض تخيينه مصاحب معطر بسينه، باعثِ نزولِ سكينه ملى الله تعالى على والدوم كا

فرمانِ با قرینه به مجدول کو بخچول اور بالگلول اورخریدو فروخت اور جھڑے اور آواز بلند

لر فے اور حُد و دقائم کرنے اور تلوار کھینچنے ہے بچاؤ۔ (ابنِ ماجہ جاس ۱۹۰۵، حدیث ۷۵۰)

ایسا بچه جس سے نجاست (یعن پیٹاب وغیره کردیے) کا خطرہ هو اور

پاگل کو مسجدکے اندر لے جانا حرام ھے اگر نَجاست کا خطرہ نه

ھو قبو مكروہ. جولوگ جوتياں مسجد كے اندر لے جاتے ہيں ان كو إس كا خيال ركھنا جاہئے كہا گر

نَجاست بكى بوتوصاف كرليس اورجوتا پہنے مجدمیں چلے جانا باد بی ہے۔ ربار شریت حصد ۴ور ۹۲)

مجدیں بچ یاپالگ (یاب بوش یاجس پرجن آیا بوابواس) کو مجدمیں دم کروانے کیلئے بھی لانے

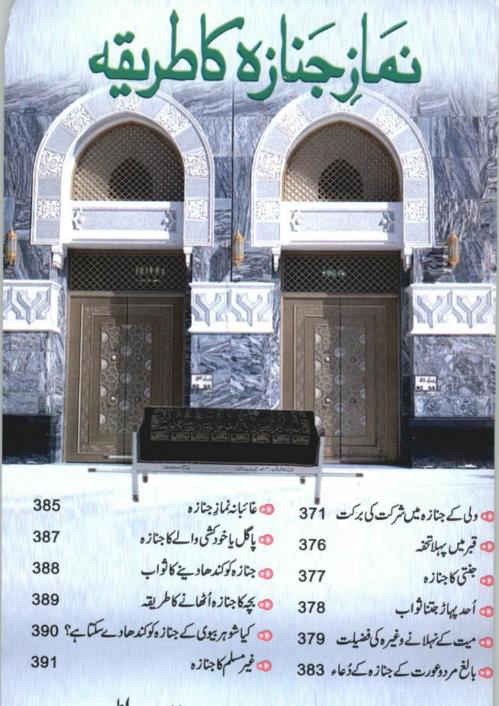
ک شریعت میں اجازت نہیں۔ بچے کواچھی طرح کپڑے میں لپیٹ کربھی نہیں لا سکتے اگر آپ بچے وغیرہ ۔

کومسجد میں لانے کی بھول کر چکے ہیں تو برائے کرم! فوراً توبہ کر کے آئندہ نہ لانے کا عبد کیجئے۔ (جوالیے وقت پرچہ پڑھے کہ بچائی کے ساتھ ہے قود دخواست ہے کہ فوراً بچہ کومجد

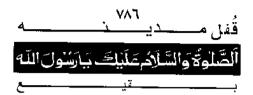
ے باہر لے جائے اور تو بہ بھی کرے ہاں فنائے مسجد میں بچے کولا سکتے ہیں جبکہ مسجد کے اندرے نہ

رُّرَنايِرِّے) ١٩ رمضان العبارك ١٩٦٦ه





وَرَقِ اللَّئِے _ _ _





اس رسالے میں ۔۔۔۔

اليت 🚓

﴿ جَنِّتَى كَاجِنَازُه ___ ﴿ جَنَازُه كَى وَعَا كَمِنِ وَمِنْ كَاجِنَازُه ___
 ﴿ قَا نَبَانِهُ مَا لِإِجِنَازُه ___
 ﴿ فَوَرْثُى وَالْحَلِيْمَازُه ___
 ﴿ كَافِرَى جِنَازُه ___
 ﴿ يَجِهَاجِنَازُه اللهَ الْحَلَامُ اللهَ يَحِيهُ الْمِنْ اللهُ
ورق الليئے ۔۔۔۔

مُتوجِّه هوں

جنازہ کے انتِظار میں جہاں لوگ جَمْع ہوں وہاں اِس رساله سے دَرُس ديـکر خوب ثواب کمايڻے۔نيز اپنے مَرحُومین کے ایصال ثواب کیلئے ایسے موقع پر جنازہ کے جُلُوس ميں يا تعزيَّت كيلئے جَمُع ہونے والوں میں یه رسالے تقسیم فرمايد

اَلْحَمْدُ بِلْدِرَتِ الْعُلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيْدِ الْمُرْعَلِينَ أمًا كِنْدُ فَأَ عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْعِ فِسْمِ اللَّهِ الرَّخَيْنِ الرَّحِيْع

شیطان لاکھ روکے یه رساله (۲٤ صَفَحات) مکمَّل پڑھ لیجئے

ا ن شَاءُ اللَّه عَرَّوَجَلَّ اس كے فوائد خود هي ديكھ ليس كے۔



دُرُودِ شريف كي فضيلت

نبیول کے منطان ، رَحْمتِ عالمیان ، سردارِ دُو جہان محبوبِ رَحْن

عَــزُوَجَـلُ وصلَى الله تعالى عليه واله وسلم كا فرمانِ بَرَ كت نشان ہے،'' جو مجھ پر ايك بار دُرُو د

شریف بڑھتا ہے اللہ تعالیٰ اُس کے لئے **ایک قیراط** اَجْرلکھتا ہے اور قیر اط**اُحُد**

يارُ جناب (مُصَنَف عبد الرزاق ج ١ ص ٥١ حديث ١٥٢ دارالكتب العلميه ببروت)

صلِّي اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمّد صـــلُّوا عــلى الــحبيب! غ**ر مان مصطَفياً** : (سل الشغال عليه المهانم) جوجه يرورود باك يرا هنا بعول كمياوه جنت كاراسته بحول كميا_

ولی کے جنازہ میں شرکت کی بَرَکت

ایک شخص حضرت ِسبِدُ ناسَرِ ی سَقطی رحمة الله تعالی علیہ کے جنازہ میں شریک

موا- رات کوخواب میں حضرت سیِّدُ نائسِرِی سَقطی رحمة الله تعالی علیه کی زیارت ہو کی تو

يوجها، ما فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ يعنى اللهُ عَزُوجَنَّ فِي كَمَاتُه كَيامُعامَله

فرمایا؟ جواب دیا، الله عسز وَجَسلَ نے میری اور میرے جنازے میں شریک

ہوکرئما زِ جنازہ پڑھنے والوں کی **مغیر ت**فر مادی۔اُس نے عُرْض کی ،یاسیّدی! میں

نے بھی **آپ** کے جنازے میں شریک ہوکر نَما زِ جنازہ پڑھی تھی ۔ تو **آپ** نے ایک

فهرس نکالی مگرائش شخص کا نام شامِل نه تھا، جبغورے دیکھا تو اُس کا نام **حاہیہ** پر

موجووتها (شَرْحُ الصُّدورص ٢٧٩دارلكتاب العربي بيروت)

عقید ت مندوں کی بھی مغفرت

حضرت سِيدٌ نابِشرِ حافى عليه رُحْمةُ اللهِ الكالمي كوانتِقال كے بعد قاسم بن

<mark>خد مدن مصطفیا</mark> : (ملی اندنال علیه الدینم) حمل نے مجھ پر ایک ؤرودیا ک پر حالاندتھا کی اُس پرد*س جمیجا ہے۔*

مُنَهِة رحمة الله تعالى عليه نے خواب میں دیکھ کر یو چھا، **مکا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ** ؟ یعنی اللهُ عَـزُوَجَلُ نِهِ آبِ كِسماته كيامُعامَله فرمايا؟ جواب ديا، **الله** عَـزُوجَلُ نِهِ مجھے بخش دیا اور ارشاد فرمایا، اے بشر اہم کو بلکہ تمھارے **جنازے** میں جو جو شریک ہوئے ان کوبھی میں نے **بخش** دیا۔ تومیں نے عُرُض کی ،یارٹِ عَـزُ وَ جَلُ مجھ سے مَعَجَبُت كرنے والول كوبھى بخش دے۔ تو اللّٰه عَدُوْجَلُ كى **ترحمت** مزيد جوش يرآئى،اورفرمايا، قيامت تك جوتم سے مَحَبَّت كريس مَحَان سبكو

مجی میں نے بخش دیا۔ (شَرْعُ الصَّدورص ٢٧٥دارلكتاب العربي بيروت)

> ا ثمال نہ دیکھے بیرد یکھا، ہے میرے ولی کے در کا گذا عروج خالِق نے مجھے یوں بخش دیا، سلجن اللہ سلجن اللہ

معظم منظم المعاملا في محاميو! الله والول من نسبت باعث سعادت ،ان

کا ذِکر خَبر باعثِ نُزولِ رَحْت، ان کی صُحبت داوجہاں کیلئے بابرَ کت ، ان کے

مزارات کی زیارت تِر یاقِ اَمراضِ معصیّت اور ان کی عقیدت ذَریعهُ نَجاتِ

آخِرت ہے۔اَلحمدُ للّٰه عَزُوَجَلَ بِمِين بھی اُوليائے کرام رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالىٰ سے

عقیدت اورولی کامِل حضرتِ سیّدُ نابشرِ حافی علیه رُحْمهٔ الفرالکافی سے مَحَبّت ہے

راید! بااللہ!ان کےصَدْ قے ہاری بھی مغفِرت فرما۔

امين بجاهِ النَّبِيِّ الأمين صلى الله تعالى عليه والدولم

بشر حانی سے ہمیں تو یار ہے

ان شاء الله أينا بيزا يار ہے

<u> کفن چور</u>

ا یک عورت کی نما زِ جنازہ میں ایک **گفن چور** بھی شامِل ہو گیا اور

قبرِستان ساتھ جا کراُس نے قَہِ مرکا پتامحفوظ کرلیا۔ جبرات ہوئی تواس نے

كَفَن جُرانے كيليج قَبْمُو كھود ڈالی۔ پکا یک مرحومہ بول اُٹھی ،سُبہ لحن الله !ایک

فو جان مصطفعے: (مل الد تان مليه اليام) تم جبال بھي ہو جھ برؤ رُود پڑھوتمبارا وُ رُوجھ تک پنچاہے۔

مغفور (یعنی بخشِش کا حقدار) شُخُصُ مغفورہ (یعنی بخشی ہوئی)عورت کا کفن پُرا تا ہے! سُن ،اللّٰہ تعالٰی نے میری بھی **مغیر ت**کر دی اوراُن تمام لوگوں کی بھی جنہوں نے میرے جنازے کی **نماز** پڑھی اور تُو بھی اُن میں شریک تھا۔ بیسُن کراُس نے فوراً قَبْرِ پرمِنْی ڈال دی اور **سیّے ول** سے تا بُب ہوگیا۔

(شَرْحُ الصُّدورص ٢٠١دارلكتاب العربي بيروت)

شُرَکائے جنازہ کی بخشش

میں مافیری سندوں کی نماز جنازہ میں مائیو! دیکھا آپ نے! نیک بندوں کی نماز جنازہ میں مافیر کی سندوں کی نماز جنازہ میں مافیر کی سندہ کے جنازوں میں شرکت کرتے رَہنا چاہئے ، ہوسکتا ہے کسی نیک بندہ کے جنازوں میں شرکت کرتے رَہنا چاہئے ، ہوسکتا ہے کسی نیک بندہ کے جنازے میں شمولیّت ہمارے لئے سامان مغیر مت بن جائے۔ خدائے رُخمن عزد جل کی مغیر تربان کہ جب وہ کسی مرنے والے کی مغیر ت فرمادیتا ہے

•••••

غو جان مصطفعهٔ : (ملی الله الا با با با به بنا با به بنا به بنا به بنا به بنا اوری مرتبهٔ تام درود پاک پڑھا أے قیامت كے دن ميري شفاعت ملے گا۔

تو اُس کے جنازہ کا ساتھ دینے والوں کو بھی بخش دیتا ہے۔ چُنانچ حضرت سِیدُ نا

عبدالله بن عباس رضی الله تعالی عنها ہے روایت ہے کہ سر کاریدینہ، سلطانِ باقرینہ،

رو قرارِ قلب وسیند، فیض گنجینه صلّی الله تعالی علیه واله دسلّم نے إرشادِ فرمایا، بندهٔ مؤمن کو

مرنے کے بعدسب سے پہلی جزابیدی جائے گی کہاس کے تمام شرکائے جنازہ

ئ بخفِش كردى جائيگ."

(شُعُب الايمان ج٧ص٧حديث ٩٢٥٨ دارالكتب العلميه بيروت)

قبرميل يببلا تحفه

مرکار نامدار، دوعالم کے مالک ومختار کم منشاو آبرار صلّی الله تعالی علیه واله دسلّم

كا فرمانِ مغفِرت نشان ہے، مومِن جب قَبْس میں داخِل ہوتا ہے تواس كوسب سے

بہلا تخدید دیا جاتا ہے کہ اس کی نما زِجنازہ پر صفے والوں کی مغررت کردی

(كنزالعمال ج ١٥ ص ٩٩٥)

جاتی ہے۔

 $\overline{\mathbf{v}}$

خوصان مصطفع : (ملى الدَّمَان طيداله من مجمع برؤ رود باك كاكثرت كروب شك يتمهار عليم طهارت ب-

جنتى كاجنازه

فیٹھے بیٹھے آ قائد نی مصطَفَی صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ دالہ دسمَّم کا فرمانِ عافیّت نشان ہے، جب کوئی جاتی محنَّم فوت ہوجا تا ہے، تو اللہ عَسزُ وَجَائِ حَیافر ما تا ہے کہ ان لوگوں کوعذاب دے جواس کا جنازہ لیکر چلے اور جو اِس کے بیچھے چلے اور جنہوں نے اِس کی نمازِ جنازہ اداکی۔ (الفردوس بما نورالحطاب ج ۱ ص ۲۸۲ حدیث ۱۱۰۸)

جنازہ کا ساتہ دینے کا ثواب

عنوجل حعرت سید ناواؤ دعلی نیندوعکید الضادۂ وَالسُّلام بارگاہِ خداوندی میں عُرْض کرتے ہیں ، یا اللہ! جس نے تحص تیری رِضا کے لئے جنازہ کا ساتھ دیا، اُس کی جزا کیا ہے؟ اللہ تعالیٰ نے فرمایا، جس دن وہ مرے گا تو فرشتے اُس کے جنازے کے ہمراہ چلیں گے اور میں اِس کی مغیر ت کروں گا۔

(شُرُوخ الصُّدورص ١٠١ داولكتاب العربي بيروت)

نمازِ جنازه کاطریقه

﴾ فوجانِ مصطفياً «(محاشفان العالم») بمن شاكاب بمن مجوده بإكسانية وجب كمستمراة الإمراكاب مماكنية بـ يخط المتفادات بين كدر

أئد بہاڑ جتنا تواب

حضرت سند، سلطان اله جمری و منی الله تعالی عند نے کہا کہ سرکارِ مدینہ ، سلطان باقرینہ ، قرارِ قلب وسینہ ، فیض گنجینہ سلی الله تعالی ملیہ والہ وسینہ ، فیض گنجینہ سلی الله تعالی ملیہ والہ وسینہ ، فیض گنجینہ سلی الله تعالی ہے گھر سے جنازہ کے ساتھ چلے ، نماز جنازہ پڑھے اور وَفُن تک جنازہ کے ساتھ رہے اُس کے لیے دو قیم اطاقواب ہے جس میں سے جمر قیم اطاقد (پہاڑ) کے برابر ہے اور جو شخص مو بیاز اُس کے برابر ہے اور جو شخص میں نہوتو) تو اس کے لیے میں شریک نہ ہوتو) تو اس کے لیے میں خریک نہ ہوتو) تو اس کے لیے ایک قیم اطاقواب ہے۔ (صحبح مسلم نہ ص ۲۰۷ طبعة افغانستان)

نمازِ جنازہ باعث عبرتھے

حفرت سِیدُ نا ابوذ رِّغِفاری رحمة الله تعالی علیه کا ارشاد ہے، مجھ سے سر کارِ دوعالم، نورِ مِشَّم، شاہِ بنی آ دم، رسولِ مُحتَنشَم سلَّی الله تعالی علیه والہ وسلَّم نے فرمایا خور مان مصطفیا (سلی اندتنان ملیده اریشم) مجمد برکثرت ن ذرود پاک پڑھو بے شک تبها داجمد پر دُرُود پاک پڑھناتمها دے کتا ہوں کیلئے منظرت ہے۔

قبروں کی زیارت کروتا کہ آ بڑت کی یاد آئے اور مُر دہ کونہلاؤ کہ فانی بھٹم (یعنی مُر دہ جسم) کا چھوٹا بُہُت بڑی نصیحت ہے اور نَما زِ جنازہ پڑھوتا کہ بیٹمہیں عملین م

کرے کیوں کھ مگین انسان اللہ عَزْ وَجَلِّ کے سائے میں ہوتا ہے اور نیکی کا کام کرتا

(المستدرِّك لِلحاكم ج١ص١١حديث ٢٥٤١٧دار المعرفة بيروت)

مَیّبت کونَهلانے وغیرہ کی فضیلت

حضرمت مولائ كا كنات، سيِّدُ ناعليُّ الْمُرْضَى شيرِ فدا كَرَمَ اللهُ تعالى

وَجُهَهُ الْحُرِبُم سے روانیت کہ سلطان دو جہان شَہَنشا وکون ومکان ، رُحَمتِ عالمیان صلَّ الله تعالیٰ علیہ دالہ دسلّم نے اِرشادِ فرمایا کہ جوکسی متیت کو**نبہلا نے** ، کفن **مہنا ہے ،**

خوشبولگائے، جنازہ أنھائے، نماز پڑھے اور جونا قص بات نظر آئے اسے چھیائے

وہ اپنے گنا ہوں سے ایسا **پاک** ہو جاتا ہے جبیسا جس دن **مال کے پیٹ** سے

پيرابوا تھا۔ (سنَنِ ابنِ ماجه ج٢ ص ٢٠١ حديث ٢٦٤ دارالكتب العلميه بيروت)

يٌّ فعر صانية مصطفع (ملى منه من المداوية) جوجمه برايك مرتبه أز ووثريف بإحتاب الله تعالى أس كيليزا يك قبرا لما الرنكمة الواحديما (جناب.

جنازه و مکھ کر کہتے

معرت سِیدُنا مالِک بن أنس رض الله تعالی عنه کو بعدِ وفات کسی نے

خواب میں دیکھ کر بوچھا، ما فعل الله بك ؟ بعن الله عزوج لن آپ ك

ساتھ کیاسُلوک فرمایا؟ کہا،ایک کلمہ کی وجہ سے بُخش دیاجو حضرت ِسیِّدُ ناعثانِ غنی

رض الله تعالى عنه جنازه كود كيم كركها كرتے تتھے، سُبْطَنَ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوُ تَ(يَتِي

وہ ذات پاک ہے جوزندہ ہے اُسے بھی موت نہیں آئے گی للبذا میں بھی جناز ہ دیکھ کریہی

كهاكرتا تفااس كلميه (كهني) كيسبب الله عَزْوَجَلْ في مجهي خُش ديا_

(مُلَخَّصاً إِحْباء العلوم ج٥ ص٢٦٦دار صادر بيروت)

نَمازِ جنازہ فرضِ کفایہ ھے

ممازجنازه فرضِ كِفايه بي يعنى كوئى ايك بهى اداكر ليتوسب بري

خوجانِ مصطَّفها (سليان قال لمد الدائم) جمع يردُرُ ووثر يف يراحوالدُمْ يروحت بيج كار

الذِّمَّه ہو گئے ورنہ جن جن کوخبر پنجی تھی اور نہیں آئے وہ سب گنہگار ہول گے رہناوی

ناندار حالیہ ج۲ ص۱۹۳) اِس کے لئے جماعت شَرْ طَنِیس، ایک فَخْصُ بھی پڑھ لے تو

فرض ادا ہوگیاد مندی عالم گیری ج اص ١٦٢) اس کی فرضیت کا انکار كفرے _

(فتاوی تاتارخانیه ج۲ص ۲۵)

نَمَازِ جِنَازِه مِیںدُو رُکن اور تین سُنَتیں ھیں

دُورُ کن مِدِ بَین: (۱) چاربار اللّه اکبر کهنا (۲) قِیام راس مِس **بَینُ** سنتِ

مُوِّ تُكِده بيرين: (١) فَناء (٢) وُرُود شريف (٣) مِّيت كيليِّ دُعاء_

(دُرِّمُختار معه ردالمحتارج٣ص١٢٤)

نَمازِ جنازه کا طریقه (خفی)

مقتدى إس طرح نتيت كرے: "ميں نتيت كرتا ہوں إس جنازه كى نَمازكى

واسطےاللّٰدعَزْوَ جلَّ کے وُعالِس میّبت کیلئے ، پیچھے اِس امام کے ' (فنیادی نیانار حالبہ ج

٢ صـ٣٥١) اب امام ومُقتدى پہلے كانوں تك ہاتھا ُ ٹھا ئيں اور''اَللّٰهُ اَكْبَر'' كہتے

ہوئے فورأ حب معمول ناف کے نیچے باندھ لیں اور **کناء** پڑھیں۔اس میں'' أ

وَيَعَالَى جَنْ كَ يَعِدُ وَجَلَّ ثَنَاءُكُ وَلَا إِلَهُ

عَيْرُ اللهُ أَكْبُو "كَبِينَ بِرَافِينَ " بَعِرْ إِنْ اللهُ أَكْبُو " كَبِينَ بَعِرْ فِي وَرُودِ

ابراجيم پڑھيں' پھر بغير ہاتھا ٹھائے''اَللَّهُ اَنْحَبَو '' کہيں اور دُعا پڑھيں (امام

تکبیریں بُلند آواز ہے کیے اور مُقتدی آہتہ۔ باقی تمام اُذکار امام ومُقتدی سب آہستہ

پڑھیں)وُ عاکے بعد پھر''اَلٹُ ہُ اَنگِبَر '' کہیں اور ہاتھ لٹکا دیں پھر دونوں طرف

سلام پھيروي - (حاشية الطحطاوي ص ٨٤٥)

صَلُّوا عَلَى الحبيب! صَلَّى الله تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد

فْ مد مد مصند (سل الله قال عد الديد م) جو مجمع برروز جعد دُرُ ووشريف يرا حكا شريقيا مت كون أس كي شفاعت كرون كا-

بالغ مردوعورّت کے جنازہ کی دُعاء

\ d*9:/

رائی بخش دے ہارے ہر زندہ کواور ہارے

ٱللهُمَّاغِفِ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا

ہر فوت شُرہ کو اور ہمارے ہر حاضر کو اور

ہارے ہر غائب کوادر ہارے ہر چھوٹے کو

اور ہمارے ہر بڑے کواور ہمارے ہر مر دکواور عنومیہ

ماری برعورت کو۔الی تو ہم میں سے جس کو

زنده رکھے تو اس کو اسلام پر زندہ رکھ اور ہم

میں ہے جس کوموت دے تو اس کوایمان پر

موت دے۔

وشاهدناو غايبناوصغيرنا

وكدِيْرِنَا وَ ذَكِرَنَا وَ أَنْتُنَا

ٱلنَّهُوَّمِنُ ٱخْيِيْتُهُ مِنَّا

نَاحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ

<u>ػ</u>ڡٙڹٛٷؘڡؙٚؽؾۿؙڡؚؾٵڣڗٷڰ

على الزيمان

خوصان مصعفها (على الله تال مليدة إلى منم) جمس في مجري بروز يُخدر دوسو بارو زود ياك بإحما أس كردوسوسال كركزا وسواف ول مكر

نابالغ لڑ کے کی دعا:

ٱللهُّ الْجُعَلُهُ لَنَا فَرَطَا وَاجْعَلُهُ لَنَا آجُوُّلُوَّ

دُخُرًا <u>وَا</u>جْعَلُهُ لَنَا

شَافِعًا وَمُشَفَّعًا ا

نابالغ لژ کی کی دعا:

اَللَّهُ مُواجُعَلُهَا لَنَا فَرَطًّا

وَّاجْعَلُهَالَنَّا ٱجُوَّاوَّ

وُخُوًا وَاجْعَلْهَاكنا

شَافِعَةً وَمُشَفَّعُهُ الله

رد الی اس (لڑ کے) کو جارے لئے آ گے بیٹنج الی اس (لڑ کے) کو جارے لئے آ گے بیٹنج

کرسامان کرنیوالا بنادے اوراس کو ہمارے لئے اُنجر (کاموجب)اور وَثْت پر کام آنیوالا

بنا دے اور اس کو ہماری بیفارش کر نیوالا بنا

دے اور وہ جس کی سِفارش منظور ہوجائے۔

رہ الٰبی اِس (لڑک) کو جارے لئے آ گے بھنج کر

سامان کرنیوالی بناد ہےادراس کو ہمارے لئے

أَجْرُ (كَلْ مُوجِب) اور وُقت بركام آنيوالى بنا

دے اور اس کو ہمارے لئے سِفارش کر نیوالی

بنادے اور وہ جس کی سِفارش منظور ہوجائے۔

(مشكوةُ المصابيح ص١٤٦، انتاوى عالمگيرى ج١ص١٦)

مد مدید مصطند (سل اشتان ملیداند امم) أس فحص كی تاك خاك آلود بوجس كے پاس مير اذكر بواوروہ مجمد برؤ رُود پاك نديز معيد

جُوتے پر کھڑے ھو کر جنازہ پڑھنا

جوتا پہن کراگر ممانر جنازہ پڑھیں تو جوتے اور زمین دونوں کا پاک ہونا ضروری ہے اور جوتا اُتار کراُس پر کھڑ ہے ہوکر پڑھیں تو ہُوتے کے تلے اور زمین کا پاک ہونا ضروری نہیں ۔ میرے آقا اعلیٰ حضرت ، إمام اَہلسنت ، موللینا شاہ امام اُحمد رضا خالن علیہ دحمہ اُلڑ حمٰن ایک سُوال کے جواب میں ارشا وفر ماتے ہیں: ''اگروہ جگہ پیشاب وغیرہ سے ناپاک تھی یا جن کے ہُوتوں کے تلے ناپاک تصاوراس حالت میں جوتا ہے ہوئے نماز پڑھی ان کی نماز نہ ہوئی ، اِحتیاط رہی ہے کہ ہُوتا اُتار کراُس پر پاؤں رکھ کرنماز پڑھی جائے کہ زمین یا تُل اگر ناپاک ہوتو نماز میں خلل نہ آئے۔''

ن جائے کدر من یا عل اگر ما یا ک ہوگو عمار میں میں شدا ہے۔

(فتاوی رضویه محرحه ج۹ ص ۱۸۸),

غائبانه نَماز جنازه

میت کاسامنے ہونا فروری ہے، عائبان نماز جناز ونہیں ہوسکتی۔

(درمنعنار معه ردالمحنار ج٣ص١٢٣) مُستَحَب بيب كدامام ميّت كے سينے ك

(مراقى الفلاح معه حاشية الطحطاوي ص٨٣٥)

سامنے کھڑا ہو۔

مد مان مصطفیا (ملیان شال بلدور الله) جمل کے پاس میراؤ کر ہواور وہ مجھ پرؤ رُ ووٹر یف ند پڑھے و لوگوں میں وہ مجول ترین مختص ہے۔

چند جنازوں کی اِکٹھی نَماز کا طریقہ

چند جنازےایک ساتھ بھی پڑھے جاسکتے ہیں اس میں اِختیار ہے کہ سب کوآ گے پیچھے رکھیں یعنی سب کا سیندامام کے سامنے ہو یاقِطار بند۔ یعنی ایک کے یاؤں کی سیدھ میں دوسرے کا بسر بانا اور دوسرے کے یاؤں کی سیدھ میں تيسر كابر باناوَ عَلَى هذَا الْقِيَاس (يعني إى يرقياس يجة)

(ببارش بعت حقد) ص ٥٧ مدينة المرشد بريلي شريف)

جنازه میں کتنی صَفیں هوں؟

ب**ہتر** یہ ہے کہ جناز ہے میں تین صفیں ہوں کہ حدیث یاک میں ہے، جسکی نماز (جنازہ) **تین صُفوں نے پڑھی اُس کی مغفرت ہوجا ئیگ**ی ہے ہے _{ئرمذی جا ص۲۲) اگرگل سا**ت ہی آ دَ می ہوں توایک امام بن جائے اب پہلی صَ**ف} میں تعین کھڑ ہے ہوجا کیں دوسری میں دواور تیسری میں ایک (غنبة السمستملی ص وروں جنازے میں بچھلی صُف تمام صَفوں سے اُفضل ہے۔

(دُرَّمُنحتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحتَار جِ٣ ص ١٣١)

مد مدن مصعفیٰ (مل الله قدل بلیداریانم)جس کے پاس میراذ کر جوااوراُس نے وُرُ ووٹریف ندپڑھاؤُس نے جَعَا کی۔

جنازے کی پوری جَماعت نہ **ملے** تو؟

مَسعوق (یعن جس کی بعض تکبیرین نوت ہوگئیں وہ) اپنی باقی تکبیریں امام

کے سلام پھیرنے کے بعد کہے اوراگریہاً ندیشہ ہو کہ دُ عاء وغیرہ پڑھے گا تو پوری کرنے ہے قبل لوگ جنازے کو کندھے تک اُٹھالیں گے تومِرْ ف تکبیریں کہہ

ا من المراد على المراد على المراد المرد ا

وہ (جب تک امام نے سلام نہیں تجھیرا) شامِل ہوجائے اور امام کے سلام کے بعد تین

بِارْ اللَّهُ اكبو "كهردُرِّمُحنَار مَعَهُ رَدُّالْمُحنَار ج م ١٣٦٥) پِيمرسلام كِيميرد ــــــ

پاگل یا خود کُشی والے کا جنازہ

جو پیدائش پاگل ہو یا بالغ ہونے سے پہلے پاگل ہو گیا ہواوراسی پاگل

ین میں موت واقع ہوئی تو اُس کی نَما زِ جنازہ میں نابالغ کی دُعا پڑھیں گے رماعود

رَ حاشية الطعطاوي ص٥٨٧) جس نے خورکشي كي أس كي مُمازِ جناز ه پرهي جائے

گی-

نمازِ جنازه كاطريقه

و مان مصطفه (ملى الشاق لدين باسم) جس ك ياس ميراة كر موااوراً س في مجمع برد رود ياك شدير ها تحقق وه بر بخت موكيا_

مُردہ بچّے کے احکام

مسلمان کابچہ زِندہ پیدا ہوا یعنی اکثر حصّہ بابر ہونے کے وقت زندہ تھا

پھرمر گیا تو اُس کوغُسل وکفن دیں گے اور اس کی نَما زیڑھیں گے ، ورنداُ سے وَ یسے

بی نہلا کرایک کیڑے میں لپیٹ کر دفن کردیں گے۔اس کیلئے سقت کے مطابق

عنسل وکفن نہیں ہےاورنَماز بھی اس کی نہیں پڑھی جائے گی ۔سَر کی طرف ہےا کثر

کی مقدارس سے کیکر سینے تک ہے۔ لہذاا گراس کا سر باہر ہوا تھا اور چیخیا تھا مگر سینے

تک نکلنے سے پہلے ہی فوت ہو گیا تو اس کی نَما زنہیں پڑھیں گے۔ پاؤں کی جانب

ے اکثر کی مقدار کمرتک ہے۔ بچہزندہ پیدا ہوایا مُر دہ یا کچا گر گیا اس کا نام رکھا

جائے اوروہ قیامت کے دن أشمایا جائے گا۔ (دُرِمعتار 'ردالمعتار ج ص ١٥٦)

جنازه كوكندهاديين كاتواب

حدیث پاک میں ہے، جو جنازے کو کچالیس قدم کیکر چلے اُسکے میں ہے، جو جنازے کو کچالیس قدم کیکر چلے اُسکے میا کی بی چالیس کبیرہ گناہ مٹاوسیّے جا کیں گے دالطبسرانسی فسی الاوسط ج٤ص٠٦٦ حدیث علی ہے، جو جنازے کے ۹۲۰ حدیث شریف میں ہے، جو جنازے کے ۔ نمازِ جنازه کاطریقه

خد صاب مصطف (صلى الله تعالى عد البهائم) جس في مجمد برايك بارؤرُ و و ياك بره طا الشرقعالي أس بروس ومتيس بيعيتا ب-

جاروں پایوں کو کندھادے اللہ عَزَّوَ جَلَّاس کی حَتْمی (یعنی مُستَقِل) مِغفِر تفر ما

(الحوهرة النيرة ج ١ ص١٣٩)

د ہےگا۔

جنازه کو کندها دینے کا طریقہ

جنازہ کو کندھادینا عباوت ہے (نانار حانیہ ج۲ص ۱۵۰)ستت ہیہ کہ

، ۱۰ م کیے بعد دیگر ہے چاروں پایوں کو کندھاد ہے اور ہر باردس دس قدم چلے۔(اُیضاً)

بوری سنّت ہیے ہے کہ پہلے سیدھے بسر ہانے کندھا دے پھر سیدھی با^{یک}تی (یعنی

سیدھے پاؤں کی طرف) پھراً لٹے بسر ہانے پھرائٹی پایئتی اور دس دس قدم چلے تو گل

مع کیس قدم ہوئے۔(مراقبی الفلاح معدہ حاشبة الطحطاوی ص ٢٠٤) بعض لوگ چاکس قدم ہوئے۔(مراقبی الفلاح معدہ حاشبة الطحطاوی ص ٢٠٤)

جنازے کے جُلوس میں اِعْلان کرتے رَہتے ہیں، دودوقدم چلو!ان کو چاہئے کہ اس طرح اعلان کیا کریں'' **ہریائے کو کندھے برلئے دس دس قدم چلئے۔''**

بيّه كا جنازه أتّهاني كا طريقه

مچوٹے بچے کے بنازے کواگرایک شخص ہاتھ پراُٹھا کرلے چلے تو

للغير الملحاطة خال عيدالدنغم الجبهم موطين (جهرسير) وذوو ياك يزمونو يجه يزمي يزموج بشك ش تمام جهانول سكرب كارمول يون.

حَرُج نہیں اور کیے بعد دیگرے لوگ ہاتھوں ہاتھ لیتے رہیں (ابسے۔۔رائے ان -۲ ص ۴۳۰) عورَ تول کو (بچه ہو یا بزاکس کے بھی) جنازے کے ساتھ جانا نا جائز و

ممنوع ہے۔ (دُرَّمُنحتَار مَعَهُ رُدُّالُمُحتَار ج٣ص١٦٢)

نماز جنازہ کے بعد وایکس کے مسائل

جو شخص جنازے کے ساتھ ہواُسے بغیر نماز پڑھے واپس نہ ہونا جاہئے

اورنماز کے بعد اُولیائے منِیت (یعنی مرنے دالے کے سریرستوں) سے اجازت کیکر واپس ہوسکتا ہواور وفن کے بعدا جازت کی حاجمت نہیں (عالمگیری جرا ص ١٦٥)

کیا شوہر ہیوی کے جنازہ کو کندھا دے سکتا ہے؟

شو ہرا بنی بیوی کے جناز ہ کو کندھا بھی دےسکتاہے قبر میں بھی اُ تارسکتا ہے اور مُنہ بھی دیکھ سکتا ہے۔ مِرْ ف عنسل دینے اور بلا حائل بدن کو چھونے کی مما نُعَت ب (دُرِّمْ خَنَار مَعَهُ رُدُّالْمُحَنَار ج عن ١٠٥) عورَت اين شومركونسل د عكى ہ۔

(دُرَّمُحتَار مَعَهُ رَدُّالُمُحتَار جِ٣ص١٠)

فرمان مصطفيا : (ملى الشاقال ماره الدرال منه جمس في مجدي اليك وروياك يره ها القد تعالى أس يردس رحتيس بعيجاب-

كافر كاجنازه

مُرتَد یا کافِر کی نَمازِ جنازه ادرجُلوسِ جنازه میں جائز و کارِثواب سمجھ کر

شریک ہونا گفر ہے۔ سرکارِ اعلیمطر ت امام احمدرضا خان رقمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے
ہیں، اگراس اِغْتِقاد سے جائے گا کہ اس کا جنازہ شرکت کے لائق ہے تو کافر ہو
جائے گا۔اور اگر یہبیں تو حرام ہے۔ حدیث میں فرمایا، اگر کافر کا جنازہ آتا ہوتو
ہٹ کر چلنا جا ہے کہ شیطان آ کے آگے آگے گافٹلہ ماتھ میں لئے اُنجھلتا
مودتا خوش ہوتا ہوا جاتا ہے کہ میری محنت ایک آتری برؤمول ہوئی۔

(لمفوظات حضه جهازم ص ٣٥٩ حامدا ينذ تميني مركز الاولياءلا مور)

نِكَاح تُوتُ كَمِا!

و میاوی طمع ہے کسی مُر تَد یا کافِر کی نَما نِہ جنازہ پڑھنا حرام ِ قطَعی اور شدیدحرام ہےاور دینی طور پراسے کارِثواب اور مُر تَد یا کافِر کوئما نِہ جنازہ اور دعائے

﴾ ﴿ فو هانِ مصطفع السائدة الى عدوارية م) جس في مجمد يروس وتبدؤ أو و ياك يزحا الله تعالى أس يرسوم تيس ناز ل فرما تا ہے۔

مغفرت کامستحق جان کرانیها کیا تو میرخودمسلمان نه رہااس کا نِکاح بھی ٹوٹ گیا، استے تجدید اِسلام وتجدیدِ نکاح کرنا چاہیے۔

(مُلخص ازفتاواي رضويه ج٩ ص٧٣ رضافاؤ ندّيشن مركز اوليا، لاهور)

ا فورس فسِقُون ﴿ (ب١٠ التوبة: ٨٤)

صدرُ الا فاصِل حضرتِ علَّا مه مولیناسیِد محمد تعیم الدّین مُر ادآبادی علیه رحمة الله الله الله کافر کے الله الله الله کافر کے الله الله کافر کے جناز ہے کی نماز کسی حال میں جائز نہیں اور کافر کی قبر پر دفن وزیارت کے لیے جناز ہے ہونا بھی ممنوع ہے۔'

کھڑے ہونا بھی ممنوع ہے۔'

(حزائن العرفان ص ۱۳ رضا اکیڈی بھی)

عفاركي عيادت مت كرو

حضرت سیّد نا جابر بن عبدالله رضی الله تعالی عنها سے روایت ہے کہ سر دارِ مکه مکر

بمركارٍ حدينة منوّره بهنّ الله تعالى عليه والبوسلم في إرشادِ فرمايا ، كما كروه بمار برين تو

یو جھنے نہ جا کہمر جا کیں تو جنازے میں حاضر نہ ہو۔ (سن ابن ماحه حدیث ۲ ج ج۱ ، پیلی ا

یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دید یجنے

شادي تمي كي تقريبات ،اجتاعات ،اعراس اورجلوب ميلا دوغيره میں مکتبہ المدینہ کے شائع کردہ رسائل تنسیم کرے تواب کمائے ، کا کول کو بہ

تيب تواب تخفي مين دينے كيلئے الى دُكانوں يرجمي رسائل ركھنے كامعمول بنائیے،اخبار فروشوں یا بچوں کے ذریعے اپنے محلّہ کے تحر تھر میں وقلہ وقلہ سے

بدل بدل رستوں برے رسائل بینجا کرنیکی کی دعوت کی دعوش میاہے۔

صَلُّوا عَلَى الحبيب! صَلَّى الله تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد

٧٨٦بالغ كىنَماز جنازه سے قَبْل يه إعلان كيجئے ٩٢ مرحوم کے عزیز واُڈباب تو جُہ فر ما کیں۔مرحوم نے اگر زندگی میں بھی آپ کی ا دل آ زاری حق تلفی کی ہوتو ان کومُعا ف کردیجئے ،ان شیاء اللّٰه عز دجل مرحوم کا بھی بھلا ہوگا ادرآ پ کوبھی ثواب ملیگا۔اگر کوئی لین دین کامُعامُلہ ہوتو مرحوم کے وارِثوں ہےمشور ہ كيجةً _ نَمَاذِ جنازه كي نيت اوراس كاطريقة بهي سُن ليجةَ _'' **مِس نتيت كرتا بول إس** جنازہ کی مُمازکی، واسطے اللہ عزد بل کے، دعا اِس میت کیلئے میچھے اِس امام کے ۔'' اگر بیہ اَلفاظ یاد نہ رہیں تو کوئی حُرُج نہیں ، آپ کے دل میں بیز نیت ہونی ضَر دری ہے کہ''میں اِس میت کی نَما زِ جنازہ پڑھ رہا ہوں'' جب امام صاحب السُّلَّهُ اکبر کہیں تو کا نوں تک ہاتھ اُٹھانے کے بعد اللّٰہ اکبر کہتے ہوئے فوراحب معمول ناف کے نیجے باندھ لیجئے اور مثناء یڑھئے۔ ووٹمری بارامام صاحب اللّٰہ اکبر کہیں تو آپ بغير باته أنفائ الله أكبر كبَّ بحرنما زوالا **دُرُودِ ابراهيم** يرْهِ تَعْيَسرى بارامام

کہیں تو کانوں تک ہاتھ اُٹھانے کے بعد اللّٰہ اکبر کہتے ہوئے فوراَحب معمول ناف

اللہ اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

اللہ اکبر کہیں تو آپ

ادرا مام صاحب اللہ اکبر کہیں تو آپ

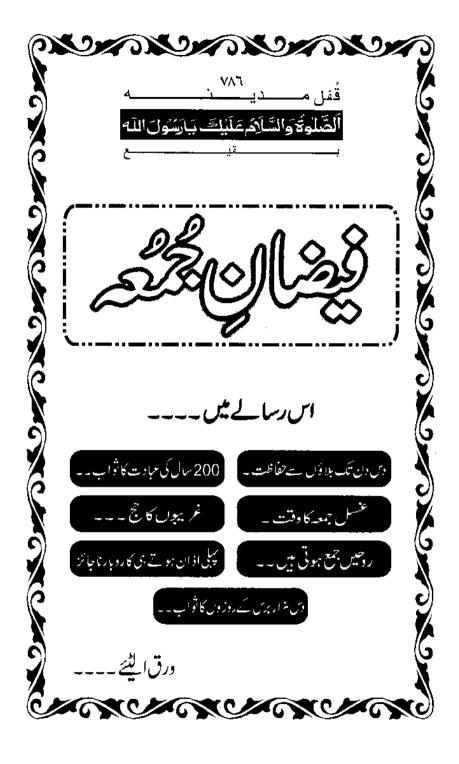
ادرا مام صاحب کے ساتھ قاعد سے کے مطابق سلام پھیرد ہے۔

فيضان بُعه



المعنى 🐠 مرحوم والدين كو ہر جعدا عمال پيش ہوتے ہيں 400 415 🐠 فِفا داخل ہوتی ہے 402 🐠 وس بزاريرس كروزول كاثواب 417 ول دن تك بكا وك سے مفاظت 403 🐠 رُوطين في موتى بين 419 406 💿 غُسل يُحتمد كاونت م غريول كانج 426 و تولیت کی گھڑی کون ی ؟ 411 💿 کچپ چاپ تطبہ سُتا فرض ہے 428 💠 200سال کی عبادت کا تواب 414 💿 پہلی اذان ہوتے ہیں کاروبار بھی ناجائز 430

ورق اللئے ___



الْحَمْلُ بِلْهِ رَبِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلَوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيْدِ الْمُسَلِلُينَ اَمَا ابْدُونَا عَوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّحِيْدِ أَيْسِرِ اللَّهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمِ

شیطان سُستی دلائے گا مگر آپ یه رِساله (٤١ صُفَحات) پورا پڑھ کر ایمان تازه کیجئے۔



جُمُعه كورُرُودشريف يرصفي فضيلت

نبیوں کے سلطان، رَحْمتِ عالمیان، سردار دُوجہان محبوب رُحْمٰن عَزْوَجَلْ

ومنّی الله تعالی علیہ والہ دستم کا فر مانِ بَرَ کت نشان ہے ،'' جس نے مجھ پررو نے جہنے کہ دو - بسم سوبار دُرُ و دِیاک بڑھا اُس کے **دوسوسال** کے گناہ مُعاف ہوں گے۔

(كنز العُمَّال ج١ ص٢٥٦ حديث ٢٢٨ ٢ طبعة دارالكُتُب العلميه بيروت)

صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمّد

صَلُّوا على الحبيب!

معض يشما سلامي محاسر الهم كتف خوش نصيب بين كمالله تبارَك و تعَالى

نے اپنے پیارے صبیب سنّی اللہ تعالی علیہ والہ وسلّم کے صدیقے ہمیں جُسمُعةُ الْمبارَك کی نعمت سے سرفر از فرمایا۔ افسوس! ہم ناقدرے جُسمُعَه شریف کو بھی عام ونوں

ى طرح غفلت ميں گزارديتے ہيں حالانکه جُـ مُعه يومِ عيد ہے، جُـ مُعه سب

دنوں کاسر دارہے، مجسمعہ کے روز جہنّم کی آگنہیں سُلگائی جاتی ، مجسمعہ کی رات دوزخ کے درواز نے ہیں گھلتے ، مجسمعہ کو ہروز قبیا مت ُ کہن کی طرح اُٹھایا

جائيگا، ڪُ مُعنه كے روز مرنے والاخوش نصيب مسلمان شهيد كا رُتبہ پا تااور عذاب

قَبُ و من محفوظ ہوجا تا ہے۔ مُفترِشْہیر حکیم اُلامت حضرت ِمفتی احمد یا رخان علیہ رحمة

المنان کے فرمان کے مطابق ،'' جُسمُعَه کو جج ہوتواں کا تواب ستَر جج کے برابر

ے، جُـمُ عَـ ایک نیکی کا ثواب ستر گنام (مُنْشَام ا قرام ۲۲۵،۳۲۳)

(پُونکداس) اَشْرَ ف بَیُت زِیادہ ہے لطذا) کھی معد کے روز گناہ کاعذاب

غو صانِ مصطفعے : (سل اللہ تدل مایدانو بنم) جس نے جھھ پرا کیساؤ زود پاک پڑھااللہ تعالیٰ اُس پر دس رحمتیں جھجڑا ہے۔

. (ای**نا**ص۲۳۲) (بھی)ستر مُناہے۔

جُمُعَهُ الْمُبارَك كِ فَضَائَل كِ تَوكيا كَبْخِ اللَّهُ عَدُّرَ حَلُ خَمُعَهُ الْمُبارَك كِ فَضَائَل كِ تَوكيا كَبْخِ اللَّمَ عَدُورَ وَ الْمُحَمُعَةُ الْمُرْمِ الْمُ الْمُحَمِّعَةُ الْمُحَمِّعَةُ الْمُحَمِّعَةُ كَلَا مِن بَارِك وَ تَعَالَىٰ سورَةُ المُحَمِّعةُ كَى اللهُ عَبْرَه مِين ارشَا وفرما تا ہے:۔
آیت نمبر ۹ میں ارشا وفرما تا ہے:۔

(ب ۲۸ الجمعه ۹)

هر مان مسطن الساطة العيدال الم الجس في مجمور مهرتية زُود ياك برّ هاالله تعالّ أس يرمور تسين نازل فرما تا ہے۔

آقانے بہلا مجمعه كب ادافر مايا

صدرُ اْلاَ فاضِل حضرتِ علاَ مه مولليناسيِّه محمد نعيمُ الدّين مُر ادآ بادي عليه

رحمة الله الهادئ قرمات بين ، **خصُو و إ** كرم ، فو دِ مُعَجَعَتَ مِنْ أَوْ بَى آ وم صلّى الله تعالى عليه والهوسلّم

جب جرت كرك مدينة طيبة شريف لائے تو 12 رئے الاق ل دوز دوشنبه (يعنی

پیرٹریف)کو جاشت کے وقت مقام قباء میں إقامت فرمائی۔ دوشنبہ (پیرٹریف)

سە شَنبە (منگل) چَهارشَنبه (بدھ) پنجشَنبه (جُعرات) يهال قِيام فرمايا درمسجِد كى بُديا د

ر کھی۔روزِ جُسمُعه مدینهٔ طیِّبه کاعُزم فرمایا، بنی سالم ابنِ عَوف کے بَطَنِ وادی ا میں جُمُعه کاوثَت آیااس جگہ کولوگوں نے مسجد بنایا۔سرکارِ مدینهٔ منوّرہ ،سردارِ

مكَّهُ مكرّ مصلَّى الله تعالى عليه والهوسلّم نے وہاں جمعه ادا فرمایا اور خطبه فرمایا۔

(خزائن العرفان ص٦٦٧ لاهور)

الحمدُ لِلله عَزْوَ حَلَّ آج بهى أس جكه برشاندار مسحد حُمعه قائم

هُوهانِ مصطَفَعً '(ملى الله قالى المدالية مل) تم جهال بحى يوجى برؤرُوه برُحوتها واذُرُوه بجوتك بأنجا بير

ہے اور زائرین محصولِ بَرَ کت کیلئے اُس کی زیارت کرنے اور وہاں نوافِل ادا کرتے ہیں۔اکسحسٹ لِلله عَدِّدَ عَلَّ مِحَدَّ تَبْهَا رَاسِّ مِیدَ) کو بھی چند ہاراُس سحِد شریف کی زیارت نصیب ہو کی ہے۔

> میں مدینے تو گیا تھا یہ بردا شُرَف تھا کیکن مبھی لوٹ کر نہ آتا تو کچھ اور بات ہوتی

جُمُعہ کے معنیٰ

مفتر فہر حکیم الاکت حضرت مفتر فہر حکیم الاکت حضرت مفتی احمد یارخان علیہ رحمۃ المئان فرماتے ہیں ، پُونکہ اس دن میں تمام مخلوقات وُجُو دمیں مُحْجَةَمَعُ (اَکْفی) ہوئی کہ تکمیلِ خُلْق اِس ون ہوئی نیز حضرت سِیّدُ نا آ دم صَفی الله علی نیسِناؤ علیٰ الفلواہ وَالسّلام کی مِنْ ای دن بُمْعُ ہوئی نیز اس دن میں اوگ بُمْع ہوکر نما زِجُمعه ادا کر سے کی مِنْ ای دن بُمْعُ ہوئی نیز اس دن میں اوگ بُمْع ہوکر نما زِجُمعه ادا کر سے کی مِنْ این دن بُمْع ہوئی نیز اس دن میں اوگ بہت ہیں۔ اِسلام سے پہلے اہل عَرَب اسے میں اِسلام سے پہلے اہل عَرَب اسے

26

خوصان مصطفع : (سليادة تالطيدا بيهم) جمل ته جو بروس مرتب كاوروس مرتبر شام دروياك بإهاأت تيامت كدن برى شفاعت لحى.

(مِراهُ ج٢ ص ٣١٧)

عروبه کمتے تے۔

سُرْکَارٌ نَبَے کُلُ کتنے جُمُعے ادا فرمانے؟

نی کریم ، رءُوف ٓرَحیم ، مجبوبِ ربِّ عظیم عَـزُدَ حَـلُ وصلَّی الله تعالی علیه واله وسلّم منه هم نے تقریباً پانچ سوجمعے پڑھے ہیں اِس کئے کہ جُمعہ بعد ہجرت شُر وع ہوا جس بعد دس سال آپ صلّی اللہ تعالی علیہ والہ وسلّم کی ظاہری زندگی شریف رہی اس عرصہ

(مراة ج۲ ص ۳٤٦)

میں جُمعے اتنے ہی ہوتے ہیں۔

دل پرممبر

اللّٰه کیے مَحْبوب، دانائے عُیُوب، مُنَزَّةٌ عَنِ الْعُیُوب عَزُوَحَلُ س وصلَّى اللّٰہ تعالیٰ طیہ دالہ دسلم کا فرمانِ عبرت نشان ہے ،''جوضی تین مُحسمہ (کی نَماز)

سُستى كىسب چھوڑ كاللەغزۇجالس كول برممركردىگا-"

(المستدرك ج١، ص٥٨٩ حديث ١٢٠ ، دارالمعرفة بيروت)

فرومان مصطفیا ، (ملیاند تمانی بایدان م) مجمع برو رود یاک کنترت کروب شک بیتمبارے لئے طہارت ہے۔

جُمعه فرض عَين إوراس كى فرضيت ظهر سازياده مُوَّ كِد (يعني

تاكيدي) ہاوراس كامنكر كافر ہے۔ (دُرّمُحتَار مَعَ رَدُّالْمُحتَار ج ص ٣)

جُمْعہ کے عمامہ کی فضیلت

مركارِ مدينه، سلطانِ با قرينه، قرارِ قلب وسينه، فيض تنجيبنه سلى الله تعالى عليه

والدوسلم كاإرشادِرَ حمت بنيادي، "ب شك الله تعالى اوراس كرر شت جمعه

كون مامه باند صف والول يرو رُور بهجة بيل-'

(مجمعُ الزوائد ج ٢ ص ٣٩٤، حديث ٣٠٧٥ دا رالفكر بيروت)

شفا داخل ہوتی ہے

حضرت حمید بن عبدالرحمٰن رضی الله تعالی عنها اینے والید سے روایت کرتے

ہیں کہ فرمایا،''جوشخص جُمُعہ کےدن اپنے نائن کا مثا ہےاللہ تعالی اُس سے بیاری

ثكال كرشفاء واجل كرويتا بين (مصلّف ابن ابي شبيه ، ، ج٢، ص ٦٥ دا رالفكر بيروت)

خوجان مصطفیٰ ۱۱ ملی اند خال طیدال درخر) جمز نے کاب می جوہ دوہ دیا کہ تھا جا جستھ میرانام آن کاب بھی تھا رہے او

دس دن تك بلاؤرسے حفاظت

صدرُ الشُّويسعيه، بدرُ الطُّويقيه موليٰنا امجعل اعظمي مليدتمة القوى فرماتے ہیں:''صدیمہ یاک میں ہے،جو مجسمُعیَه کےروز نانحُن تَرَسُوائے اللہ تعالیٰ اُس کو دوسرے جُمعے تک بلاؤل سے مُحفوظ رکھے گااور تین دن زائد یعنی دس

و**ن تك** (نىذكىرةُ المُوصُوعات لابن القيسراني ،حديث ١٠٨٦ السلفية بيروت) **ايك روايت**

میں یہ بھی ہے کہ جو بُرُعہ کے دن ناخُن تر شوائے تو **رَحْمت آ بُیکی مُناہ حا مُس**

مج (نمنزية الشريعة المرفوعة ج٢ ص٢٦ ، داوالكتب العلمية بيروت، مُهِمَايِشُرُ لِيت صَد ١٩٥٥

مدية المرشد بريلي شريف) حجامت بنوا نا اور نائن تَرشوا نا جُمُعه كے بعد افضل ب_

(دُرَّمُحتَار مُعَهُ رَدُّالُمُحتَار جِ٩ص ١ ٥٨ ملتان)

رزق میں تنگی کا سبب

صَدَدُ الشُّويعه، بدرُ الطُّويقه معرِّت مولينا محرام على اعظمي دمة الله تعالی ملی فر ماتے ہیں ، **جے مُسعَه کے** دِن ناحُن تَرشُوا نا**مسخب** ہے ہاں اگر زیادہ

اورآ كر مُطبه سنتے ہيں۔

. فغر**صان مصطّفه**(سلمانند تعانی علیه والدومنعی) جمیمه یر کشرت سے فرود پاک پ^{ومو} به شکه تمهادا جمعی می از می سورت

بڑھ گئے ہوں تو جُمعُعه کا اتبظار نہ کرے کہنا نُن بڑا ہونا اچھا نہیں کیوں کہنا خنوں کا

براہونا **تنگی رزق کا سبب** ہے۔ (بہایٹر بعت صقد عص ۱۹۵ مینة الرشد بریلی ٹریف)

فِرشتے خوش نصیبوں کے نام لکھتے ھیں

مرکار مدینہ سلطانِ باقرینہ ،قرارِقلب وسینہ ،فیض گنجینہ سلطانِ باقرینہ ،قرارِقلب وسینہ ،فیض گنجینہ سلطانِ باقرینہ ،قرارِقلب وسینہ ،فیض گنجینہ سلطانِ باقرینہ ، جب مجسسہ کادن آتا ہے تو مسجد کے ہر دروازہ پر فر شتے آنے والے کو لکھتے ہیں ، جو پہلے آئے اس کو پہلے لکھتے ہیں ، جلدی آنے والا اُس شخص کی طرح ہے جواللہ تعالیٰ کی راہ میں ایک اُونٹ صَدَ قد کرتا ہے ،اوراس کے بعد آنے والا اُس شخص کی مِثْل ہے جو مین میں ماک کا مے صَدَ قد کرتا ہے ،اوراس کے بعد والا اُس شخص کی مِثْل ہے جو مین میں میں کے بعد والا اُس شخص کی مِثْل ہے جو مین میں میں میں کے بعد والا اُس شخص کی مِثْل ہے جو مین میں میں کے بعد والا اُس شخص کی مِثْل ہے جو مین میں ہے جو اُنڈ اَمَد قد کرے ، پھر اس کی مِثْل ہے جو اُنڈ اَمَد قد کرے ، پھر اس کی مِثْل ہے جو اُنڈ اَمَد قد کرے ، پھر اس کی مِثْل ہے جو اُنڈ اَمَد قد کرے ، پھر اس کی مِثْل ہے جو اُنڈ اَمَد قد کرے ، پھر اس کی مِثْل ہے جو اُنڈ اَمَد وَ لَیْ ہے ہیں اور جب اہام (مُطبہ کے لیے بین لیے ہیں اور جب اہام (مُطبہ کے لیے بین لیے ہیں اور جب اہام (مُطبہ کے لیے بین لیے بین اللہ اس کے بیٹھ جاتا ہے تو وہ اُنگال ناموں کو لیپ لیتے ہیں

(صحیح بخاری، ج۱ ص۱۲۷)

فو مان مصطفعا (مل وزنان وروايم) جوجي إلك مرتبه وروائر بف يرحاب الشعال أس كيا ايك قبرا طاجر لكما اورا يك قبرا فاحد بهاذ جناب

مفسر شہیر کیم الاُمّت حفرت ِ مفتی احمہ یارخان علیہ دمۃ اکتان فرماتے ہیں ،
بعض عکما ء نے فرمایا کہ ملائکہ بُٹے عہ کی طکو ع فجر سے کھڑے ہوتے ہیں بعض کے
نزدیک آفتا ب جیکنے سے ، گرفت سے کہ کورج ڈھلنے سے شُر وع ہوتے ہیں کیونکہ
اُسی وقت سے وقتِ بُٹے عہ شُروع ہوتا ہے ، معلوم ہوا کہ فِرِ شتے سب آنے والوں
کے نام جانتے ہیں ، خیال رہے کہ اگر اؤ لاُ سوآ دَمی ایک ساتھ مسجِد میں آئیں تو وہ
سب اوّل ہیں ۔

(مراہ ج م ص ۲۰ میں)

بېلىمدى مى جەمعەكاجذب

خُجَّهُ الْاسلام حضرتِ سِيِدُ ناامام محمر غزالی عليه دهمة الله الوالی فرماتے ہیں،
'' پہلی صَدی میں کُری کیوفت اور فَجْرِ کے بعد راستوں کولوگوں سے بھرا ہوا دیکھا
جا تا تھاوہ پُراغ لیے ہوئے (نماز بُحمد کیلئے) جائع مسجِد کی طرف جاتے گویا عید کا
دن ہو جُنی کہ پیسلسلہ ختم ہوگیا۔ پس کہا گیا کہ اسلام میں جو پہلی بدعت ظاہر ہوئی

فو مان مصطفى (ملى الدون بالدوارة ملم) محديرة رووشريف يراهوالله تم يردهت يسيح كار

وہ جائیع مسجد کی طرف جلدی جانے کو چھوڑنا ہے۔ افسوس! مسلمانوں کو کسی طرح یہودیوں سے مُنیا نہیں آتی کہ وہ لوگ اپنی عبادت گا ہوں کی طرف ہفتے اورا توار کے دن صُبح سویرے جاتے ہیں نیز طلبگارانِ دنیا خرید وفروخت اور مُصولِ نَفْعِ وُنیوی کیلئے سویرے سویرے بازاروں کی طرف چل پڑتے ہیں تو آخرت طلب کرنے والے ان سے مقابلہ کیوں نہیں کرتے!''

(احياء العلوم، ج ١، ص ٢٤٦، دارصادر بيروت)

غريبوں كا حجّ

حطرت سِيدُ نا عبدالله بن عباس رض الله تعالى عباست روايت بكه سركار نامدار، بِسافن إروايت بك مركار نامدار، بِسافن بروار وكالرو عالم كما لك ومخار، هَبَهُنشا و أبرار عَزَّوَ حَلُّ وصلى الله تعالى عليه والدوسل في دواية وحج المسلكيّن و في دواية حج المسلكيّن و في دواية حج المفقراني. يعن " مُحمُعَه كنما زمساكيين كالح باوردوسري روايت ين به كم

و من و من و من الد تنانى مايد الديمة م اجريم أم ملين المبهم مام) يروّز و ياك يزمونو جمع يركي يزموب شك شماقام جهانول كرب كارمول بول -

جُمُعه كَنَمَازِ غريول كانج بـ-"

(كنز العُمَّال ج٧ص ٢٩٠ حديث ٢١٠٢٨،٢١٠ دارالكتب العلميه بيروت)

جُمْعَه کیلئے جلدی نکلنا حجّ ھے

اللہ کے بیارے رسول، رسول مقبول، سیّدہ آ مِند کے کلٹن کے مَهمَة پھول عَنْ وَ آمِند کے کلٹن کے مَهمَة پھول عَنْ وَ اَللہ عَلَى اللہ تعالیٰ علیہ الدوسلم ورضی اللہ تعالیٰ عنها نے ارشا و فر مایا، 'بلا شبہ تمہارے لئے ہر مُحمَّد کے دن میں ایک حج اور ایک عُمرہ موجود ہے، لطذا جہمعَد کی نَما ذکے النے جلدی نِلکانا حج ہے اور بُمُعد کی نَما ذکے بعد عَصْر کی نَما ذکے لئے انتظار کرنا عمرہ ہے۔' (السن الکبریٰ لیسیفی حدیث ۹۸۰ء ۳۵ ص ۳۶۲ دارالکت العلمیہ بیروت)

حجّ و غمره کا ثواب

حُجَّهُ الاسلام حضرت ِسِيدُ ناامام محمد غز الى عليد ممة الله الوالى فرمات بين، "(مُمَا ذِنْهُ عِنْهُ كَ عَصْر كَي مُمَا زَيْرِ هِنْ تَكَ مَسْجِد ، في مين رہے اور اگر مُما ذِ مومن مصطفى اسلى الدتال المدواب منم) جوجى برووز جعدة أووشريف بره هاكاش قبيامت كون أس كى شفاعت كرول كار

مغرِب تک تھہرے تو افعنل ہے، کہاجاتا ہے کہ جس نے جامع مسجِد میں (مُحدادا کرنے کے بعدو ہیں ڈک کہا نَمازِ عَصْر یزھی اُس کیلئے **ج** کا ثواب ہے اور جس نے

(وہیں زک کر)مغرِ ب کی نَماز پڑھی اسکے لئے **ج** اور **عمرے ک**ا تواب ہے۔ راحیا، العلق

ح ١٠ صر ١٠٤٩ دارصادر بيروت جهال محمد پرهاجاتاب أس كوجاميع مسجد بولت بيل.

سب دنوں کا سردار

مركا و مدينه، داحَتِ قلب وسينه، فيض گنجينه، صاحِبِ معطَّر بسينه صلى الله

تعالى عليه دالد ملم كافر مانِ باقرينه ب، جمعه كاون تمام ونول كامروار باور

الله عَــزُوَجَــلَّ كنز ديكسب سے بڑا ہے اور وہ الله عَــزُوَجَـلَ كنز ديك

عيدُالاَ صَحْى اورعيدُالُفِطْرے براہے،اس میں پانچ خصلتیں ہیں:(۱)الله

تعالیٰ نے اِسی میں آ دم ملیه السلام کو پیدا کیا اور (۲) اِسی میں زمین پر اُنہیں اُ تارا اور

(۳) اِس میں اُنہیں وفات دی اور (۶) اُس میں ایک ساعت ایسی ہے کہ بندہ

خد مان مصطنع (ملى الدُّ تعالى مايد البيهُم) جمل في مجهر يرد وَيُحتمد دوسو باردُّ زُود پاک پرُها أَس كه دوسوسال كه كناوتها ف ابول كه-

اُس وَ قت جس چیز کاسُوال کرے گاوہ اُسے دیگا جب تک حرام کاسُوال نہ کرے اور (۵) اُسی دن میں قِیامت قائم ہو گی۔ کوئی مُقرَّب فِرِ شتہ وآسان وزمین اور ہوادیہاڑ اور دریا ایسانہیں کہ مجمعہ کے دِن سے ڈرتا نہ ہو۔

(سنن ابن ماجه ج٢ص٨ حديث ١٠٨٤ دارالمعرفة بيروت)

ایک اور روایت میں مرکار مدینہ صلی الله تعالیٰ علیہ دالہ دسلّم نے بیہ بھی فر مایا ہے کہ کوئی جانور الیانہیں کہ بُڑعہ کے دن صُبْح کے وَقَت آفاب نکلنے تک قِیامت کے ڈرسے چیخانہ ہو، ہوائے آدمی اور دحن کے۔

(مؤطا امام مالك ج ١ ص ١٥ حديث ٢٤ دار المعرفة بيروت)

دُعاء قَبول ہوتی ہے

مرکار ملاً مُلاَّمه، سردارِ مدینهٔ منوره الله تعالی علیه داله دسم کافر مانِ عِنایت نثان ہے، جُمعه میں ایک ایس گھڑی ہے کہ اگر کوئی مسلمان اسے پاکر الله عَدْدَ حَلْ

هر صلى مصطفية (ملى الإرمال بايدال بينم) أس فحل كى ماك خاك آلود وحس كے پاس ميراؤكر ، واورد و مجھ برؤز و دياك شرح هے۔

ہے کچھ مانگے تواللہ عزَّ ذِخلِّ اسکوضَر وردیگااوروہ گھڑی مختصر ہے۔

(صحيح مسلم ۱۰ ص ۲۸۱)

عَصْر و مغرِب کے درمیان ڈھونڈو

مُضُور پُرِنور ، شافِع بومُ النَّشُورصلَى الله تعالى عليه واله وسلَم كا فريان پُرسُر ور

ہے،'' **جُمُعه** کے دن جس ساعت کی خواہش کی جاتی ہےاُ سے عَصْر کے بعد

سے غروب اللہ علاق کرو۔ (ترمذی ج۲ص ۳۰ حدیث ۱۸۹ دارالفکر بیروت)

صاحب بهارشر بعت كاارشاد

حضرت صَدُرُ الشَّر يعه مولينا محمدا مجد على اعظمى رحمة الله تعالى علي فرمات

ہیں ، قَبُولیّت دعاء کی ساعَتوں کے بارے میں 'وقول قُوی ہیں(۱)امام کے نُطبہ

کیلئے بیٹھنے ہے ختم نَماز تک(۲) کجمعہ کی بچیلی ساعت۔

(بهارشر بعت صد عن ۸۲ مدية الرشد بر ملي شريف)

فيضانِ جُمُعه

بغر مان مصطفیا (سلی اندندان بطیدالیداند) جم کے پاس میراذ کر ہوادر دہ جھے پر دُرُ دوشر بیف ند پڑھے تو لوگوں میں وہ نجو ک تر یق تحف ہے۔

قَبولیّتِ کی گھڑی کون سی؟

مُفسر شہیرِ حکیم الامّت مفتی احمد بار خان ملیہ رقمۃ المّان فرماتے ہیں ، ہر رات میں روزانہ قبولتیت دعا کی ساعت آتی ہے گر دِنوں میں عِرْ ف**ے محتمعہ کے** دن ۔ گریقینی طور پر بینہیں معلوم کہ وہ ساعت کب ہے ، غالب بہ کہ **دو مطبول** کے درمیان یا مغرب سے پچھ پہلے ۔ایک اور حدیث یاک کے تُحت مفتی صاحِب فرماتے ہیں،اِس ساعت کے متعلّق عکماء کے جالیس قول ہیں،جن میں دو قول زیادہ قوی ہیں،ایک ڈوخطبوں کے درمیان کا، دوٹیرا آفتاب ڈویتے وقت کا۔ حكايت: حضرت ِسيَّدَ تُنافاطِمةُ الزَّهراء رض الله تعالى عنهاأس وقت خود حُجر ب مين بينصتين اور ايني خادِمه فِضَّه رضي الله تعالى عنها كو بابَر كھڑا كرتيں، جب آفتاب رہی است تعالی کہ ہمائی ہوں ہے۔ ڈو بنے لگتا تو خادِمہ آپ کوخبر دیتیں ،اس کی خبر پر **ستید ہ**ائیے ہاتھ دعا کیلئے اُٹھا تیں۔ بہتر یہ ہے کہ ایس ساعت میں (کوئی) جامع دعا مانگے جیسے یہ قرانی دعاء: ارتينا إناف الدُنياحسنة وفي الْإخرة حسنة وقناعذاب الكالي (تسرجَهَه كنزُ الايعان: اے جارے رتبجمیں ونیامیں بھلائی وے اور جمیں

فی معد مصطفیا (ملی الله قال مایدالد ملم) جس کے پاس میرا او کر ہوا اور اُس نے وُرُ ووشریف نہ پڑھا اُس نے جَعَا کی۔

آ پخرت میں بھلائی دے اور جمیں عذاب دوزخ سے بچا۔ پ ۲،۱البقرہ ۲،۱)

ہو مں (مَلَحَمَامِ اوَجِ ٣٢٥ ٣١٥) وُ عالَی نتیت ہے وُرُود شریف بھی پڑھ سکتے ہیں کہ وُ رُود

پاک بھی عظیم الشآن دُعاء ہے۔

افضل میہ ہے کہ دُونوں مُطبوں کے درمیان پغیر ہاتھ اُٹھائے بلا زَبان بلائے دل میں دُعاء ما کی حائے۔

ہن کے معدوایک کروڑ 44 لاکھ جنم سے آزاد

سر کا بید بینه سلی الله تعالی علیه داله دستم کا ارشا دِرحمت بُنیا د ہے، محسمعہ کے

دن اور رات میں چوہیں گھنٹے ہیں کوئی گھنٹا ایسانہیں جس میں اللہ تعالی جہتم سے

چهلا که آزاد نه کرتا هو، جن پرجتَم **واجب** هو گیا تھا۔

(مسندابي يعلي ج٣ص ٢٣٥ حديث ٢٤٧١ دارالكتب العلميه بيروت)

مُم ہوگی۔

هدر (ملی اند تدان عید ادر سنم) جس کے پاس میر اذکر ہوا اور اُس نے مجھ پر دیر و پاک ندیز ھا تحقیق وہ دیجت ہوگیا۔

عذاب قَبر سے محفوظ

تا جدار مدینهٔ منوَّره ،سلطان ملهٔ مکرّ مهلی الله تعالی علیه والبدسلم نے إرشاد فر مایا، جورو زیمُعه باشب بُمُعه (یعنی مُعرات ادر بُمُعه کی درمیانی شب) مرے گاعذابِ

قَبِ ہے بیالیا جائیگا اور قیامت کے دن اِس طرح آئیگا کہ **اُس پرشہیدوں کی**

(حِلية الاولياء ج٣ص ١٨١ حديث ٣٦٩دارالكتب العلميه بيروت)

چُمُعہ تا چُمُعہ گناھوں کی مُعافی

حضرت سیّدُ ناسَلمان فاری رضی الله تعالی عنه سے مروی ہے، سلطانِ

ا دو جهان، هَهُنْها و كون ومكان، رَحْمتِ عالميان صلى الله تعالى عليه واله وسلَّم كا فرمانِ عالیشان ہے، جو شخص **مجمّعَه** کے دن نہائے اور جس طہارت (یعنی یا کیزگ) کی استطاعت ہوکرےاور تیل لگائے اور گھر میں جو**خوشبو** ہو ملے پھرنما زکو نکلے اور ڈو شخصوں میں حُد اکی نہ کر ہے یعنی لاۋخص بیٹھے ہوئے ہوں اُنھیں ہٹا کر چھ میں نہ

ه و الاستعلام (الله النات في مدواله و المرات) جم نے مجھ پر ایک بارو رُودِ پاک پڑ ھااللہ تعالیٰ اُس بروس رحمتیں بھیجا ہے۔ معمود معمود معمود معمود معمود معمود معمود معمود کی ایک بارو رُودِ پاک پڑ ھااللہ تعالیٰ اُس بروس رحمتیں بھیجا ہے

بیٹے اور جونماز اُس کے لئے لکھی گئ ہے پڑھے اور امام بَب نُطبہ پڑھے تو پُپ رہے اُس کے لئے اُن گناھوں کی ، جو اِس بُٹھہ اور دومرے بُٹھہ کے درمیان بیں مغیرت ہوجائیگی۔ (صحیع بھاری جاس ۱۲۱)

200 سال کی عبادت کا ثواب

حضرت سید ناصدیق اکبروحضرت سید ناجمران بن تصین رضی الله تعالی عنها راه یت کرتے ہیں کہ قاجد اور حضرت سید کا مکر مصلی الله تعالی علیہ واله دسلم راه یت کرتے ہیں کہ قاجد اور حضرت میں کہ مکر مصلی الله تعالی علیہ واله دسلم نے ارشاد فر مایا، ' جو جُمعہ کے دن فہائے اُس کے گناہ اور خطا کیں منا دی جاتی ہیں اور جب چلنا شروع کیا تو ہر قدم پر بیس سیکیاں لکھی جاتی ہیں، اور دوسری روایت میں ہے ہرقدم پر بیس سال کاعمل لکھا جاتا ہے دالسمد م الاوسط للطبرانی حدیث روایت میں ہے ہرقدم پر بیس سال کاعمل لکھا جاتا ہے دالسمد م الاوسط للطبرانی حدیث میں ہے ہرقدم پر بیس سال کاعمل لکھا جاتا ہے دالسمد م الاوسط للطبرانی حدیث میں ہے ہرقدم پر بیس سال کاعمل لکھا جاتا ہے دالسمد م الاوسط للطبرانی حدیث میں کے مل کا انجر ماتا ہے۔ دابطہ المعربی بیروت) اور جب نیما زے فارغ ہوتو اُسے دوسو ہروت)

فيضان جمعه

غو صاني مصطفعة : (ملى الذعان حددال منم) بسبة مرطين (جبم النام) يرة أود باك يا**حق بحد يرجى ياحوب شك عن تمام جهانول كرب** كارسول بول -

مرحوم والدَين كو هر جُمُعه اعمال پيش هوتے هيں

و عالم کے مالیک و مختار ، مکنی مَدَ نی سر کار مجبوب پروژد گار غـزَ وَ خـلَ و

صنَّى اللَّه تعالى عليه والبوسلَّم نے إرشاد فرمايا، پيراور جُمعرات کواللَّه عَــزَّوَ حَسلَ كَحْصُور اعمال پيش ہوتے ہيں اورانبيائے كرام عليهم الصَّلوةُ و السلام اور مال باپ ك

سامنے ہر **جُــمُعَهَ** و۔وہ نیکیوں پر نُوش ہوتے ہیں اوران کے چہر وں کی صفائی و

تابش (یعنی جبک دمک) بڑھ جاتی ہے ، تو اللہ سے ڈرواور اپنے وفات پانے

والوں کوائے مناهول سے رنح ند پہنچاؤ۔

(نوا درالاصول للترمذي ص ١٣، دار صادر بيروت)

جُمُعہ کے پانچ خُصُوصی اَعُمال

حضرت بید نا ابسو سَعید رض الله تعالی عندے مر وی ہے، سرکار دُوعالم نور مُجَسَّم ، شاہِ بن آ دُم، رسولِ مُهُحتَشَم صلَّى الله تعالی علیه دالہ وسلَّم کا فرمانِ معظَّم فر جانِ مصطّفیا : (ملی در من ال عبد ال اسم) جس نے مجھ پر ایک ؤرود پاک پڑھا اللہ تعالیٰ اُس پر دس رحمیں جسجتا ہے۔

ہے،'' پانچ چیزیں جوایک دِن میں کرے گاللہ عَزْوَ جَلُّ اُس کُومِتِی لکھ دےگا(۱) جو**مریض کی عِیادت** کوجائے (۲) **نمازِ جنازہ** میں حاضِر ہو(۳) **روزہ** رکھے، (٤) (نمَازِ) **نمُنعہ** کوجائے اور (۵) **غلام** آزاد کرے۔''

(صحيح ابن حبّاً ن ج٤ص١٩١ حديث ٢٧٦٠دارالكتب العلميه بيروت)

جنت واجب موكئ

حضرت سیند نااب اُماهه رضی الله تعالی عند مر وی ہے، سلطان و جہان میکنشاہ کون و مکان، رَحمتِ عالمیان صلی الله تعالی علیه واله وسلم کا فرما اوا عالیثان ہے،''جس نے جمعت کی نماز پڑھی، اُس دن کاروز ورکھا، کسی عالیثان ہے،''جس نے جمعت کی نماز پڑھی، اُس دن کاروز ورکھا، کسی مریض کی جمازہ میں حاضر ہوا اور کسی زکاح میں شرکت کی توجمت کی ،کسی جنازہ میں حاضر ہوا اور کسی زکاح میں شرکت کی توجمت اس کے لیے واجب ہوگی۔''

(المعجم الكبير ، ج ٨ ص ١٩٧ حديث ٤ ٨ ٤ ٧ داراحياء التراث بيروت)

غر مانِ مصطفعے: (ملى «فد قال عليه» لديه ملى بحص نے جمھير دسير وزيو لي ك پر هااللہ تعالىٰ أس پر سور متيں ناز ل فر ما تا ہے۔

صرُف جُمُعه کاروزہ نه رکھنے

خصوصیّت کے ساتھ تنہا محد مع یا مِرْ ف ہفتہ کاروزہ رکھنا محروہِ

تَنْ فِرِ يهى ہے۔ ہاں اگر کمی مخصوص تاریخ کو محد مع یا ہفتہ آگیا تو کراہت

نہیں ۔ مَثُلُ ۵ اشَعبالُ المُعظَّم ،۲۷ رَجَبُ المُرَجَّب وغیرہ ۔ فر مانِ مصطفیٰ

صلی اللہ تعالی علیہ والدسلم : 'محد معه کاون تبہارے لئے عید ہے اِس دن روزہ مت

رکھو مگر رید کہ اس سے پہلے یا بعد میں بھی روزہ رکھو۔

(أَلتَّرُغِيُب وَالتَّرُهِيب ج ٢ ص ٢٦)

س ھزار برس کے روزوں کا ثواب

مرکار اعلیٰصر ت امام اُحمد رَ ضا خان علیه رحمة الرطن فرماتے ہیں ، روز هُ جُمعه بعنی جب اس کے ساتھ بَنج شَنْبُه (بعنی جُمع ات کا) یاشَنْبُه (ہفتہ کاروزہ) بھی شامِل ہو، مردی ہوا، **دس ہزار برس کے روزہ کے برابر ہے۔**

(فآويٰ رضو په جديدج ۱۵۳)

غو هانِ مصطّفها (سلى الدنوان المدوالد الله) تم جهال بحى موجى يردُرُ دو يرسوتهمارادُرُ دو جي تك پيچا يه

جُمُعہ کو ماں ہاپ کی قَبر پر حاضری کا ثواب

سر کا بینامدار، لوعالم کے مالیک و مختار، شَبَنْشا وِ اَبرار صلی الله تعالی علیه واله دِسلّم

کا فرمانِ خوشگوارہے، جواپنے ماں باپ ^دونوں یا ایک کی قَبُر پر **ہر جُـ مُعہ** کے

دن زِیارت کوحاضِر ہو،اللّٰدتعالیٰ اُس کے **گناہ** بخش دےاور ماں باپ کے ساتھ

الجها برتا و كرف والالكهاجات (نوا درالاصول للترمذي، ص ٢٤ دار صادر بيروت)

قَبْرِ والدَين پر ياسين پڑھنے كى فضيلت

حضُورِ اكرم، نو رِجْسَم، شاهِ بني آ دم صلّى الله تعالى عليه داله وسلّم نے إرشا دفر مايا،

جو شخص روزِ جُمعه اپنوالد بن ماایک کی قَبْر کی زیارت کرے اوراس کے پاس

يسين پر هي بخش ديا جائے۔ (الكامِل لابن عدى ج٥ ص ١٨٠١ دارالفكر بيروت)

تين هزار مغفرتين

سلطان كر مين ، رحمت كوئين ، نا نائے حَسَنين صلى الله تعالى عليد الروسلم ورض الله

تعالى عنها كافرمانِ باعِثِ عَين ب،جوہر مُحمَّعَه والدَين يا ايك كى زيارتِ قَبْلُ كرك

فيضان جُمْعه

فو هان مصطفعان (سلی الله تعالی بدرالد دنم) جس نے مجمد بروس مرتبہ کا اور وس مرتبہ تام درود یاک پڑھا اُے تیامت کرن میری شفاعت لے گی۔

وہاں ی**سین** بڑھے، یسین (شریف) میں جتنے ٹرنف ہیں ان سب کی گنتی کے مرد دیات کا رہ سے کارمین فرار سر

برابرالله تعالی اس کے لئے مغفرت فرمائے۔ (انعاب السادة المنفین ج ۱۰ ص ۳۶۳ بیروت)

میں سے ایک کی قَبْر پر حاضر ہو کریاسین شریف پڑھنے والے کا توبیز ای پار ہے۔ البحد ملهٔ لِلله عَدِدُوَ هَلْ ماسین شریف میں 5رکوع83 آیات 729 کلمات اور

المصحمة بين عشرة حل يا ين مريف ين 5رنون 83 أيات 29 من منات اور 3000 مُرُّ وف بين اگر عِندُ اللهُ (يعني اللهُ عَرُّوَ حَلَّ كَنْرُو كِ) يه كنتي وُ رُست ہے تو اِن شاءَ الله عَرَّدَ حَل**َّ تَمِن بِرَ ارمغِفِر توں كا تواب ملي كا۔**

رُوحَيِن جَمُعُ هوتي هين

جُــهُ عــه کے دن یا (جُمعرات و جُمعہ کی درمیانی) رات میں جو یاسین

شریف پڑھاس کی **مغیر ت**ہوجا گیگ ۔ جُمُعہ کے دن **رُومیں** جُمع ہوتی ہیں لہٰدالِس میں نِیارتِ ثُبُور کرنی جاہے اور**اس روز جہنم** نہیں بھڑ کا یا جاتا۔

(بهارشر بعت صنه عص ۱۰۶ مدية المرشد يريلي شريف)

فيضانِ جُمُعه

فد حان مصطفیا : (ملی اشتالی بدار بسنم) مجمد برورو باک کی کثرت کرو بیشک بیتمهار سے لئے طہارت ہے۔

مركارِ الله عليه على الم أحدرَ ضاخان عليد حمة الرحن فرمات عين: "زِيارتِ (تُبُور) كا

افضل وقت روزِ بُمُعه بعدِ مُما نِهُ ج _ '' (فاذي رضوية ٥٩٥ رضافا وَمَدْ يَثْن لا بور)

سُورَةُ الكُهُف كي فضيلت

حضر متوسيِّد ناعبدالله إبن عُم مَورض الله تعالى عنها عيم وي هم، نميّ

رَحْمت بُفعِ امّت ،هَبَهْشا و بُوُّت ، تاجدارِ رسالت سنَّى الله تعالى عليه واله وسلَّم كا فرمانِ باعظمت ہے، '' جوُّخص جُسمُعَه كے روز سُسورَةُ ال**كَهْ**ف يڑھے أس كے قدم

ہے آسان تک نُو ربُلند ہو گاجو قِیامت کواس کے لیے روشن ہو گااور **دو جُہ مُعو**ں

كدرميان جو كناه موت بين بخش دينے جائيں مے "

(اَلْتُرْغِيُب وَالتَّرْهِيُب ج ١ ص ٩٨ دارالكتب العلميه بيروت)

دُونوں جُمُعہ کے درمِیان نور

حضرت سید رض الله تعالی عند سیم وی ہے، مُضُور سرایا نور، فیض سیجور، شاوغیور، صلّی الله تعالی علیه واله وسلّم کا فرمانِ نورٌ علیٰ نور ہے، ' جو تُحَصَّ بروزِ مُحمد **سُورَةُ الكَهُف** برُ ھے اس کے لیے دونوں جُسمُعوں کے درمِیان نور

روڻن ہوگا۔''

فيضانِ جُمُعه

فورهان مصطفها (اطيان تنافيان البراقر) جم ن كاب يم الي يودو باك كالراقب بكراه بأكر كاب بمراكعان بهافر شع ال كيام احتفادكر شادي شد

(أَلَّتَرُغِيُب وَالتَّرُهِيُب ج ١ ص ٢٩٧ دارالكتب العلميه بيروت)

كغبة تك تور

ایک روایت میں ہے،''جو سورۃُالگہٰف شبِ بُرُعد (یعن بُمعرات اور بُرعه کی درمیانی شب) پڑھے اس کے لیے وہاں سے **کھیہ تک نور**روشن ہوگا۔''

(سنن الدارمي ج٢ ص٤٦ ٥ حديث ٣٤٠٧ كراتشي)

سورة لحم الدُّخان كانسيات

حضرت سيِّدُ نا ابو أمامه رض الله تعالى عند عر وى هيم، حضور سرايا

نور، فيض تَنجور، شاهِ عَيور، صلّى الله تعالى عليه داله وسلم كا فرمانِ جنت نشان ہے، ' جو تحض

بروز بُمْعَه ياشب بُمْعَه سورة خم الدُّحان يرْ صاس كے لياللد وال جنس

سين ايك گرينائ كار المعجم الكبير للطبراني حديث ٨٠٢٦ ج٨ص٢٦داراحياء

القرات بدروت **المیک** روایت ہے کہاس کی مغیر ت ہوجائے گ۔

(جامع ترمذی ح ؛ ص٧٠٤ حديث ٢٨٩٨ دارالفكر بيروت)

خوصان مصطفعا (ملى النمتال طيداليه على المجدية أثرت عاد أووياك بإحوب شك تمهادا جديرة دودياك بإحناتها رع كنابول كيليمغفرت ب_

ستّر هزار فرشتوں کا اِستِففار

الهام الانصارة المهاج ين، مُحِبُ الفُقَراءِ وَالْمَساكِين جنابِ رَحْمَةٌ لِلْعَلْمِين صَلَى الله تعالى عليه والهوسلَّم كافر مانِ دِلْشِين ہے، جُو حُفَّ شبِ جُمعہ كو سورہ هم الدُّعان پڑھاس كے لي**ستر ہزار فر**شتے إشتِقفاركريں گے۔''

(جامع ترمذي ج ٤ ص ١٠٦ حديث ٢٨٩٧ دارالفكر بيروت)

سارے گناہ مُعاف

(مجمع الزوائد ج٢ص ٣٨٠ حديث ٢١٩ دارالفكر بيروت)

۲۸)

نَماز جُمُعه کے بعد

اللَّه تبارَك وَ تَعَالَى بِارِه ٢٨ س**ورَةُ الحُمُعه كَي آيت نُمِرِ • اللَّه**

ارشادفر ما تاہے:۔

'فَاذَا قُضِيَتِ الصَّالُوةُ ترجَمه كنزالايمان: " كيرجب مَازِ فَانْتُكُورُ وَإِنِّي الْأَرْضِ (جمعه) ہو چکے تو زمین میں پھیل جاؤاور نزومل ایند کا فضل تلاش کرو اور الله کو بُم**ت یا** و وَابْتَغُوامِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوااللّهُ كَتْنُكُّا كرواسُ التبدير كه فَلاح ياؤ-" لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ[©]

صُدُرُ اُلاَ فاضِل حضرت علّا مه مولینا سید محمر نعیم الدّین مُر اد آبادی علیه رعمة الله الهادي اس آيت كے تحت تفسير بحيزاف المير فعان ميں فرماتے ہيں ،اب (يعنی ئما نِہُمُعہ کے بعد)تمہارے لیئے جائز ہے کہ معاش کے کاموں میں مشغول ہویا ةٌ <mark>هُوهانِ مصطّفيا (مل</mark>انة علا بدورانم) بوقع بإليك مرتبدؤ أوثر نف برحت بالله تعالى أس كيلنا ليك قيراط الراكمة ااوراكي قيراط احديها زجتنا ب

ُ طَلَبِ عَلَم یاءِیا دت ِمریض یا شرکت ِ جنازہ یا زِیارَتِ عَلَما عُلِس کے مِثْل کاموں میںمشغول ہوکرنیکیاں حاصِل کرو۔

مجلسِ عِلْم مِين شركت

مما زیخعہ کے بعد بلسِ عِلم میں شرکت کرنامُستَّب ہے (مفسر مظہری

ج٩ص ١٨٤ لاهور) **چُنانچِهِ حُجَّهُ الإسلام حفرت ِسِيّدُ ناامام مُحدَغُرُ ال**ى عليه رحمة الله الوالى

فرماتے ہیں کہ حضرتِ سیِّدُ نا اُنسَ بن مالِک رض الله تعالیٰ عنه کا فرمانِ عالیشان

ے: 'إِس آيت ميں (فَقط) خريد وفر وخْتُ اوركسبِ وُنيامُر ادبين بلكه طَلَبِ علم،

بھائیوں کی زِیارت، بیاروں کی عِیادت ، جنازہ کے ساتھ جانا اوراس طرح کے

كام بي - (كيميائي سعادت ج اص ١٩١ انتشارات گنجينه:تهران)

میٹھے میٹھے اسلامی بھا تیو!ادائیگئ جُسمُعَه واجِب بونے کے لئے

گیارہ شُرطیں ہیں ان میں ہے ایک بھی مَعدُ وم (تم) ہوتو فرض نہیں پھر بھی اگر

فدهانِ مصطّفهٰ (مل مدعل هـ الهاند) جومجه پر درود پاک پڙهنا بحول گيا ده جنت کاراسته بحول گيا-

یڑھے گاتو ہوجائے گا بلکہ مردِعاقِل بالغ کے لئے جُمُعہ پڑھناافضل ہے۔نا بالغ نے جُمُعه پڑھا تونَفُل ہے کہاں پرنَما زفرض ہی نہیں۔

(درمختارمع ردالمحتارج ٣ ص٢٦ تا٢٩)

ياغوث الأعظم "كياره رُونك نسیت ﷺ نسیت ﷺ بخعہ فرض ہونے کی 11 فراکط

(۱) شَهر میں مُقیم ہونا (۲) صِحّت لینی مریض پر جُمُعافرض نہیں مریض

ہے مُر ادوہ ہے کہ سجد جُمُعہ تک نہ جاسکتا ہویا چلاتو جائے گامگر مرض بڑھ جائے گایا دریمیں اچھا ہوگا۔ شیخ فانی مریض کے حکم میں ہے (۳) آزاد ہونا ،غلام پر

جُمُعه فرض نہیں اور اُس کا آقامنع کرسکتا ہے(٤) مُردہونا (۵) بالغ ہونا (٢) عاقِل

ہونا۔ بددونوں شرطیں خاص مجے معکم سے لیے ہیں بلکہ ہرعبادت کے وجوب میں عَقُل وبُلُوغ شَرْط ہے(٧) انگھیارا ہونا (٨) جلنے پر قادِر ہونا (٩) قَید میں نہ ہونا

. ﴾ خور جان مصطفعے اسلی انتشان علیہ البسلم) جمد پر کثر ت سے ذور و پاک پڑھ ہے جائلہ تمہارا جمد پروز وو پاک پڑھ ناتمبار ہے کا بول کیلیے منفر ہے۔

(۱۰) بادشاه یا چور وغیره کسی ظالم کا خوف نه ہونا(۱۱) مینه یا آندهی یا اُولے یا

سردی کا نه ہونالیعنی اِس قَدَر کہ ان سے نقصان کا خوف صیحے ہو۔ رابصنی

جن پرئماز ُفْرض ہے مگر کسی شَرْعی عُذْر کے سبب بُخعہ فرض نہیں ، اُن کو بُخعہ کے روزٌ ظہر مُعاف نہیں ہے وہ تو پڑھنی ہی ہوگی۔

جُمُعه کی سنّتیں

نَمَا نِجُهُ مُعه هِ کے لئے اوّل وَ قت میں جانا ، **مِسواک** کرنا ، اچھے اور

سفید کیڑے پہننا، تیل اور خوشبولگا نااور پہل صف میں بیٹھنامستَ حب ہے اور

عسل سنت ہے۔ (عالمگیری ج ۱ ص ۱۶۹)

غُسلِ جُمْعه كا وقُت

مُفتمرِ شَهِيرِ عَيمِ الْلُمّت حفرت ِمفتی احمد يارخان عليه رحمة الحّان فرماتے ہيں، بعض عَلَما ئے کرام دَحِمَهُمُ اللّهُ تعالىٰ فرماتے ہيں که غسلِ جُمعه نَما زکيليے مَسون فور مان مصطفها (مل الدتماني ملير والدينم) جوجمه برروني جعد دُرُ ووثر يف يز هي كاش قيامت كدن أس كي شفاعت كرون كأنه

ہے نہ کہ جُ مُ عدہ کے دن کیلئے۔ جن پر بُٹھ کہ کی نَما زنہیں اُن کیلئے بیفسل سنت نہیں ، بعض علَمائے کرام رَحِمَهُمُ اللهُ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ جُٹھ کافسل نَما زِبُٹھ عہ سے قریب کروہی کہ اس کے وُضو سے بُٹھ یہ پڑھو گرحق بیہ ہے کیفسل بُٹھ عہ کا وقت طکوع بَرِّو ہے گُر سے شُرُ وع ہوجا تا ہے (رسانہ ص ۲۳۴) معلوم ہوا عورت اور مسافر وغیرہ جن پر جُٹھ عہ واجب نہیں ہے اُن کیلئے عسل بُٹھ عہ بھی سنت نہیں۔

غسل جُمْعہ سنّتِ غیر مُؤكّدہ ھے

حضرت علّا مہ ابنِ عابد ین شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں، نمازِ مجمعہ کیلئے غسل کرناسُئنِ زَوائِد ہے ہے اِس کے ترک برِعِتاب (یعنی ملامت) نہیں۔

(درمختار معردالمحتارج اص٣٠٨)

ثطبه مين قريب دَينے كى فضيلت

حضرت سيِّدُ نا سَـهُـرَه بن جُندَ برض الله تعالى عند عر وي هيه

. فعر ملا مصطنعا (سلی الله تعالی ملیه الاستر) جمس نے بھی پر روز شکتہ دوسو پاروڑ اور پاک پڑھا اُس کے دوسوسال کے گنا مذھا اُپ ہول گے۔

خُصُور سرایا نور، فیض گنجور، شاهِ غَیور، صلّی الله تعالیٰ علیه داله دسلّم نے فرمایا، '' حاضِر رہو

نُطبہ کے وقت اور امام سے قریب رہو اِس کئے کہآ وَ می جس قدَر دُوررہے گا اُس

قَدَر جَست میں پیچے رہے گااگرچہ وہ (یعنی مسلمان) جنت میں داخِل ضرور ہوگا۔

(ابوداوُ دج ۱ ص ۱۶۰۰ حدیث ۱۰۸ دار احیاء التراث العربی بیروت)

توجمعته كاثواب بسطاكا

جو بُمُعہ کے دن کلام کرے جبکہ امام نُطلبہ دے رہا ہوتو اس کی مثال اُس **گلا ھے** جیسی ہے جو بو جھا مُٹھائے ہواوراُس وقت جوکو کی اپنے ساتھی سے یہ

كىچ كە' چپ رہو' تو أے **ئنعه كا تواب** نەملے گا_

(مسندِ امام احمد بن حنبل، ج١٠ ص ٤٩٤ حديث ٢٠٠٣)

چُپ چاپ خُطْبه سُننا فَرض هے

جوچيزين ئماز مين حرام بين مَثَلًا كھانا پينا،سلام وجواب وغيره بيسب

عندا (ملی اند نبالی ملید البدانم) اُس فحض کی تاک فاک آلود موجس کے پاس میراد کر مواور دو جھے پر ڈرود پاک نہ پڑھے۔

۔ نطبہ کی حالت میں بھی **حرام** ہیں یہاں تک کہ نیکی کی دعوت دینا بھی۔ہاں خطیب نیکی کی دعوت دے سکتا ہے۔ جب مُحیطُبیہ پڑھے،تو تمام حاضِرین پرسننا اور پُپ رَ ہنا **فرض** ہے، جولوگ امام سے دُ ور ہوں کہ نُطْبہ کی آ واز ان تک نہیں پہنچق اُنہیں بھی پُپ رَ ہنا **واچب** ہےا گر کسی کو بُری بات کرتے دیکھیں تو ہاتھ یا م کے اشارے سے مُنع کر سکتے ہیں ذبان سے **نا جائز** ہے۔

(درمختارمع ردالمحتار ج٣ص ٣٦،٣٥)

عظبه سنن والاؤر ودشريف نبيس يرصكما

مركار مدينه سلى الله تعالى عليه واله وملم كانام باك خطيب في لياتو حاضِرين دِل میں وُ رُود شریف پڑھیں زَبان سے پڑھنے کی اُس وقت اجازت نہیں ، یونہی

صَحابه کرام علیم ارضوان کے ذِکرِ یاک پراُس وقت رضی الله تعالی عنم زَبان ہے کہنے کی اجازت نبیں۔ اجازت بیں۔ (ايضاً ص ٣٢)

🛶 (سلی نشد قدنی طبیه الدومنم) جم کے پاس میراد کر مواور وہ مجھے پر دُرُ وروشر بیف نہ پڑھے تو لوگوں میں وہ مجوس ترین فضل ہے۔

خُطبهُ نكاح سُننا واجب هـِ

نُحيطَ عَهُ مُسَعِه كےعلاوہ اور مُطبوں كاسننا بھى واجب ہے مَثْلًا مُطبِهُ

(درمختار معردالمحتارج ٣ ص ٣٢)

عيدَ بن ونِكاح وغير بُما_ مہلی اذان ہوتے ہی کاروبار بھی ناجائز

ممیک اذ ان کے ہوتے ہی (نَمازِ جُمعہ کے لئے جانے کی) کوششش (شُر وع

کر دینا)واجب ہے اور بَیع (یعنی خرید وفروخت) وغیرہ ان چیزوں کا جوسَعی (

کوشش) کے مُنافی ہوں چھوڑ دینا واجب ۔ پہاں تک کہ راستہ چلتے ہوئے اگر

خرید دفروننت کی توبیہ بھی نا جائز اور **مسجد میں خرید د**فروخت تو**سخت گناہ** ہے اور

كھانا كھار ہاتھا كەازان جُمُعه كى آواز آئى اگر بدانديشە، وكەكھائے گا توجُمُعه

فوت ہوجائے گاتو کھانا حچھوڑ دےاور جُمُعہ کوجائے۔ جُمُعہ کے لئے اطمینان

ووقار کے ساتھ جائے۔ (عالمگیری ج ۱ ص ۱٤٩، درمختار مع ردالمحتار ج ٢ ص ٣٨)

آج کل علم دین سے دوری کا ذور ہے ،لوگ دیگر عبادات کی طرح

فيخانِ جُمُعه

و من مصطفیا (ملیات نال ملیدوالد منم) جس کے یاس میراذ کر ہوااور اُس نے وُرُ ووشریف ندیر ها اُس نے جفا کی۔

تُطبہ سُنے جیسی عظیم عبادت میں بھی غلطیاں کرکے ٹی گناموں کا اِرتِکاب کرتے ہیں لہٰذامَدَ نی التجاء ہے کہ ڈھیروں ٹیکیاں کمانے کیلئے ہر مُحْمد کو خطیب قبل ازادان تُطبہ مِنْہر ہر چڑھنے سے پہلے پیافلان کرے:
''بِسِمِ اللّٰہ'' کے سیات حُرُوف کی
نسبت سے خُطبک کے 7 مَدَنی یہول

مديث الم مير المين مين مين من المجمعة كدن لوكول كي كردنين

بھلانگیں اُس نے جہنم کی طرف پُل بنایا (ترمذی ج ۲ ص ٤٨ حدیث ٥١٣ داراليفِ کُر بيروت) إس كا يكمعنى بير بين كماس يرچر هر چرد هر كوگ جهنم

میں داخِل ہو نگے۔

مند خطیب کی طرف منه کرکے بیٹھناسقتِ صُحابہ ہے (ملعصر اوسنکوہ شرید سر ۱۲۲) مند بیٹر گان وین رمہم اللہ تعالی فرماتے ہیں، دوزانو بیٹھ کر خطبہ سنے، پہلے

خطبه میں ہاتھ باند ھے، دوسرے میں زانو پر ہاتھ رکھے توان شاء الله

ه و مل مصطف السل الدتون المايد ؛ او منم) جمس ك باس مير اذكر جواا در أس في مجمد يرو را و دباك نه برح ها تحقيق و وبد بخت جوكيا_

عَزَّوْ جَلَّ وَوَرَّ كُعُت كَا تُوابِ مليكا ۔ (مِراة شرح مِسْكوة ج ٢ ص٣٣٨)

م المنطق اعملی حضوت امام احمد رضاحان علیه رُحمه الرَّحمٰن فرماتے بین، ''خطَبِ میں کھُو رِاقدس صلّی الله تعالی علیه دالہ دسلّم کا نام پاکسُن کردل میں دُرُود پڑھیں کہ ذَبان سے سُکوت (یعنی خاموثی) فرض ہے۔''

(فتاوی رضویه ج۸ ص ۳٦٥رضا فاؤنڈیشن لاهور)

مدی ایک از میں ہے، تھلبہ میں کھانا بینا، کلام کرنا اگرچہ سبطن اللّٰه کہنا، سلام کا جواب دینایا نیکی کی بات بتانا حرام ہے۔

(دُرِ مُحتار معرَدُّالُمُحتَار ج٣ ص ٣٥)

مری اعسانی حصر ت رحمة الله تعالی علی فرماتے ہیں، بحالتِ مُطبہ چلنا حرام روہ جہر الله تعالیٰ ہے۔ یہاں تک عکمائے کرام فرماتے ہیں کہاگر ایسے وقت آیا کہ خطبہ شُر وع ہو گیا تو مسجِد میں جہاں تک پہنچا وہیں رُک جائے ، آگے نہ

28

نمازکے احکام ۲۸ فیضانِ جُبُعہ

خرمان مصافیا (ملی الا بقال بلی الدینم) جس نے جمہ پر ایک بارؤ زود پاک پڑھا اللہ تعالی اُس پر دس رحمتیں بھیجتا ہے۔

بڑھے کہ بیمل ہوگا اور حال نُطبہ میں کوئی عمل رَوا (بین جائز) نہیں۔

(فتاوى رضويه ج٨ ص ٣٣٤رضا فاؤنڈيشن لاهور)

مديك أعليحضوت رحمة الله تعالى عليفرماتي بين أن خطبه مين كسي طرف كرون

(أيضاً)

پھیر کرد مکھنا (بھی)حرام ہے۔''

جُمُعه كي امامَت كا اَهَمْ مَسنَله

ایک بہت ضروری اُمرجس کی طرف عوام کی بالکل توجہ نہیں وہ یہ ہے
کہ نی عد کواور نمازوں کی طرح سجھ رکھا ہے کہ جس نے چاہانیا جُمعہ قائم کرلیا اور
جس نے چاہا پڑھا دیا یہ تا جا تر ہے اس لئے کہ جُمعة قائم کرنا بادشاہ اسلام یا اُس
کے نائب کا کام ہے۔ اور جہاں اسلامی سلطنت نہ ہو وہاں جوسب سے سے بڑا
فی یہ (عالم) سنی صَحیح الْعقیدہ ہو۔ وہ اُدکام شُرُ عِیّہ جاری کرنے میں سلطان

اسلام کا قائم مقام ہے لہٰداؤ ہی جُـمُ۔ قائم کرے، بغیر اُس کی اجازت کے (بُعہ)

فيضانِ جُمُعه

فو مان مصطفى المعدة قالد دارام من القاب على عدد واكتاب على المادة بستك براه ماس كاب على المدرجة فرع ال كيوا متفادكر ووي على

نہیں ہوسکتا ادریہ بھی نہ ہوتو عام لوگ جس کوامام بنائیں **عالم کے ہوتے ہوئے عوام** بطورِخود کسی کوامام **نہیں** بناسکتے نہ یہ ہوسکتا ہے کہ دو حیار شخص کسی کوامام مقر کر لیس **ایسا**

بھور حود ی لوامام **بیل بناسلتے نہ ریہ ہوسل**ما ہے کہ دو چار تھل کی لوامام مقر رکز میں **ا جمعه کہیں تابت نبیل۔** (بہار شریعت ھنہ ہیں ۹۰ مدیمة الرشد بریل<u> شریف</u>)

یه رساله پڑھ کر دوسرے کو دیدیجنے

شادی تمی کی تقریبات ،اجتماعات ،اعراس اورجلوسِ میلاد وغیره میں مکتبة المدینه کے شائع کرده رسائل تقسیم کر کے ثواب کمایئے ،گا ہوں کو بہ نیب ثواب تخفے میں دینے کیلئے اپنی دُکانوں پر بھی رسائل رکھے کا معمول

بنائے ، اخبار فروشوں یا بچی ں کے ذریعے اپنے محلّہ کے گھر گھر میں وقفہ وقلہ ہے بدل بدل کرسنتوں مجرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دعوت کی دعو میں مچاہئے۔ م

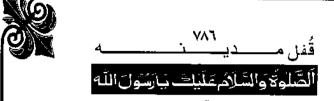
صَلُّوا عَلَى الحبيب! صَلَّى الله تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّد

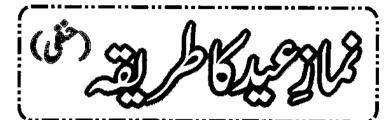
نمازعيدكاطريقه



🦔 عید کی ادھوری جماعت ملی تو؟ 442 ولزندهر بكا 437 🐢 عید کی جماعت نه کمی تو کیا کرے؟ 443 🚥 جنت واجب ہوجاتی ہے 437 438 🐠 عيد كے فطبے كے أحكام 443 من نماز عيد كيليخ جانے سے بل كى سنت 🐠 عيد کي 20 سنتين اور آ داب 444 مازعيدكيلية ت جانے كاست 438 🚥 بقرعيد كاايك مستحب 446 🚥 نماز عید کس پرواجب ہے؟ 🚥 440 🐠 تكبيرتشريق كـ8مدني چول 447 🚥 نمازعیدکاونت 441

ورَق اللّه ___





اس رسالے میں۔۔۔۔

عيد كي جماعت نهلي تو؟ 🌷 عيد كي ادهوري جماعت ملي تو؟

تكبيرتشريق كے 8 مدنی پھول کے دل زندہ رہيگا

عيد کے سخبات





الْحَمْلُ يِلْهِ رَبِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّكَلَامُ عَلَى سَيْدِ الْمُرْسَلِلْنَ اَمَا اَبْدُ فَأَ عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْدِ السِّمِ اللَّهِ الرَّعْنِ الرَّجِيْدُ

شیطان لاکھ روکے یہ رساله (۱۲ صَفَحات) مکمّل پڑھ لیجئے ،

ان شاءُ اللّه عَرَّوَجَلَّ اس کے فوائد خود هی دیکھ لیں گے۔



دُرُود شريف کی فضيلت

و عالم کے مالِک و مختار ہمگی مَدَ نی سر کار مجبوب پر ڈردگار غـــزُ وَجَـلَ و

صلَّى الله تعالیٰ علیه داله دسلَّم نے اِرشاد فر مایا، جو مجھ پرشپ جُمُعه اور رو زِیمُنعه سو بار دُ رُود م

شریف پڑھے اللہ تعالیٰ اُس کی سوحاجتیں بوری فرمائے گا**ستر آ پڑرت** کی اور

ت**میں** دنیا کی۔

(تفسير در منثور ج٦ص٤٥٦دارالفكر بيروت)

صلُّوا عملي المحبيب!

صلَّى اللَّهُ تعالىٰ علىٰ محمّد

Y

فر مان مصطفع : (ملى الله تالى ماراتم) جوجم برورود باك برع هنا بحول كياوه جنت كاراسته بحول كيا ...

دِل زِنده رے گا

تا **جدار** مدينه قرار قِلُب وسينصلَّى الله تعالى عليه داله وسلَّم كا فرمانِ عاليشان

ہے، جس نے عید بن کی رات (یعنی هب عید الْفِطْر اور شب عیدُ اللَّمْحَى) طلب ثواب

کیلئے قیام کیا (یعن عبادت میں گزارا) اُس دن اُس کا **دِل نہیں** مَر ے گا، جس دن

لوگوں کے دِل مَر جا کیں گے۔ (ابنِ ماجه حدیث ۱۷۸۲ ج۲ ص ۳٦٥)

جَنَّت واجِب هو جاتی هے

ایک اور مُقام پر حضرت ِسیِدُ نامُعا ذین جُبَل رض الله تعالی عندے مَر وی ہے، **فر ماتے ہیں، جو یانج** راتوں میں شب بیداری کرے (یعنی جاگ کرعبادت

ہ رسے یں مدی اس کے لئے بنت **واجب** ہوجاتی ہے۔ ذِی ا**لْے بِجَّہ ہُوجا** کی م م م آٹھویں ہو یں اور دسویں رات (اس طرح تین راتیں تو یہ ہوئیں) اور چوتھی عیدُ الفِطْر سے دیں میں دیں جس کے سے کا سے کا اس طرح تین راتیں تو یہ ہوئیں)

کرات، پانچوش شَعْبانُ المُعَظَّم کی پندر ہویں رات (یعنی شب بَرَاءَت)۔

(التَّرُغِيُب وَ التَّرْهِيُب ج ٢ ص ٩٨دار الكتب العلميه بيروت)

نباز عيدكا طريقه

خرجانِ مصطّفے : (مٹی نشتانی ملیدوال مند) جس نے جھے پرایک وُ رُود پاکِ پڑھااللہ تعالیٰ اُس پروس رحمتیں بھیجا ہے۔

نَماز عید کیلئے جانے سے قَبل کی سنّت

حضرت سیدُ نابُرُ بده رض الله تعالى عنه سے مروى ہے كه مُضورِ انور ، مثافِع

مَحْشو ،مدینے کے تاجور،بلاڈن ربّ اکبرغیوں سے باخبر محبوبِ داؤر مز ,جل دِسلَّی

الله تعالى عليه والدوسلم عيدة المفيط كون كجه كها كرمماز كيلي تشريف لحات

تھےاور عیبیدِ اَحْسُے کے روزنہیں کھاتے تھے جب تک نَماز سے فارغ نہ ہو

جاتے۔(ترمذی رقم الحدیث ٤٢٥ ج ٢ ص ٧٠طبعة دارالفكر بيروت) اور "بخاري كي

رِوایت حفرت ِسیدُ نا انس رض الله تعالی عندے ہے، کہ عید السف طور کے دِن

تشریف نہ لے جاتے جب تک چند کھجوریں نہ ئناؤل فرما لیتے اور وہ طاق

ہوتیں۔

(صحیح بُخاری ج ۲ ص ٤)

نَماز عید کیلئے آنے جانے کی سنَّت

حضرت ِسیّدُ نالهُو ہُر یرہ رض الله تعالیٰ عنہ سے روایئت ہے، تا جدارِ مدینہ،

فد وان مصطفعة : (ملى الدته ال مليه البرائم) جس نے جمع بروس مرتب و زود پاک پر هاالله تعالى أس پر سومتيس ناز ل فرماتا ہے۔

ئىر ورِقلَب وسينه منَّى الله تعالى عليه داله دسلَّم عِيد كو (ئما زِعيد كيليُّ) ايك راسته سے تشریف لے جاتے اور دُوم رے راستے سے واپس تشریف لاتے۔

(ترمذي رقم الحديث ٤١ ه ج٢ ص ٦٩ دارالفكر بيروت)

نَماز عيدكاطريقه(حْثَى)

مسلم اس کے اس طرح نیت سیجے: ''میں نیت کرتا ہوں ڈور ٹعت نماز عیدُ الْفِطُو (یاعبدُ الْاَصْحٰی) کی ،ساتھ کچھزا کد تکبیروں کے ،وابسطے اللہ عزوجل کے ،
یچھے اس امام کے 'پھر کا نوں تک ہاتھ اُٹھا ہے اور اللّٰہُ اکبو کہہ کر حسبِ معمول ناف کے نیچے ہاندھ لیجے اور فینا ورز ھئے۔ پھر کا نوں تک ہاتھ اُٹھا ہے اور اللّٰہُ اکبو کہتے ہوئے اور اللّٰہُ اکبو کہتے ہوئے اور اللّٰہُ اکبو کہدکر لائکا دیجئے۔
پھر کا نوں تک ہاتھ اٹھا ہے اور اللّٰہُ اکبو کہدکر باندھ لیجئے یعن پہلی تکبیر کے بعد پھرکانوں تک ہاتھ اٹھا کے اور اللّٰہُ اکبو کہدکر باندھ لیجئے یعن پہلی تکبیر کے بعد اُلہ ہوئے اور اللّٰہُ اکبو کہدکر باندھ لیجئے یعن پہلی تکبیر کے بعد اُلہ ہوئے اور اللّٰہ اُلہ کے اور قبیر کے بعد اُلہ ہوئے اور اللّٰہ اُلہ کہو کہ کہر باندھ لیجئے اور کچھٹی میں ہاتھ ہاتھ اور کچھٹی میں ہاتھ اُلہ ہوئے اور کچھٹی میں ہاتھ اُلہ ہوئے اور کھٹھٹی میں ہوئے اُلہ ہوئے اُلہ ہوئے اُلہ ہوئے اُلہ ہوئے اُلہ ہوئے اُلہ ہوئے اور کھٹھٹی میں لڑکا ہے اور کھٹھٹی میں ہاتھ اُلہ ہوئے اُلہ ہوئی اُلہ ہوئے اُلہ ہو

ہ.

٥

فوصان مصطّف (السل من منال طيرال المام) تم جهال بهي جويتي روزُ دور يرهوتهم اراوُرود جي تك بينجاب

باندھ لیجئے۔اس کو یوں یا در کھئے کہ جہال قیام میں تکبیر کے بعد پھے پڑھنا ہے وہاں ہاتھ باندھنے ہیں اور جہال نہیں پڑھنا وہاں ہاتھ لٹکانے ہیں

(ماحوذ از دُرِّم ختار ، ردالمحتار ج٣ص٦٦) كِي**رامام تَعُوْذاور تَسُمِيَه آمِس بِرُ** هر

الـحـمـد شریف اورسُورَ قاچم (لینی بُلند آواز) کیساتھ پڑھے، پھررُ کوع کرے۔ اللہ

دوسری رَکْعَت میں پہلے الحمد شریف اورسُورۃ جمر کے ساتھ پڑھے، پھر تین کہار

كان تك ہاتھا تھا كراللَّهُ اكبر كَهَ اور ہاتھ نہ باندھے اور چوتھى بار بغير ہاتھ أشائے

اللّٰهُ اکبر کہتے ہوئے رُکوع میں جائے اور قاعِدے کے مطابق نَما زمکمَّل کر لیجئے۔ س ہر کہ و تکبیروں کے درمیان تین بار' سُبْ حلیٰ اللّٰہ '' کہنے کی مِقد ار چُپ کھڑ ارّ ہنا

(فتاویٰ عالمگیری ج۱ ص ۱۰)

نَماز عِینُد کس پر واجِبهے؟

عيد ين لين (عيدُ الْفِطُر اور بَقَر عيد) كَي ثَمَا رُوادِب ب (فتاوى عالمكبرى

ج١ ص١٤٩) مگرسب برنهيس مِر ف أن برجن بر جُمعه واجِب سے (الهِدابة معه فتح

فروان مصطفع : (ملى الدن المعيد البرسلم) جم يرول مرجية اودوس مرجية امرودو إك يرماأ يقيامت كون يرى شاعت طي ك

القدير ج٢ص٣٩) عِميدُ مِن مِن نداذان مِهنداِ قامت.

(بهايشريعت حصة ٤ ص ١٠٦ مدينة المرشيد بريلي شريف)

عید کاخطبہ سنّت ھے

عید بن کی اوا کی و بی شرطیس ہیں جو جُسمُعه کی ، صِر ف اتنافر ق ہے کہ جُسمُعد میں مُطلبہ شرط ہے اور عید بن میں سنّت ۔ جُسمُعه کا خَطبہ لل از نَماز ہے اور عید مین کا بعد از نَماز۔ (عُلاصة الفناوی ج اص ۲۱۳)

نَماز عيدكا وقت

ان رُونوں نَمَازوں کا وَقَت سُورج کے بَقَدُرایک نَیزه بُلندہونے (یعنی طُلُوع آفاب کے 20 مِنکط کے بعد) سے ضَدَّوَهٔ کُبرای یعنی نِده فُ النَّهادِ طُلُوع آفاب کے 20 مِنکط کے بعد) سے ضَدَّوَهٔ کُبرای یعنی نِده فُ النَّهادِ مُرْعی اللَّه الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَ

V

فر مان مصطفى السلى در مان دران المراالية ملى بحري رد روياكى كثرت كروب شك يتمهار الم المحارت ب

عید کی ادُهوری جماعت ملی تو.....؟

مملی رَکْعَت میں امام کے تکبیریں کہنے کے بعد مُقْتُدی شامِل ہوا تو أسى وَ قت (تكبير تَحريمه كے عِلاده مزيد) تين تكبيريں كهه لے اگرچه امام نے قراءَت م شروع کر دی ہواور تین ہی کہا گرچہ امام نے تین سے زیادہ کہی ہوں اورا گراس نے تکبیریں نہیں کہ امام رُکوع میں چلا گیا تو کھڑے کھڑے نہ کہے بکہ امام کے ساتھ رُکوع میں جائے اور رُکوع میں تکبیریں کہہ لے اور اگر امام کورُ کوع میں پایا اور غالِب گُمان ہے کہ تکبیریں کہہ کرامام کورُکُوع میں یالیگا تو کھڑے کھڑے تكبيريں كيے پھرزُكُوع ميں جائے ورنہ السلّبةُ اكبو كہه كرزُكوع ميں جائے اور 'رکوع میں تکبیریں کیے پھراگراس نے رُکوع میں تکبیریں پوری نہ کی تھیں کہامام نے سراُ ٹھالیا تو باتی ساقط ہو گئیں (یعنی بَقیّہ تبیریں اب نہ کہے) ادراگرامام کے رُکوع ہے اُٹھنے کے بعد شامِل ہوا تو اب تکبیریں نہ کیے بلکہ (امام کے سلام بھیرنے کے بعد) جب اپنی (بَقِیَّہ) پڑھے اُس وَقت کیے۔اور رُکوع میں جہاں

1::5

تکبیر کہنا بتایا گیا اُس میں ہاتھ نہ اُٹھائے اور اگر دوسری رَ تُعَت میں شامِل ہوا تو

٨

و مان مصطفع : (معلى الدنال مايد الرمنم) من ي كاب عن جوي ودود إل كاما إدب عن مراام أن كاب عن كلما مهم أخر شاك كيا استفادكر قد ين م

پہلی رَ گفت کی تکبیریں اب نہ کیے بلکہ جب اپنی فوّت شکرہ پڑھنے کھڑا ہواُس وَقْت کیے۔ دوسری رَ گفت کی تکبیریں اگر امام کے ساتھ پا جائے فیھا (یعنی تو بہتر)۔ ورنہ اس میں بھی ؤہی تفصیل ہے جو پہلی رَ گفت کے بارے میں مذکور ہوئی۔ (ماحو ذاز دُرّمحتار ،ردالمحتار جس ۲۰۰۵،۰۰۰)

عید کی جَماعت نه مِلی تو کیا کرے؟

امام نے نماز پڑھ لی اور کوئی شخص باقی رَہ گیا خواہ وہ شامِل ہی نہ ہُوا تھایا شامِل تو ہوا مگراُس کی نماز فاسِد ہوگئی تو اگر دُوسری جگدل جائے بڑھ لے ور نہ (بغیر جماعت کے)نہیں پڑھ سکتا۔ ہاں بہتر سے کہ میڈھس کچارز گفت جاشٹ کی نماز بڑھے۔
(وَزِعَارِج ٣٩،٥٨،٥٨)

عید کے خُطبے کے اُحْکام

منمازے بعدامام دوخطبے پڑھےاور نحسطہ نہ جُسمُعَه میں جوچیزیں ملاسقت ہیں اس میں بھی سقت ہیں اور جو وہاں مکروہ یہاں بھی مکروہ ۔ صِرْف دو باتوں میں فُرْق ہا کیک ہے کہ جُمعُہ کے پہلے نطبہ سے پیشتر خَطیب کا بیٹھناسڈت تھا اوراس میں پہلے نُطبہ سے پیشتر 9 بار تھا اوراس میں نہ بیٹھناسڈت ہے۔ دوسرے بیر کہاں میں پہلے نُطبہ سے پیشتر 9 بار اور دوسرے کے پہلے 7 باراور شبرسے اُتر نے کے پہلے 14 بار اللّٰہ اکبو کہنا سنَّت ہے اور جُمعہ میں نہیں۔

(وُزِ مُخَارِح ٣٥ ، ١٠ مهار شر ليت حصة عصه ١٠ مدينة المرشد بريلي شريف)

اِس مُبارَك مِصْرَع ' دیدوعیدی مِل غم مدین کا 'کے بیس مُبارَك مِصْرَع ' دیدوعیدی مِل غم مدین کا 'کے بیس مُروث کی نسبت سے عید کی 20 سُنّتیں اور آداب عید کے دِن بِرُامُورُسْتَحَب بِس :

(۱) نجامت بنوانا (گر ڈلفیں بنوائے نہ کہ اِنگریزی بال) (۲) نا نحن تَرشوانا (۳) غُسل کرنا (٤) مِسواک کرنا (یه اُس کے عِلاوہ ہے جوؤشو میں کی جاتی ہے) (۵) اِنچھے کپڑے پہننا ، نئے ہنوتو نئے ورنہ دُ صلے ہوئے (۲) خُوشبو لگانا (۷) انگوشی پہننا (جب بھی انگوشی پہنے تو اِس بات کا خاص خیال رکھے کہ مِرْ ف ساڑھے

فو حان مصطفى (ملى دندل بدرونم) جومى بائد مرجدة ووثريف بإحتاب الله قال أس كيفي ايك قيرا داج اكستاد وايك قيرا داحد بهاز جزاب

چار ماشہ ہے کم وَزُن جاندی کی ایک ہی انگوشی پینئے ۔ایک سے زیادہ نہ بینئے اور اُس ایک انگوشی میں بھی نگیندایک ہی ہو،ایک سے زیادہ تگینے نہ ہوں، بغیر تگینے کی بھی مت بہنئے ۔ تگینے کے وَ زُن کی کوئی قیر نہیں۔ جاندی کا چھلہ یا جاندی کے بیان کردہ وَ زُن وغیرہ کے علاوہ کسی بھی دھات کی انگوشی یا چھلہ مردنہیں پہن سکتا۔) (۸) نما زفجر مسجدِ کحکتہ میں پڑھنا (9) عیدُ الفِطْرَ کی نَمَا زکوجانے سے پہلے چند تَمجوریں کھالیٹا، تین ، پانچ ، ' اِپنے موہیش مگرطاق ہوں۔کھجوریں نہ ہوں تو کوئی میٹھی چیز کھا لیجئے۔اگر نمازے پہلے پچھ بھی نہ کھایا تو مُناہ نہ ہوا مگرعشاء تک نہ کھایا توجتاب (ملامت) کیا جائے گا (۱۰) نَما زِعید،عِید گاہ میںادا کرنا (۱۱)عِید گاہ پیدل چلنا (۱۲)سُواری پربھی جانے میں کڑج نہیں مگرجس کو پیدل جانے پر قُدرت ہواُس کیلئے پیدل جانا اُفضل ہے اور واپسی پر سُواری پر آنے میں کرج نہیں (۱۳) نماز عید کیلئے ایک راستے سے جانا اوردوس سے رائے سے واپس آنا(18) عِيدكى مُماز سے يہلے صَدَقَهُ فِطْر ادا کرنا(اُفضل تو ہی ہے گرعید کی نَماز ہے تبل نہ دے سکے تو بعد میں دید یجئے) (18) نُوثی ظاہر کرنا(۱۲) کثرت سے صَدَ قَہ دینا(۱۷)عیدگاہ کو اِطمینان ووَ قاراور نیجی

فو مان مصطفى (سلى الله الله الدالد الم المجي يردُ رُود الريف يرعوالله م يردحت يميح كار

نِگاہ کئے جانا(۱۸) آپُس میں مُبارک بادد ینا(۱۹)بعدِ نَمازعِید مُصَافحُہ (یعنی ہاتھ مِلا نا)اورمُعانَقَه (یعنی گلے ملنا) جبیبا کے مُمُو ما مسلمانوں میں رائج ہے بہتر ہے کہ إس ميں إظہارمُسَرَّ ت ہے۔ (البحديقةُ النديه ج٢ص٠٥١،مسوّى ج٢ص٢٢) مَكّر ِ ا**َهُوَ دِ** خُوبِصُورت سے گلے ملنا مَسحَلَ فِتنه ہے(۲۰) عِیدُ الْفِطْر (یعن میٹی عِيدٍ ﴾ كَيْنَمَازْ كَيلِيَّ جاتے ہوئے راستے میں آ ہستہ سے تکبیر کہیں اور نَما زِعِید اَصْلَی کیلئے جاتے ہوئے راستے میں بُلند آ واز سے تکبیر کہیں ۔ تکبیر یہ ہے:۔ إَلَلَّهُ آكِبَرُ ءَاللَّهُ آكُبَرُ ءَلَا إِلَّهُ إِلَّا لِلَّهُ وَاللَّهُ آكَبَرُ ءَاللَّهُ آكَبَرُ وَ لِلَّهِ الْحَمْدُ ء **ترجَم.** الله عَزُّوَ حَلَّسِ سے بِرُا ہے، الله عَزُّوَ حَلَّسِ سے بِرُا ہے، الله عَزُّوَ حَلَّ کے سِوا کوئی عِباوت کے لائق نہیں اور اللہ عَـزُو جَلَّسب سے بڑا ہے اور اللہ عَـزُو جَلَّ ہی کے لئے تمام خوبیاں ہیں۔

بَقَر عيدكا ايك مُستَحَب

عیدِ اَصُحٰی (یعیٰ بَرَعیر) تمام اَ حکام میں عید که الْفِطْر (یعیٰ پیٹی عید) کی طرح ہے۔ صِرْف بعض باتوں میں فَرْق ہے، مَثَلًا اِس میں (یعیٰ بَرَعید نماز عيدكا طريقه

من مصطفها (صلى الله تعالى عليه والبه الله على البيم المام) برؤرود باك يوموقو يحديم كي يوموي شك عمد مقام جهانول كرسه كارسول جواب

میں) مُستَسحَب بیہے کہ نَمازے پہلے بچھنہ کھائے جاہے تُر بانی کرے یانہ کرےاوراگر کھالیا تو گراہت بھی نہیں۔

> "الله اكسد "كي تُحرُّروف كي نسبت سے کبیرتشریق کے 8مکدنی پھول

(۱) نویں ذُوالہ حبَّهُ الْبحرام کی فَجْرْ سے تیرهویں کی عَشْرَتِک یا نچولُ وقت کی فرض نمازیں جومیجد کی جماعتِ اُولی کےساتھ ادا کی گئیں ان میں ایک

بار بلندآ واز سے تبیر کہنا واجب ہےاور تین بارافضل (نبیب السعفائق ج۱ ص۲۲۷)

ات تكميم تشريق كت بين اوروه بيب الله أكبُرُ ما الله أكبَرُ ما لله أكبَرُ ما لا إله إلا

الله وَ اللهُ أَكْبَرُ طَ اللَّهُ أَكْبَرُهُ وَلِلَّهِ الْحَمْدَطِ (تنويرالابصار منه ردائستار ج ٣ ص ٧١)

(۲) تکمیر تشریق سلام پھیرنے کے بعد فورا کہنا واجب ہے۔ یعن جب

تك كوئى اليافعل ندكيا موكدأس يرتمازى بنانه كرسك دندادى عالمكرى ج١ص١٥١) ُمَّوُّا اَکرمسجد سے باہَر ہوگیا یا قَصْد أَوْضُوتو رُ دیا یا جا ہے بھول کر ہی کلام کیا تو تکبیر

س**اقِط ہوگئی اور بلا قَصْد وُضوٹوٹ گیا تو کہہلے**(دُرَمـعنــاد ' ردالمحنـار ج ۳ ص ۷۲)

و فور من مصطفه (مل الاتعالى عدد الباسلم) جوجم يردوز جهدد أرورشريف يزهم كاليس قيامت كدن أس كي شفاعت كروس كار

(٣) تكبير تشريق أس برواجب ہے جوشَر ميں مُقيم ہويا جس نے إس مقيم كى

اِقْتِدا کی۔وہ اِقْتِدا کرنے والا چاہے مسافِر ہو یا گاؤں کا رَہنے والا اورا گراس کی اِقْتِدانہ کریں توان پر (یعنی مسافِراور گاؤں کے رَہنے والے پر)واہد بنہیں (_{در سعتار} ،

ر والمعتارج س بران پروس طار راوره و العرائي و المحتار ؟ و المِب بين (در معتار ؟ روالمه معتار ؟ على المحتار ؟ و دالمعتارج س ۷۶) (٤) مُقيم ني الرمسافر كي اقتِدا كي تومُقيم بروابِب ہے الرجيد

اس مسافرامام بروادهب نبیس (درمعتار 'ردالمعتار ج٣ص٧٧) (۵) نفل سقت اور

وِرْ کے بعد تکبیر واجب نہیں (ایضا) (۲) جُسٹ عَسه کے بعد واجب ہے اور نَمازِ (

بَقَرَ)عید کے بعد بھی کہہ لے (ایضاً) (۷)**مسئو ق** (جس کی ایک یاز ا*کد ر* گفتیں فوت

ہوئی ہوں) پر تکبیر واجب ہے مگر جب خودسلام پھیرے اُس وقت کے (نبیسن الحفائق ج ١ ص ٢٢٧) (٨) منفرد (لعن تنهائماز پڑھنے والے) پر واجب نہیں (غنیة

المستملي ص٢٦ ٥مذهبي كتب عانه) عمركهرك كه صاحِبَين رَحِمَهُمُ ١ اللَّهُ تعالىٰ ك

نزو یک اس پر بھی واچب ہے۔ (بہایشریعت حصہ ٤ ص ١١ ١ مدینة المرشد بریلی شریف)

(عید کے فضائل وغیرہ کی تفصیلی معلومات کیلئے فیضان سقت کے باب "فیصل سان

رَمَضان''ے فیضانِ عید الفِطْرِكامطالعَ فرائے)۔

و المعن مصطنعة (ملى الدخال طيد الدمنم) جم في مجمع إدار إنتفاهد دوسوبارة أو وياك بإسما أي كروسوسال كركنا بدعا أبول م

اے ہمارے بیارے اللہ عُــزَوَ حَلْ ہمیں عِیدِسَعید کی خُوشیاں سُدَّت کے مطابق منانے کی تو فیق عطا فرما۔ اور ہمیں جج شریف اور دِیارِ مدینہ و تا جدارِ مدینہ منی اللہ تعالی علیہ دالہ وسلم کی وید کی حقیقی عِید بار بارنصیب فرما۔

امین بِجاهِ النَّبِیِّ ٱلأمین صلَّی الله تعالی علیه والدرسلّم عالبِ عِظِیر مین کی ج تری جبکه دید ہوگی جبھی میری عید ہوگی رفو ہے کی کی کی ہوگی میں رسج تعالیٰ علیه والدہ وجا میں رسے خواب میں تُو آ نامکہ فی مدینے والے صفحت (اور دیا ایک

یہ رسالہ پڑھ کر دوسرے کو دید ہجنے

شادی تمی کی تقریبات ، اجتماعات ، اعراس اور جلوس میلا دوغیره میں مکتبهٔ المدیند کے شائع کرده رسائل تقسیم کرے تواب کمایئے ، کا ہوں کو بہ تیب تواب کھنے میں دینے کیلئے اپنی دُکانوں پر بھی رسائل رکھنے کامعمول بنایئے ، اخبار فروشوں یا بچوں کے ڈریے اپنے کالم کے گر میں وقفہ وقفہ سے بدل بدل کرسٹتوں بحرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دعوت کی دعویس مچاہئے۔ بدل بدل کرسٹتوں بحرے رسائل پہنچا کرنیکی کی دعوت کی دعویس مچاہئے۔ حسکتی اللّٰہ تَعَالَیٰ عَلَیٰ مُحَمَّد

غومان مصطفیا (ملی اشتمالی با دارد منم) اُس فض کی تاک خاک آلود ہوجس کے پاس میراؤ کر ہواوردہ جھے پر دُرُود پاک نہ پڑھے۔

حِفْظ بُهلا دینے کا عذاب

يقيناً مِفْظِ قُر انِ كريم كارِثُوابِ عظيم بمريادر بحفِظ كرنا آسان، مر

عُمر بھر اِس کو یا در کھنا دشوار ہے۔ کُفاظ وحافظات کو جا ہے کہ روز اُنہ کم از کم ایک پارہ لازِ ما تِلا وت کرلیا کریں۔ جو کُفاظ رَمَ ضان الْمبارَك کی آمد سے تھوڑا عرصہ قبل فَقَط مُصَلَّی سنانے کیلئے منزِ ل بگی کرتے ہیں اور اِس کے علاوہ مَعَاذَ اللَّه عَزَّرَ هَلْ سارا سال عَفلت کے سبب کُل آیات بُھلائے رہتے ہیں، وہ بار بار پڑھیں اور خوف خُدا عزدہال سے لرزیں۔ نیز جس نے ایک آیت بھی بُھلائی ہے وہ دوبارہ یاد کر لے اور مُعلا نے کا جو گناہ ہوا اُس سے سمی تو یہ کرے۔

مست جو قرانی آیات یاد کرنے کے بعد بھلا دیگا بروزِ قیامت **اندها** اُٹھایا

مِانِيًّا۔ (مانحذ: ب١٦ ظه ١٢٠،١٢٥)

فرامين مصطفى صلى الله تعالى عليدالدا سلم

حدث میری اُمت کے ثواب میرے نظور پیش کیے گئے یہاں تک کہ میں نے ان میں وہ تِنکا بھی پایا جسے آ دَ می مسجِد سے نکالتا ہے اور میری اُمت کے گناہ میرے نظور پیش کیے گئے میں نے اِس سے **بڑا گناہ** نہ دیکھا کہ کسی آ دَ می کوقران کی ایک سُورت یاایک آیت یاد ہو پھروہ اُسے بھلادے۔ (حابیع نرمذی حدیث ۲۹۱۱)

می**ٹ جو** خض قران پڑھے پھراہے بھلا دیتوقیامت کے دن اللہ تعالیٰ ہے ا

کوڑھی ہوکر ملے۔ (ابوداؤد حدیث ۱٤٧٤)

مریق قبیامت کے دن میری اُمّت کوجس گ**ناہ** کا پورا بدلہ دیا جائے گا وہ بیا ہے کہ اُن میں سے کسی کوقر آنِ پاک کی کوئی سُورت یا دُھی پھر اُس نے اِسے بھلا دیا۔ (کنزالفنال حسیت ۲۸۶۱)

مروق المحليا حضرت،إمام أهلسنت، امام أحمد رُضا حان عليه و الرائن فرمات بين، 'إس سے زيادہ نا دان کون ہے جسے خدائے و رُحَلُ الي بهت بخشے اور وہ اسے اپنے ہاتھ سے کھود ہے اگر قدر إس (هظِ قرانِ پاک) کی جانتا اور جو تو اب اور دَرَ جات اِس پرمُوعُود ہیں (یعنی جن کا دعدہ کیا گیا ہے) ان سے واقف ہو تا تو اسے جان ودل سے زیادہ عزیز رکھتا۔'' مزید فرماتے ہیں ،''جہاں تک ہو سکے اس کے پڑھانے اور خفظ کرانے اور خودیا در کھنے ہیں کوشش کرے تا کہ وہ تو اب جواس یرمُوعُود (یعنی وعدہ کئے گئے) ہیں حاصل ہوں اور بروز قیامت اندھا کور حمل جواس یرمُوعُود (یعنی وعدہ کئے گئے) ہیں حاصل ہوں اور بروز قیامت اندھا کور حمل

ی وعدہ نے نے) ہیں جار ہی ہوں اور پرورِ رسیا ست العراق کور کے۔ (فتاوی رضویہ ج۲۲ص۱٤۷،۱۲۹)

أنصنے سے نُجات پائے۔

الْمُحَمَّدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ وَ الْمُسَلُونَةُ وَالسَّلَامُ عِلَى سَيِّدِ المُرسَلِيْنَ أَمَّا بَعَدُ فَأَعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيُطنِ الرَّجِيْم ع بِسُمِ اللَّهِ الرَّحَمَٰنِ الرَّجِيْمِ عَ

مجلس سے اُٹھتے وقت کی دعاء کی فضیلت

- شيخ طريقت ،امير املسنت ، باني وعوت اسلامي حضرت علامه مولا ناابو بال محمدانياس عطارةا دري رغوي ضيائي داست برئ تهرانعاليه

حضرت سِیّدُ نا ابو ہر برہ رض اللہ قالیء ہے روایت ہے کہ سرکار مدینہ ،راحیہ قلب وسینہ ، باعثِ نزولِ سکینہ صنی اللہ تعالیٰ عیدوا نہ بہنم نے ارشاد فر مایا جوکسی مجلس میں بیٹھا پس اس نے کثیر گفتگو کی تو اس مجلس ہے اُٹھنے سے پہلے کیے ،

سُبُحْنَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اشْهَدُ أَن لَا

الله الله آلا أنْتَ استغفرك وَاتُّوبُ الْيَكَ٥

(حامع الترمذي كتاب الدعواة ص ٥٥٥)

تو بخش دیا جائے گا جواس مجلس میں ہوا۔

بھلائی کی مُہراور گنا ہ مُعاف

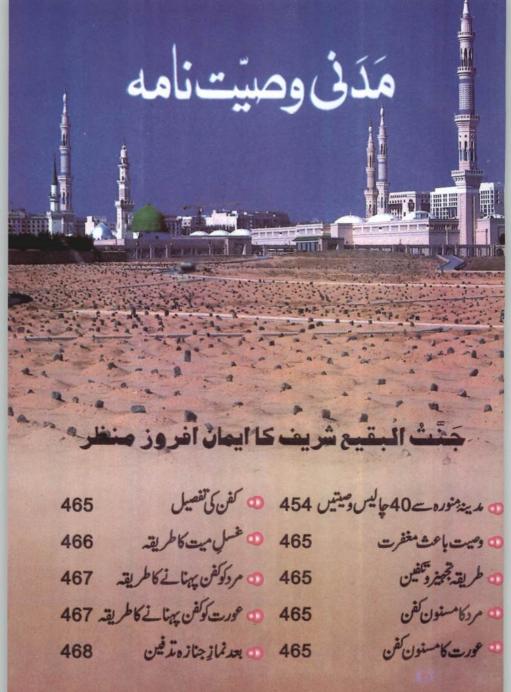
حضرت سنید ناعبدالله بن عَـمـو و بن عاص بنی الله تعالی عنی، جویه و عاکسی مجلس سے اُٹھتے وقت تین مرتبہ پڑھے تو اس کی خطا کیں مٹا دی جاتی ہیں ۔ اور جو مجلسِ خیر ومجلسِ فرٹر میں پڑھے تو اُس کیلئے خیر (یعنی بھلائی) پرممبر لگادی جائے گی ۔ وہ دُعایہ ہے:

> سُبُحْنَكَ اللَّهُمَّ وَيِحَمُدِكَ لَا اللَّهُ اللَّا أَنْتَ اَسْتَغُفِرُكَ وَاتُّوْبُ اللَّكِ٥

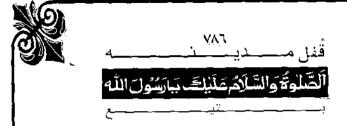
(ابو داؤد شویف آنگابالادب ۲۵۲۷ تا)

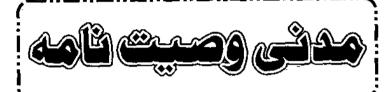
تسوجمه: تیری ذات پاک ہے اوراے اللہ عزو جز تیرے ہی گئے تمام ُو بیان میں، تیرے سواکوئی معبود میں، تھے نے نشش چاہتا ہوں اور تیری طُرُ نُسْتُو بِکرتا ہوں۔

معلنے عملی البات مصطفی عزار جل و صلی منتول میدوالد بنم جولوئی اجتماع و درس مندنی قافلوں کے جلتے اور دینی وؤیوں مینصک کے افتقام پر حب حال بید عام پڑھے اور میں میں استعمال میدوال
ملنے كا پنا أَ مكتبة المدينة فيضان مدينة بات المدينة كراچي ور اس كي تماه شاخيں۔



ورق اللئے ---





مع کفن دفن کے احکامات

اس رسالے میں۔۔۔۔

مدينه منوره سے حپاليس وصيت باعث مغفرت

طریقه تجهیزو تفین مردکوکفن پهنانے کا طریقه

عورت کو کفن پہنانے کا طریقہ





الْحَمْلُ يِلْهِ رَبِ الْعَلَمِيْنَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَبِي الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَيْدُ فَا عُوْدُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْدِ أَيْسِمِ اللَّهِ الرَّمْنِ الرَّحِيْمُ

أَرُبُويُنَ وَصَايَا مِنَ الْمَدِيْنَةِ الْمُنَوِّرَة

مدینۂ منوّرہ سے چالیس وصیّتیں

الْحَمَدُ للَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ إِلَى وَقُتَ مَمَا زِلْجُرْكِ بِعَدَ مَسَجَدُ النَّبُوِى الشَّويفَ عَلَى الحَسَانِهِ إِلَى وَقُت مَمَا زِلْجُرْكِ بِعَدَ مَسَجَدُ النَّبُوِى الشَّريفَ عَلَى الصَّلَوْءُ وَالسَّلَامُ ثِلَى بِيُهُكُرُ الْرَبُونِ وَصَلَالًا وَصَلَامَ عَلَى الْمُنَوَّرَةِ "(لِعَنَ مَدْينَةُ مِنُوْدَهُ مِنْ عَلَى الْمُنَوَّرَةِ "(لِعَنَ مَدْينَةُ مِنُوْدَهُ مِنْ عَلَى وَصَيَّتِينَ تَجْرِيرُ الْمُنَوَّرَةِ "(لِعَنَ مَدْينَةُ مِنُوْدَهُ مِنْ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الْعَلَى الْمُعَلِّلِهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْمُعْمِلُولُ اللَّهُ عَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْمُلْمُ الْعُلِي الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَالِمُ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعُلِيْلِي الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْع

آئ میری مدینهٔ منوّده کی حاضری کی آفری کی آفری می جوری دومنه مجوب علی صاحبهٔ المصلوهٔ وَالسّلام پرعرض ملام کے لئے حاضر مواج بہتا المصلوه و آئی دات تک اگر جنت الْبقیع میں مَدُفن کی سعادت ندلی تو مدینے سے جُدا ہونا پڑجائے گا۔ آئی الشکبارے، دل بیقرارے، ہائے!

افسوس چند گھڑیاں طَیبہ کی رُہ گئی ھیں دل میں جُدائی کا غم طوفاں مچا رہا ھے ۔

آه اول عُم مين دوبا مواهي بهر مدينه كي جال سوز فكر في سرايا تصوير عم بناكر ركاديات،

ایا لگا ہے گویا ہونؤں کا بہتم کی نے چین لیا ہو، آہ! عقریب مرید پھوٹ جائے گا، ول ٹوٹ جائے گا، آہ! مریخ ہے کو کو کر روائل کے کا تا لیے جائگر اہوتے ہیں گویا، کسی شیر خُوار بچے کو اُس کی ماں کی گود سے چھین لیا گیا ہو اور وہ روت اکھوا نہایت ہی حسرت کے ساتھ بار بار مُڑ کر اپنی ماں کی طرف دیکھتا ہوکہ شاید ماں ایک بار پھر بُلالے گیاور شفقت کے سات ہے گود میں چھپالے گیاپنے سینے سے چمٹالے گیمجھے لوری سناکر اپنی مامتا بھری گود میں میٹھی نیند سلادے گی آہ!

میں شکستَه دِل لنے بَوجَهل قدم رکھتاهوا ساستہ علی دراہو کہ چل پڑا هوں یا شَهَنْشاهِ مَدینه الوَداع

اب هِکنه دل کے ساتھ' چالیس وَصَایا''عرض کرتا ہوں،میرے یہ وَصَایا

'' **دعوت اصلاصی** ''سے وابَستہ تمام اسلامی بھائیوں اور اسلامی بَہنوں کی طرف بھی ہیں نیز میری اولا داور دیگراہلِ خانہ بھی ان وَصَایا برِضَر ورتو جُهر کھیں۔

ېين پيزميريادلا داور د پيراېي حانه کان وصايا پرسر وربوجه ر -ن-ز بے تسمت! مجھ پاپ و بىر كار كومد پينه پُر انوار مين ، د ه بھى ساية سبز سبز گنبد و مينار

مين،اك كاش! جلودَ سركارِ نامدار، هُبَهُنشا وِ اَبرار شفيع روزِ هُمار مِحبوب بروَرُ ذَكَار، أَحْمدِ مندوده مُتَار مِلَ اللهُ تعالى عبدالإربلي، مين شهادت نصيب موجائے اور جسنستُ الْبَقِيمُ مِين دُورُرُ ز مین مُیئر آئے اگراییا ہوجائے تو ڈونوں جہاں کی سَعادتیں ہی سعادتیں ہیں۔ آہ!

ورنه جهال مقدّ ر

اگر عالم نُؤرع میں پائیں تو اُس وَ قُت کا ہر کام سنت کے مطابق کریں،
چہرہ قبلہ رُو اور ہاتھ پاؤں وغیرہ سیدھے کریں۔ یاسین شریف بھی
سنائیں اور اہامِ اہلِ سُنّت مولا ناشاہ احمد رضا خان علیہ رہ اُلاص کا کھی ہوئی
نعتیں بھی کہ ان کا کلام عَین شَرِیعت کے مطابق بلکہ ہر ہر شِعْر قران
وحدیث اوراً قوال بُرُرگان وین جم الله تالی کُ شُرْح وَتَفیرے۔

ینتا بعدِ قبضِ رُوح بھی ہر ہرمُعامَلے میں سنّوں کا لحاظ رکھیں ،مَثَلَ تَحْبِیز وَتَلَفین وغیرہ میں قبہ خیل (مین مِلدی) کرنا کہ زیادہ عوام اکٹھی کرنے کے شوق میں تا خیر کرنا

سقت نہیں _ بہارشر بعت حصہ ؟ میں بیان کئے ہوئے اُدکا م پڑمل کیا جائے ۔ قائل کی ایکورغ میں قائل کے موالاق میدار کئی واکم کی قائل میں موالاق

مدینه ۳ فَبُو کی سائز وغیرہ سقت کے مطابل ہوا در لگند بنائیں کہ سفت اے۔ مدینہ ٤ قبر کی اندرونی دیواریں بُوں کی تُوں ہوں ،آگ کی کی ہوئی اینٹیں

ال تبرک دوشمیں ہیں(۱) مصنعوق: (۲) کسکد: لحد بنانے کاطریقدیدے کتبر کھودنے کے بعد میت رکھنے کیلئے جانب تبلہ جگہ کھودی جاتی ہے۔ کسنحسد سقت ہے اگرزین اس قابل ہوتو پیس کریں اورا گرزین فرم ہوتو صند وق میں

مُصایَقه نبیں ۔ یا در ہے تحد میں بھی صندوق ہی کی طرح اوپر سے تختہ وغیر ولگانا ہوگا ہوسکتا ہے گورگن وغیر ومشور و دیر کہ سلیب اندرونی حصہ میں تر تھی کر کے لگالو گھراُس کی بات نہ انی جائے ۔ (مُكِدُ فِي وصيتَ نامي

استعمال ندکی جائیں۔اگراندر میں بگی ہوئی اینٹ کی دیواریں ضروری ہوں تو پھراَندرونی حصّہ کومِتی کےگارے سے اچھی طرح لیپ دیا جائے۔ مین ہوتواندرُونی تنختے پریاسین شریف،سورةُ الْمُلْك اوروُرُ ودِتاج

پڑھ کرؤم کردیاجائے۔

مدینہ کفنِ مُسنون خود معنگ مدینہ کے پیپوں سے ہو۔ طالب فَقر کی صورت میں کسی صحیہ کو الْعَقیدہ تنی کے مالِ طلال سے لیاجائے۔

دینه ۷ غسل باریش ، باعمامه و پایند سقت اسلامی بھائی عین سقت کے مطابق دین اس مقت کے مطابق دین اس مقت کے مطابق دین اس مار ساوات کرام اگر گندہ و بُو دکو عُسُل دین تو سگیب مدیندا سے اپنے لئے ہے ادبی تھو کر کرتا ہے)

مذیبنه ۸ مخسل کے دّوران سِتْرِعورت کی مکٹل حفاظت کی جائے اگر ناف سے لے کر مگھ شندوں سَمیت کُتُّمُ یا کسی گہرے رنگ کی دوموٹی چا دَریں اُڑھاد کی جا کی تو غالِباسِتْر جیکنے کا اِحْمال جا تارہے گا۔ ہاں پانی جسم کے ہرھتہ پر بہنالازی ہے۔

مدینه مستحکفن اگر آب زم زم یا آب مدینه بلکه دونوں سے ترکیا ہوا ہوتو سعادت ہے۔کاش! کوئی سپد صاحب سر پرسبز بمامه شریف سجادیں۔ مدینهٔ العلونسل ، كفن میں چرہ کھیانے سے تبل پہلے پیشانی پرا نگفت شہادت

س بسم الله الرحمن الرحيم الكيس

مدينا الطرحيين يرالا اله الاالله محمد رسول الله الماها الله على الله الاالله الله الماله الله الماله

مدينة المص ول كى جكر بريا رسولَ الله ملى الله على الديام

مدینہ ۱۳ ناف اور سینے کے درمیانی حقیر کفن پر یاغوٹ اِعظم دشگیر رض الله قال عدیمیا امام اہما حَنِیْفَه رض الله تعالی عدیمیا اِمَام اُحْمَد رضار منی الله تعالی عدیمیا شیخ ضیاء الله من

رض الله تعالى منه شهاوت كى انگلى سے تكھيں۔

مدینہ ۱۶ رنیز ناف کے اوپر سے لے کر سرتک تمام بِصّبہ کفن پر (علادہ بُٹ کے) ''مدینہ مدینہ'' لکھا جائے ۔ یا در ہے بیرسب پچھ روشنائی ہے نہیں صرف

انگشت شهادت ساورز بنصيب كوكى سيد صاحب لكھيں۔

مدینهٔ ۱۵ اگر مُیَنَسَّر ہوتومُنه پراچھی طرح فاکِ مدینہ چیڑک دی جائے مِمکِن ہوتو دونوں آنکھوں پرخارِ مدینہ اگریہ نہ ہوں تو مدینۂ منوّرہ کی تکھجور و ں کی مُعملیاں رکھ دی جائیں۔

مەينە ١٧ جنازە لے كرچلتے وَ ثُت بھى تمام سنّوں كُومُكُو ظاركىيى _

مدیبته ۱۷ جنازے کے مجلوس میں سب اسلامی بھائی مل کرامام اہلِ سُقت مِن الله تعالیٰء کا ا قسيرة دُرُودُ كعبه كے بدرُ الدُجئ مم به كروڙوں دُرُو د "يرهيں۔(ال كے علاوہ بحى نعتیں وغير ويزهيں محرصر ف اور صرف علمائي السقت عى كاكلام يزهاجا يك

مدیند ۱۸ جناز و کوئی صحیے المعقیدہ سنی عالم باعمل یا کوئی سنتوں کے بابند اسلامی بھائی یا اہل ہوں تو اُولا دمیں ہے کوئی پڑھادیں مگرخواہش ہے کہ سادات كرام كو فُو قيتُ دى جائے۔

مدينه المرام النادات كرام الني زخمت مجرب باتعول فنريس أتاري-مدينه ٢٠ چېره کي طرف د يوار قرم من طاق بناكراس ميسكى يابند سنت اسلامي جھائی کے ہاتھ کا لکھا ہواءُہٰد نامہ بقش نُعل شریف سبز گنبدشریف کا نقشہ، هُجِرِ هِ شریف نقشِ بَرکاره وغیره تبوُّ کات رکھیں۔

رينه ٢ اگر جنتُ الْبقيع مِن جَكُول جائة وزيقسمت! ورنه ي وَلَيُّ اللهُ كَ رُ ب مِيں ، يېمى نەبھو <u>س</u>كەتو جہاں اسلامى بھائى چاہيں سِيْر دِ خاك كريں مگر جائے غفب پر دفن نہ کریں کہ حرام ہے۔ مدينة ٢٢ - قَبُر يراذان دير _ مدينة ٢٦ زينفيب! كوئى سيّد صاحب تلقين فرماديل

مدیند ۲۶ موسکے تومیر سے الل مَسحَبّت میری تدفین کے بعد ۱۱روز تک کیدندہو سکے تو کم از کم ۱۲ سمنٹے ہی سمی میری قُمر پر حَلْقہ کئے رہیں اور ذِکرو دُروداور قِلاوت ونَعت سے میراول بہلاتے رہیں ان شاغ الله مردمن کی جگہ میں دل لگ ہی

جا۔ يُم گالِس دّوران بھي اور ہميشه نمازِ باجماعت کالِ ہتمام رکھيں۔

آبگتین کی فضیلت: مسرکار مدید، قرار قلب وسین سلی الله تعالی طید والبود ملم کافرمان عالیشان ہے، جب تہمارا کوئی مسلمان بھائی مرے اوراس کوئٹی و۔ ، چکوتو تم میں ایک فیض قمر کے بسر ہانے کھڑا ہو کر کیے ، یافلاں بن فلانہ ووسنے گا اور جواب زرے گا۔ پھر کیے ، یافلاں بن فلانہ ووسید ھا، دکر بیٹے جائے گا، پھر کیے ، یافلاں بن فلانہ وہ کیے گا تمیں ارشاد کر اللہ عزومل تھے پر رم فر مائے محرمہیں اس کے کہنے کی فرنیس بوتی بھر کیے ،

أَذُكُرُ مَسَاحَرَ حَتَ مِنَ اللَّهُ يَمَا اللَّهُ وَأَنَّ اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُه ورَسُولُه (صنى الله تعالى عليه والدوسلم) وَأَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللَّهِ رَبَّاوً بِاللَّهِ مِينًا وَ بِمُحَمَّدٍ (صلى الله تعالى عليه والدوسلم) فَبِيَّا و بِالْفُرالِ إِمَامَكِ

تر جمہ اُٹو اُسے یاد کر جس پرٹو دنیا ہے لکا لینی بیگواہی کدانلہ کے سواکوئی معبودتیں اور مجم مٹی اندخانی علیہ الدر مماس کے بندے اور رمول ہیں اور پیکٹو اللہ عزوجل کے رہب اور اسلام کے دین اور محرمتی انترفتائی علیہ الدر کلم کے ہی اور قران کے امام ہونے پر راہنی ۔ تھا

مُمَّرُ عُیر ایک دومرے کی باتھ پکڑ کہیں ہے چلوہم آس کے پاس کیا بیٹیس جے لوگ اس کی فجت سمھا بچے۔ اس پر کی نے سرکار مدینہ ملی اللہ اللہ دالد ملم سے عرض کی واگر اس کی مال کا نام معلوم ندہ وہ فر ما یا ۔ ھ الرمنی اللہ اللہ عنال عب الگرف نسست کرے۔ (دواہ الطَّبُرانی می النگیئیرو قلم العدیث ۹۷۷ ج۸ص ۵۰۰ مطبوعه دار احیاء التُّراث العربی بیروت) توٹ فلاں بن فحانہ کی مجلہ میت اورائی مال کا نام لے۔ مُثَمَّا یا تحدالیاس بن امینہ ۔ اگر منیت کی مال کا نام معلوم ند ہوتو مال کے نام کی مجد تو اس الشراف نام کے شکتین مرف ف عرفی میں پڑھیں۔ سٹیر حدیث عمل کھٹے تمرف (مُدَ نَى وصيت نامه

مدینه ۲۵ میرے ذِمّه اگر قرض وغیرہ ہوتو میرے مال سے اوراگر مال نہ ہوتو درخواست ہے کہ میری اولاداگر زندہ ہوتو وہ یا کوئی اوراسلامی بھائی اِحْساناً

ا پنے بلتے سے ادا فرمادیں۔ الله مزد بل آخرِ عظیم عطافر مائے گا۔ (مخلف اجماعات میں اعلان کیاجائے کہ جس کسی کی بھی دل آزاری یاحق تلفی ہوئی ہودہ محد الیاس قادری کو مُعاف فرمادیں آگر قرض وغیرہ ہوتو فوراؤ زیاء ہے زجوع کریں یا مُعاف کردیں۔)

مدینه ۲۷ مجھے استِقامت وکثرت کے ساتھ ایصالِ ثواب ودعائے مغفرت سے نوازتے رہیں تواشیان عظیم ہوگا۔

مدینه ۲۷ سب کے سب مسلک اہلِ سقت برا مام اہلِ سقت موللینا شاہ احمد رضا خان مدینہ ۲۷ سب کے سب مسلمی تعلیمات کے مطابق قائم رہیں۔

مدینہ ۲۸ بد فدہبوں کی صُحبت سے گوسوں دُور بھا گیں کداُن کی صُحبت خارتمہ بالخیر میں بہت بوی رُکاوٹ ہے۔

مدینه ۲۹ تا جدار مدینه، راحت قلب وسیند ملی الله تعالی علیه داله وسلم کی محبّت اور سقت پر مضبوطی سے قائم رہیں۔

مدینهٔ ۳۰ نمّاز مخطّانه،روزه،زکوة، حج وغیره فرائض (ددیگرداجبات وسُنَن) کے مُعامله میں کسی قتم کی کوتا ہی نہ کیا کریں۔ (مُدُ لَى وصيت نامه

رینه اس وصیّت خسوودی وصیّت: دعوت اسلامی کی مرکزی مجلسِ شوری است و مینا ساتھ بردم دفادار رہیں، اِس کے براکن ادرائے برگران کے براس تھم

کی اِطاعت کریں جو شَرِی نَعَت کے مطابق ہو، شوری یا دعوت اسلامی کے کسی بھی ذمّہ دار کی بلاا جازت بُشری مخالفت کرنے دالے سے میں بیزار ہوں۔

مدینهٔ ۳۲ براسلامی بھائی صفح میں کم از کم ایک بارعلاقائی دورہ برائے نیکی کی وعوت

میں اوّل تا آبِرْشرکت اور ہر ماہ کم از کم تمین دن الماہ میں ۳۰ دن اور زندگی میں نیمششت کم از کم ۱۲ ماہ کیلئے مَدَ نی قافے میں سنر کویقینی بنائے۔ ہراسلامی بھائی

اور ہراسلامی تبین اپنے کروار کی اِصلاح پراستِقامت پانے کیلئے روز اند مَدَ نی اِنعامات کا کارڈیر کرے اور ہر ماہ اپنے ذمہ دار کو بھع کروائے۔

مدینهٔ ۳۳ تا جدار مدینه بمر و رقلب وسینه ملی الله نعالی علیه داله بهم کی مُحَبِّت وستّت کاپیغام داهد به درگ

د نیامیں عام کرتے رہیں۔ مدینہ ۴۶ بدعقید گیوں اور بداعمالیوں نیز د نیا کی منسخبست ، مال حرام اور نا جا ئزفیشن

وغیرہ کے خِلا ف اپنی جد و جَبد جاری رکھیں ۔ حُسنِ اَ خلاق اور مدنی منھاس کے ساتھ نیکی کی دعوت کی دھو میں مچاتے رہیں۔

مدینه۳۵ غصه آور چوچوا پن کو قریب تبھی نه میکننے دیں ورنه دین کا کام مشوار

(مَدُ نَى دِميتُ نامه

ہوجائے گا۔

مدینه ۳۲ میری تالیفات و بیان کی تکیسیت شون سے میرے وُر ثاء کودنیا کی دولت کمانے سے بیچنے کی مَدَنی التجاء ہے۔

مدینه ۳۷ میرے ترکہ وغیرہ کے متعالکہ میں حکم شَرِیُعت پڑمل کیا جائے۔

مدینہ ۳۸ مجھے جوکوئی گالی دے، بُرا بھلا کہے، زخمی کردے یاکسی طرح بھی دل آ زاری کاسبب سنے میں اُسے اللّٰہ ہز ہیں کے لئے پیشگی مُعاف کر چکا ہوں۔

مدینہ اس مجھے ستانے والوں سے کوئی اتبقام نہ لے۔

مدینه ٤٠ بِالفرض کوئی مجھے شہید کردے تو میری طرف سے اُسے میرے نفوق مُعاف

ہیں۔ وَ یَا فَاءِ سے بھی درخواست ہے کہ اسے اپنا حق مُعاف کر دیں۔ اگر سرکارِ مدینه سلی اللہ تعالی علیہ والد اللہ کی صَفاعت کے صَدَ قے محشر میں نُصوصی کرم ہوگیا توان شاغ اللہ مروس اپنے قاتِل یعنی مجھے شہادت کا جام پلانے

والے کو بھی جنت میں لیتا جاؤں گابشر طیکہ اُس کا خاتمہ ایمان پر ہوا ہو۔ (اگر میری شہادت عمل میں آئے تو ہی کی وجہ ہے کہ تم ہے بنگا ہے اور ہز تالیں نہ کیجا ئیں۔

اگرانبرتال 'إس كانام بي كه مسلمانون كاكاروبارز بردى بند كرواياجائ بمسلمانون كوكانون

اورگاڑیوں پر پھراؤوغیرہ ہو۔ بندوں کی ایسی تن تلفیوں کوکوئی بھی مفتی اسلام جائز نہیں کہہ

سكاراس طرح كى برتال حرام اورجمتم ميس لے جانے والاكام براس طرح كے جذباتى القدامات سے وين وونيا كے نقصانات كے سوا كچھ باتھ نيس آتا يُحو ما برتال جلدى تعك جاتے بيں اور بلا ير انظاميدان پرقابويالتى ہے۔)

كاش! گناموں كو بخشنے والا خدائے غفار مز بل مجھ پالى و بدكار كواپ پيارے

محبوب ملی الله تعالی علیہ والہ دہلم کے طفیل ممعاف فر مادے۔اے میرے پیارے اللہ مزوجر! جب تک زِندہ رہول عشق رسول ملی اللہ تعالی علیہ والہ دہلم میں گم رہول ، ذِ کر مدینہ کرتا

جنب مک رِنگرہ رہوں کی رحوں فالد حال علیہ وارد میں اردوں بر ر مدیدہ رہ رہوں۔ نیکی کی دعوت کیلئے کوشاں رہوں۔مجبوب ملی اللہ تعالی علیہ والہ وہلم کی خفاعت

نصیب ہو۔ آ ہ! کاش! ہروقت نظارہ محبوب میں گم رہوں۔اےاللہ ہز دہل پنے صبیب سمالہ میں عباہ النہ مالامید ،

براًن كنت دُرُودوسلام ميني -ان كي تمام المت كي مغفِر ت فرما - معياد سنطان عليه والهجم

یا المُلُیُّ جب رَضا َ شُواب گران سے سَر اُٹھانے سُرستان سِرسوار دولتِ بَیدار عَشق مصطفعے کا ساتہ هو

المدَنْ وصّيت نامهٔ (بدالفاظ لكهة وَقت آبقر يأسارُ هے تيره سال قبل (محرّم الحرام الحرام الحرام الحرام الحرام المادينة منوّره سے جاري كيا تھا پھر بھي معمولي ترميم مين وي المحرام الله ١٩٥١)

فزعل الامارة

وصِيّت باعثِ مغفرت

سر کاریدینه، قرار قلب وسینه، فیض تخوینه، باعِثِ نُرول سکینه، صادِب مُعَطِّر پسینه مل الله تعالی طیه دار دسم کا فرمانِ با قرینه ہے، ' جس کی موت وَصِیّت پر ہوئی (لینی جو وَصِیْت کرنے کے بعد فوّت ہوا) وہ عظیم سُنّت پر مَر ااور اُس کی موت تقویٰ اور شہادت پر ہوئی اور اس حالت میں مراکہ اُس کی مغفرت ہوگئی۔'' (بسٹکونة شریف ص ۲۹۶)

طريقة تُجُهير وتَكُفيْن

<mark>مَرُد کا مسنین کَفُن</mark> (۱)لِفانہ (۲)اِزار (۳)تُمِی*ن*

عورت کا مُسنون کَفُن

مُنْدَرِ جَدْ بِالانتين اور دومزيد (٤) سِينه بند (٥) أورْهني - (مُعَنَّثُ كَرَجَيْ مُورَقِ والأَلْفَن دياجات)

کَفَن کی تفصیل

(۱) اسفاف (بسمنی جادر) میت ک قدے اتنی بڑی ہوکدونوں طرف با الم هکیس۔

(۲) إذا در (بعني مَهدد) بو في سے قدم تك يعني إلفا فدس اتنا چھوٹا جو بَندِش كے لئے زائد تھا۔

(٣) متميس (بعنى كَفَنى) كردن سے كھٹول كے نيج تك اور بيا كادر يكھے دونول

طرف برابر ہو اِس میں جاک ادرآ ستینیں نہ ہول۔ مَر دکی گفنی کندهوں برچیری ادر عورت

(مُدَ نَى وصيت نامه

كے لئے سينے كى طرف ـ (٤) سينه بند بند بنتان سے ناف تك اور بہتر يہ ب كدران تك ہو _ ل

غُسُلٍ ميّت كا طريقه

اگر بتیاں یالُو بان جلا کرتین ، یا نچ یاسات بارغسُل کے تختے کو دُھونی دیں یعنی اتنی بار تختے کے مرد وبھرا کیں۔ تختے پر میت کو اِس طرح لِغا کیں جیسے فَمر میں لِغاتے ہیں _ ناف سے معشول سمیت کیڑے سے چھیادیں۔ (آج کل غسل کے دوران سفید کیڑا اُڑھاتے میں، پان لکنے سے بردگی موتی ہے، لغذا تکتھے یا گہرے رنگ کا تنامونا کر اموکہ پان بڑنے ہے بٹر نہ چکے کیڑے کی دونہیں کرلیں تو زیادہ بہتر۔)اب نہلانے والا اپنے ہاتھ پر کیڑا لیبٹ کر ' يبليد دونوں طرف إمُتِتُجا كروائے (يعني يانى ہے دعوے) پھرنما زجيساؤضو كروا ^كيس يعني تين بارمُنه پھر گہنیو ںسَمیت دونوں ہاتھ تین تین بار وُ ھلائیں ، پھرسَر کامسَح کریں ، پھر تین ہار ۔ دونوں یاؤں وُ ھلائیں ۔میت کے وُضو میں پہلے رکنوں تک ہاتھ دھونا گِلّی کرنا اور ناک میں یانی ڈالنا نہیں ہے۔البتہ کپڑے یا رُوئی کی پھڑ بڑی پھکو کر دانتوں ، مَنُورُهُول، بَونُوْل اورُتُقْمُول بِرِيهُمُر ديں۔ پھرئمر بادارُهي کے بال ہوں تو دھوئيں۔اب بائیں (بعنی اُلی) کر وٹ پر لفا کر ہری کے پتوں کا جوش دیا ہوا (جواب نیم کرفیرہ کیا ہو) اور یہ نہ ہوتو خالص یانی نیم گرم مرے یا وُل تک بَها کیں کہ تُختہ تک پہنچ جائے۔ پھر بیدھی

کرؤٹ لوا کربھی اِی طرح کریں پھرفیک لگا کروٹھا ئیں اورنری کے ساتھ بَیٹ کے نجلے ا حقے پر ہاتھ بھیریں اور کچھ نکلے و دھوڈ الیں۔ دوبارہ وُشو اورغُسٹل کی حاجت نہیں پھر آ پڑ میں سُر سے پاؤں تک تین ارکافور کا پانی بہائیں۔ پھرسی پاک پٹرے سے بدن آ ہستہ سے پُو نچھ دیں۔ ایک بارسارے بدن پر پانی بہانافرض ہاور تین بارسندے۔

گفُن کو ایک یا تین یا چیخ یا سات بار دُھونی دے دیں۔ پھر اِس طرح بچھا کیں کہ پہلے اِفا فہ یعنی بردی چا دراس پرتببنداوراس کے اوپر کفنی رکھیں۔ اب میت کواس پر لِغا کیں اور گفنی بہنا کیں اب داڑھی پر (نہ ہوتو ٹھوڑ بی اور تمام جسم پر خوشبو مَلیں۔ وہ اُنے ہا ، چیک پہنا کی باتھوں ، گھنوں اور قدموں پر کا فورلگا کیں ۔ بی پھر تببندا لئی جانب جا تا ہے بھر سیدھی جانب سے کیر سیدھی جانب سے کیر سیدھی جانب سے کیر سیدھی جانب سے کہنے ہیں تا کہ سیدھا اُوپر ہے۔ سُر اور پاؤں کی طرف باندھوریں۔

عورت كوكن پهناني كاطريته

گفنی پہنا کر اس کے بالوں کے دلوصے کرکے گفنی کے اُوپر سینے پر ڈال دیں اوراوڑھنی کوآ دھی پیٹھ کے نیچے بچھا کرئر پرلا کرمُنہ پر نقاب کی طرح ڈال دیں کہ سینے کے مبعد کے چرے دغیرہ پر کھنے کا طریقہ میں مرئلا تنظیفر ہائیں۔ عمرداور کورے ڈونوں کے کئے فوشبواور کافور لگانے کا ایک می طریقہ ہے۔ پررہے۔ اِس کاطول آ دھی پُشف سے نیچ تک اور عُرض ایک کان کی لؤسے دوسرے کان کی لُو تک ہو۔ بعض لوگ اوڑھنی اسطرح اُڑھاتے ہیں جس طرح عورُ تیں زندگی میں مَر پر اوڑھتی ہیں سیخلاف سقت ہے۔ پھر بدستور تہبند ولقا فہ یعنی چا در کیب ٹیس ۔ پھر آ جُر میں سینہ بند پستان کے اوپر والے بھے سے زان تک لاکرئسی ڈوری سے باندھیں۔ یا

بعد نَمازِ جنازہ تدفین کے

(۱) جنازہ قَبُرُ سے قِبلہ کی جانب رکھنا مُسُخب ہے تا کہ میّت قبلہ کی طرف سے قبُر میں اُتاری جائے۔ فَبُو کی ہانینتی (یعنی پاؤں کی جانب والی جگہ) رکھ کرسَر کی طرف سے نہ اُتاری جائے۔ فَبُو کی ہانِنتی (یعنی پاؤں کی جانب والی جگہ) رکھ کرسَر کی طرف سے نہ لائیں۔(۲) حسب خر ورت دویا تین (بہتر یہ ہے کہ قوی اور نیک) آ دمی فنم میں اُترین عورت کی میّت مُحارِم اُتاریں بیدنہ ہوں تو دیگر رہتے دار یہ بھی نہ ہوں تو پر ہیز گاروں سے اُتر وائیں۔(۳) عورت کی میّت کو اُتار نے سے لے کر تُحْجے لگانے تک کی کھی سے اُتر وائیں۔(۳) عورت کی میّت کو اُتار نے سے لے کر تَحْجے لگانے تک کی کے

كير سي چُمهائ ركيس - (٤) قَبُو مِن أَتارت وَقْت بِدُعارِ هِين ب

بِسُمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَعَلَى مِلَّتِ رَسُولِ اللَّه (مردِ مِل مِل الله وَ مِاللَّهِ وَعَلَى مِلَّتِ رَسُولِ الله (مردِ مِل الله وَ مِاللهِ وَ عَلَى مِلَّتِ وَ مُولِ) مَيْتِ كُوسِيرِ هِي كُونَ يِرِلِها مَيْن اوراُس كامُنه قبله كي طرف كردين _كفن كي بندِش كهول

ے میں ہے۔ لاآج کل عورتوں کے کفن جس بھی لِفاف ہی آجر جس رکھا جاتا ہے تو آگر کفن کے بعد سینہ بندر کھا جائے تو بھی کوئی مُصا يَعَدُنِين مُكرافعنل ہے كہ سينہ بندسب سے آجر جس ہو۔

ع جنازه أفعان ادراس كي فماز كاطريقة "رسائل عطارتيحة اول مين مُلاحظ فرما كير.

دی کہائے مرورت نہیں، نہ کھولی تو بھی ترُج نہیں ۔ (۲) فَنبُو کو تجی اینوں اے بند کردیں اگر زَ مِن نُزم ہوتو لکڑی کے شختے لگانا بھی جائز ہے۔(۷)اب مِٹی دی جائے ۔مُنتُحُب یہ ہے کہ یر مانے کی طرف سے دونوں ہاتھوں سے تین بارٹنی ڈالیں _ پہلی بارکہیں مِنْهَا حَلَقُنْگُمهُ ٢ دومرىباد وَفِيْهَا نُعِيدُ كُمُ حِ تِيْرَى باد وَمِنْهَا نُخُوجُكُمْ قَادَةً أُخُوىٰ فَكِيل -اب إلّ مِنَى بِهاوُ رْمِ وغيره بِهِ الروس (٨) جَنْنَ مِنْ قَبُر سِ لَكِلْ بِهِ أَس بِيرَاده وْ النا مَروه ہے۔(٩) قَبْسِر أونث كَوبان كى طرح ز حال دالى بنائي پُو كھونٹى (يعني خواركؤدں دالى جيها كه آ جکل مدفین کے کچے روز بعدا کثراینوں وغیرہ ہے ہتاتے ہیں) نہ بنا کیں ۔ (۱۰) فَبُسِو ایک بالِشْت او نجی ہو یا اِس سے معمولی زیادہ (عالمیری جو اول ص١٩٦) (١١) تَدفین کے بعد یانی و تھو کنا سقت ہے۔(۱۲)اس کےعلاوہ بعد میں پودے وغیرہ کو یانی دینے کی غُرُض سے وجھو کیس تو جائزے۔ (۱۳) آج کل جوبلا دجه قَبُرو دریانی دِهم کاجاتا ہے اس کوفقا دکی رضوبیشریف ج عص ۱۸۵ پر إمُراف لکھاہے۔(۱۶) دَفُن کے بعد ہر ہانے الکیم کا مُفیلے پُون اود قَدْموں کی طرف امَنَ انے ٹیسول سے ختم ٹورہ تک پڑھنامتخب ہے۔ (۱۵) تلقین کریں۔(طریقیم ∨ کے ماجیہ بر ئلاحظەزمائیں_)(۱۷)قبُسو كے بسر ہانے قِبلہ زُو كھڑے ہوكراذان دیں۔(۱۷)قبُسویر پھول والنابهتر ب كد جب تك ترريس محتبيع كريس محاور ميت كاول بملي كارود النعبيد اجه عن ا ﴿ قِبرِ كَاءُ ورني ضع مِن آهل كي في بولي اينين فكا نامع بي محراكثراب بيمنث كي ديوارون اورسليب كاروان ب-البذاميمنث كي د بواروں اور سینٹ کے مختوں کا ووحتہ جوائدر کی طرف رکھنا ہے ، کی منتی کے گارے سے لیپ دیں۔اللہ مزوجل مسلمانوں کو آگ کاڑے مخوط رکھے (احسن بسجاہ النبی الاحین ملی اندن الی ملیدال پسم) تاہم نے زیمن ال سے مہیں مایا سے اودای عرفهیں يم لے ماكس كے يے اورائ تحسين دوارہ تكالس كے (ب ١١ ركوع ١١ توجعة كوالايسان)

الْحَمْلُ بِلْدِرَتِ الْعَلَمِينَ وَالصَّلَوْةُ وَالسَّكَالُومُ عَلَى مَيْنِ الْرُسُلِلُينَ أَمَّا لَهُ كُنَّا عُوْذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيْمِ أَيْسِيراللَّهِ الرَّحْمَٰ الرَّحِيْمِ

بچّے کو مسجد میں لانے کی حدیث میں ممانعت ھے

سلطان مدينة، قرارقلب وسينه فيض گنجينه،صاحب معطريسينه، باعث نزول سكينه ملي الله تدبي هيه ولاربلم كا

فرمانِ با قرینہ ہے مبحدوں کو بخ**یّو ل** اور ب**یا گلول** اور خرید و فروخت اور جھڑے اور **آ واز بلند**

مرنے اور دُر ود قائم کرنے اور ملوار کھینچنے سے بچاؤ۔

(ابن ماجه ج ا ص ۱۵ ع، حدیت ۷۵۰)

ایسا بچه جس سے نجاست(ینی پٹاب وغیرہ کردیے)کا خطرہ ہو اور پاگل کو مسجدکے اندر لے جانا حرام ھے اگر نُجاست کا خطرہ نہ **ھىو تىو مكروە.** جولوگ جوتيال مىجدىكاندرىلے جاتے ہیں ان كواس كاخيال ركھنا جاہے كەاگر نجاست لگی ہوتو صاف کر لیں اور جوتا پہنے مسجد میں چلے جانا ہے ادبی ہے۔ ریبارٹریت حصہ ۲۰۰۰)

مجديں بيّے ياياگل (ياب بوش ياجس يرجن آيا بوابواس) كومسجدين دم كروانے كيلئے بھى لانے کی شریعت میں اجازت نہیں ۔ بچے کواچھی طرح کیڑے میں لپیٹ کربھی نہیں لاسکتے اگر آ ہے بچے دغیرہ

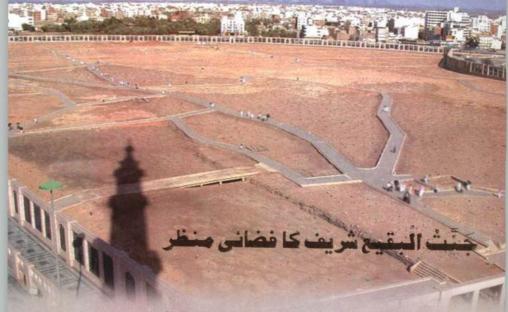


١٩ وَمُضَانَ الْمِبَارِكَ ٢٩ ١٥

کو مجدمیں لانے کی بھول کر چکے ہیں تو برائے کرم! فوراً توبہ کر کے آئندہ نہ لانے کا عهد کیجئے۔ (جوالیے وقت پر چہ پڑھے کہ بچے اُس کے ساتھ ہے تو درخواست ہے کہ فوراَ بیّے کومبر

ے باہر کے جائے اور تو بہ بھی کرے ہاں فٹائے مسجد میں بچے کولا سکتے ہیں جبکہ مسجد کے اندرے نہ ئزرناپڑے)

فاتحه كاطريقه



مقبول في كاثواب 472 ٥ دُعائيم مغفرت كي فضيلت 476

والدين كي طرف ي فيرات 473 ٥٠ اربون نيكيال كمان كا آسان نخ 477

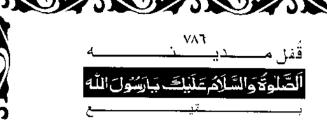
م دورى ش بىرى كى دوي 474 م مورة اخلاص كا لواب

معدكوزيارت قبرى فضيلت 474 م ايسال ثواب كـ17 مذنى پحول 482

م كفن بهد ك 475 م ايسال الواب ك ليدعا كاطريقه 493

🐽 ايسال ثواب كانتظار 476 💿 مزار يرحاضرى كاطريقه

ورق اللئے ---



فاتحه كاطريقه

اس رسالے میں ۔۔۔۔

مقبول حج كاثواب مغفرت كي فضيلت

ارُ بوں نیکیاں کمانے کا آسان نسخہ

ایصال تواب کا طریقه 📗 مزار پرهاضری کا طریقه

ورق الليُّخ ----

الْحَمْلُ بِلَاءِرَتِ الْعُلَمِينَ وَالصَّلَوْ وَالسَّلَا مُعَلَى بَيْرِ الْمُرْمَلِينَ اَمُا بَعْدُوَا عُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطِي الرَّجِيمُ بِسُمِ اللَّهِ الرَّمْنِ الرَّحِيمُ

فاتحه كاطريقه

جن کے والدین یا اُن میں ہے کوئی ایک فوت ہو گیا ہوتو ان کو چاہے کہ ان کی طرف ہے غفلت نہ کرے، ان کی قبسروں پر بھی حاضری ویتار ہے اور ایصال تو اب بھی کرتار ہے۔ اِس ضمن میں سلطان مدید علیقے کے ۵فر مانان رَحمت نشان مُلاحظہ فر ما کیں ؛۔

(١)مقبول حج كا ثواب

''جوبہ نیتِ تواب اپنے والد ین دونوں یا ایک کی قَبُر کی زیارت کرے، چِمُقُول کے برابر تواب پائے اور جو بکثر تان کی قَبُسر کی زیارت کرتا ہو، فریشے اُس کی قَبْر کی (یعنی جب بیفوت ہوگا) زیارت کوآ کیں۔ (کنز العُمَال ج ۲ اص ۲۰۰ رفع الحدیث ۴۵۰۲ مطبوعه دارالکتب العنسیة بیروت)

(۲)دس حج کا ثواب

جوائی مال یاباپ کی طرف سے حج کرے ان کی (یعن مال یاباپ کی) طرف سے حج جج اداموجائے اسے (یعن حج کرنے دالے کو) مزیددس حج کا ثواب ملے۔

(دار قُطني ٢ ص ٢٦ ٢ رقم الحديث ٢٥٨٧)

سُب خنَ اللَّه عَنْ وَجَلُ الْجِسِ بَهِي نَفَلَى جَحَ كَاسِعادت حاصل ہوتو فوت شدہ مال یا اب کی نیت کرلیس تا کہ ان کو بھی جج کا نثواب ملے ، آپ کا بھی جج ہوجائے بلکہ مزید دس جج کا نثواب ہاتھ آئے۔ اگر مال یا والد میں ہے کوئی اس حال میں فوت ہو گیا کہ ان پر جج فرض ہو چکنے کے باؤ ہُو دوہ نہ کر پائے تھے تواب اولا دکو جج بَدَل کا شرَ ف حاصل کرنا جا ہے ۔ جج بَدَل کا شرَ ف حاصل کرنا جا ہے ۔ جج بَدَل کا شرک ہائے ماصل کرنا جا ہے ۔ جو بَدَل کے تفصیلی اُدُکام میں دواف اسٹھ رُوف) کی تالیف حاصل کرنا جا ہے ۔ جو بَدَل کے تفصیلی اُدُکام میں دواف اسٹھ رُوف) کی تالیف دو بیٹی اُدھی اُدھی کریں۔

(٣)والِدَين كي طرف سيے خيرات

'' جبتم میں سے کوئی کچھ نفل خیرات کرے تو جاہئے کداہے اپنے ماں باپ کی طرف سے کرے کداس کا ثواب انہیں ملیگا اوراس کے (یعنی خیرات کرنے والے کے ؟

تواب میں کوئی کی بھی نہیں آئے گا۔''

(شُعُب الايمان ج٦ص٥٠٠رقم الحديث ٧٩١١ مطبوعه دار الكتب العلمية بيروت)

(٤)روزی میں ہے برکتی کی وجه

"بنده جب مال باب كيليّ دُ عاترك كرويتا بأس كارِ ذُ ق قطع موجاتا ب_

(كنز العُمَّالَ ج ١٦ ص ٢٠١ م الحديث ٤٥٥٤ مطبوعه دار الكتب العلمية بيروت)

(٥)جُمُعه كو زيارتِ فَبُر كي فضيلت

جو خض بُمعہ کے روزاپنے والِدین یاان میں ہے کی ایک کی قَبُو کی زیارت کرےاوراس کے پاس سورۂ یسین پڑھے بخش دیا جائے۔

(ابنِ عدى في الكامِل ج٦ص ٢٦٠ مطبوعه دار الكتب العدمية بيروت)

لاج رکھ لے گنہگاروں کی نام رَحمٰن ہے بڑا یارب!

میتھے میٹھے اسلامی بھائیو!الله عَزْدَ حَلُ کَارُحْت بَیُت بڑی ہے جوملمان دنیا سے رخصت ہوجاتے ہیں اُن کیلئے بھی اُس نے اپنے نظل وگرم کے دروازے کھلے ہی

ر کھے ہیں۔الله عَزَوْجَلُ کَ رَحمت بِ بِایاں مصعلِق ایک روایت بڑھتے اور جھومے!

کَفَن پہٹ گئے

اب ایصال ثواب کے ایمان افروز فضائل پڑھئے اور جھومئے

دُعاؤں کی بَرکت

مرینے کے تاجد ارسلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم کا فر مانِ مغفِرت نشان ہے، میری اُمت کُناہ سے تا جد ارسلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وہ کہ منین کی سمیت قَبْہ۔۔۔ و میں داخِل ہوگی اور جب نظے گی تو بے کُناہ ہوگی کیونکہ وہ مُؤمنین کی دُعاوُل ہے کُش دی جاتی ہے۔ (طبرانی او سط ج ۱ ص ۹ ۰ ° رقم العدیث ۱۸۷۹)

ایصالِ ثواب کا انتِظار ا

سر کارِنا مدارسل اللہ تعالیٰ علیہ والہ وہم کا ارشادِ مُشکبار ہے، مُر دہ کا حال قَبُر میں وُ و بِخ ہوئے انسان کی مانند ہے کہ وہ شد ت سے انظار کرتا ہے کہ باپ یا مال یا بھائی یا کسی دوست کی وُعا اُس کو پہنچ اور جب کسی کی دعا اُسے پہنچ ہوتی ہے تو اس کے بزدیک وہ دُنیا و مَافِیهُ العِن و نیااوراس میں جو بچھ ہے) ہے بہتر ہوتی ہے۔ اللہ عزد مِل قَبْر والوں کو ان کے زندہ مُنَعَلِقین کی طرف سے بَدِنہ (ہ۔ دِی ۔ نِہ) کیا ہوا تو اب پہاڑوں کی مانند عطا فرما تا ہے، زندوں کا بَدِیّہ (یعنی تحفہ) مُر دوں کیلئے "دعائے مغفرت کرنا ہے"۔

(بُيْهَقي شُعُب الْإيمان ج٦ ص٢٠٣ رقم الحديث ٥٠ فـ٧مطوعه دارالكتب العدمية بيروت ١

دُعائے مغفِرت کی فضیلت

''جوکوئی تمام مُومن مردوں اور عورتوں کیلئے وُ عائے مغیر ت کرتا ہے، اللہ عنہ وُ جالً اس کیلئے ہرمومن مردوعورت کے عِوَض ایک نیکی لکھ دیتا ہے۔''

(محمع الزوائد - ١٠ ص ٢٥٢ رقم الحديث ١٧٥٩٨)

اربوں نیکیاں کمانے کا آسان نسخه

میتھے میتھے اسلامی بھانیو اجموم جائی اربول، کر بول نیکیال کانے کا آسان کو ہاتھ آگیا! ظاہر ہے اس وقت رُوئے زمین پرکروڑول مسلمان موجود ہیں اور کروڑول ہلکہ اُربول دنیا سے چل ہے ہیں۔ اگر ہم ساری اُسّت کی مغربت کیلئے دُعا کریں گے۔ توان شاء اللّٰه عزوج ہیں اُربول، کر بول نیکیول کا مخران کیا ہے کا اور تمام مُؤمنین ومُؤمنات کیلئے دُعا مزان جائے گا۔ ہیں تحریری طور پر اپنے لئے اور تمام مُؤمنین ومُؤمنات کیلئے دُعا محریری دیتا ہوں۔ (اوّل آفردوو شریف پڑھیں) اِن شاء اللّٰه عزوج لُوق مُومندی اللّٰه عزوج لُوق مُومندی اللّٰه عزوج لُوق مُومندی اللّٰه عزوج لُوق مُومندی اللّٰه عنوال می اللّٰہ میں اللّٰہ میا اللّٰہ میں اللّٰہ می

آ پ بھی او پر دی ہوئی دعاء کوعر بی یا ارد دیا دونوں زبانوں میں ابھی اور ہو سکے تو روز انہ یانچوں نماز وں کے بعد بھی پڑھنے کی عادت بنالیجئے۔

> ہے سبب بَخُش دے نه پوچه عَمَل نام غفار مے ترا یا ربّ!

نورانی لباس

ایک نُزُرگ نے اپنے مرحوم بھائی کوخواب میں دیکھ کر بوجھا کیا زندہ لوگوں کی دُعاتم لوگوں کو پنچتی ہے؟ تو انہوں نے جواب دیا،'' ہاں اللہ عزوجل کی تسم وہ نورانی لباس کی صورت میں آتی ہے اسے ہم بہن لیتے ہیں''۔ (شرح الصدور ص ۳۰۰)

> جلوؤ یار سے ہو قَبُر آباد رَحُشتِ قَبُر سے بچا یا ربّ!

ئورانى طَباق

''جب کوئی شخص میّت کوا**یعال تواب کرتا ہے تو جرئیل علی**السلام اے فورانی طباق میں رکھ کر قَبُو کے کِنارے کھڑے ہوجاتے ہیں اور کہتے ہیں،''اے قَبُو والے! یہ بَدِئیہ ('تخد) تیرے گھروالوں نے بھیجا ہے قبول کر۔'' یہ مُن کروہ خوش ہوتا ہے اوراس کے پڑوی اپنی مُحَروی پڑمکین ہوتے ہیں۔ پڑوی اپنی مُحَروی پڑمکین ہوتے ہیں۔

قَبُر میں آہ! گھپاندھیرا ھے فَضُل سے کردہے چاندنایاربَ!

مُردوں کی تعداد کے برابر اَجُر

جوتمرِ ستان میں مِمیارہ بار سورہ اِحلاص پڑھ کرمُر دوں کواس کا ایصال ِثو اب کرے تومُر دوں کی تعداد کے برابرایصال ِثو اب کرنے والے کواس کوائز ملیگا۔

(كشفُ الْخفاح٢ ص ٣٧١ مطبوعه مؤسسة الرسالة بيروت)

اَهلِ فُبُور سِفارش کریں گے

شفیع نجرِ مان ملی الله تعالی علیه واله وسلم کا فرمانِ شفاعت نشان ہے، جو قبرِ ستان ہے گزر ااور اس نے سور قُا لُفاتِحه، سور قُالُا خلاص اور سور قُالتُ کا تُو بڑھی ہے پھرید و عاما نگی ،''یا اللہ عَدْوَ جَلُ ! میں نے جو پچھ قرآن پڑھا اُس کا تواب مومن مردو عورت دونوں کو پہنچا۔ تو وہ قبروالے قبیامت کے دوز اس (ایصال ثواب کرنے والے) کے سِفارشی ہونگے۔ (ضرح الصدور ص ۲۱۱)

> ھر بھلے کی بھلائی کا صدقہ اس بُرے کو بھی کر بھلا یارب!

سورةُ إخَلاص كا ثواب

حضرت سیّدُ ناحمًا دمَّتی دمه الله تعالی علی فر ماتے ہیں ، ہی ایک دات ملّهُ مکرّ مہ کے قبرِ سمّان ا میں سوگیا۔کیاد بکما ہول کہ قبروالے حلقہ درحلقہ کھڑے ہیں میں نے ان سے استِفسار كيا ،كياتيامت قائم موكى؟ أنهول في كها بنيس بات وَرُ المسل يه ب كدا يك مسلمان بھائی نے سود ہٰ ٔ محلاص پڑھ کرہم کوایصال ثواب کیا تو ووثواب ہم ایک سال ہے تقسيم كردية من المستورباب في قراءة القران للميت ص٢١٦)

سَبَقَتُ رَحُمَتِي عَلَى غَضَبي تون جب سے منادیا یارتِ!

آسرا بهم عنبهگارول كا اور مضوط بوگيا يارت!

أم سعد رض الله تال مها كيلنيم كنوان

حضرت سيّد ناسعُد بن عُباده رضى الله تعالى منف عرض كى ، بارسول الله ملى الله تعالى عليه الهام! ميرى مال انتِقال كرمَى بين - (مِن أن كاطرف مص مَدَ قد كرنا عابهنا بون) كون ما مَدَ قد انعنل رےگا؟

سركارملى الله تعالى عليه والبهم في فرمايا، " يانى " بناني انهول في اليك منوال محمد وايا اور

SA.

كها، "بياً م سُعدر من السعال فهاكيلي ب-"

(سنن ابو داؤد شريفج ٢ ص٥٦ رقم الحديث ١٦٨١ مطبوعه دار الفكر بيروت) میٹھے میٹھے اصلامی بھائیو! سُیّرُ ناسعدرش الله تعالی منکا کہنا ہے کہ سیکوال أم سعد رض الله تعالى منها كيلي ب-اس كمعنى بيربي كدييمنوال سعد رض الله تعالى منك مال ے ایصال ثواب کیلئے ہے۔ اِس سے بیجی معلوم ہوا کہ مسلمانوں کا گائے یا بکرے . وغيره كوبُوْرگول كى طرف منسوب كرنامُنَكُلُ بيركهنا كه'' بيهئيدُ ناغوثِ ياك رض الله تعالى منها براہے''۔اس میں کوئی تر ج نہیں کہ اس سے مُر ادبھی یہی ہے کہ بیہ براغو شو یا ک رض الشقال مذکے ایصال تو اب کیلئے ہے۔ اور قربانی کے جانور کو بھی تو لوگ ایک دوس سے ہی ی طرف منسوب کرتے ہیں ۔مَثَلُ کوئی این قُر بانی کی گائے لئے چلا آرہا ہوادراگر آب اُس نے پوچیں، کہ بیرکس کی ہے؟ تو اُس نے یہی جواب دیتاہے،''میر کا گائے ے" جب یہ کہنے والے پراعتراض نہیں تو "غوثِ یاک کا بکرا" کہنے والے پر بھی کوئی اعتراض بين موسكنا حقيقت مين مرشح كامالك الله غزّة جَلْ بى إورقر بانى كاكائ م بو یاغوث یاک کا بکرا، ہرڈ بیجہ کے ڈن کے وَ ثُت اللّٰہ عَدْرُ رَجَالُ کا نام کیا جا تا ہے۔اللّٰہ

فَعَزُّورَ جَلُّ وسوسول مع تُحِات بخشے . امین بجاہِ النبی الامین ملی الله تعالی علید الدولم

"ولی کی نیاز میں شِفا ہے"کے سَتَرَه کُرُوف کی نسبت سے ایک تواب کے ۱۷ مدنی بیمول

کی فرض، واجب، سنت ، نفل، نماز، روزه، زکوة، حج ،بیان، دَرُس، مَدَ نی کی وقت، و بی کتاب کامطالعه، مَدَ نی قافع من مَدَ نی کتاب کامطالعه، مَدَ نی

كاموں كيلئے إنفرادى كومشش وغير ه برنيك كام كاايصال ثواب كر سكتے ہيں۔

میت کا تیجہ، دسواں، چالیسوال اور بری کرنا ایتھا ہے کہ یہ ایسال ثواب کے ہی ذَرَائِع ہیں۔ شرِ لیعت میں تیج وغیرہ کے عَدُم جواز (یعنی ناجائز

ہونے) کی دلیل نہ ہونا خود دلیلِ بُواز ہے اور میّت کیلئے زندوں کا دُعاء

كرناقرآن كريم عابت عجوك الصال وابك المل عديناني

وَالَّذِينُ جَا أَوْمِنُ بَعُلِ هِمُ يَقُولُونَ تَرْمَد كنسز الابسان: اورده جوان كبعداً عَ رَبَّنَا الْعُفِرُكِنَا وَالِينُو النِنَا الَّذِينَ سَبَعُونَا عُرْسُ رَتْ بِسِ، اب مارے دب وجل بمين خُشُ

بالرِيمان (بِ سورة عشر آيد) اور مار عائياكو جوم بها ايان لائد. مناهم على المجاونيره كا كما نامِر ف إى صورت من ميت كے جھوڑے ہوئے مال

ے کر سکتے ہیں جبکہ سارے ور ٹابالغ ہوں اور سب کے سب إجازت بھی

دیں اگر ایک بھی وارث نابالغ ہے تو سخت حرام ہے۔ ہاں بالغ اپنے حصہ سے کرسکتا ہے۔ (مُلَنْحُص از بھار شریعت)

مَیت کے گھر والے اگر تیج کا کھانا پکا ئیں تو (الدار نہ کھائیں) مِرُ ف نُقُراء کو کھلا کس۔ (مُلَخْص از بہار شریعت)

میں ہے ایک دن کے بچے کو بھی ایصال ثواب کر سکتے ہیں، اُس کا تیجہ ، وغیرہ بھی میں کرنے میں کڑتے نہیں۔

من الله على المرادة على الكرادة المرادة المرا

ملكان بِرَّات كوبهي الصال او اب كريكته بي-

گیار هوی شریف، رَجَی شریف (مین ۱۲ رجب الرجب کوئیة ناام جفر صادِق رضی الله تعالی می رخی شریف الله تعالی می کارد تعالی عند کے کویڈ کے کرنا) وغیرہ جائز ہے۔ کویڈ ہے، کی بیس کھیر کھلا ناظر وری نہیں دوسرے برتن میں بھی کھلا سکتے ہیں۔ اس کو گھرے بائبر بھی لے جاسکتے ہیں۔

نَبُوك ہےاہ امیر وغریب سب کھاسکتے ہیں۔

🖈 ایصال ثواب کے کھانے میں مہمان کی شرکت شُرُ طہیں گھر کے افرادا گر خود ہی کھالیں جب بھی کوئی کڑج نہیں۔

👚 وزانه جتنی باربھی کھانا کھائیں اُس میں اگر کسی نہ کسی بزرگ کے ایصال ثواب

کانیت کرلیں تو مدینہ ہی مدینہ۔مثلاً ناشتے میں نیت کریں، آج کے ناشتے کا تواب سركار مدينه ملى الله تعالى عليداله وللم اورآب كذَريني تمام انبيائ بحرام

عليهم السلام كوينيخ _ووپېركونيت كرين، ابھي جوكھانا كھائيں مے (يا كھاما)

اُس كا تواب سركارغوث اعظم اورتمام ادليائے كرام عليم ارضوان كو بہنچي، رات کونیت کریں، ابھی جو کھائیں گے اُس کا ثواب امام اہلنت امام احمد رضا

خان عليد حمة الرحن اور برمسلمان مردوعورت كوينيي

📆 کھانے سے پہلے ایصال ثواب کریں یا کھانے کے بعد ، دونوں طرح

ایی بکری کاایک فیصداور مُلاز مت کیلئے اپنی بکری کاایک فیصداور مُلازَ مت کیلئے

نکال لیا کریں۔ اِس رقم ہے دین کتابیں تقلیم کریں یا کسی بھی نیک کام میں

خرج كرسان شاءالله عَدْ وَجَدٍّ إِس كَى يَرَكْتِين خود بى ديكھيں گے۔

واستان عجیب شفرادے کاسر، دس بیبول کی کہانی اور جناب سیدہ کی کہانی دغیرہ سبەئن گۇرت تقے ہیں،انہیں ہرگز نہ پڑھا کریں۔ ای طرح ایک پیفلٹ بنام" وصيت نامه" لوگ تقتيم كرتے ہيں جس ميں كى" شيخ احمه" كاخواب دَرْج

ے یہ بھی بنغلٰی ہے اس کے نیے مخصوص تعداد میں چمپوا کر ہانٹنے کی فصلیت اور نہ تقسيم كرنے كے نقصانات وغيرہ لكھے بيں ان كابھی اعتبار ندكريں۔

مريك جننوں كوبھى ايصال ۋاب كريں الله غزّة جَلَّ كى رَحْمت سے أميد ہے كەسب كوبورامليگا - بنيس كوثوات تقتيم بوكرنكر _ عكر _ ملے - (زداف نائه خنان)

من ایسال تواب کرنے والے کے تواب میں کوئی کی واقع نہیں ہوتی بلکہ ساتمد

ے کراس نے جتنوں کوابیال تواب کیا اُن سب کے مَجْمُوعُهٔ کے برابر اِس كوثواب ملے مِنْكُماْ كوئى نيك كام كيا جس ير إس كودس نيكياں مليں اب إس نے دی مُر دوں کوابیسال ثواب کیا تو ہرا یک کودی دی نیکیاں پہنچیں گی جبکہ

ایسال ثواب کرنے والے کوایک سودی ادرا گرایک ہزار کوایسال ثواب کیاتو

إى كودى براروى ـ و على هذا القياس (مُلَخَص از فتاوى رضويه)

مستلط ايسال ثواب مِزف مسلمان كوكريخة بين - كافر يامُر تَد كوايعيال ثواب

کرنایااس کومرحوم کہنا تھفو ہے۔

ایصال ثواب کا طریقه

ایسال آواب (بین آواب بنجاه) کیلئے دل میں نیت کر لیما کافی ہے، مُمُلُا آپ نے کی و ایک روبید خیرات دیایا ایک بار وُرُ و دشریف پڑھایا کی کوایک سڈت بتائی یا نیکی کی دکوت دی یا سسنتوں مجرا بیان کیا۔ اَلْحُرْ صَ کوئی بھی نیکی کی۔ آپ دِل بی دِل میں اس طرح تیت کرلیں مُمُلُّا ، ابھی میں نے جوسنت بتائی اس کا تو اب سرکارسلی اللہ تعالی علیہ دالہ دسلم کو پہنچ ' ۔ ان شاء اللّٰه مز ، بل آواب بھی جائے گا۔ مزید جن جن کی تیت کریں سے ان کو بھی پہنچ گا۔ دِل میں نیت ہونے کے ساتھ ساتھ ذبان سے کہ لیماست یہ صحابہ رضی اللہ نعائی منہ ہے جیسا کہ ابھی حدیث سعد رشی اللہ علی کر را کہ اُنہوں نے سمابہ رضی اللہ نعائی منہ کے بیا کہ ابھی حدیث سعد رشی اللہ علی کر را کہ اُنہوں نے

ایصال ثواب کا مُرَوِّجه طریقه

آج کل مُسلمانوں میں نُصُوصاً کھانے پر جو فاتحہ کا طریقہ رائج ہے وہ بھی بہت اچھا ہے جن کھانوں کا ایصال تو اب کرناہے وہ سارے یا سب میں سے تعویر اتھوڑ ا کھانا نیز

غمن بار ا

ايك كلاس ميں بانى بحركرسبكوما منے دكھ ليس اب اغوذ بسالى لمب و الشيطن الرجيم طرخ هكرايك باد

قُلُ يَائِهَا الْكَفِرُونَ فَرَاعَبُكُمَا تَعُبُدُونَ فَوَرَآنَتُمُعْبِدُونَ مَاآعُبُدُ فَ وَرَآنَاعَا بِدُمَّاعَبُدُ تُمُوفِولَا اَنْتُمُ عَبِدُونَ مَآاعُبُدُ فَكُمُدِينِكُمُ وَلَا اَنْتُمُ عَبِدُونَ مَآاعُبُدُ فَكُمُدِينِكُمُ وَلِيَكُمُ وَلِيَانُونَ

٢

قُلُهُ وَاللّٰهُ أَحَدُّ أَلَّلُهُ الصَّمَدُ أَلَهُ يَلِدُهُ وَلَمُ يُولَدُ ﴿ وَلَمْ يَكُنُ لِلهُ يَلِدُهُ وَلَمْ يُولَدُ ﴿ وَلَمْ يَكُنُ لِلهُ كُفُو الْحَدُّ ﴿

EAV

أيكبار

قُلُ اعُوْدُ بِرَبِّ الْفَالِقَ فَمِن شَرِّمَا خَلَقَ فُومِن شَرِّعَاسِقِ إِذَا وَقَبَ فَ وَمِن شَرِّ النَّقَتْتِ فِي الْعُقْدِ فَوَمِن شَرِّحَاسِدٍ إِذَ احْسَدَ قَ شَرِّحَاسِدٍ إِذَ احْسَدَ قَ

قُلُ اعُودُ بِرَبِ النَّاسِ فَمِلْكِ النَّاسِ فَمِلْكِ النَّاسِ النَّاسِ فَمِن شَرِّ الْوَسُواسِ الْمُ الْمُولِ الْحِالنَّاسِ فَ مِن شَرِّ الْوَسُواسِ الْمُ الْمُولِ النَّاسِ فَ صُدُولِ النَّاسِ فَ صَدُولِ النَّاسِ فَ بسيراللوالترثمن الرّحِيُدِ

٤٨٩

بِمَّاأُنْزِلَ الِبُكَ وَمَّا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ قَ بِالْاخِرَةِ هُمُ يُوقِنُونَ۞ أُولِلِكَ عَلَىٰ هُلَّى مِّنْ تَبْرُمُ وَأُولِلِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۞ مِنْ تَبْرُمُ وَأُولِلِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۞

رُ منے کے بعد یہ یائی آیات پڑھئے:۔

اب وُرُود ثَرِيف پڑھيئے: صَلَّى اللَّهُ عَلَى النَّبِيّ الْاُمِّيّ وَاللهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَمَسَلَّمَ ط صَلواةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُولَ اللَّه

سُفِنَ وَكِكَ وَيَهِ الْمِدَا عَمَا يَصِفُونَ وَ وَسَلَاعِلَ الْمُرْسِلِيْنَ فَوَالْمَدُ وَهُووَتِ الْمُلَدِينَ وَالْمَسَدُ

ایک بار

آيَةُ الْكُرُسِيُ

بِسُمِ اللهِ الرَّحْنِ الرَّحِيْمِ اللهُ لا إله إلا هُوَ الْحَيْ الْقَيْوُمُةَ لَاتَأْخُذُهُ سِنَةً وَلَانَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمُونِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَاالَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْ بِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ آيُدِيْهِمْ وَمَاخَلْفَهُمُ وَلَا يُحِيُطُونَ بِسَى عِينُ عِلْمِهُ إِلَّا بِمَاشًاءٌ وَسِعَ كُرُسِينُهُ السَّمُولِينَ وَالْأَرْضُ وَلَا يَؤُدُهُ

حِفْظُهُمَا وَهُوالْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ٥

تبن بار

سُورَةُ الْإِخْلَاصِ

بِسُمِ اللهِ الرِّمْنِ الرِّحِيْمِ اللهِ الرِّحِيْمِ اللهِ الرِّمْنِ الرِّحِيْمِ اللهُ الصَّمَدُ قَلَ هُ وَاللهُ احَدُقَ اللهُ الصَّمَدُ قَلَ هُ وَلَمْ يُولَدُ لَا وَلَمْ يَكُنُ لَهُ لَمُ مَا يُولَدُ لَا وَلَمْ يَكُنُ لَهُ حَفْوًا آحَدُ ٥ حَفْوًا آحَدُ ٥ حَفْوًا آحَدُ ٥

ایصال ثواب کیلئے دعا کا طریقہ

ماالله عزوجل جو بچھ پڑھا گیا (اگر کھانا وغیرہ ہے قواس طرح سے بھی کہیں) اور جو بچھ کھانا

وغيره بيش كيا كمياب بلكرآج تك جو بجوثو نا بجوناعمل موسكاب اس كالمارات اقص

عُمَل كالنَّى نبيس بلكداب حُرَم ك شايان شان الواب مُرْحَت فرما ـ اورات جارى

جازب سے اپنے پیارے محبوب ، دَا تائے غَنُو ب ملی الله تعالیٰ علیہ دالہ دِہلم کی بارگاہ میں

ندر بہنچا۔ سرکارمدین ملی اللہ تعالی علیہ الہوسلم کے توسط سے تمام انبیائے کرام علیهم

السلام تمام صَحاب كرام عليم الرضوان تمام اوليائ عِظام رمبم الله كي جناب مين مَذْ ريبنجا_

مركار مدينه ملى الله تعالى عليه والهوسلم ك تُوسِّط سه سَيِّدُ مَا آدم صفى الله عليه السلام سه ليكراب

تک جتنے انسان ورخات مسلمان ہوئے یا قبیامت تک ہوں مے سب کو پہنچااس

وَوران جن جن بزرگوں كو حُصُوماً ايسال او اب كرنا ہے ان كا نام بھى ليتے جائيں۔

اپنے ماں باپ ادر دیگر دشتے دار دن اور اپنے بیر دمر جد کوالیسال تو اب کریں۔ (نوت

خدگان ش ہے جن جن کا نام لیتے ہیں ان کوخوش مامل موتی ہے۔)

اب حسب معمول وُعاختم کردیں۔(اگرتموز اتموز اکھانا ادریانی نکالاتھاتو وہ دوسرے کھانوں اور یانی میں وال دیں)۔

خبردارا

جب بھی آپ کے یہاں نیاز یا کسی تنم کی تقریب ہو، جماعت کا وَثُت ہوتے ہی کو کی مانع شری نه ہوتو انفرادی کوشش کے ڈریعے تمام مہمانوں سمیت نماز یا جماعت کیلئے معجد کارخ کریں ۔ بلکہ ایسے اوقات میں دعوت بی ندر کھیں کہ ج میں نماز آئے اور ستی کے باعث معاذ اللہ جماعت فوت ہوجائے۔ دوپہر کے **کم**انے کیلئے بعد نماز ظہراورشام کے کھانے کیلئے نمازعشاہ مہمانوں کو بلانے میں غالبًا باجماعت نمازوں کیلئے آسانی ہے۔میز بان، بادر جی ، کھانا تقتیم کرنے والے وغیرہ سمجی کو جاہئے کہ دفت ہو جائے تو سارا کام چھوڑ کر باجماعت نماز کا احتمام کریں۔ بزرگوں کی'' نیاز'' کی مصروفیت میں اللّٰدعز وجل کی'' نما زِ ہاجماعت''میں کوتا ہی بہت بڑی غلطی ہے۔

مَزار پر حاضِری کا طریقه

بُرُرگوں کے پاس قدموں کی طرف سے حاضر ہونا چاہئے، پیچھے سے

آنے کی صورت میں انہیں مُڑ کر دیکھنے کی زَحمت ہوتی ہے۔ لھذا

مزارِاُولْیاء پربھی پابنتی (قدموں) کی طرف سے حاضِر ہوکر قبلُہ کو پیٹھاور

صاحبِ مزارکے چہرے کی طرف رُخ کرکے کم از کم چار ہاتھ (دوگز) دُور

کھڑا ہواور اِس طرح سلام عرض کرے،

ٱلسَّلامُ عَلَيْكَ يا وَلِيَّ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَا ثُهُ

أيك بار سورةُ الفاتِحه اور 11 بار سورةُ الْإِنحلاص (اول آخر

ایک بار دُرُود شریف) پڑھ کر ہاتھ اٹھا کر اوپر دیئے ہوئے طریقے کے

مطابق (ماب موارکا نام لیکر بھی) ایسال ٹواب کرے اور دعاء مانے، "اُخسن الوعاء "یں جولمی کے قدرب میں دعاء قبول موتی ھے،

> المُیبلواسطه کل اولیاءکا مرا هر ایك پورا مُدّعا هو

> > ثواب جاريّه

یہ رسالہ پڑ ہ کر دوسر ہے کو دیے دیجئے اور اپنے مسر حُومتوں کے ایمنال ثواب کیلئے زیادہ تعداد میں خرید کر تقسیم کرکے خود بھی ثواب جاریّہ کمائیے۔

ماخذ ومراجع

| | کتاب | مطبوعه | | کتاب * | مطبوعه . |
|----|-----------------------------|------------------------------|-----|--------------------------|------------------------|
| 1 | كنزالايمان في ترحمة القرآن | بميثى هند | 40 | سنن کبری بههتی | دارالكتب العلميه بيروت |
| * | contec | دارالفكر بيروت | 17 | شعب الايمان بيهقي | دارالكتب العلميه بيروت |
| ٣ | تفسیر مظهری | ضياء القرآن لاهور | 14 | الفردوس بما ثور الخطاب | دارالكتب العلميه بيروت |
| 1 | خزائن العرفان | بمبئى هند | A.F | تاريخ دمشق لابن عساكر | دار الفكر بيروت |
| | تفسير البحر المحيط | دارالكتب العلمية بيروت | 11 | الترغيب والترهيب المنذرى | دارالكتب العلميه بيروت |
| , | صحيح بخارى | افغانستان | r. | محمع الزوائد | دار الفكر بيروت |
| , | صحيح مسلم | افغانستان | 71 | جامع صغير | دارالكتب العلميه بيروت |
| , | حامع ترمذي | دارالفكر بيروت | ** | كنز العمال | دارالكتب العلميه بيروت |
| | سئن ابو داو د | داراحياء التراث العربي يبروت | rr | المصنف عبدالرزاق | دارالكتب العلميه بيروت |
| 1 | مئن نسالی | دارالحيل بيروت | Tt | مشكوة المصابح | باب المدينه كراجي |
| , | سنن ابن ماجه | دارالمعرفه بيروت | ro | اشعة اللمعات | كولته |
| 1 | مؤطا امام مالك | دارالمعرفه بيروت | r1 | مراة المناجيح | ضياء القرآن لاهور |
| 1 | مستدامام احمد بن حبل | دارالفكر بيروت | rv | تاريخ بغداد | دارالكتب العلميه بيروت |
| 1 | مصنف ابن ابی شیبه | دارالفكر بيروت | TA | منية المصلي | مركز الاولياء لاهور |
| 1 | مئن دارمی | باب المدينه كراجي | 79 | غَية المتعلى (المستعلى) | باب المدينه كراچي |
| 1 | مسند ابو يعلى موصلي | دارالكب العلميه بيروت | ٤. | فناؤى قاضى خال | كوفته |
| 1 | صحيح ابن خزيشه | المكب الاسلامي | 11 | نرايد | ضياء القرآن لاهور |
| 1 | نوادرالاصول | دارصادر بيروت | 11 | فنح القدير | كوئته |
| 1 | الإحسان بترتيب صحيح أبن حان | دارالكب العلميه بيروت | ir | البحر الراثق | كوئته |
| 7 | معحم اوسط طيراني | دارالكتب العلميه ييروت | ıı | تبيين الحقائق | كوئته |
| 7 | معنجم كبير طبرانى | داراحياء النراث العربي بيروت | 10 | تنوير الابصار | كولته |
| 7 | الكامل في ضعفاء الرحال | دارالكتب الغلميه بيروت | 17 | درمختار | كوفله |
| 4. | المستلوك للحاكم | دارالمعرفه بيروت | ŧV | ودالمحتار | كولته |
| 4 | حلية الاولياء | دارالكتب العلميه بيروت | tA | الحوهرة النيرة | باب المدينه كرايحي |

| باب المدينه كراجي | حاشية الطحطاي على مراقى الفلاح | 31 | باب المدينه كراجي | غمزعيون البصائر | 1 |
|------------------------|--------------------------------|-----|----------------------|-------------------------|-----|
| فريد بك ستال لإهور | قانون شريعت | 77 | كوفه | حلاصة الفتاوى | - |
| دار صادر بیروت | احياء علوم الدين | 11 | باب المدينه كراجي | فتاوا تاتار محانيه | - |
| تهران | كيميائے سعادت | 71 | باب المدينه كراجي | مراقى الفلاح | 01 |
| دار الفكر بيروت | مكاشفة القلوب | 70 | كوئته | فتاو ی بزازیه | 04 |
| دارالكتب العلميه بيروت | شرح الصدور | 11 | مدر الماري | حدالممتار على ردالمحتار | 0 8 |
| دارالكتب العلميه بيروت | شرح المواهب البدنيه | 14 | مركزالاولياء لاهور | فناو ي رضويه حديد | 00 |
| دارالكب العلميه بيروت | الحمائص الكبرى | ٦٨. | مکتبه رضویه کراچی | بهار شریعت | |
| دارالكتب العلميه بيروت | اتحاف السادة المتقين | 11 | مکبه رضویه کراچی | فتاو ي امحديه | |
| ضياء القرآن لاهور | اسلامی زندگی | v. | يزم وقار الدين كراجي | وقارالفتاؤى | |
| مركز الاولياء لاهور | الملفوظ . | ٧١ | كوفته | فناوى عالمگيري | |
| | فتاوى اهلست (غير مطبوعه) | ** | باب المدينه كراجي | اللياب | 7. |
| | 100 | | | | 111 |

"نماز كام كام"ك 11 أورف كانست ساس كتاب كوبره صنى 11 نتيس

- (١) اخلاص كم ماته مسائل كي كررضا ع المي عزوجل كا حقدار بنول كا-
 - (r) قرآنی آیات کی زیارت کروں گا۔
 - (٣) ایناوضوعنسل اورنماز درست کرون گا-
 - (٤) زندگی بر مل کر مار بون کا ۔
 - (۵) جونبیں جانے انھیں سائل عماؤں گا۔
- (Y) اس میں موجود دعائیں از بر (یعنی زبانی یاد) کروں گا۔
- (V) جوام میں برابر ہوگائی سے سائل میں تحراد کروں گا۔
 - (٨) ي برد كرنكرا عدة بين ألجمول كا -
- (١٠) دومرول كويدكاب يز صنى كرخيب دلاؤل كا-
 - (۱۱) حب تونیق پر کتاب دومرول کوکھیڈ دول گا۔

ودمسلمان کی نیت اُس کے مل سے بہتر ہے '(مسم کبر طبرانی حدیث ١٤٢٥ ج دص ١٨٥ بروت)



فرض عكوم يمشتل اميرا بلسنت التلطيحي أجم ترين تصانيف

















تت کی بہاریں

أأسخسنسلة بله مسازعة تبلغ قران وسنت كى عالكير فيرسائ تحريك وجوب اسلامي عرميك متك متك متكانة في ماحول میں بکثرے مثنیں بیکھی اور تکھا کی جاتی ہیں، ہر جھرات کو فیضا کتا بدینے علّہ سو دا کر ان پُر انی سبزی منڈی ہیں مفرب کی نما ز کے بعد ہونے والے سکتوں تعربے اپناع میں ساری رات گزارنے کی منذ فی التا ہے ، عاشقان رمول کے مَدَر فی قا فلول میں سنتوں کی تربیت کے لیے سفر اور روزا نے فکر بدینہ کے ذریعے مَدُ في الْعالِمات كارسال في كرك من بيال وقد واركوق كروائي كالعمول بنا يحيد ، إن شأة الله عرو الله الساكي أركت ے با درسٹ بنے گنا اول مے تفرت کرنے اور ایمان کی حفاظت کے لیے کڑھنے کا ذائن سے گاہ ہر اسماری جمائی اینا ہے ڈائن بنائے كە" جھے چى اورسارى وتيا كادگورى كى اصلاح كى كوشش كرنى ہے۔" ان شاتة اللَّه طرو خل

ا چی اصلاح کے لیے مُلڈ بی انتخابات رحمل اور ساری و نیا کے لوگوں کی اصلاح کی کوشش کے لیے مُلڈ بنی قا مُلُول ا على مركزة عدد ان شاء الله عزوجل

مكتبة المدينه كي شاخين

راد ليال العلى الدين و من المحل على المال المال من المحل المالية - war grape of I for a grape war. 000-5571000 : 1 - Water Sediction 4362145:01 - あかんかいいいんしゅしょり محر المنان مرد ورائ دار (ان:5619195 055-4225653 wit - Irry Muzoley with

ال ي الحريد مي كما راد في 11 12203311 الله على الما 12203311 الله مع الما الله الما 12203311 الله ا 042-7311679 W - Just Englishmen の41-2632625では、しいしゃいこうくりでかりってい 058274-37212-U) - LOUNTEN 061-4511192 على من المنافق المنافق على المنافق المناف 044-2550767」いんしんけんといってからいいといいい

مستنة المصنه فيضان مدينه محلة وداكران براني سني مندى باب المديث احراجي خلن:4125858; 🚅 4921389-93/4126999: خلن

Email:maktaba@dawateislami.net \ www.dawateislami.net